॥ श्री ॥

इलाजुलगुरबा

हिन्दी भाषा

जिसको

श्रीयुत् मुन्शी रामनारायण भार्गव सम्पादक मथुरा प्रेसने अत्यन्त परिश्रम के साथ बहुतसा द्रव्य व्यय करके उर्दू भाषा से देवनागरी भाषा में श्रीयुत हकीम काढिली-प्रसाद गुप्त से उल्था कराकर

हस्ब ख्वाहिश बाबू सुदर्शनलाल भार्गव

मुफ़सेलात एण्ड जनरल आर्डर सप्लायरस

मथुरा निवासी के

बम्बई

टाइप में रामनारायण प्रेस में बाबू राधारमण भार्गव के प्रबन्ध से मुद्रित कराया।

पहिली बार २२०० जिल्द } सम्वत १९८० माघ { मूल्य प्रति पुस्तक १॥)

सन १९२४ ई०

प्रस्तावना ।

श्रीकान्तललितानन मधुरिपु कृष्ण भजेहं सदा वैश्य
वेषण तत्पर प्रियकर धन्वतर माधवम् । दुःखघ्न
कामलाच्छमिन्दु बदन मंजीर पाद हरिं गोपाल
यमुना प्रिय व्रजपतिं वैद्यं महा सुन्दर मू. १

सब स्तुति उसी निर्विकार परमेश्वर परम वैद्य व योग्य है जिसने अपनी माया और शक्ति से संसार की रचनाकर चौरासी लक्ष योनि को उत्पन्न किया और इस तुच्छ मनुष्य को सर्वोपरि बनाया और इसका जीवन-मरण आरोग्यता और रोग पर निर्भय रक्खा और इस आरोग्यता की रक्षा तथा नष्ट हुई निरोग्यता की प्राप्ति के लिये अनेक आहार और औषधियों को उत्पन्न किया और उनकी परीक्षा तथा रोगों के लिये शारीरक और आत्मिक वैद्यों को सर्वोत्तम किया और उनके जात्युपकार द्वारा कैसी आपत्तियों से मुक्ति दी जैसे कि धन्वन्तरि और शुक्र इत्यादि, कि जिन्होंने मनुष्य को मृत्यु के मुख से निकालकर अमृतफल खिलाया और वैद्यक विद्या को प्रकाशित किया और व्यास-कपिल-दत्त त्रेय इत्यादिक जिन्होंने अज्ञानरूप रोग को नष्ट कर के ज्ञानरूप अमृत पिलाया और ज्ञान विद्या का प्रकाश किया और उसी निराकार परब्रह्म ने कृपायुक्त जीव को संसार सागर से पार उतारने के लिये श्रीकृष्णचन्द्र षोडशकला युक्त पूर्ण अवतारले श्रीमद्भगवद्गीता द्वारा जगत में अमृतजल की वृष्टि की अब समस्त वैद्य मात्र महाशयों से निवेदन है कि वैद्यक विद्या जो मनुष्य की आरोग्यता की जड़ है आजतक बहुतसी पुस्तक निर्माण हुई परन्तु उनका सिवाय संस्कृत पाठी वैद्यों व उर्दू, फारसी जानने वाले हकीमों के कोई नहीं समझ सक्ता इसलिये एक पुस्तक इलाजुलगुरबा नामक जिसमें हकीम गुलाम इमाम वैकुण्ठवासी ने बहुत अच्छे २ नुसखे लिखे हैं उर्दू भाषा से देवनागरी भाषा में उल्था कराकर सर्व महाशयों की सुगमता के लिये पंडित रामनारायणजी सारस्वत भार्गव "पुत्र मुन्शी रामधनदासजी प्रसिद्ध खुशनवीस" सम्पादक मथुरा प्रेस ने छापकर प्रकाशित किया था अब समस्त वैद्यमात्रों से निवेदन है कि एक प्रति इसकी अपने विद्यालय में रक्ख कर लाभ उठावें ।

शुभचिन्तक सुदर्शनलाल भार्गव
बुकसेलर नया बाजार मथुरा

सूचीपत्र मिनम्

खण्ड पहला

खण्ड दूसरा

मोतत्सत्

श्रीपरमात्मनेनमः ।

॥ इलाजुल् गुरबा ॥

यह बात जानने योग्य है कि इस पुस्तक में दो खण्ड हैं पहला खण्ड नबारी के प्रकरणमें और इसमें दस अध्याय हैं अध्याय पहला प्राकृत कार्यों के प्रकरण में अर्थात् वे कृत्य जो प्रकृति के मग मनुष्यमें अपेक्षित हैं और वे गिनती में सात हैं उनमें से एक अरकान अर्थात् तत्व है उसको फ़ारसी में अनासर बोलते हैं वे चार हैं एक अग्नि कि प्रकृति जिसकी गरम और खुश्क है दूसरी पवन कि वह गरम और खुश्क है तीसरी पानी कि वह सर्दतर है चौथी मिट्टी कि वह सर्द खुश्क है, दूसरा सविपती कुवते मिज़ाज और प्रकृति है और उसके नौ भेद हैं चार भेद तो एक वचन अर्थात गर्म, सर्द, तर और खुश्क और चार द्विवचन अर्थात गर्मखुश्क और गर्मतर और सर्दखुश्क और सर्दतर और नवां मोतदिल उसके दो भेद हैं मोतदिल सत्य और मोतदिल असत्य मोतदिल सत्यके शरीर नहीं होता तीसरी सविपती कुस अखलात अर्थात दोष और वह चार हैं एक रुधिर अच्छा होता है और जो इन प्राणों में से कोई भी बदल जाय तो रुधिर बिना तत्ते है दूसरा पित्त कि जिसकी प्रकृति गर्म और खुश्क है जो कि सुर्ख रंग जर्दी मायल स्वाद में तेज ऐसा पित्त निर्विकार होता है और चार पित्त विकार सहित हैं उनका नाम फ़ारसी में मिरेह सफरा सफ़राय मुही सफ़राय किरासी सफ़राय जगारी मिरेह सफरा वह है जिसमें पतरी तरी मिले सफ़राय मुही वह है जिस में कि गाढ़ी तरी मिले और सफ़राय किरासी वह है जिसके कुछ भाग जलके बाक़ी जोड़ों में मिलजाय उस पित्त का रंग गदने के सदृश होता है उसकी उत्पत्ति उदरमें है और जो पित्त कि सारा जल जाय उसका नाम जगारी है वह रंग रूप में जगारके सदृश होता है और प्रकृति उसकी विषके समान होती है और जिगर

मे उत्पन्न होती है तीसरी दोष कफ है उसकी प्रकृति सर्द और तर है निर्विकार कफ वह है जिसमें रुधिर बनजाने का पराक्रम होता है और विकारी कफ उस के स्वाद से अथवा उसकी चाशनी से जाना जाता है अर्थात् रुधिरके मिलाव से मीठा होजावे वह हलु अर्थात मीठा कफहै और जो जले हुए पित्तसे मिलकर नमकीन होजावे वह माल्ह है अर्थात नोनियां कफहै अर्थात गरमी से निर्बलता पाकर खट्टा होजाय वह हाजिम अर्थात खट्टा कफ है अर्थात पनीली वस्तु के मिलने से फीका होजाय वह तुफह अर्थात फीका कफ है अथवा वायुके मिलाप से कसैला होजाय वह अफस अर्थात कसैला कफ है और जो चाशनी के द्वारा पतला है उसको पनीला कफ बोलते हैं अथवा गाढ़ाहो उसको गाढ़ा कफ बोलते हैं और जो निर्विशेष गाढ़ाहो और निर्विशेष पतलाहो उसे मोतदिल कफ बोलते हैं चौथा दोष है जिसकी प्रकृति सर्द और खुश्क है निर्विकार वायु रुधिरकी कीच है और खटाई लिये हुये स्याह रंग है और दोषयुक्त वात हर दोष के जल जाने से पैदा होती है कि जो वायु जलजाय और हर दोषका जलन उसकी चाशनी गाढ़ा होजाने को कहते हैं और दोषकी कमी और विषमता दोषके जलने से है।

गुण—दोष की उत्पत्ति मदाग्नि से होती है और अग्नि चार प्रकारकी होती है विषमाग्नि मदाग्नि समाग्नि और तीक्ष्णाग्नि प्रथम पाचन शक्ति उदरमें उसके गाढ़े रुधिर को फ़ारसी में कैलूस कहते हैं दस्त उस की जड़ है दूसरी पाचन शक्ति कबद् अर्थात जिगर में उसके पचाव का नाम कैलूस है अर्थात पतला रुधिर उसका मलमूत्र है तीसरी पाचनशक्ति नसों में और चौथी पाचन शक्ति जोड़ों में और इन दोनों पाचन शक्तियों की उगलत पसीना है और मैल होकर मसामात और कुछ नाक कानों के द्वारा निकल जाती है तफियली कलोंमें से चौथे जोड़ उनके दो भेद हैं एक वचन और बहुवचन एक वचन जोड़ों में से प्रथम हड्डी है दूसरे कुरा तीसरे पट्ठे उनके दो रूप हैं एक मस्तक उपजा है उसके सात रूप हैं जोड़ों की हरकत और स्पर्श उन्हीं से है दूसरा नरवा हराम मग्ज से उगा है वह साढ़े इकत्तीस अर्थ हैं गर्दन के सिवाय हरकत और स्पर्श सब जोड़ों का उन्हीं से है चौथे उजलें अर्थात मांसके लोथड़े वह सब पानसौ उन्तीस हैं पांचवें वतर अर्थात तांत इन दोनों के यह गुण हैं कि जोड़ों को हरकत देते हैं छठे खात अर्थात बधन यह भी महीन पट्ठे हैं उनका गुण जोड़ों को बांध देता है सातवें शरायीन अर्थात रुधिर की नली जो कि दिल से उत्पन्न हुई हैं और वरादी

नामी शिरयान के सिवाय रुधिर की नालियां दो पर्ती हैं उनके प्रताप करके सारे शरीर में रूह हैवानी अर्थात् स्वासा पहुंचती है आठवें अरोदह अर्थात् दक्षिण से और वह जिगरसे लगी है यहभी सबरी शिरयान वरीदीके सिवाय कुपती है और सारे शरीर में रुधिर फैलाना इसका गुण है नवें राश्रा अर्थात झिल्ली जोड़ों की रक्षा करना इसका गुण है और इन सब जोड़ों की उत्पत्ति मनी अर्थात बिन्दस है दसवां गोश्त अर्थात मांस रुधिर के जमाव से पैदा होताहै और चर्बी रुधिर के पानी से पैदा होतीहै और मांस और चर्बी के प्रताप से मनुष्य मोटा होता है ग्यारहवें खाल और बाल और नख हैं बाज हकीम इनको जानते हैं और बाज रोंगटे जानते हैं और असली जोड़ जिनसे मनुष्योंके प्राण बचते हैं वह तीन हैं दिल दिमाग़ और जिगर और जिनसे मनुष्यकी नसल बाक़ीरहे वे चार हैं अर्थात दिल दिमाग़ जिगर और इन्द्री पांचवें तबियती कुव्वत से स्वांस है रूह अर्थात स्वांस एक अच्छी पवन है जो कि दोषों के अच्छेपन से पैदा होतीहै और स्वांस के तीन भेद हैं दिमाग़ की स्वांस कि जिसका स्थान मस्तक है और दिली स्वांस कि जिसका स्थान दिलहै और जिगरी स्वांस कि जिसका स्थान जिगरहै और तबियती कुव्वतों में से छठा पराक्रम है और उसके भी तीन भेद हैं एक मस्तकी पराक्रम कि वह मस्तक में है दूसरा दिली पराक्रम कि वह दिलमें है तीसरा जिगरी पराक्रम कि वह जिगर में है और जो आदमी के आहार में है जिगरी बल खर्च पड़े उसका नाम ग़ाज़िया अर्थात आहारी बल है और जो तिलड़ी अर्थात लम्बाव चौड़ाव और गहराव में जो खर्च पड़े उसको नामिया अर्थात नामी कहते हैं और जो बिन्दुमात्र खर्च पड़े उसको मुवल्लदह अर्थात उत्पन्न करने वाला कहते हैं और इन पराक्रमों के नीचे बल जाज़िब अर्थात आहार खैंच लेने वाला बल और मासका अर्थात रोकने वाला बल और हाज़िमा अर्थात पचानेवाला बल और दाफ़ह अर्थात निकालने वाला बल और मस्तकके पराक्रम के भी दो भेद हैं। मदरका अर्थात स्पर्शी और मुहर्रका अर्थात हिलाने वाला। मदरकह ज़ाहिर अर्थात अर्थ पांच प्रकार के हैं। प्रथम शब्द, दूसरा रूप, तीसरा स्पर्श, चौथा रस, पांचवां गन्ध इनको फारसी में शमा, बसर, ज़ौक़, और लमस कहते हैं। और मदरकह बातिन अर्थात भीतरे अर्थ भी पांच हैं हिस मुश्तर्क, ख़याल वहम, मुतख़ीला और हाफ़िज़ा और मदरकह के दो भेदहैं नफ़सा और

में उत्पन्न होती है तीसरी दोप कफ़ है उसकी प्रकृति सर्द और तर है निर्विकार कफ़ वहहै जिसमें रुधिर बनजाने का पराक्रम होता है और विकारी कफ उस के स्वाद से अथवा उसकी चाशनी से जाना जाता है अर्थात् रुधिरके मिलाव से मीठा होजावे वह हल्व अर्थात मीठा कफहै और जो जले हुए पित्तसे मिलकर नमकीन होजावे वह माल्ह है अर्थात नोनियां कफहै अर्थात गरमी से निर्बलता पाकर खट्टा होजाय वह हाजिम अर्थात खट्टा कफ है अर्थात पनीली वस्तु के मिलने से फीका होजाय वह तुफह अर्थात फीका कफ है अथवा वायुके मिलाप से कसैला होजाय वह अफस अर्थात कसैला कफ है और जो चाशनी के द्वारा पतला है उसको पनीला कफ बोलते हैं अथवा गाढ़ाहो उसको गाढ़ा कफ बोलते हैं और जो निर्विशेष गाढ़ाहो और निर्विशेप पतलाहो उसे मौतदिल कफ बोलते हैं चौथा दोप है जिसकी प्रकृति सर्द और खुश्क है निर्विकार वायु रुधिरकी कीच है और खटाई लिये हुये स्याह रंग है और दोपयुक्त वात हर दोप के जल जाने से पैदा होती है कि जो वायु जलजाय और हर दोपका जलन उसकी चाशनी गाढ़ा होजाने को कहते हैं और दोपकी कमी और विषमता दोपके जलने से है।

गुण—दोप की उत्पत्ति मंदाग्नि से होती है और अग्नि चार प्रकारकी होती है विषमाग्नि मंदाग्नि समाग्नि और तीक्ष्णाग्नि प्रथम पाचन शक्ति उदरमें उसके गाढ़े रुधिर को फ़ारसी में केलूस कहते हैं दस्त उस की जड़ है दूसरी पाचन शक्ति कबद अर्थात जिगर में उसके पचाव का नाम केलूस है अर्थात पतला रुधिर उसका मलमूत्र है तीसरी पाचनशक्ति नसों में और चौथी पाचन शक्ति जोड़ों में और इन दोनों पाचन शक्तियों की उगलन पसीना है और मैल होकर मसामात और कुछ नाक कानों के द्वारा निकल जाती है वसियती कुतोंमें से चौथे जोड़ उनके दो भेद हैं एक वचन और बहुवचन एक वचन जोड़ों में से प्रथम हड्डी है दूसरे कुरा तीसरे पट्ठे उनके दो रूप हैं एक मस्तक उपजा है उसके सात रूप हैं जोड़ों की हरकत और स्पर्श उन्हीं से है दूसरा नरवा हराम मग्ज़ से उगा है वह साढ़े इकत्तीस अर्थ हैं गर्दन के सिवाय हरकत और स्पर्श सब जोड़ों का उन्हीं से है चौथे उजले अर्थात मांसके लोथड़े यह सब पानसौ उन्तीस हैं पांचवें वतर अर्थात तांत इन दोनों के यह गुण हैं कि जोड़ों को हरकत देते हैं छठे खात अर्थात बंधन यह भी महीन पट्ठे हैं उनका गुण जोड़ों को बांध देता है सातवें शरायीन अर्थात रुधिर की नली जो कि दिल से उत्पन्न हुई हैं और बराबी

नामी शिरयान के सिवाय रुधिर की नालियां दो पची हैं उनके मताप करके सारे शरीर में रूह हैवानी अर्थात् स्वासा पहुंचती है आठवें अरोदह अर्थात् दक्षिण से और वह जिगरमे उगी है वहभी सबरी शिरयान वरीदीके सिवाय सुपर्ता है और सारे शरीर में रुधिर फैलाना इसका गुण है नवें गाशा अर्थात झिल्ली जोड़ों की रक्षा करना इसका गुण है और इन सब जोड़ों की उत्पत्ति मनी अर्थात बिन्दस है दसवां गोश्त अर्थात मास रुधिर के जमाव से पैदा होताहै और चर्बी रुधिर के पानी से पैदा होतीहै और मास और चर्बी के मताप से मनुष्य मोटा होता है ग्यारहवें खाल और बाल और नख हैं बाज हकीम इनको जानते हैं और बाज रोंगटे जानते हैं और असली जोड़ जिनसे मनुष्योंके माण बचते हैं वह तीन हैं दिल दिमाग और जिगर और जिनसे मनुष्यकी नसल बाकीरहे वे चार हैं अर्थात दिल दिमाग जिगर और इन्द्री पांचवें तबियती कुत से स्वास है रूह अर्थात स्वांस एक अच्छी पवन है जो कि दोषों के अच्छेपन से पैदा होतीहै और स्वांस के तीन भेद हैं दिमाग की स्वांस कि जिसका स्थान मस्तक है और दिली स्वांस कि जिसका स्थान दिलहै और जिगरी स्वांस कि जिसका स्थान जिगरहै और तबियती कुवों में से छटा पराक्रम है और उसके भी तीन भेद हैं एक मस्तकी पराक्रम कि वह मस्तक में है दूसरा दिली पराक्रम कि वह दिलमेंहै तीसरा जिगरी पराक्रम कि वह जिगर में है और जो आदमी के आहार में है जिगरी वल खर्च पड़े उसका नाम गाजिया अर्थात आहारी बल है और जो विलकी अर्थात लबाव चौड़ाव और गहराव में जो खर्च पड़े उसको नामियां अर्थात नामी कहते हैं और जो बिन्दुमात्र खर्च पड़े उसको मुवल्दह अर्थात उत्पन्न करने वाला कहते हैं और इन पराक्रमों के नीचे वल जाजब अर्थात आहार खैंच लेने वाला वल और मासका अर्थात रोकने वाला वल और हाजिमा अर्थात पचानेवाला वल और दाफ़ह अर्थात निकालने वाला वल और मस्तकके पराक्रम के भी दो भेद हैं। मदरका अर्थात स्पर्श और महकहा अर्थात हिलाने वाला। मदरकह जाहिर अर्थात अर्थ पांच मकारके हैं। प्रथम शब्द, दूसरा रूप, तीसरा स्पर्श, चौथा रस, पांचवां गन्ध इनको फारसी में शामा, वसर, जौक़, और लमस कहते हैं। और मदरकह वातिन अर्थात भीतरे अर्थ भी पांच हैं हिस मुश्तर्क, खयाल वहम, मुतखीला और हाफ़िजा और मदरकह के दो भेदहैं बायसा और

क़ायला वायसा वह अर्थ है जो नाना प्रकार के रूपसे प्रकट हो और क़ायला अर्थात कर्म वह पट्ठे में पाई जाती है कि मान्सी ज़ोरसे उसी से तनते और ढीले होते हैं और उस कीचड़से जड़ों को हरकत प्राप्त होती है और क़ायला वायसा के ताबे हैं और तबियती क़ुवों में से मफ़आलक अर्थात कर्म है कर्म के दो भेद हैं कायिक और मानसिक काया में रहे वह कायिक और मनमें रहे वह मानसिक है।

दूसरा अध्याय अवस्थाके प्रकरण में।

अवस्था चार हैं एक बाल अवस्था दूसरी तरुण, तीसरी अधेड़ और चौथी वृद्धाअवस्था है इनमें से पहली बीस वर्ष तक रहती है और दूसरी पैंतालीस वर्ष तक रहती है और बाज़ों की दृष्टि में चालीस वर्ष तक इस अवस्था में गरमी प्रबल रहती है और तीसरी साठ वर्ष तक रहती है इस अवस्था में सर्दी प्रबल रहती है चौथी साठ वर्ष उपरान्त उम्र भर रहती है इस अवस्था में सर्दी बाहरी तरी लिये हुए प्रकृति पर रहती है और पुरुषों की प्रकृति से स्त्री और नपुंसक आदि की ठंडी रहती है

तीसरा अध्याय

सतह असबाबे अर्थात् उन ज़रूरी छः वस्तुओं के वर्णन में जो प्राणों की रक्षा करती हैं उनमें एक पवन ज़रूरी है जिसमें धुआं और अन्धकार न मिला हो वह सबसे अच्छा पवन है और पवन की प्रकृति हर ऋतु में बदलती जाती है और ऋतु चार हैं ग्रीष्म बसन्त हिम वर्षा और हकीमों की दृष्टि में वर्षा और बसन्त डेढ़ २ महीना हैं और ग्रीष्म और बसन्त साढ़े २ चार महीनाहैं बसन्त ऋतु में पवन की प्रकृति गरम तर है और ग्रीष्म में गरम खुश्क है वर्षा में सर्द खुश्क और हिम ऋतु में सर्द तर रहती है हिन्दुस्तान में तीन ऋतु होती हैं ग्रीष्म वर्षा और शिव अर्थात गर्मी वर्षा और जाड़ा इन तीनों मौसिमों के चार चार महीने होते हैं फागुन चैत बैशाख जेठ ये चारों महीने गर्मी के होते हैं बहुधा करके आदि गरमी फागुन से है परन्तु सायंकाल से लेकर प्रातःकाल पर्यंत सर्दी पड़ती है और मध्यान्ह काल में गर्मी रहती है इस महीने में गर्मी और सर्दी से बचा रहना उचित है कि शरीर पीड़ा और रोगों से बचा रहे और गर्मी के दिनों में थोड़ा भोजन करना योग्य है कि शरीर पीड़ा और रोगों से बचा रहे

क्योंकि गर्मी के दिनोंमें अधिक प्यास लगने के सबब ठंडा पानी अधिक पीनेमें आताहै इसलिये पाचन शक्ति निर्बलता को प्राप्त हो जाती है और शीतल वस्तु धारण करना और ठंडे स्थान में रहना योग्य है और वर्षा काल आषाढ़ श्रावण भाद्रपद और आश्विन पर्यंत रहता है बरसात का हाल जुदा २ है जब पानी बरसता है तब लूह चलने लगती हैं इस मौसिममें पवन पानी के बदलाव और पीड़ा सर्दी, गर्मी के कारण शरीर में फुंसियां निकलने लगती हैं और जाड़े का मौसिम कार्तिक से लेकर अगहन पौष माघ तक रहता है जाड़े के मौसिम में पाचनशक्ति विशेष रहती है और भीतर गरमी विशेष रहती है इस मौसममें विशेष भोजन करना अच्छा है और कसरत कुश्ती करना अत्यन्त गुणदायक है और क्षुधाके हकमें यह मौसिम सब मौसिमों से श्रेष्ठ है और गर्मीके मौसिम की आदि में विशेष कर रोग पैदा होते हैं जब तक कि गर्मी पूरी न पड़ने लगे उन छ वस्तुओं में दूसरी वस्तु खाना पीना है जिस आहार से पतला रुधिर पैदा हो उसको पक्का अन्न बोलते हैं और जिससे गाढ़ा उत्पन्न हो उसे कच्चा अन्न बोलते हैं और जिस आहार से निर्विकार रुधिर उत्पन्न हो उसको फारसी में गिज़ा महमूदुल केमूस कहते हैं और जो दोषयुक्त हो उसको रदीयुल मूस कहते हैं अर्थात् बुरा आहार और जिस आहार से बहुतसा रुधिर उत्पन्न हो उसे अच्छा आहार बोलते हैं और जिससे थोड़ा उत्पन्नहो उसे बुरा कहतेहैं अब यह बात जानने योग्य है कि चाहे तो दो दिनमें तीन बार भोजन किया करें अर्थात एक दिन सायंकाल को और प्रात काल दोनों समय और दूसरे दिन मध्यान्ह कालको एक बार भोजन किया करें और कभी भूख में कदापि न खाय और आहार देर तक चिगद २ के खाय कि जल्दी पचजावे और जब दो तीन ग्रास की भूख रहे तब भोजन छोड़कर खड़ा हो जावे कि पचने के समय उदर में अफरा और भारीपन न होवे और हकीम लोग कहते हैं बहुधा रोग शरीर में पेट भरा रहनेसे उत्पन्न होते हैं और भोजनादिक पचने से पहिले मैथुन कसरत कुश्ती और दौड़ आदि किसी तरह का बलवान कृत्य न करे कि यह महा बुरा है और जो विशेष कर चिकना भोजन किया हो उसे नमकीन वस्तु से पचाना उचित है और जो खट्टी वस्तु पान की हो उसके ऊपर मिष्टान्न भोजन करे और जो भोजन के समय हलका भारी भोजन प्राप्त होवे तो प्रथम हलका भोजन

करे पश्चात भारी भोजन करे और पक्की भूख में भूखा न रहे क्योंकि इससे बुरे मवाद पेट में उत्पन्न होते हैं मनुष्य को गेहूं की रोटी और बकरी के बच्चे का मांस अमृत तुल्य आहार है आहार ही नहीं औषधि है आहार और औषधि दोनों का गुण है।

गुण अन्नादिक वृत्तान्त में

अमृत तुल्य आहार मनुष्य के लिये गेहूं है उस में मीठापन विशेष है और शीतलता और उष्णता में बराबर है इस के पीछे चांवल है कि वह भी अच्छापन रखता है जिस चावल में गंध विशेष हो और बारीक हो और रांधने के समय लंबा होजाय वह चांवल सब तरह सब से अच्छा है इन में भी सर्दी गरमी समान होती है परन्तु दूसरे दर्जे में खुश्क है और हिन्दुओं के मत से सर्द है सच मुच गरम प्रकृति वालों को गर्म है और जिनकी प्रकृति ठंडी है उनको ठंड करता है और सुर्ख गदह चांवल अर्थात् सांठी चावल में आहारत्व कम है और अजीर्णांश बहुत है गेहूं की भूसी के पानी में पकाने से उसकी यह बातें जाती रहती हैं। और दोनों के पीछे मूंग है कि फ़ारसी में उसको बन्नोमाश बोलते हैं वह खुश्की के लिये सर्द है और तुरत पचजाती है और बहुत अफरा नहीं लाती इसी वास्ते वैद्य लोग रोगियों को मूंग का यूष देते हैं और फिर चना है उसकी उष्ण प्रकृति है और बूट तर होता है उस में आहारपन विशेष और स्त्री प्रसंग में बलकर्ता है परन्तु वायु कर्ता है इस के पीछे जौ है कि प्रकृति उस की सर्द खुश्क है हलका आहार है अफरा करने वाला और अजीर्णी है एक वर्ष का पुराना जौ और मसूर और अरहर इन सब में मसूर खुश्की लिये तर है और उसका छिलका अरहर के छिलके से गर्म है अरहर की प्रकृति गर्म खुश्क है और वालों की वृद्धि में मसूर के तुल्य है और अफरा मसूर से विशेष है ये दोनों बुरा मवाद पैदा करती हैं और उरद जिसको फारसी में माश कहते हैं उसकी प्रकृति तर है और देर में पचता है उसका नाशन सोंठ और हींग है और मसूर और अरहर से आहारपना विशेष रखता है और इतना अजीर्णपन नहीं रखता और पचजाय तो अपनी लहसदारी के प्रताप से खून और मनी अर्थात् वीर्य पैदा करता है और बाजरे की प्रकृति सर्द और खुश्क है अजीर्ण करने वाला हलका अन्न और रुधिर का पैदा करने वाला है और इसी सबब से मुह में छाले पैदा करता है

और खुश्की और प्यास विशेष लगाता है इसी कारण हिन्दू लोग इसे गर्म कहते हैं इसका नाशक दूध है ज्वार जो सफेद और सुगन्धित हो उसमें अफरा थोड़ा होता है और आहारपन भी अच्छा रखती है परन्तु अजीर्ण उपजाती है मोठ को हिन्दू लोग गर्म और खुश्क बतलाते हैं वह भी सूक्ष्म आहार और अफरा पैदा करती है लोबिया की प्रकृति गर्म है अफरा और गाढ़ा मवाद उपजाता है और देर में पचता है मटर अफरा और बुरा मवाद पैदा करने वाली और दस्तआरी करने वाली है कांगनी मडुआ और अच्छे होते हैं ये तीनों सर्द खुश्क हैं अर्थात् वाय उपजाने वाले सूक्ष्म अन्न हैं इनका नाशक घृत है।

गुण

मावेदार रोटी जो खट्टी न हुई हो बिना मावे की रोटी से अच्छी होती है हलकी और तुर्त पचजाती है और मावेदार देर में पचती है मैदा की रोटी में विशेष आहार पन है और भारी है और चून की रोटी में हलकापन होता है इस से कफ की ग्रन्थी नहीं पड़ती है गरमागरम रोटी भोजन करना उदर की तरी को सोख लेता है और ठंडी रोटी उदर को तर रखती है और जो ठंडी हो न गर्म उसका भोजन करना अच्छा होता है और सूखी रोटी से खुश्की पैदा होती है और देर में पचती है और बाजरे ज्वार की रोटी खुश्क है और देर में पचती है क़बजियत करती है और उदर को हानि कारक है और बाजरे से जौ की रोटी तुर्त पचजाती है परन्तु सर्द खुश्क है और अफरा उपजाती है।

जलपान के प्रकर्ण में

दरिया का पानी सब से अच्छा है इसके पीछे कूए का पानी है तृषा में पानी पीना योग्य है बहुधा भोजन के बीच में हो तथा भोजन के अन्त में हो और भोजन के दो तीन घड़ी पीछे पानी पीना अच्छा होता है भोजन के पीछे उसी समय पानी पीना अथवा बीच में पीना बुरा है परन्तु उस मनुष्य को जिसकी प्रकृति गर्म हो और उदर में उष्णता है पीना आवश्यक है कि भोजन के मध्य में थोड़ा पानी पीलेवे एक संग विशेष पानी न पियें और क्षुधा के समय थोड़ा पानी पिये चूसने की तरह अथवा पानी के बदले शर्बत या थोड़ा आहार खाके जल पिये कि हानि थोड़ी हो और निहार पानी पीना मना है कि दुर्बलता और रोग उत्पन्न करता है और इसी प्रकार प्रातः काल के समय जगते ही पानी पीने से

नजला पैदा होता है और व्यायाम मैथुन और स्नान कर और मेवा भोजन करने के अन्त में पानी पीना हानि कारक है जैसे खर्बूज तर्बूज के ऊपर पानी पीना हानि करता है और हर समय विशेष पानी पीना बुरा है और बिना कलई के तांबे के बासन और सीसे के बासन में पानी पीना योग्य नहीं है और जो देशाटनादि कामों में अनेक प्रकार जल पीना पड़ता है उपद्रव नाश करने को थोड़ी प्यास की साधना करें और जो भांग पीता हो तो उससे भी देशान्तर का पानी नहीं लगता है तीसरे छःों दरकारी वस्तुओं में से सुसुप्त और जाग्रत है चित्त सोना मना है कि उस में नानाप्रकार के स्वप्न आते हैं और मस्तक को हानि करता है जो यह आदत हो तो छोड़ देवे और पट्ट सोना गुण दायक है इस प्रकार से कि मस्तक को तकिये पर इस प्रकार से रक्खे कि मुंह और दोनों नेत्र दायें हो जावें इस प्रकार सोने से अन्नोदक पचजाते हैं और दाहीं बायीं करवट सोना हानि नहीं करता है और प्रात काल निहार सोना नजला पैदा करता है भूखा सोना शरीर को दुबला करता है और धूप में सोना मना है चांदनी में सोना गुणदायक है विशेष सोना सर्दी और तरी का लक्षण है और विशेष जागना गर्मी और खुश्की का लक्षण है और न विशेष सोना न विशेष जागना अच्छा लक्षण है कि विशेष जागना मनुष्य को वृद्ध और तबाह करदेता है और बहुत सोना मांदगी और होश हवास उड़ादेता है उन दरकारी छः वस्तुओं में से चौथी मूत्र पुरीष है अर्थात अच्छे मल को रोकना और बिगड़े मल को गुदा और इन्द्री के द्वारा त्याग करना अच्छा है मनुष्य को एक दिन में दो बार मलका त्याग करना योग्य है और अजीर्ण की हालत में तबसोये और पालक के साग और फिसलान वस्तु आदि से तबियत को साफ़ करे और अजीर्णकारी वस्तुओं से बचता रहे कि अजीर्ण से क्षुधा जाती रहती है और जो दो समय से अधिक दस्त की हाजत हो और दस्त पतला उतरे तो विष्टभी वस्तुओं को काम में लावे हर रूप में जैसा चाहिये वैसा करे ॥

पांचवें भीतरी रोग हैं एक उन में क्रोध और दूसरी प्रसन्नता है इन दोनों में स्वांस को बाहर की तरफ़ हरकत होती है शरीर में गरमी सरदी के चिन्ह मालूम होते हैं दृष्टि में तो शरीर गर्म और भीतर से ठंडा हो जाता है तीसरे डर चौथे सोच इन दोनों से भीतर हरकत हो बाहर शरीर ठंडा भीतर गर्म होता है पांचवें

शर्मिन्दगी इस से स्वास प्रथम तो भीतर की तरफ़ हरकत करता है फिर बाहर की तरफ़ किसी समय बाहर गर्मी और किसी समय भीतर गर्मी इसी प्रकार खिसयाने हुए कभी सुर्ख़ और कभी पीला होजाता है और उन हरकती वस्तुओं में से उठा चाल चलन और चुप चापी है मोतदिल शरीर का चाल चलन जिस्म का गर्म रोमाचों पचाता है और विशेष हरकत ठण्डा करती है क्योंकि उस में से असली गर्मी जाती रहती है और विशेष चुपसे भोजन नहीं पचता है चलना उदर में से भोजन को नीचे उतार देता है।

गुण।

व्यायाम श्राम अर्थात् वह व्यायाम कि जिस के द्वारा शरीर को हरकत प्राप्त है शरीर की दारू है जोड़ों के आलस्य को दूर करता है और रोगों को दूर करता है गदलेपन को पचाता है और तबियत को बल देता है शरीर के आराम का रक्षक है परन्तु सामान्य हो न विशेष हो न थोड़ा हो और मलना दबाना भी एक प्रकार का व्यायाम है कि फुजलों को पचाता है परन्तु विशेष मलने और दबाने से शरीर कृष होजाता है और मातदिल से मोटा होता है मैथुन की क्रिया यह भी शरीर की हरकतों में से है माफ़िक़ का मैथुन जितना कि दरकार हो बल को बलवान करता है और उस की विधि यह है कि भीतर से विशेष चाहना हो और इन्द्री की प्रबलता के समय हो और यह काम बिना तकल्लुफ़ के हो और किसी रूपवती स्त्री का ध्यान न हो और कोई ऐसी वस्तु न दीख पड़े कि जिस से मैथुन को मन चलायमान हो और यह काम इन्द्री की प्रबलता और बिन्दु विशेषता से करना योग्य है क्योंकि हकीमों का यह कथन है कि बूंद मनी की प्राण है कि उस से मनुष्य की उत्पत्ति है इस अमोल मोती का बे समय और निष्फल त्याग करना अयोग्य है और अति मैथुन की हानि लिखने में नहीं आसक्ती जो मनुष्य तरुणता प्रमाद से अति मैथुन करते हैं उसकी अधिकता से तुर्त वृद्धता को प्राप्त होकर अजगात जलत हैं और इतनी स्त्रियों के संग भोग न करे जिस स्त्री का कामदेव जगे नहीं उस स्त्री से, छोटी वृद्ध स्त्री से, रजस्वला से, मलिन से, रोगिणी से, इतनी स्त्रियों के साथ भोग करना उचित नहीं और जो इस काम में नहीं पड़ते और बार बार मैथुन नहीं करते वह उत्तम पुरुष हैं और दो मैथुन के बीच तीन दिन मैथुन न करे और हकीम लोग हर त्याग तीन दिवस छोड़ना अच्छा जानते हैं॥

प्रथम स्नान विधि

ग़रीब मनुष्यों को स्नान मास नहीं इस कारण थोड़ा गुण औगुण स्नान का लिखते हैं बनिस्बत ठण्डे पानी के गरम पानी से स्नान करना अच्छा है और इतने रोग वाला मनुष्य स्नान न करे सर्द प्रकृतिवाला, कफ प्रकृति वाला, नजले वाला, अतिसार वाला, बालक, वृद्धि, भरे पेट वाला और मैथुन के अन्त में तत्काल स्नान करना शरीर को मलीन कर देताहै और बहुत दिनों तक स्नान न करना शरीर को मलीन करदेता है और कान्ति और तेजको घटाता है आहार पचजाने के पीछे स्नान करना अच्छा है और गर्मी की ऋतु में थोड़ा स्नान करना अच्छा है और स्नान के पीछे मैथुन में शरीर को मलवाना अच्छा है और स्नान गर्म पानी से हो अथवा शीतल से हो पट्ठों को ढीला और निर्बल करदेता है कि गर्म जल से त्वचा और पट्ठों को ढीला करदेताहै शीतल जल से पट्ठों में शीत बढ़जाती है क्योंकि उनकी प्रकृति सर्द है इसी प्रकार से बहुधा हिन्दू लोगों के पट्ठे और गुर्दों में निर्बलता के लक्षण मिलते हैं कि वह हरदम स्नान करते रहते हैं तरुणता की गर्मी के प्रताप से हानि थोड़ी मालूम पड़ती है परन्तु जब वृद्ध अवस्था होती है तब यह चिन्ह प्रत्यक्ष होजाते हैं और कामदेव की चैतन्यता दूर होजाती है और हिन्दू लोग दिन भर में कितनी ही बार स्नान करते हैं शौच बाधा के पीछे स्नान करते हैं उन के शरीर को यह स्नान बहुत हानि करता है।

चौथा अध्याय नाड़ी के प्रकर्ण में

विद्यार्थियों को नाड़ी का बोधहोना बड़ा कठिन है वैद्यों को तो नाड़ी का बोध है ही नहीं इसलिये जरूरत के सबब मन की प्रेरणा से जिक्र करता हूं।

नाड़ी चलने वाली नसों की चालहै उससे शरीर का दुःख सुख प्रगट होजाता है नाड़ी उस समय देखे जब रोगी प्रसन्न मन हो रिस न हो व्यायाम न करता हो दौड़ता न आया हो कोई आदत न त्यागी हो कमसे कम नाड़ीकी १२ हरकतों तक नाड़ी पर हाथ रखना योग्य है जो नाड़ी लम्बाव में चार अंगुल से विशेष हो और उसके बड़बड़ाव की चोट उंगलियों को मालूम पड़े और जल्दी२ चले स्पर्श में गरम हो तो जानलो कि नाड़ी गर्मी की है और जो लम्बाव उसका कम हो और बड़बड़ाट नहो और मद्धगति चले और स्पर्श में शीतलता मालूम हो वह नाड़ी सर्दी की है। और जो उंगलियों की चौड़ाई में चाल उस की विशेषता को प्राप्त हो तो वह नाड़ी चौड़ी है औरत की नाड़ी वह है जिस को उंगलियों से दबाने से

स्पर्श में नर्माई मालूम दे और जो इस के खिलाफ हो वह सुरकी की नाड़ी है और निरोग की नाड़ी एक सी चला करती है और जो एक चाल पर न हो वो दोष युक्त नाड़ी है और जो नाड़ी हिरन की उछलनी चाल के समान हो वह शिक्षाली है जो खहर के तुल्य हो वह मौजी है कामार पुरुष की और भयभीत की नाड़ी वादिए चलती है और मन्दाग्नि वाले और क्षीण धातु वाले पुरुष की नाड़ी महामेद घटीसी चलती है यह सब भेद बुरी और निर्बलताके हैं और स्त्रियों की नाड़ी से पुरुष की नाड़ी बलवान होती है और बच्चों की नरम चलती है और तरुण पुरुषों की नाड़ी चौड़ाव और लंबाव में विशेष होती है और वृद्ध और बलहीन पुरुषों की नाड़ी सुस्त चलती है।

पांचवां अध्याय मूत्र परीक्षा के प्रकर्ण में

रोगी का मूत्र शीशे में डालकर इस प्रकार परीक्षा करते है। याही से इस का नाम क़ारूरा पड़गया है यह बात जानने के योग्य है कि मूत्र परीक्षा में यह बात होनी चाहिये कि प्रातः काल चार घड़ी के तड़के रोगी को उठाकर कांच की शीशी में मुताबे और उस बासन को ढककर रक्खे सूर्य उदय के पीछे वैद्य उस की परीक्षा करे और रोगी ने सोने के पीछे पानी न पीया हो और कोई ऐसी वस्तु न खाई हो, जिसके कारण मूत्र रंगीन होजाय और जागने, क्रोध करने, मैथुन और मदिरापान से मूत्र की रंगत बदल जाती है और जो मूत्र कि देर तक रक्खा रहा वह परीक्षा के योग्य नहीं है। मूत्र पीला हो तो पित्त दोष जानिये लाल हो तो रुधिर दोष जाने सफेद होतो कफ दोष जाने हरा हो तो सर्दी मान्स के धुओं के सदृश हो तो निर्बलता, दूध के समान हो तो जोड़ खुल गये जाने और जो मवाद पकगया हो तो प्रथम पतला अथवा गाढ़ा और फिर इकसार हो जावे और ज्वर में मूत्र सदैव गाढ़ा रहना बुरा है पतला मूत्र सर्दी का लक्षण है गाढ़ापन दोष की प्रबलता का लक्षण है सर्द प्रकृति वाले के मूत्र में दुर्गंधि नहीं होती और जो दोष सड़जाय तो दुर्गंधि विशेष हो और जो एकसा मूत्र हो तो नैरोग्यता का लक्षण है जो मूत्र में झाग विशेष हों और देर तक रहें तो वाय का लक्षण है, और जो सन अथवा छीछड़े या तारे या बालू अथवा चर्बी के सदृश कोई चीज़ मूत्र में पाई जाय तो असाध्य जानिये चर्बी जोड़ों के खुल जाने और पीब भीतर फोड़े के फूट जाने, बालू मसाने या

गुर्दे में और पथरी होजाने और तर मल की कचाई और छीछड़े जिगर की निर्बलता वा मसाने जरबा और सत्तू वा भूसी मसाने की खुजली का लक्षण है पुरुषों के मूत्र से स्त्रियों का मूत्र सफ़ेद और गाढ़ा होता है और गर्भिणी स्त्री का साफ़ होता है और गर्भ के आदि में पतला होता है और अंत में कळोंस लिये कीचड़ सा होता है और वृद्धों का मूत्र तर प्रकृति के प्रताप करके गाढ़ा होता है ॥

गुण ।

मिश्रानी वैद्यों में मूत्र परीक्षाकी यह विधि है कि मूत्रको प्याले में भर के एक बूंद तिल के तेल की उस में डालते हैं, जो वह बूंद मूत्र पर फैल जाय तो साध्य जानिये और बीमार अच्छा हो जायगा और जो बूंद मूत्र पर न फैले और स्थिर रह जाय तो रोगी को कष्टसाध्य जानिये, और जो बूंद मूत्रमें डूब जाय या चक्र की तरह घूमने लगे तो रोगी अवश्य मरजाय । और जिस रोगी के मूत्र में बूंद पड़ते ही छिद्रहो जाय तो वह रोगी अवश्यही मरजायगा। और जो बूंद मूत्रमें तालाबके सदृशहो जाय तो रोगकी वृद्धि जानिये । जो बूंद मूत्र में पूर्व को चले तो नैरोग्यता, दक्षिण पश्चिमको चले तो रोग वृद्धि और जो उत्तर दक्षिण को चले तो कष्ट साध्य के लक्षण हैं और जो पीला साफ़ मूत्रहो तो पित्तके लक्षण हैं और जो पीला सुर्खी लिये हो तो द्वंद्व के लक्षण जानिये परन्तु पित्त प्रबल है और जो मूत्र की विशेषता हो तो और उस में थोड़ी सफ़ेदी हो तो और बकरी के मूत्र की सी बास आवे तो अजीर्ण रोग जानिये और मांसके धुआं के सदृशहो तो हृदय और गुरदे का रोग जानिये और जो कुदरू गोंद या तेल सदृश मूत्र हो और तेल के से दाने मालूम पड़ें तो जानिये कि सोथ अर्थात वरम और शरीर की असाध्यता तथा जवर रोगका मूत्र है और जो मूत्र मिश्री के सदृशहो तो काम और स्वास रोग जानिये और जो मूत्र केसर सा पीला हो तो रुधिर विकार जानिये और मूत्र अग्नि के समान गर्म हो तो सरसाम अर्थात मस्तकके सोथका रोग जानिये और जो मूत्र पीला और साफ़ हो तो जिगर रोग जानिये और जो मूत्र स्याही लिये पीलाहो तो जिगर में गर्मी जानिये और जिसका कुएके पानी के सदृश मूत्र उतरे उस को लिंग रोग जानिये ।

छठा अध्याय मल के अहवाल में

शुद्ध मल वह है जो न तो गाढ़ा हो और न पतलाहो और जिसमें घरघराट

न हो अर्थात् जिस में वायु का शब्द नहो और मल त्याग के समय भी शब्द नहो मल का रंग मूत्र के रंग के समान होता है और जिस मलमें आहार से पतलापन और लेस विशेष हो तो मल की अधिकता जानिये अथवा अजीर्ण जानिये । यह ज्वर में कष्ट साध्य है, जिसमें बास विशेष हो उसे बिगड़ा मल जानिये ।

सातवां अध्याय मुसहिल अर्थात् विरेचन की विधि में

प्रथम पुरुष को विधि पूर्वक मुंजिस दे अर्थात् पहिले मल को फुलावे कि मूत्र बराबरी पर आजाय और मुसहिल उसे कहते हैं कि नसों, जोड़ों और रगों से मलको निकाले और जो उदर आंत और उनके इर्द गिर्द के मवाद को निकाले उसका नाम मलैयन है जुल्लाब में पहले मुंजिस देते हैं और मलैयन में नहीं देते एक दिन में दो जुल्लाब न दे और विरेचन की औषधि पीते समय नाक बंद करले कि उसकी बास से मन में ग्लानि न आजाय जिससे वमन होजाय और दोनों बांहों को कसकर बांधे और सुगंधादिक सुंघावे और इलायची पोदीना और लोंगका चाबना वमन को रोकता है और अच्छे प्रकारसे जुल्लाब न होने पर्यन्त न तो कुछ पान करे और न सोवे और मीठा जुल्लाब न पीवे गुन-गुने पानी से हाथ धोवे और कड़ा जुल्लाब ले और वह पचजाय और बावलेपन या अचेतीका रोग होजाय तो तुरन्त वमन करडाले बुरे जुल्लाब से अत्यन्त हानि है जैसे बुरे फस्द से और रोगी निर्बल हो तो एक दो दिन बीच में छोड़कर जुल्लाब दे ताकि दस्तों की विशेषता से रोगी घबरा न जाय और जुल्लाब के दिन ठंढ से बचा रहे जिस मनुष्य की खुश्क प्रकृति हो उसको और वृद्ध तथा बच्चों को कड़ा जुल्लाब देना योग्य नहीं और जुल्लाब के ऊपर गोलियां फकी पकादिक गुनगुना सोंफ का अर्क और गर्म पानी पीना दस्तों की प्रबलता के लिये अच्छा होता है और काहे के जुल्लाब पर सोंफ का ठंढा अर्क पीना योग्य है, जुल्लाब के पीछे गरम प्रकृति वाले को ईसब गोल और सर्द प्रकृति वाले को रैहां के बीज और कोई बीज पीना योग्य है और जुल्लाब की कोई दवा ऐसी नहीं है जो एक मवाद के सिवाय दूसरे को न निकाले और जो औषधि पित्त अथवा कफ अथवा बात निकालने के योग्य है वह औषधि उस मवाद से विशेष मवादों को निकाल लेती है जानना चाहिये कि याजे निरोगी मनुष्य की

अपने आराम के लिये हर वर्ष जुल्लाब लेते हैं और बाजे छटे महीना लेते हैं परन्तु यह आदत अच्छी नहीं होती है रोग निवारण के लिये जुल्लाब लेना योग्य है और जो ऐसी आदत पड़ गई हो तो धीरे २ छोड़ देना योग्य है क्योंकि प्रकृति भी दूसरी तबियत है।

पित्त पकाने की औषधि

कासनी की जड़, नीलोफ़र, खतमी की जड़, खुब्बाजी के बीज, कालीभांप, बनफ़शा, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, पित्त पापड़ा, गुल खैरू की मुंजिम तीन रोज देने से पित्त पकजाता है परन्तु निरा पित्त ही हो और दोष युक्त पित्त पांच दिवस में पकता है।

कफ़ पकाने की औषधि

सोंफ़ की जड़, मुनक्का, मकोय, काली भांप, गावजबां, बलीलोटन, बसफायज, मुलहटी, गदस, अजमोद, देखकिम, अनीसू, शुकाई, अस्तखुद्दूस इन से ९ दिन में कफ़ पकजाता है। अत्यन्त गाढ़ा कफ ११ वा १२ दिन में और पतला ५ दिन में पकता है।

वाय पकाने की औषधि

बलीलोटन, गावजबां, विहसोड़े, कासनी की जड़, सोंफ़, पित्तपापड़ा, उन्नाव, उस्तखुद्दूस, कालीभांप, मुहक्वी, अंजीर, बिस्फायज से वाय पंदरह दिन में पकती है और कभी २ पंदरह दिन से कम व जियादा दिन भी लगते हैं।

पित्त के जुलाव की औषधि

बड़ी हड़का बक्कल, इमली आलूबुखारा अफसन्तीन सकूमूनियां और गुलाब के फूल मगर बे भुना सकूमूनियां न लेवे।

कफ़ के जुल्लाब की औषधि

इन्द्रायन के फलका गूदा माई जोहरज गारीकून काल्लादाना निसोत और अमलतास।

वाय के जुल्लाब की औषधि

कायलीहड़ कालीहड़ अमलबेद हिजर लाजवर्द गेरू गारीकून काल्लादाना अमलतास और सनाय।

रुधिर विकार की औषधि

कासनी की जड़ खीरा ककड़ी के बीज उन्नाब अजवार केवड़े की जड़

वर्मूतंका पानी बनफशा इमली खट्टा शहतूत ईसब गोल काहू पित्तपापड़ा और खाकसी हलका जुलाब बाहरी और भीतरी सब रोगों को गुण दायक है और विशेष प्रकृतियों को माफ़िक़ और योग्य है यहां तक कि गर्भिणी स्त्री बालक और वृद्धों को भी देते हैं ज्वर और सूजन को भी गुणकारी है वाय पित्त और कफादिक सब दोषों को माफ़िक़ है जितना चाहे अमलतास ले और गुलाब अथवा गर्म पानी या सौंफ का अर्क या कासनी का अर्क या मकोय के अर्क में मले और थोड़ा बादाम रोगन मिला लेवे तो अच्छा, नहीं तो घी डालकर थोड़ा गुलकंद या शीरखिश्त या तुरंजबीन से मीठा करे और गुलबनफ़शा मुनक्का उन्नाब और गावजबां औटाकर थोड़ासा गुलकंद उसी अमलतास में मिलावे अच्छा है और दूध पीते बच्चों के लिये बादाम रोगन मिलाना अच्छा नहीं और शूल के रोगों में मुसिल दरकार नहीं है।

आठवां अध्याय फ़स्द के प्रकर्ण में

फ़स्द से सब दोषों का निवरण होता है परन्तु सबों से रुधिर अधिक निकलता है बारह वर्ष से कम उम्रवाले का रुधिर कढ़ाना अच्छा नहीं इस से बाद बल देखकर रुधिर निकलवावे परन्तु शास्त्रों ने साठ वर्षकी उम्र के पीछे फ़स्द की मनाई की है फ़स्द के पीछे लेट रहे मगर सोवे नहीं और फ़स्द के पीछे उस दिन हलका और अच्छा भोजन करे सख्त भोजन न करे। फ़स्दके पीछे शीरा या ठंडाई न पिये परन्तु गरम प्रकृति वाले को ठंडाई पिलाना अच्छा है और सर्द प्रकृति वाले को गर्म वस्तु देना अच्छा है परन्तु वे क्षुधा कुछ न दे थोड़ा रुधिर निकलने से दोष उथल उठता है और ज्वर आजाता है उस समय रुधिर कढ़वाना योग्य है और जिस मनुष्य की फ़स्द के पीछे चैतन्यता जाती रहे तो उस के कण्ठ में मुर्ग का पर डालकर वमन करावे और फ़स्दकी फ़ाल अर्थात् सरेरु और फ़स्द हब्लुलमता के एक नस है ऊपर को गयी है मस्तक और गले को पाक करती है और बराल की नसकी तरफ़ शरीर की कोठी और नीचे शरीरको गुणदायक है हफ़्तअन्दाम सब शरीर को पाक करती है। बासलीक को बड़ी धीरता से खोले कि जिसके नीचे रुधिर की नसें हैं असली नस कि बासली की शाखें हैं अगर रोगों के लिये दाहिनी तर्फ़ से खोले तिल्ली और दिल के रोगों में बाईं तरफ़ से खोले परन्तु विशेष रुधिर उसमें से न निकाले और लिलाट दस्के नसकी फ़स्द मस्तक पीड़ा और नेत्र रोगोंको गुणदायक है और

दोनों हाठों क नीचे की चारों नसों की फस्द जा होठोंके भीतर खोली जाती है मुंह के घावों को गुणदायक है और जीभके नीचे की फस्द कठकी फुंसियों को गुणदायक है और पिंडली की नसकी फस्द, जांघके नीचे की नसकी फस्द स्त्रोधर्म जारी करने, बवासीर के रोग टांग और जांघ की पीडाको गुणदायक है और विकारी रुधिर निकालने के वास्ते जो फस्द खोले जब तक काला २ बुरी भांति का रुधिर निकले तब तक बद न करे जो फस्द खोले और रुधिर बद नहो तो मकड़ी का जाला या गाय की कच्ची खाल उसपर बांधे और जा सूजन मालूम हो लाल और सफेद चन्दन और रसौतका उसपर पतला २ लेप करे।

नवां अध्याय हजामत अलक अर्थात् पछने और सींगी के और जोकों के प्रकर्ण में.

जो बालकों को फस्द की बराबर है दो वर्ष से छोटे बालकके पछने लगाना योग्य नहीं साठ वर्ष के बाद भी पछने न लगावे,पछने के भेद हैं एक तो अकेली सींगी जो बिना पछनों के दोषको नहीं खींच सक्ती और निरी जोकों के लगाने की है और दूसरी पछने देकर सींगी लगाना यह निरी जोक और त्वचा के शुद्ध करने के लिये उत्तम है और पिंडलियों में सींगी लगाना फ़स्द बासलीक और साफन के तुल्य है त्वचा के रोगोंमें जोकोंका लगाना उत्तम है परतु जैसा दोष देखे वैसी जोंक लगावे कम जियादा न लगावे बाजी जोंक विष की भरी होती है वह बड़ी और उस पर काली हरी लकीर होती है और जो जोंक छुड़ाने के बाद खून बहे उसपर मुक्लिम महीन कूट छानकर बांधे।

दसवां अध्याय दोषादि की प्रबलता के लक्षणों के प्रकरण में

जिस मनुष्यका मुंह मीठा रहे चहरा नेत्र और मूत्र लाल हो मस्तक और शरीर भारी रहे शरीर में फुंसियां निकलें नाक और मसूड़ों से रुधिर निकले उसका रुधिर प्रबल जाने और जिस मनुष्य के मुंह नेत्र और जीभ तथा मूत्रका रङ्ग पीला पड़जाय और मुंह में कड़वाहट तथा नाक में खुश्की और खरखराहट पाया जाय निद्रा जाती रहे जलन विशेष हो तो पित्त को प्रबल जाने और जिस मनुष्य के चहरे, नेत्र, जीभ और मूत्रका रग सफ़ेद हो शरीर और त्वचा ढीली पड़ जाय मुंह और नाक ठढी रहें और नाक से पानी टपका करे तृषा जाती रहे निद्रा विशेष आवे मुंह फीका रहे तो जानिये इसको कफ की प्रबलता है और जिस

मनुष्य का रंग रूप काला पड़जाय और मूत्र में स्याही आजाय जलन उत्पन्न हो बदन रूखा और दुबला होजाय मुंह खट्टा रहे नींद भारी रहे थकजाय क्षुधा मन्द और मूत्र गाढ़ा होजाय तो जानिये कि वाय प्रबल है। और यह भी जानने योग्य है कि शरीर का मोटापन और रंगकी सफेदी कफका लक्षण है, रंग पीला पड़जाय और शरीर दुबला होजाय तो पित्त प्रकृति का लक्षण जानिये रंग लाल और शरीर मोटा हो तो रुधिर प्रकृति जानिये, काला रंग और दुबलापन वाय प्रकृति का लक्षण है, दुबलापन खुश्की का लक्षण है। मोटापन तरीका लक्षण है, घूघरवाले बाल होना गर्मी का चिन्ह है, साधारण और थोड़े बालोंका होना सर्दी का लक्षण है, और प्रत्येक अवस्था का ज्ञान लेना उस अवस्था की प्रबलता का लक्षण है बुद्धिमानी के साथ शीघ्र बात करना तेजी का लक्षण है जड़ता तथा लज्जा का होना सर्दी का लक्षण है और मूछों में विशेष रंग होना गर्मी का लक्षण है और इससे पृथक सर्दी की विशेषता का लक्षण है रोमांच की विशेषता सर्दी का लक्षण है और कमी गर्मी का लक्षण है।

ग्यारहवां अध्याय प्राण रक्षा के वर्णन में

रक्षा करना गई हुई आरोग्यता को फेर लाने से उत्तम है। प्राण रक्षक को उचित है कि उन हानि कारक वस्तुओं से जो आगे लिखी जाय बचता रहे। और प्राणों का मिजवान रहे उस वस्तु पर मन न चलावे जो त्याग के योग्य है। उसका त्याग करदे बहुधा रोग और क्षीणता की अवस्था में जो वस्तु कि काम में लाने के योग्य है उसका त्याग न करे और किसी वस्तु का अभ्यास न डाले कि अभ्यास दूसरा मन होता है व्यायाम में भी प्राणों की रक्षा होती है और फुजल का पचाव होता है और क्षुधा लगती है व्यायाम करना भी बहुत अच्छा है और थोड़े से रोग में भारी औषधि न करे और जो तबियत आहार को चाहे तो आहार कर जहां आहार से काम निकले वहां औषधि न करे और जब तक एक औषधि से काम निकले दूसरी न करे इसी प्रकार जब दो औषधि से काम निकले तीसरी का नाम न ले और हलकी औषधि शुरू करे।

गुण

चिकित्सा तीन प्रकार से होती है एक आहार से दूसरी औषधि से और

तीसरी दस्तकारी यानी चीर फाड़ आदि से उन छ वस्तुओं में से जिनमें आहार भी शामिल है काम में लाना नाम विधि का है । कभी आहार का त्याग करना पड़ता है जैसे दौरान में थोड़ा आहार करना पड़ता है जो थोड़ा बल रखना चाहे तो और बल आहार के द्वारा होता है आहार की तोल में कमी की उस समय जरूरत है जिस समय अजीर्ण हो और आहार की कमी की उस समय जरूरत होगी जिस समय क्षुधा तो विशेष हो और नसों में दोष भी अत्यन्त हो आहार पराक्रम का मित्र होता है और शत्रु भी है इस प्रकार कि वह रोगों को बल देता है और रोग मनुष्य का शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है तब रोगों में उतना ही आहार उचित है जितना हानि कारक नहो औषधि से चिकित्सा करने के तीन भेद हैं एक औषधि की मात्रा दूसरी उसकी कैफ़ियत अर्थात् गर्मी सर्दी तरी और खुश्की की पहचान तीसरे रोग का समाधान कि चारों समय में से कौनसा है और चार समय यह है सूजन के चढ़ाव के आदि में और उतार के अन्त में जो सूजन का चढ़ाव हो तो उन औषधियों को काम में लावे जो दोष को रोकें और सूजन पटक जाने के बाद पचाव वाली औषधियों को काम में लावे । और सूजन के चढ़ाव में दोष पचाने वाली औषधि काम में लावे ।

छहों ऋतुओं में हड़ खाने की विधि

जो एक वर्ष पर्यन्त इस प्रकार हड़का सेवनकरे तो शरीर आरोग्यता को प्राप्त हो और सदैव निरोग रहे चैत्र और वैशाख में शहद के संग ज्येष्ठ आषाढ़ में मुनक्का दाख के साथ श्रावण भादों में सैंधे लवण के साथ आश्विन कार्तिक में बराबर की मिश्री के साथ अगहन पौष में बराबरकी सोंठ के साथ और माघ फाल्गुण में तीन नग पीपलों के साथ साढ़े तीन माशे की मात्रा सेवन करे तो उस मनुष्य को ईश्वर कृपा से कभी रोग और अजीर्ण नहो ।

दूसरा मिक़ाला इलाज सुदाअ यानी दर्देसिर के बयान में

अर्थात दूसरा खण्ड मस्तक पीड़ा के प्रकरण में जो पीड़ा आधे मस्तक में हो उसे आधासीसी और फ़ारसी में सक़ीम कहते हैं यदि रुधिर कफ़ बात और पित्त यह चारों मिले हों तो सन्निपात की मस्तक पीड़ा जानना चाहिये इसको फ़ारसी में माद्दी कहते हैं । और जो इनमें से कोई न हो तो दोषाता की मस्तक

पीड़ा है फ़ारसी में उसे साजिज कहते हैं। और जो धूप अथवा गरम ब्यार या अग्नि या गरम औषधि की गर्मी के कारण हो उसे फ़ारसी में साजिज हार कहते हैं। जो ठंडी हवा या ठंडा पानी काम में लाने अथवा ठंडे मकान में रहने से हो तो उसको फ़ारसी में साजिज़ सरद कहते हैं।

पित्त की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्य का मस्तक अग्नि के सदृश जले ठंडी वस्तु से आराम और गर्म से दुःख हो तो जानना चाहिये कि पित्त की मस्तक पीड़ा है।

कफ़ की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्यका शरीर शिथिल और ठंडा रहे और जलन न हो गर्म वस्तु-ओं से सुख और सर्द से दु:ख हो तो जानना चाहिये कि कफ की मस्तक पीड़ा है।

वात की मस्तक पीड़ा का लक्षण

एक स्थान से दूसरे स्थान में मस्तक पीड़ा तथा कान में शब्द मालूम हो तो वात की जानिये।

चिकित्सा

जो रुधिर प्रबल हो तो फ़स्द खोले और कफ़ वा पित्त वा वात से हो तो जुल्लाब से शुद्ध करे।

अब यहां थोड़े से नुसखे मस्तक पीड़ा और आधासीसी के लिखते हैं।

इतरीफल कशनीजी जो मस्तक पीड़ा भौंएं और नेत्र रोगों को गुणदायक है

बड़ी हड़का बक्कल, काबली हड़, काली हड़ और धनिया प्रत्येक एक तोला कूट छान कर घी में भकोरे फिर तिगुन शहद की चाशनी में मिलाकर माजून अर्थात् पाक बनावे मात्रा दो तोले।

इतरीफल मुलैयन

जो प्रकृति को नर्म करे और बिगड़े मल को निकाले और मस्तक को शुद्ध करे। और मस्तक पीड़ा तथा कानों के भिनभिनाहट और आंखों की अंधेरी को गुणदायक है।

तीसरी दस्तकारी यानी चीर फाड़ आदि से उन छ: वस्तुओं में से जिनमें आहार भी शामिल है काम में लाना नाम विधि का है। कभी आहार का त्याग करना पड़ता है जैसे दौरान में थोड़ा आहार करना पड़ता है जो थोड़ा बल रखना चाहे तो और बल आहार के द्वारा होता है आहार की तोल में कमी की उस समय जरूरत है जिस समय अजीर्ण हो और आहार की कमी की उस समय जरूरत होगी जिस समय क्षुधा तो विशेष हो और नसों में दोष भी अत्यन्त हो आहार पराक्रम का मित्र होता है और शत्रु भी है इस प्रकार कि वह रोगों को बल देता है और रोग मनुष्य का शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है तब रोगों में उतना ही आहार उचित है जितना हानि कारक नहो औषधि से चिकित्सा करने के तीन भेद हैं एक औषधि की मात्रा दूसरी उसकी कैफ़ियत अर्थात् गर्मी सर्दी तरी और खुश्की की पहचान तीसरे रोग का समाधान कि चारों समय में से कौनसा है और चार समय यह है सूजन के चढ़ाव के आदि में और उतार के अन्त में जो सूजन का चढ़ाव हो तो उन औषधियों को काम में लावे जो दोष को रोकें और सूजन पटक जाने के बाद पचाने वाली औषधियों को काम में लावे। और सूजन के चढ़ाव में, दोष पचाने वाली औषधि काम में लावे।

छहों ऋतुओं में हड़ खाने की विधि

जो एक वर्ष पर्यन्त इस प्रकार हड़का सेवनकरे तो शरीर आरोग्यताको प्राप्त हो और सदैव निरोग रहे चैत्र और वैशाख में शहद के संग ज्येष्ठ आषाढ़ में मुनक्का दाख के साथ श्रावण भादों में सेंध लवण के साथ आश्विन कार्तिक में बराबर की मिश्री के साथ अगहन पौष में बराबरकी सोंठ के साथ और माघ फाल्गुण में तीन नग पीपलों के साथ साढ़े तीन माशे की मात्रा सेवन करे तो उस मनुष्य को ईश्वर कृपा से कभी रोग और अजीर्ण नहो।

दूसरा मिक़ाला इलाज सुदाअ
यानी दर्दसिर के बयान में

अर्थात दूसरा खण्ड मस्तक पीड़ा के प्रकरण में जो पीड़ा आधे मस्तक में हो उसे आधासीसी और फ़ारसी में सक़ीम कहते हैं यदि रुधिर कफ़ वात और पित्त यह चारों मिले हों तो सन्निपात की मस्तक पीड़ा जानना चाहिये इसको फ़ारसी में माद्दी कहते हैं। और जो इनमें से कोई न हो तो सीघ्रता की मस्तक

पीड़ा है फ़ारसी में उसे साजिज कहते हैं। और जो धूप अथवा गरम ब्यार या अग्नि या गरम औषधि की गर्मी के कारण हो उसे फ़ारसी में साजिज हार कहते हैं। जो ठंडी हवा या ठंडा पानी काम में लाने अथवा ठंडे मकान में रहने से हो तो उसको फ़ारसी में साजिज बरद कहते हैं।

पित्त की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्य का मस्तक अग्नि के सदृश जले ठंडी वस्तु से आराम और गर्म से दुःख हो तो जानना चाहिये कि पित्त की मस्तक पीड़ा है।

कफ़ की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्यका शरीर शिथिल और ठंडा रहे और जलन न हो गर्म वस्तुओं से सुख और सर्द से दुःख हो तो जानना चाहिये कि कफ़ की मस्तक पीड़ा है।

वात की मस्तक पीड़ा का लक्षण

एक स्थान से दूसरे स्थान में मस्तक पीड़ा तथा कान में शब्द मालूम हो तो वात की जानिये।

चिकित्सा

जो रुधिर प्रबल हो तो फ़स्द खोले और कफ़ या पित्त वा वात से हो तो जुल्लाब से शुद्ध करे।

अब यहां थोड़े से नुसखे मस्तक पीड़ा और आधासीसी के लिखते हैं।

इतरीफल कशनीजी जो मस्तक पीड़ा भौंएं और नेत्र रोगों को गुणदायक है

बड़ी हड़का बकल, काबली हड़, काली हड़ और धनिया प्रत्येक एक तोला कूट छान कर घी में अकोरे फिर त्रिगुन शहद की चाशनी में मिलाकर माजून अर्थात् पाक बनावे मात्रा दो तोले।

इतरीफल मुलैयन

जो प्रकृति को नर्म करे और बिगड़े मल को निकाले और मस्तक को शुद्ध करे। और मस्तक पीड़ा तथा कानों के भिनभिनाहट और आंखों की अंधेरी को गुणदायक है।

तीसरी दस्तकारी यानी चीर फाड़ आदि से उन छ वस्तुओं में से जिनमें आहार भी शामिल है काम में लाना नाम विधि का है। कमी आहार का त्याग करना पड़ता है जैसे दौरान में थोड़ा आहार करना पड़ता है जो थोड़ा बल रखना चाहे तो और बल आहार के द्वारा होता है आहार की तोल में कमी की उस समय ज़रूरत है जिस समय अजीर्ण हो और आहार की कमी की उस समय ज़रूरत होगी जिस समय क्षुधा तो विशेष हो और नसों में दोष भी अत्यन्त हो आहार पराक्रम का मित्र होता है और शत्रु भी है इस प्रकार कि वह रोगों को बल देता है और रोग मनुष्य का शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है तब रोगों में उतना ही आहार उचित है जितना हानि कारक नहो औषधि से चिकित्सा करने के तीन भेद हैं एक औषधि की मात्रा दूसरी उसकी कैफ़ियत अर्थात् गर्मी सर्दी तरी और खुश्की की पहंचान तीसरे-राग का समाधान कि चारों समय में से कौनसा है और चार समय यह है सूजन के चढ़ाव के आदि में और उतार के अन्त में जो सूजन का चढ़ाव हो तो उन औषधियों को काम में लावे जो दोष को रोकें और सूजन पटक जाने के बाद पचाव वाली औषधियों को काम में लावे। और सूजन के चढ़ाव में दोष पचाने वाली औषधि काम में लावे।

छहों ऋतुओं में हड़ खाने की विधि

जो एक वर्ष पर्यन्त इस प्रकार हड़का सेवनकरे तो शरीर आरोग्यताको प्राप्त हो और सदैव निरोग रहे चैत्र और वैशाख में शहद के संग ज्येष्ठ आषाढ़ में मुनक्का दाख के साथ श्रावण भादों में सैंध लवण के साथ आश्विन कार्तिक में बराबर की मिश्री के साथ अगहन पौष में बराबरकी सोंठ के साथ और माघ फाल्गुण में तीन नग पीपलों के साथ साढ़े तीन माशे की मात्रा सेवन करे तो उस मनुष्य को ईश्वर कृपा से कभी रोग और अजीर्ण नहो।

दूसरा मिक़ाला इलाज सुदाअ
यानी दर्दसिर के बयान में

अर्थात दूसरा खण्ड मस्तक पीड़ा के प्रकरण में जो पीड़ा आधे मस्तक में हो उसे आधासीसी और फ़ारसी में सकीम कहते हैं यदि रुधिर कफ़ वात और पित्त यह चारों मिले हों तो सन्निपात्र की मस्तक पीड़ा जानना चाहिये इसको फ़ारसी में माद्दी कहते हैं। और जो इनमें से कोई न हो तो क्षीणता की मस्तक

पीड़ा है फ़ारसी में उसे सामिज कहते हैं। और जो धूप अथवा गरम ब्यार या अग्नि या गरम औषधि की गर्मी के कारण हो उसे फ़ारसी में साभिज हार कहते हैं। जो ठंडी हवा या ठंडा पानी काम में लाने अथवा ठंडे मकान में रहने से हो तो उसको फ़ारसी में साभिज बरद कहते हैं।

पित्त की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्य का मस्तक अग्नि के सदृश जले ठंडी वस्तु से आराम और गर्म से दुःख हो तो जानना चाहिये कि पित्त की मस्तक पीड़ा है।

कफ़ की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्यका शरीर शिथिल और ठंडा रहे और जलन न हो गर्म वस्तुओं से सुख और सर्द से दुःख हो तो जानना चाहिये कि कफ की मस्तक पीड़ा है।

वात की मस्तक पीड़ा का लक्षण

एक स्थान से दूसरे स्थान में मस्तक पीड़ा तथा कान में शब्द मालूम हो तो वात की जानिये।

चिकित्सा

जो रुधिर प्रबल हो तो फ़स्द खोले और कफ़ या पित्त या वात से हो तो जुल्लाब से शुद्ध करे।

अब यहां थोड़े से नुसखे मस्तक पीड़ा और आधासीसी के लिखते हैं।

इतरीफल कशनीजी जो मस्तक पीड़ा भौंऐ और नेत्र रोगों को गुणदायक है

बड़ी हड़का बक्कल, काबली हड़, काली हड़ और धनिया प्रत्येक एक तोला कूट छान कर घी में भकोरे फिर तिगुन शहद की चाशनी में मिलाकर माजून अर्थात् पाक बनावे मात्रा दो तोले।

इतरीफल मुलैयन

जो प्रकृति को नर्म करे और बिगड़े मल को निकाले और मस्तक को शुद्ध करे। और मस्तक पीड़ा तथा कानों के भिनभिनाहट और आंखों की अंधेरी को गुणदायक है।

विधि

काबली हड़ का बक्कल, बड़ी हड़ का बक्कल, आवले का बक्कल, बहेड़ का बक्कल, काली हड़, प्रत्येक तीन तोला, गुलाब के फूल, सनाय, निसोत छिला हुआ प्रत्येक चौदह माशे, सोंठ पौने दो माशे कूट छान कर रोग़न बादाम में अफोरे और तिगुने शहद या मिश्री की चाशनी में मिलावे, मात्रा प्रकृति के अनुसार देवे।

पाशोया

मस्तक पीड़ा माद्दी हो या साजिज दोनों को बहुत गुणदायक है, खारी नोन दो तोले चार माशे, गेहू की भुसी दो मुट्ठी, बेरकी पत्ती, खतमीके पत्ते, और मकोय के पत्त प्रत्येक आधपाव खतमी के बीज चार तोले आठ माशे सबको पानी में औटावे जब आधा पानी रहे तब गुनगुना २ पाशोया करे जो सब औषधियां न मिलें तो जितनी मिलसकें वही उत्तम हैं और जो कोई भी न मिलसके तो गरम पानी और गेहू की भुसी और खारी नमक ही से पाशोया करे और पांव को दबाना मलना और तालुओं को मलना और सहलाना गर्मी और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है।

पाशोया

गरम जल से हाथ पांव और तालुओं का धोना मस्तक पीड़ा को गुण करता है शेख अबूअली क़ानून में लिखता है कि मस्तक पीड़ा वालों के पैरों पर प्रायः गरम पानी का तरा देता रहे यहां तक कि मालूम दे कि कोई वस्तु मस्तक से हाथ पैरों की तरफ उतरती है और मस्तक पीड़ा दूर होती जाती है और अबू माहर ने भी लिखा है कि ठंडे पानी से न्हाना गर्मी की मस्तक पीड़ा को शान्ति करता है।

गुण

मस्तक पीड़ा में आराम से रहना कम भोजन करना पानी कम पीना कम हिलना झुलना बुरा भोजन न करना और अबखरे पैदा करने वाली वस्तु न खाना चाहिये।

बखूर

अर्थात बफारा मस्तक पीड़ा को गुण करता है, एक तेगार में पानी भरकर अपने आगे रक्खे और अपने शरीर पर चारों ओर से दोहर ओढ़कर एक २

मिटी का ढेला गरम करके उसमें डाले और मस्तक को झुकाकर उसके धुएं का बफारा ले तो मस्तक पीड़ा दूर जावेगी।

बफारा।

गर्म और सर्द मस्तक पीड़ा को गुण दायक है काक जंगा के टुकड़े २ करके औटाकर बफारा ले पश्चात दो भाग चन्दन और एक भाग रैंडी पीसकर पतला पतला लेप करे।

हरीरा

कि मस्तक को बल देता है छिले चने दो तोले आठ माशे महीन पीसकर तीन तोले आठ माशे बादाम रौग़न में भूने और निशास्ता दो तोले आठ माशे सफ़ेद पोस्त के दाने दो तोले आठ माशे, चौदह तोले कद मिलाकर गो के दूध में हरीरा बनाकर दो तोले आठ माशे घी का बघार देकर गुनगुना २ पान करे।

दवा पित्त की मस्तक पीड़ा को गुण करे

धनियां और काहू प्रत्येक साढ़े तीन माशे पानी में पीसकर छानले थोड़ा मीठा मिलावे और तोले भर ईसफ़ गोल छिड़क कर पीवे। अथवा दो तोले शर्बत नीलोफ़र मिलावे।

दवा—नजले की मस्तक पीड़ा को गुण करे सीप को सिरके में घिसकर कानों की लोओं में लगाता रहे।

दवा—मजीठ को मस्तक पर बांधे

दवा—पुरानी मस्तक पीड़ा को गुण करे। दो चार धतूरे के बीज नित्य निगले महुए के फूलका तेल गर्मी और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है।

क्रिया

सोंठ, बायबिड़ग और छिली हुई मुलहटी को जौ कुट करके बगरा महुए के फूल बराबर तिल का तेल चार भाग महुए के फूलका जीरा निकाल डाले और सब दवाओं को प्रथम तेल से दूने पानी में औटावे जब पानी तेल की बराबर रहजाय तब छानकर तेलमें मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तब छानकर छ बूंद कान में टपकावे सब प्रकार की मस्तक पीड़ा जाय।

सऊनात अर्थात् कान के टपकाने की औषधियां

सऊत—मस्तक पीड़ा और मस्तक की गर्मीके सऊत को बहुत गुणदायक है कर्पूर और चन्दन को गुलाब में घिसकर नाक में टपकावे।

विधि

काबली हड़ का बक्कल, बड़ी हड़ का बक्कल, आंवले का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, काली हड़, प्रत्येक तीन तोला, गुलाब के फूल, सनाय, निसोत छिला हुआ प्रत्येक चौदह माशे सोंठ पौने दो माशे कूट छान कर रोगन बादाम में अकोरे और तिगुने शहद या मिश्री की चाशनी में मिलावे मात्रा प्रकृति के अनुसार देवे ।

पाशोया

मस्तक पीड़ा मादी हो या साजिज दोनों को बहुत गुणदायक है खारी नोन दो तोले चार माशे, गेहूं की भुसी दो मुट्ठी, बेरकी पत्ती, खतमीके पत्ते, और बकोय के पत्ते प्रत्येक आधपाव खतमी के बीज चार तोले आठ माशे सबको पानी में औटावे जब आधा पानी रहे तब गुनगुना २ पाशोया करे जो सब औषधियां न मिलें तो जितनी मिलसकें वही उत्तम हैं और जो कोई भी न मिलसके तो गरम पानी और गेहूं की भुसी और खारी नमक ही से पाशोया करे और पांव को दबाना मलना और तालुओं को मलना और सहलाना गर्मी और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है ।

पाशोया

गरम जल से हाथ पांव और तालुओं का धोना मस्तक पीड़ा को गुण करता है शेख अबूअली कानून में लिखता है कि मस्तक पीड़ा वालों के पैरों पर प्राय गरम पानी का तरड़ा देता रहे यहां तक कि मालूम दे कि कोई वस्तु मस्तक से हाथ पैरों की तरफ उतरती है और मस्तक पीड़ा दूर होती जाती है और अबू माहर ने भी लिखा है कि ठंडे पानी से न्हाना गर्मी की मस्तक पीड़ा को शान्ति करता है ।

गुण

मस्तक पीड़ा में आराम से रहना कम भोजन करना पानी कम पीना कम हिलना भुलना बुरा भोजन न करना और अबखरे पैदा करने वाली वस्तु न खाना चाहिये ।

बखूर

अर्थात बफारा मस्तक पीड़ा को गुण करता है एक तगार में पानी भरकर अपने आगे रक्खे और अपने शरीर पर चारों ओर से दोहर ओढ़कर एक २

मिट्टी का डेला गरम करके उसमें डाले और मस्तक को झुकाकर उसके धुएँ का बफारा ले तो मस्तक पीड़ा दूर जावेगी।

बफारा।

गर्म और सर्द मस्तक पीड़ा को गुण दायक है काक जंगा के टुकड़े २ करके औटाकर बफारा ले पश्चात दो भाग चन्दन और एक भाग रेंडी पीसकर पतला पतला लेप करे।

हरीरा

कि मस्तक को बल देता है खिले चने दो तोले आठ माशे महीन पीसकर तीन तोले आठ माशे बादाम रौगन में भूने और निशास्ता दो तोले आठ माशे सफ़ेद पोस्त के दाने दो तोले आठ माशे, चौदह तोले कद मिलाकर गो के दूध में हरीरा बनाकर दो तोले आठ माशे घी का बघार देकर गुनगुना २ पान करे।

दवा पित्त की मस्तक पीड़ा को गुण करे

धनियाँ और काहू प्रत्येक साढ़े तीन माशे पानी में पीसकर छानले थोड़ा मीठा मिलावे और तोले भर ईसफ़ गोल छिड़क कर पीवे। अथवा दो तोले शर्बत नीलोफ़र मिलावे।

दवा—नजले की मस्तक पीड़ा को गुण करे सीप को सिरके में घिसकर कानों की लौओं में लगाता रहे।

दवा—मजीठ को मस्तक पर बांधे।

दवा—पुरानी मस्तक पीड़ा को गुण करे। दो चार धतूरे के बीज नित्य निगले महुए के फूलका तेल गर्मी और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है।

क्रिया

सोंठ, बायबिड़ग और छिली हुई मुलहटी को जौ कुट करके भगरा महुए के फूल बराबर तिल का तेल चार भाग महुए के फूलका जीरा निकाल डाले और सब दवाओं को प्रथम तेल से दूने पानी में औटावे जब पानी तेल की बराबर रहजाय तब छानकर तेलमें मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तब छानकर छ बूंद कान में टपकावे सब प्रकार की मस्तक पीड़ा जाय।

सऊनात अर्थात् कान के टपकाने की औषधियां

सऊन—मस्तक पीड़ा और मस्तक की गर्मी के सऊत को बहुत गुणदायक है कर्पूर और चन्दन को गुलाब में घिसकर नाक में टपकावे।

सऊत दूसरा कद्दू, काहू, इमामनियों, काशनी, तांजामकोह की पत्तियां सबको अथवा एक २ दो २ जैसे जानों निचोड़ छानकर थोड़ी २ बूंद कानमें टपकावे।

सऊत मस्तक पीड़ा और शीत रोगों को गुण दायक है काली मिरच पीपल लौंग इन सब को अथवा दो एक को जैसा जानो सौंफ के अर्क में पीस कर नाम में टपकावे ।

सऊत सर्दी और कफ की मस्तक पीड़ा को गुण करे जूफा के पत्ते का पानी छानकर कान में टपकावे ।

सऊत सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे । कठल की जड़ को पानी में औटाकर नाक में टपकावे ।

सऊत सोंठ, बायबिड़ंग और गुड़ बराबर २ गरम पानी में पीसकर नाक में टपकावे ।

सऊत मस्तक को मवाद से साफ करे तीन चमेली के फूल गुलरोगन में मिलाकर नाक में टपकावे ।

सऊत आधासीसी की पीड़ा को गुण करे दुपहरियाके फूल की पंखड़ी मलकर उसका पानी नाक में टपकावे ।

अथवा एक काली मिरच और उसकी बराबर मक्खी की विष्टा पुत्र जनी स्त्री के दूध में पीसकर कान में टपकावे और थोड़ा नेत्रोंमें भी लगावे

अथवा सौसन का ढाई फूल और आधी कालीमिरच पानी में पीसकर जो पीड़ा बायीं ओर हो तो दहने नथने में, और जो दहनी ओर हो तो बांये नथने में टपकावे ।

अथवा

रीठे के छिलके को पानी में खूब मले जब झाग निकलें गरम करके ढाई बूंद दोनों नथनों में टपकावे ।

अथवा सिरस के बीज थोड़े पानी में पीसकर पोटली बांधकर जिस ओर मस्तक पीड़ा हो ढाई बूंद उस ओर के नथने में टपकावे ।

अथवा नौसादर और स्याहदाना प्रत्येक दो रत्ती पानीमें पीसकर गाय के घी में मिलाकर टपकावे ।

अथवा प्याज और महुए के बीज थोड़े से चार कालीमिरचों के साथ ..ी में पीसकर पीड़ा दायीं ओर हो तो बांये नथने में टपकावे और केवल

काली मिरच को घी में मिलाकर टपकाना भी आधासीसी को गुण करता है।

अथवा—समुद्रफल की मिंगी पानी में पीसकर पीड़ा दाहिनी ओर हो तो बायें नथने में और बायीं ओर हो तो दायें नथने में टपकावे जो उपाड़का डर हो तो स्त्री के दूधमें घिसकर टपकावे।

सऊत—इस पीड़ा को गुणदायक है जो बारी से हो विंदाल पानी में भिगोकर पानी को छानकर दो बूंद नाक में टपकावे तो आधासीसी के मवाद को बहाकर दूर करे।

सफूफ।

अर्थात् फकी जो मस्तकको ताकत दे बनफशा दो मांशे उस्तखुद्दूस एक मांशे, धनियां दो मांशे, बालछड़ एक माशे, सुडी एक मांशे, गुलाब के फूल दो मांशे, बादाम की मिंगी दो मांशे सबकी बराबर मिश्री कूट छानकर मात्रा तोले भर तकल।

शर्बत हड़।

पित्तकी मस्तक पीड़ा को गुणदायक है और प्रकृति को नरम करता हैं दस नग बड़ी हड़ों का बक्कल ओकुल कर तीन दिन चीनी के प्याले में धूपमें रक्खे, चौथे दिन मलकर छानले और फिर इसी प्रकार ग्यारह बड़ी हड़ों का बक्कल तीन दिन धूप में रक्खे चौथे दिन मल छानकर आध सेर बूरे की चाशनी करे और जो बूरे के बदले तुरंजबीन हो तो बहुत अच्छा है।

शर्बत।

जो मस्तक पीड़ा को गुणदायक है बनफशा नीलोंफर गुलाब के फूल प्रत्येक चौदह मांशे आलूबुखारा दस दाने पानी में भिगोकर मल छान कर तिगुने बूरे की चाशनी करे मात्रा दो तीन तोला और जो आलूबुखारा न हो तो इसको काम में लावे।

शमूम।

अर्थात् हुलास जो गर्मी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है कपूर या चदन सूंघे। अथवा खीरा ककड़ी सूंघे।

शमूम—आधासीसी का दर्द और मस्तक पीड़ा को गुण करे नौसादर और हलदी मिला कर सूंघे।

गुण समस्त गरम इत्रों को सूंघने से मस्तक को बल प्राप्त होता है

और इसी प्रकार ठंडी सुगन्धि सूंघने से मस्तक में आराम होता है ।

जमाद और तिला अर्थात् गाढ़ा और पतला लेप

जमाद मस्तक पीड़ा और आधासीसी को गुणदायक है सोंठ चन्दन और अरद की जड़ का छिलका कूट छानकर पानी से धोकर साठी चांवलों के साथ महीन पीस कर लेप करे ।

जमाद गर्म मस्तक पीड़ा को गुण करे ईसबगोल का लुआब गुल-खरमी में मिलाकर तिला करे और पीना भी गुण करता है ।

अथवा चूका और दूब दोनों को बराबर पानी में पीसकर माथेपर लेप करे अथवा ताजा ककड़ी और कद्दू के टूक छीलकर मस्तक पर रखना गुण करे ।

अथवा खतमी के बीज तथा पत्ते धनियां और गेरू पानी में पीस कर मस्तक या कनपटी पर लेप करे ।

तिला मेंहदी के फूल पानी में पीसकर मस्तकपर तिला करे तो गर्मी की मस्तक पीड़ा को गुण करे ।

अथवा काहू के बीज पानी में महीन पीस कर कनपटी पर लेप करें,

अथवा तिलके पेड़की पत्तियां सिरके वा पानी में पीसकर तिला

अथवा खुरफे के पत्ते सिरके या पानी में पीसकर मस्तक पर ले

अथवा चन्दन घिसकर लगावे । अथवा कोई मस्तक पर तिला करे

अथवा धनियां पीसकर उसमें अंडे की सफेदी मिलाकर लेप करे ।

अथवा जौ का आटा पानी में घोल कर लेप करे ।

अथवा लिहसौड़े का लेप गरम मस्तक पीड़ा को गुण करे ।

अथवा अफीम गुल रौगन में खरल कर सिर पर तिला करे

अथवा कासिनी के बीज गुलाब या पानी में पीस कर तिला

अथवा मेंहदी की पत्ती लगाना मस्तक पीड़ा और आधासीसीको

अथवा बकायन के पत्ते पीसकर लगाना मस्तक पीड़ा को गुण

अथवा सीतलचीनी गुलाब में पीस कर तिला करे ।

अथवा कथाथा गुलाब में पीसकर तिला करे।

अथवा अनार की जड़ पानी में पीस कर लेप करे और सोंठ रेंडी के में घिसकर गुनगुना २ लेप करे तो सर्दी को मस्तक पीड़ा को गुण करता है।

अथवा सहजने के पत्ते पानी में पीसकर गर्म २ लेप करना सर्दी और की और खाली मस्तक पीड़ा का गुण करता है।

अथवा पीपल पानी म पीसकर लेप करे।

अथवा कलौंजी और कालीजीरी पानी में पीसकर लेप करे।

अथवा रेंडी अजवायन सोंठ पानी में पीसकर गरम कर लेप करे।

अथवा नरकाचूर पानी में पीसकर मेंहदी के सदृश तलवों में लगावे।

अथवा बिनौलों की गींगी पानी में पीसकर कनपटी पर लेप करे।

अथवा चदन और तज दोनों बराबर घिसकर गुनगुना कर लगाना और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे।

अथवा तखूज के बीज और मुचकुद के फूल दोनों या एक को पानी में कर लगाना गुण करे।

अथवा बकरीका मांसन मस्तक पर लगाना गर्मी और खुश्की की मस्तक को गुण करे।

अथवा दो लौंग और चार रत्ती अफीम पानी में पीस गुनगुना कर पर लगाना नजले की पीड़ा को गुण करे।

अथवा हड़ की गुठली पानी में घिसकर तिला करना आधासीसी को ।

...वा मुर्गी की बीट और कालीमिर्च पानी में पीसकर जो मस्तक पीड़ा इमली तो बाईं तरफ और जो बाईं ओर हो तो दाईं ओर लेप ये।

...आ कबूतर की बीट राई में मिलाकर लेप करना पुरानी आधासीसी करता है।

...वा जमालघोटा पानी में पीसकर जिस ओर पीड़ा न हो तिलाकरे ...त दो गुनगुने पानी से धो डाले आधासीसी दूर हो जावेगी।

आधासीसी की चिकित्सा बहुत जल्द करना चाहिये जब यह पुरानी

और इसी प्रकार ठंडी सुगन्धि सूंघने से मस्तक में आराम होता है।

जमाद और तिला अर्थात् गाढ़ा और पतला लेप

जमाद मस्तक पीड़ा और आधासीसी को गुणदायक है सों

और अरंड की जड़ का छिलका कूट छानकर पानी से धोकर साठी चांवल के साथ महीन पीस कर लेप करे।

जमाद गर्म मस्तक पीड़ा को गुण करे ईसबगोल का लुआब खरफी में मिलाकर तिला करे और पीना भी गुण करता है।

अथवा चूका और दूब दोनों को बराबर पानी में पीसकर तिला करे अथवा ताज़ा ककड़ी और कद्दू के टूक छीलकर मस्तक पर रखना गुण

अथवा खरफी के बीज तथा पत्ते धनिया और गेरू पानी में पीस कर मस्तक या कनपटी पर लेप करे।

तिला मेंहदी के फूल पानी में पीसकर मस्तक पर तिला करे तो गर्मी की मस्तक पीड़ा को गुण करे।

अथवा काहू के बीज पानी में महीन पीस कर कनपटी पर लेप करे

अथवा बिलके पेड़की पत्तियां सिरके वा पानी में पीसकर तिला

अथवा खुरफे के पत्ते सिरके या पानी में पीसकर मस्तक पर लेप

अथवा चन्दन घिसकर लगावे। अथवा कोई मस्तक पर ...

अथवा धनियां पीसकर उसमें अंडे की सफेदी मिलाकर लेप करे

अथवा जौ का आटा पानी में घोल कर लेप करे।

अथवा लिहसोड़े का लेप गरम मस्तक पीड़ा को गुण करे।

अथवा अफ़ीम गुल रोगन में खरल कर सिर पर तिला करे

अथवा कासनी के बीज गुलाब या पानी में पीस कर तिला

अथवा मेंहदी की पत्ती लगाना मस्तक पीड़ा और आधासीसीको

अथवा बकायन के पत्ते पीसकर लगाना मस्तक पीड़ा को गुण

अथवा दालचीनी गुलाब में पीस कर तिला करे।

अथवा कथाथा गुलाब में पीसकर तिला करे।
अथवा अनार की जड़ पानी में पीस कर लेप करे और सोंठ रेंडी के में घिसकर गुनगुना २ लेप करे तो सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करता है।
अथवा सहंजने के पत्ते पानी में पीसकर गर्म २ लेप करना सर्दी और की और खाली मस्तक पीड़ा को गुण करता है।
अथवा पीपल पानी म पीसकर लेप करे।
अथवा कलौंजी और कालीजीरी पानी में पीसकर लेप करे।
अथवा रेंडी अजवायन सोंठ पानी में पीसकर गरम कर लेप करे।
अथवा नरकाचूर पानी में पीसकर मेंहदी के सदृश तलवों में लगावे।
अथवा बिनौले की मींगी पानी में पीसकर कनपटी पर लेप करे।
अथवा चंदन और तज दोनों बराबर घिसकर गुनगुना कर लगाना और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे।
अथवा तर्बूज क बीज और मुचकुंद के फूल दोनों या एक को पानी में कर लगाना गुण करे।
अथवा बकरीका मांखन मस्तक पर लगाना गर्मी और खुश्की की मस्तक को गुण करे।
अथवा दो लौंग और चार रत्ती अफीम पानी में पीस गुनगुना कर क पर लगाना नजले की पीड़ा को गुण करे।
अथवा हड़ की गुठली पानी में घिसकर तिला करना आधासीसी को करे।
अथवा मुर्गी की बीट और कालीमिर्च पानी में पीसकर जो मस्तक पीड़ा ओर हो तो बाई तरफ और जो बाई ओर हो तो दाई ओर लेप । चाहिये।
अथवा कबूतर की बीट राई में मिलाकर लेप करना पुरानी आधासीसी ूर करता है।
अथवा जमालघोटा पानी में पीसकर जिस ओर पीड़ा न हो तिलाकरे तदन्तर हो गुनगुने पानी से धो डाले आधासीसी दूर हो जावेगी।
आधासीसी की चिकित्सा बहुत जल्द करना चाहिये जब यह पुरानी

पड़जाती है तब बड़ी कठिनता से जाती है पुरानी पड़जाय तब जानना चाहिये कि सर्दी से है बिना गर्म औषधियों के कभी न जायगी।

ज़माद मस्तक पीड़ा को गुण करे एक बादाम की गिरी सरसों के तेल में पीसकर मस्तक में मले तो पीड़ा दूर होवे।

अथवा एलुआ और रेंडी बराबर पानी में पीसकर गुनगुना २ लेप करे।

कमाद उसे कहते हैं कि कोई वस्तु सूखी या गीली गरम करके जोड़ों पर रक्खे और जब ठंडी होजाय तब फिर गरम करे।

कमाद सर्द आधासीसी और मस्तक पीड़ा को गुण करे बाबूना के फूल मेथी के लुआब में मिला कपड़े में बांध कर सेके।

नफ़ूक़ वह है दवा महीन पीसकर नाक में फूके।

नफ़ूक सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे पीपल पीसकर नाक में फूके।

दवा अकरकरहा दांतों में दबावे तो सर्द मस्तक पीड़ा जाय।

क़ुर्समुसल्लिम आधासीसी और मस्तक पीड़ा को गुण करे धनियां, आंवला, काहू के बीज और सोंठ प्रत्येक दो माशे अफ़ीम, खुरासानी अजवायन, कतीरा प्रत्येक एक भाग पीसकर तिखूंटी टिकिया बनाकर रक्खे जब चाहे तब रगड़ कर पानी में तिला करे।

क़ुतूर अर्थात् गीली पतली दवा जो कान में टपकाई जावे।

क़ुतूर आधासीसी को गुण करे गाजर की पत्तियों में ऊपर नीचे घी लगाकर तवे पर गर्म करके उसका रस निचोड़ कर कान में टपकावे मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि दो तीन बूंद नाक में टपकावे छींक बहुत आवेंगी और आधासीसी दूर होजावेगी।

तकमीद [illegible] को गुण करे नीबू दो फांक कर के गरम तवे पर [illegible] क करे जब ठंडा होजाय

दो भाग क़ंद में खूब मलकर रक्खे मात्रा एक तोला ।

लऊक़ अर्थात चटनी जो मस्तक को बल दे मद्दीके बीज साढ़ेतीन मांशे पीस शहद में मिलाकर चाटे ।

मतबूख़ अर्थात् क्वाथ जो गर्म और सर्द मस्तक पीड़ा को गुण करे घास की जड़ एक तोला चार मांशे पानी में औटाय के छानके पिये ।

काढ़ा सर्द और कफ़ की मस्तक पीड़ा को गुण करे कुचली सौंफ ७ मांशे कुली हुई सौंफ की जड़ १४ मांशे और इस्तखुद्दूस १० माशे आधसेर पानी में औटावे जब तिहाई रहे छानकर दो तोले-शहद या शरबत बनफ़शा मिलाकर पिये ।

मतबूख़ हिन्दी मस्तक पीड़ा को हरता है । बड़ी हड़ का बक्कल, सोंठ, धनियां, आंवला, बहेड़े का बक्कल, वायविड़ग प्रत्येक साढ़े तीन माशे कूटकर आधसेर पानी में औटावे जब चौथाई रहे छानकर पिये बाज़े सोंठ की जगह चिरायता मिलाते हैं ।

नतूल अर्थात् तर्रा । मस्तक पीड़ा को गुण करे बाबूना सोया और सौंफ़ को औटाकर सिर पर तर्रा दे ।

दवा बात की मस्त पीड़ा को गुण करे । दो तोला इमली को पानी में भिगोकर थोड़ी शकर डाल कर पिये ।

नतूल गर्मी की मस्तक पीड़ा को दूर करे । छिले हुए कद्दू के बीज, काहू के बीज, ईसफ़गोल, बनफ़शा, खतमी के बीज और नीलोफ़र पानी में औटाकर सिर पर तर्रा दे, तर्रे की शुद्धि के पश्चात् अच्छा होता है ।

नफ़ूख़ मस्तक पीड़ा और आधासीसी को गुण करे , सफ़ेद कनेर की पत्ती छाया में सुखाकर महीन पीसे जिस ओर पीड़ा हो उसी ओर के नथने में दो चावल फूके छींकें आवेंगी और नाक से बहुत पानी टपकेगा और पीड़ा जाती रहेगी ।

गुण प्रायः जायफ़रूर होजों की बास तथा चमड़े की सड़ांद से गर्मी की मस्तक पीड़ा उत्पन्न होती है ।

चिकित्सा उसको गुनगुने पानी से स्नान कराना और सिरका सूघना है । प्राय देखा जाता है कि आजकल मनुष्य इस बात का कुछ ध्यान नहीं

करते इसी कारण उनको नाना प्रकार के रोग समय पाकर ग्रसत और महा-कष्ट देते हैं बुरी वायु और गन्द से बचना और सुगंधित वायु का सेवन करना आरोग्यता की रक्षा का एक बड़ा भारी उद्देश्य है मनुष्य के शरीर में मस्तक सब अवयवों से बड़ा है और बुद्धि इसी के आधीन है इसलिये उक्त नियम से इसकी रक्षा जरूरी है और कभी २ मस्तक में कृम पड़ जाती हैं उसका लक्षण कभी २ कीड़ों का निकलना और नाक से बास आना है।

चिकित्सा उसकी मुलीम को महीन पीसकर नाक में फूके।

तेल असपंद मस्तक पीड़ा को गुण करे। तोले भर असपद तिल के तेल में औटावे जब खूब जल जाय तब उसी तेल में बारीक पीस डाले इस तेल को प्रतिदिन कनपटी पर मिला करे और दूर से तेज आंच से सेके पीछे गर्म पानी से धो डाले।

रोगन शतावर आधासीसी की पीड़ा को गुण करे। शतावर की ताजा जड़ को कूटकर उसका रस निचोड़े उसके बराबर तिलका तेल मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय तब मस्तक पर मले।

क़तूर शफ़तालू की पत्तियों के रसमें एलुआ मिलाकर दो तीन बूंद नाक में टपकावे तो मस्तक के सब कीड़े मरजांय।

सऊत नीम के पत्तों का रस मीठे तेल में मिलाकर टपकावे कभी २ सांप के काटने के बाद उसका विष दूर करने के पीछे मस्तक पीड़ा शेष रह जाती है उसकी चिकित्सा यह है कि एक तोला बिनौले की मींगी का शीरा पानी में निकालकर मस्तकपर लेप करे और जो पीड़ा बहुतसा शोच करने से हो उस की चिकित्सा यह है अजीर के पेड़ की छाल की भस्म सिरका वा पानी में घोल कर मस्तक पर लेप करे।

फ़सल सरसाम की औषधियों के बयान में।

सरसाम मस्तक के सोथ का नाम है इस रोग में ज्वर और बेहूदा बकना और मस्तक में भारी पीड़ा तथा भारीपन होता है।

जो सरसाम पित्त से हो तो उसको फ़ारसी में क़रानीतस खालिस कहते हैं। कफ के सरसाम को लिसरगस कहते हैं हर दोष को उसके लक्षण से जान हैं पित्त और रुधिर के सरसाम में ज्वर अधिक होता है। और पित्त में

चैतन्नता और कफ में शून्यता तथा रुधिर में तेजी और वात में डर होता है बात सरसाम थोड़ा होता है इसमें फस्द शीघ्र कराना चाहिये विशेष करके रुधिर और पित्त के सरसाम में पित्तज्वर में बहुधा बिना साथ ही बुखारात मस्तक को चढ जाते हैं उसमें भी डर और मस्तक पीड़ा होती है, इसको फारसी में सरसाम वगैरह भी कहते है। उस समय फस्द सरेरू और पिंडलियों में पछने देकर सींगी खींचना और रुधिर में बिना पछने सींगी खींचना और पैरों में पाशोया कराना चाहिये और तबरीद पिलाना और स्त्री का दूध टपकाना और मस्तक पर दोहना चाहिये और जो स्त्री का दूध न मिले तो बकरी का ही दूध मस्तक पर डाले और कद्दू का तेल मस्तक पर मलना गुणदायक है।

कद्दू के तेल की क्रिया

कद्दू का रस निचोड़ छानकर बराबर मीठे तेल में औटावे जब पानी जल-जाय तेल काम में लावे कोई वस्तु शीशे में रखकर सूंघे उसका नाम लखलखा है।

लखलखा जो सरसाम गर्म को गुणदायक है। काहूका पानी हरे धनिये का पानी खीरे का पानी थोड़े सिरके में मिलाके शीशी में रखकर सूंघे।

लखलखा चंदन घिसकर हरी कासनी के अर्क और तर्बूज के पानीमें थोड़ा कपूर मिलाकर शीशे में रखकर सूंघे।

रोगन नीलोफर गर्म मस्तक पीड़ा और सरसाम को गुणदायक है गुल नीलोफर लेके गुलरोगन की तरह उनका तेल निकाले।

शर्बतऊद मस्तक को बलदायक है। १ माशे अगर, १८ लौंग, बाल-छड़ और दालचीनी प्रत्येक डेढ़ दिरम कंद पावसेर दवाइयों को जौकुट कर कपड़े में बांध गुलाब में भिगोकर औटावे जब चौथाई बाकी रहे तब छानके कंद मिलाके चाशनी करे फिर चार रत्ती कस्तूरी और अम्बर पीसकर मिलावे।

सऊत गर्म सरसाम को गुण करे चन्दन और कपूर काहूके पत्तों के रस में घिसकर नाक में टपकावे।

पाशोया सरसाम में अच्छा है गुलखैरू, गुल नीलोफर, कद्दू काटकर प्रत्येक आधपाव, जौ की भूसी तीन मुट्ठी, पानी में औटाकर गुनगुने पानी से पाशोया करे और बदन रगड़ कर सुंघावे खाने को जौ की घाट दे, बाकी ज्वर मस्तक पीड़ा की चिकित्सा करे।

फ़सल सरये ।

अर्थात् मिरगी की दवाइयों के बयान में । जो मिरगी बालकों के होती है उसे फ़ारसी में अम्मुस्सिबियां कहते हैं । मिरगी प्रायः कफ़ से उत्पन्न होती है और जिस समय पीड़ा करती है उस समय रोगी पृथ्वी पर गिर पड़ता है हाथ पांव टेढ़े पड़ जाते हैं बेक़रारी विशेष होती है मुंह से झाग निकलते हैं इस रोग में मस्तक भारी रहता है और जीभ के नीचे की नसें हरी हो जाती हैं ।

चिकित्सा मिरगी के रोग में बन्दों को असली हालत पर रखने की दृष्टि रक्खे सोंठ कालीमिरच पीपल नौसादर इन्द्रायन के फल का गूदा कलोंजी प्रत्येक अकेली अथवा दो २ मिलाकर पीसकर नाक में फूंके और निराहार से पीछे मुंजिस देकर अयारज की गोली से सफ़ाई करे चौपायों के मास और तर मेवा दूध प्याज़ मसूर और बुखार पैदा करने वाली वस्तु और मदिरा आदि वस्तुओं से मिरगी रोग वाला बचा रहे दुर्गन्धि सूंघने और अति जागने, ठंडा पानी पीने, स्नान करने, भरे पेट पर सोने, धूप और मेह में फिरने और डरावना शब्द सुनने और ठंडी पवन से बचता रहे और जो मिरगी वाले बच्चों को ज्वर का अधिक वेग हो तो गरम वस्तु विशेष काम में न लावे और बहुत सी ठंडाई भी न दे और सियाके से अजीर्ण को दूर करे इस स्थान में थोड़ी सी सहज क्रिया की औषधि जो रोग में गुण करती हैं कही जाती हैं ।

गोलियां जो मिरगी के न दौरा करने में भी गुण करती हैं । कछुए का खून और जौ का आटा बराबर लेकर शहद के साथ काली मिर्च की बराबर गोलियां बनावे सांझ सवेरे एक २ खाय ।

गुग्गुल की गोली मिरगी को गुण करती है । जुलाब के पीछे प्रकृति गर्मी सर्दी बदलने के लिये काम आती है । कुठ सोंठ कबाबचीनी और देवदारू प्रत्येक दस माशे काला भांगरा स्याह मिर्च अकरकरा कलपीपल और सनके बीज प्रत्येक दो तोले आठ माशे और सब औषधियों के बराबर गूगल लेकर कूट छान शहद में मिलाकर गोलियां बनावे मात्रा सात माशे सवेरे गुन गुने पानी के साथ निगले ।

दवा मिरगी रोग को गुण करे । निर्विसी पुत्र जनी स्त्री के दूध में घिस कर पिलावे ।

दाग अर्थात दाह बच्चोंकी मिरगी को गुण करे। दोनों भौंओं के बीच में मूंगे का दाना गरम कर दाग दे और बकरी की मैंगनों से दागना भी अच्छा है।

दवा दौरे के समय मिरगी को गुण करे। सीताफल के बीनों की मिंगी पीस कपड़े की बत्ती में रख उसका धुआं नाक में पहुंचावे।

दवा मिरगी के समय खटमल के रुधिर में कपड़ा भिगोकर जला के उसका धुआं नाक में पहुचावे तो मिरगी को गुण करे।

दवा आक की जड़का वक्कल बकरी के दूध में घिसकर नाक में टपकावे।

दवा मिरगी की नौबत के समय ढाक की जड़ पानी में रगड़कर नाक में टपकावे।

दवा गीदड़ का पित्ता थोड़ी काली मिर्च डालकर सुंघावे।

दवा मिरगी की नौबत के समय दो काली मिर्च पानी में पीसकर दोनों नथनों में दो तीन बूंदें टपकावे तो मिरगी रोग जाय।

दवा महुए की आधी गुठली और ढाई काली मिर्च पानी में पीसकर नौबत के समय नाक में टपकावे, तो तुर्त चेत होवे।

दवा कड़वी तोरई पानी में पीसकर दो तीन बूद नाक में टपकावे।

दवा छोटी कटेरी का दूध नौबत के समय नकुओं में टपकावे।

दवा हाथी के सिर के पसीने में जो मस्ती के समय निकलता है अर्थात् मद में रुई भिगोकर मिरगी के समय दो तीन बूद नाक में टपकावे।

दवा कलौंजी दो भाग नौसादर आधा भाग एलुआ चौथाई भाग तिल के तेल में पीसकर एक बूद नाक में टपकावे।

दवा कटेरी की जड़, भांग के बीज, बराबर बालक के मूत्र में पीस नाक में टपकावे।

फक्की मिरगी को गुण करती है भैंसे के खुर की भस्म साढ़े चार मांशे मिर्गी वाले को फकाना गुण दायक है।

दवा लाला के फूलका शर्बत बच्चों की मिरगी को गुणदायक है।

दवा लाला के फूल १। तोले पानी में औटाकर छानके दुगनी कन्द में चाशनी बनाकर शर्बत बचे को एक मांशे और तरुणको सात मांशे पिलावे।

हुलास - दौरे के समय राई पीसकर सूंघे।

हुलास नकछिकनी पीसकर थैली में बांधकर सूंघे।

पाक अकरकरा कुलंजान बराबर के सिरके में पीसकर तिगुने शहद में पाक बनावे और जुलाब के पीछे नौबत के समय दे। जालीनूस हकीम का आजमूदा है मात्रा ७ माशे गुनगुने पानी के साथ लें।

हुलास छोटी कटेरी का फल सुखाकर कायफल नकछिकनी प्रत्येक छ माशे हुलास चार तोले सबको महीन पीसकर दो माशे नित्य सूंघे।

नफूख मिर्गी की नौबत के समय काम आता है घूस के पित्त में काली मिर्च भरके छाया में सुखाले नौबत के समय पीसकर दो चांवल नाक में फूंके।

कुतूर रतनजोति पीसकर नाक में टपकावे।

नफूख नौबत या गैर नौबत के समय काम देती है रीठा का छिलका और बीज मय गुठली के पीसकर नाक में फूंके।

तथा दूसरा—नौबत के समय में बड़ा गोह (अखफोड़ा) एक जानवर जो आक के पेड़ पर रहता है यह रंग बरंगा होता है बदलता है उसे नहीं मिलता उसे सुखाकर उसकी बराबर काली मिर्च ले दोनों को पीसकर नाक में फूंके आजमूदा है खैरुलजाल वाले ने मिर्च के बदले गाय का घी लिखा है।

तथा—मूसे का भेजा सुखाकर पानी में पीसकर आधा माशा नाक में फूंके तीन दिन में आराम होजायगा।

दवा—मिर्गी को गुण करता है। तिब्ब फरीदी में लिखा है कि मिर्गी वाले के कंठ में जायफल लटकाना विशेष गुणदायक है फिर मिर्गी रोग नहीं रहता और इसी प्रकार हींग लटकाना भी समझो।

दवा—सूअर के खुरकी अंगूठी मंगलवार के दिन दाहिने हाथ में पहनना भी मिर्गी को दूर करता है। और सूअर के मूत्रकी माटी पास रखने से भी मिर्गी रोग दूर होताहै। और जो भेड़नीका दांत बच्चों के गले में बांधे तो मिर्गी रोग नाशहो

दवा—भेड़नी की हड्डी और विष्टा पास रक्खे तो मिर्गी रोग जाय।

दवा—गाय के बायें सींग की अंगूठी बायें हाथ में पहनना उत्तम है॥

दवा—मूसे का हाड़ गले में लटकाना बच्चों की मिर्गी दूर करता है॥

फसल सक्ता यानी सून्यवाय की औषधियोंके प्रकर्ण में॥

सक्ता वह रोग है जिसमें शरीर की शक्ति जाती रहती है और रोगी

मुर्दे के समान माळूम होने लगता है उसका पूर्वरूप मस्तक की पोल में कफ का रुक जाना है ।

चिकित्सा—जो रुधिर प्रबल हो तो फस्द सरेरू की खोले और कफ प्रबल हो तो कफ के निकालने वाला शियाफ गुदा में रक्खे और मस्तक को सेके नाक में टपकावे और फूके, उलटी कराना भी उत्तम है हाथ पावों का बांधना और मलना गुण करता है ।

मस्तक में नश्तर दफ्र,पारा मलाना गुण करता है कफ के दोष को पका कर निकाल डाले और जब इस रोगमें सांस न चले तो चिकित्सा उचित नहीं और जो सांस चलता माळूम दे तो किञ्चित चिकित्सा के योग्य है ।

शून्यवात के रोगी और मुर्दों में यह भेद है कि सक्त की हालत में रोगी के नेत्रों में देखने वाले की परछाई माळूम होती है और मुर्दे के नेत्रों में नहीं होती

सऊत—शून्य को गुण करे नकछिकनी पपड़िया खार एलुआ और चुक-दर की जड पानी में पीस छानकर थोड़ीसी बूंद नाक में टपकावे ।

वजूर—अर्थात् कंठ में टपकाने की औषधि वजूर कि सक्ते को गुणदायक है थोड़ी हींग सौंफ के अर्क में पीसकर सक्ते वाले के कंठ में टपकावे ।

दवा—रोगी के मस्तक को मुड़वा पछने लगाकर मनुष्य के मूत्र में बछ-नाग पीसकर मले तो तुर्त चेत होवे ।

सल भूल रोग की औषधियों के प्रकरण में

जो वृद्धावस्था में भूलरोग उत्पन्न हो तो कफकी विशेषता जाने जो तरुण में हो तो मस्तक रोग से जाने इसकी उत्तम चिकित्सा कफको पकाकर निकाल डालना है ।

भिलाये का पाक भूल और मस्तक पीडा को गुण दायक है बड़ी हड़ का वक्कल बहेडे का वक्कल आंवला पालख्र तज तेजपात नागरमोथा और उस्तखुद्दूस मस्तक डेढ़ तोला काली मिर्च और नरकचूर दो २ माशे भिलाये का तेल सात मासे सवा पाव शहद में चाशनी करके पाक बना लेवे ।

कुंदरू गोंद का पाक भूल रोगों को गुण करे कुदरू गोंद और नागर-मोथा तीन २ तोले सौंठ और काली मिर्च डेढ़ २ तोले कूट छान कर धूने शहद में मिलावे और बाजी पुस्तकों में सब औषधि बराबर लिखी हैं मात्रा सात माशे की है

फक्की भूल के रोगों में गुण करे । कुदरुगोंद सौंठ नागरमोथा तोल में बराबर लेकर कूट छानकर फक्की बनाले और प्रकृति के माफ़िक लेकर सात नग मुनक्का के शीरे के साथ सात दिन तक लेवे ।

बच पाक--शूल को गुण करे तथा पट्ठों को गरम करे १०॥ माशे बच को पीसकर पावसेर सफ़ेद बूरे की चाशनी में मिलाकर पाक बनावे, मात्रा एक तोले पर्यंत देवे।

दवा--शूल को गुण करे। काली मिर्च पीपल हल्दी कूट मीठा और कड़वा मुलहटी कालीजीरी सेंधानोन और अजमोद प्रत्येक साढ़े तीन माशे महीन पीसकर नित्य साढ़े तीन माशे घी और शहद के संग खाय।

दवा--शूल और मस्तक रोगोंको दूर करे। डेढ़ तोला मिलाये नित्य खाय

दवा--अमरदही कूटछानकर तोले भर गाय के दूध के संग फांके परन्तु इसे फांककर न तो जागे न ठंडे पानी से स्नान करे न मदिरा पान करे न विशेष पानी पिये।

सोंठकी सादा जवारिश--जो उदर रोगों और शूल को गुण करे। मालकांगनी का तेल पान में लगाकर और माशे भर पारा उसमें रखकर खूब मले कि पारा उसमें तुरन्त प्रवेश होजायगा उस समय इस पान के पारे को पोंछ पान की बीड़ी में रखकर खाय और इसी प्रकार नित्य खाया करे।

मालकांगनी का तेल निकालने की विधि।

मालकांगनी को कूट गजी की थैली में भर उसका मुंह सुई से सींकर तांबे के बासन में रखकर उसके नीचे कोयले की आग सुलगावे और थैली के ऊपर एक भारीसा पत्थर रखदे तो तेल निकल आवेगा॥

दवा--कि शूल को गुण करे। साढ़े तीन माशे कुदरूगोंद सायंकाल को पानी में भिगोकर प्रातःकाल छानकर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

फ़सलदवार और सदर अर्थात भौंर और चक्कर की औषधियों के प्रकर्ण में

दवार मस्तक घूमने को कहते हैं कि हर एक वस्तु फिरती हुई मालूम हो और सदर उस रोग का नाम है जिसमें उठते में चक्कर आजाय और नेत्रों के नीचे अंधेरा आजाय। यह रोग मस्तकों को दोषों की गर्मी चढ़ जाने से पैदा होता है रोग का वेग प्रबल होने के समय दोष को पकाकर मस्तक की सफ़ाई करना उचित है। इतरीफ़ल जो मस्तक पीड़ा में कह आये हैं गुणदायक है। नकूय अर्थात् शीतलयुश गर्मी के भौंर और चक्कर को गुणदायक है धनियां और आंवला जौकुट करके पानी में भिगोकर प्रात काल मल छानकर थोड़ा बूरा मिलाकर पिये।

काढ़ा—मौर को गुण करे। सरफोका धनिया बड़ी हड़का बक्कल प्रत्येक नौ माशे जौ कुट कर के थोड़े पानी में औटाकर सात दिन पर्यंत पिये।

दवा—मौर को गुण करे। खसखास का अवलेह सात माशे और धनिये का अवलेह सात माशे दोनों को थोड़ा बूरा मिलाकर पिये।

दवा—पटसनके बीज पीसकर गेंहूंके चूनमें मिला रोटी बनाकर खायाकरे

फक्की—मौर और चक्कर दोनोंको गुण करे। सफ़ेद खसखास धनिया बिनौले की मींगी बराबर लेकर दूनी मिश्री मिलाय पीस छानकर नित्य गुलाब या पानी के साथ फांके।

फ़सल सबात अर्थात् विशेष निद्रा की औषधियोंके प्रकर्णमें।

यह रोग बहुधा कर मस्तककी तरी की बहुतता से निर्दोष हो अथवा दोष युक्त हो पीड़ा कारक होता है।

चिकित्सा—कफको पकाकर सफ़ाई करडाले इसके पीछे कालीमिर्च थोड़ी के मुहके भाग में पीसकर नेत्रोंमें लगावै तो निद्राकी बहुतता को दूर करे और ठंडी वस्तु खाय सिरका सूघे तो अत्यन्त निद्राको दूर करे और धनियेका अवलेह खाना भी गुण करता है।

फ़सल सहर अर्थात् विशेष जाग्रत की औषधियोंके प्रकर्ण में

मस्तककी खुश्की विशेष जागने का पूर्वरूप है दोष रहित हो या दोष युक्त हो मस्तक की सफाई उचित है।

चिकित्सा—बकरी का दूध हाथ पावों में मलना गुणदायक है।

दवा खसखास का तेल तलुओं और तालू पर मलना गुण करताहै। खसखास का तेल बादाम रोगन की तरह निकाले।

दवा अफीम सुंघाना तथा पसलियों पर पतला लेप करना निद्रा लाताहै।

दवा सोये का साग तकिये के नीचे रखने से निद्रा आतीहै।

दवा जो जागने को गुण करे। खसखासके दाने सात माशे काहूके बीज साढ़े तीन माशे कुचलकर थोड़ा बूरा मिलाकर खाय।

रोगन हुबूब खमसा अर्थात् पांच बीजों का तेल निद्रा लाता है। खुश्की, मस्तक पीड़ा और पित्त और सरसाम को गुण दायक है।

काहू कद्दू और तर्बूजके बीजा की मींगी पोस्त के दाने और तिल बराबर लेकर बादाम रोगन की तरह तेल निकालकर मस्तक पर मले।

काहू का तेल मस्तक पर मलना निन्द्रा लाता है । तेल निकालने की विधि यह है कि काहू के पत्तों का रस दो भाग एक भाग मीठे तेलमें मिलाकर औटावे जब रस जलकर तेल मात्र रहजाय तब उतारले ।

पतलालेप जो निद्रा लाता है । भांग की ताजी पत्ती बकरी के दूधमें पीसकर मरहमकी तरह तलुओंमें लगावे । अथवा भाग का तेल लगावे । तेल निकालने की विधि । भागके पत्ते बकरी के दूध में पीसकर टिकिया बनावे और घी में तले जब काली होजाय तब छानकर काम में लावें ।

रोगी के हाथ पाव इतने जकडकर बांधे कि पीड़ा होने लगे और औंघ न आवे और एक दीया रोगी के सन्मुख बाले और मनुष्य इकट्ठे होकर किस्से कहानिया कहने लगें रोगी को थकित देख हाथ पाव खोल देवें और सब चुपके होजाय और दिया उठालें तो इस विधि से नींद आजावेगी ।

चक्की का आहट बहते पानी का शब्द और पवन से पत्तों का शब्द भी निद्रा लाता है ।

मस्तक की खुश्की में कद्दू का तेल मस्तक पर मलना गुणकारी है , कद्दू के तेल निकालने की विधि सरसाम रोगमें कहचुके हैं ।

स्त्रीका दूध नाकमें टपकाना मस्तक की खुश्की को दूर करे , और भोजन के पीछे गर्म गुनगुने पानी से स्नान कराना निद्रा लाता है , ज्वर में निद्रा आती रहे तो पाशोया करे ।

फकी जो निद्रा लावे मस्तक को आनन्द और बल दे और नजले को खोवे सूखा धनिया, काहूके बीजकी मींगी और पोस्तके दानेभुने प्रत्येक नौमाशे, सफेद बूरा तीन तोले आठ माशे कूट छानकर फक्की बनाले मात्रा सात माशे की है ।

नतूल अर्थात् तरी निद्रा लाता है बनफशा, पोस्त के डोडे, काहु के बीज पोस्तके दाने फकाय, रेहा औटाकर तरी दे ।

शमूम इलाज जो निद्रा लाती है , पोस्तके दाने, काहू के बीज, सूखा, धनिया और सोये के बीज बराबर ले भूनकर ढीले २ कपडे में बांधकर सूघे ।

सऊत अर्थात नाक में टपकाने की वस्तु जो निद्रा लाती है । ताजेकाहू का छना रस स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे।

सुर्मा स्त्री की कंघी पर काजल पार नेत्रों में लगावे और कंघी को सिर हाने रख सोवे तो निद्रा आजाय ।

फ़सल फ़ालिज अर्थात पक्षाघात और लक़वा अर्थात टेढ़ा मुंह पड़जाना इन रोगों की औषधियों के प्रकर्ण में।

फ़ालिज आधे शरीर का रहजाना और लक़वा एक तरफ़ का मुह टेढ़ा हो जाने को फ़ारसी में कहते हैं।

इन दोनों रोगों का पूर्व रूप कफ़ की प्रबलता है और इन दोनों रोगों की चिकित्सा एक ही है इस कारण एक ही स्थान में लिखते हैं।

इस रोग के आदि में यह विधि उत्तम है कि दो तीन लंघन कराके पानी के बदले सहत का पानी पिलाना प्रारम्भ करे और जो रोगी प्रबल हो तो सात लंघन कराना उचित है। माउल असल अर्थात् सहत के पानी की यह विधि है कि एक भाग पानी में दो भाग शहद औटाकर जब तीसरा भाग रहजाय तब उतार कर छानले जो सहत न मिले तो गुड़ और पानी ही औटाकर काम में लावे। और कबूतर खाय अथवा चिड़ियों का शोरबा दे अथवा निरी चने की रोटी या भुना चना दे।

रोग पकानेके ४ दिन पीछे दोष पकाना प्रारम्भ करे और नवें या चौदहवें दिन अयारज गोली का जुल्लाब दे इस रोग में दो बार जुल्लाब देना उचित है। सब प्रकार के दोषों के मुंजिज की औषधि पूर्व खंड में लिखचुके हैं।

मतबूख मुंजिज अर्थात दोष पकाने का काढ़ा। सौंफ छ माशे, सौंफ की जड़ एक तोला सोया के बीज अजमायन अजमोद प्रत्येक तीन माशे बालछड़ चार माशे कासनी की जड़ तोले भर गुलक़न्द दो तोले डेढ़पाव पानी में औटावे जब आध पाव रहे तब छानकर पी लेवे और नित्य इसी प्रकार पिया करे तो दोष पकजाय।

अयारज की गोलियों की विधि—अयारिज फ़ैकरा, पौने दो तोले बड़ी हड़का बकला डेढ़ तोले छिली निसोत चौदह माशे काला दाना सात माशे इन्द्रायन का गूदा साढ़े तीन माशे और सेंधानोन डेढ़ तोले सबको कूट छानकर गोलियां बनालेवे।

तथा दूसरी विधि—जिस प्रकार पिछले हकीमों ने बनाई हैं लिखते हैं तगर बालछड़ तज रूमीमस्तगी दालचीनी उस्तखद्दूस सौंफ और गुलाब के फूल प्रत्येक साढ़े तीन माशे एलुआ सात माशे कूट छानकर जुल्लाबलेने के पीछे इस रोग में काम में लावे।

गंधककी गोली—कम्पनबाय, कफ़ के रोग, कमरपीड़ा और उदर पीड़ा

को गुण करे शुद्ध गंधक शुद्धपारा मेनसिल शुद्ध सींगियाविष सबको बराबर लेकर कागजी नींबू के रस में आठ पहर घोटकर उड़द के प्रमाण गोलियां बनाले मात्रा १ गोली घी के साथ देवे।

सींगिया विषकी गोली--अर्द्धांग वात और लकवा को गुण करे। इसको जुल्लाब के पीछे गर्मी सर्दी के बदलाव के कारण देते हैं।

अकरकरा कालीमिर्च पीपल प्रत्येक तीन माशे पीपलामूल छः माशे सोंठ और मीठा तेलिया प्रत्येक एक तोले कूटछानकर गुड़ और घी के साथ मूंग के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली से दो गोली पर्यन्त देवे।

हिन्दी वैद्यों की क्रिया की गोलियां जो लकवा को गुण करें। मालका गनी रतनजोति पीपल प्रत्येक दसमाशे स्याह मूसली ४ तोले ४ माशे सोंठ ४ तोले ८ माशे जमालगोटे की मींगी १४ माशे सब औषधियों को कूट छान पानीमें मिला खरल में कूट कालीमिर्च की बराबर गोली बनावें। मात्रा दो गोली

दवा—लकवा को गुण करे। सोंठ और बच बराबर कूट सहत में मिला अखरोट के प्रमाण नित्य सांझ सवेरे खाय और इसके खाने के समय सहत का पानी पीना उचित है।

बफ़ारा—पक्षाघात और लकवाके लिये। लहसन और सोंठ प्रत्येक साढ़े तीन माशे बकायन और सभालू के पत्ते पाव २ भर सोंठ को जौकुट करके सबको मिलाकर दो सेर पानी में चढ़ावे जब औटकर आधारहे तब बंद स्थान में लिहाफ़ ओढ़कर भीतर ही भीतर उसका बफाराले।

कुचले की गोली—अर्द्धांगवात और लकवे को गुण करे मस्तक रोग और कमर की पीड़ा को दूरकरे और ठंडी प्रकृति को गरम करे। १५ कुचलों को १५ दिन पानी में भिगोवे मगर तीसरे दिन पानी को बदल दिया करे पंद्रहवें दिन जब नरम होजायें तब छीलकर सुखाले फिर आंच में उसकी भस्म करले कि धुआं न रहे उठाकर उसकी बराबर कालीमिर्च मिलावे और पीसकर कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनाये एक गोली नित्य खाय।

दूसरा नुसख़ा--हिंदुस्तानी वैद्योंका जो पक्षाघात और कफके रोगोंको गुण करता है। कुचला भांग के बीज और नकछिकनी प्रत्येक दो तोले ४ माशे इनको पावभर दूधमें आधपाव पानी मिलाकर औटावे जब चौथाई रहे तब कुचला और भांग के बीजोंका छिलका दूर करके बच पीपल सोंठ और सौंफ प्रत्येक डेढ़ दिरम कूट छान के हरी अमरदंदी के रसमें अथवा सूखी को औटाकर

उसमें सब दवाओं को खरल करें और चने के प्रमाण गोलियां बनाकर सभा सवेरे एक या दो खाया करे।

गुण इस रोगमें कभी भूल में न खाय और जब तक तृषा न लगे सहत का पानी नपिये लकवाके रोगीको अंधेरे स्थानमें बैठना उचित है। जहां पवनका प्रवेश नहो जिस अर्द्धांगवात वाले रोगीके ज्वरका वेग हो तो उसको गर्म दवा नदे और प्रथम ज्वरकी चिकित्सा करे पक्षाघातीको गर्म जलसे स्नान कराना उचित नहीं है।

हिन्दीवैद्यों की दवा पक्षाघातको गुण दायक है। रांग जस्त सींगियाविष और पारा प्रत्येक दस मांशे कालीमिरच डेढ़ तोला प्रथम रांग और जस्तको पिघलाकर पारेमेंडाले कि गोलीसी बनजाय फिर छ प्रहर घोटे पीछे थोड़ी गंधक उसमें छिड़क कर छः प्रहर घोटे इसके पीछे चार २ कालीमिरच का चूर्ण छिड़क कर छ प्रहर घोटे इस प्रकार अठारह प्रहर होजाय। मात्रा एक चांवल पान में रखकरदे खाने को पक्षियोंका मांसदे।

बचपाक लकवाके रोगोंमें अजमाया हुआ है। बच पाच तोले दस मांशे सोंठ और काली जीरी दो २ तोले डेढ़पाव सहद में मिलावे। नित्य साढ़ेतीन मांशे खाय इस दवामें शरबत का पानी पीना उचित है।

दवा दूसरी पक्षाघात लकवा और कफ के सब रोगों को गुणदायक है बच तीन तोले कालीमिर्च पोदीना स्याहजीरी और कलौंजी प्रत्येक दस मांशे पावभर शहदमें मिलावे मात्रा सात मांशे।

दूसरी भिलावे की मिंगी बूरे के साथ सफाई के बाद खाना पक्षाघात लकवा और मिर्गी रोग वाले को गुण करती है।

मसलने की औषधि जीभपर मलनेसे अर्द्धांग वात को गुण करे। राई और अकरकरा पीसकर शहदमें मिलाकर जीभ पर मले।

दवा अर्द्धांग वात वाले की प्रकृति को बदले। एक वीरबहूटी के मस्तक और पांव उखाड़कर पानकी बीड़ीमें नित्य रखकर खालिया करे।

दवा पक्षाघातमें उत्तम औषधि भांग है जालीनूस हकीम कहते हैं कि जो कालीमिर्च महीन पीसकर तेलमें मिलाकर पतला २ लेपकरे तो इसके तुल्य कोई औषधि नहीं है।

दवा लकवा को गुण करे। पाच दिरम सनके बीज सहतमें मिलाकर सफाई के पीछे पंद्रह दिन खाय।

तेल इसका मलना पक्षाघात और लकवा को गुण करता है । सफेद कनेर की जड़का छिलका सफेद चिर्मिठी की दाल, काले धतूरे के पत्ते, प्रत्येक दो तोले चार माशे सबको कूट छान टिकिया बनावे और पावसेर तेलमें तले जब टिकिया जल जाय उसी तेलमें घोटे जब कीचड़ नीचे बैठजाय तब अर्द्धांग बाय वाले रोगी के शरीर में मालिशकरे यह तेल इन्द्रीकोभी बलवान करताहै।

दूसरा तेल मीठातेल पावसेर कूट और कलौंजी दो २ तोले चार २ माशे दोनों को तेलमें खूब जलाकर काम में लावे ।

पत्तों का तेल जिसका मलना, पक्षाघात को गुण करे । भटी, धतूरा, असगंध, आक, सहदेई, सहजना और संभालू इन सबके पत्ते बराबर ले कूट कर रसनिचोड़ और बराबरके मीठे तेलमें औटावे यहांतक कि तेलमात्र रहजाय और सब रस जलजाय पीछे उसमें सोंठ और कड़वा कूठ मिलाकर मले ।

यह तेल पट्ठोंको बलमान करे अर्द्धाङ्ग और सर्वाङ्ग बातों को गुण करे और वायको पचावे ।

कूठ ७ माशे, बालछड़, छबीला, तेजपात, अकरकरा और सोंठ प्रत्येक साढ़ेतीन माशे जोकुट करके पानीमें भिगोदे प्रात काल औटावे जब तिहाई भाग रह जाय मीड़कर छानले पावसेर मीठातेल मिलाकर औटावे जब सब पानी जलजाय तेल मात्र रहजाय उतार लेवे ।

दाउदी का तेल बाबूना के तेल के तुल्य है शीत के रोगों को गुण करता है ।

दाऊदी के फूलों का तेल और तेलोंकी भांति निकालले मगर फूलों को तीनवार बदले ।

ततली का तेल

इसका मलना सर्वांग बातको गुणकरे । ततलीके पत्तोंको चौगुने तेलमें औटावे जब तेल रहे छटांकभर सूखी ततली सेर भर पानीमें औटावे जब आधा रहजाय छानकर दो तोले चार माशे बही मीठा तेल उसमें डालकर यहांतक औटावे कि पानी जलकर तेलमात्र रहजाय ।

रोगनबाबूना

मस्तकके मर्दरोगोंको मलने से गुण करता है, बाबूनाके ताजा फूल २ भाग,

मेथी १ भाग तिल का तेल छः भाग शीशी में भरके चालीस दिन धूप में रक्खे और पाजे बाबूना और मेथी को दश भाग पानी में औटाते हैं यहां तक कि तेल मात्र रहजाय ।

दूसरा तेल

बबली के ताजा पत्ते तिल के तेल में मिलाकर शीशी में रखके धूप में रक्खे चालीस दिन पीछे काम में लाय ।

तेल

इस के मलने से पक्षाघात और कंपनवायु दूर होती है । शुद्ध सुर्ख कुचला चार तोले आठ माशे कूट कडुवा दो तोले चार माशे कायफल और धतूरे के बीज चार २ रत्ती कूट छानकर पानी से टिकिया बनावे और द्विगुने मीठे तेल में जलाकर मले परन्तु तेल को छानकर मले ।

कफ और बात को दूर करने का तेल

कलौंजी, अजवायन, अकरकरा इस्पद और खारी नमक बराबर ले जौकुट करे और आठ भाग पानी में भिगोकर औटावे जब चौथाई रहजाय तब छान के बराबर का मीठा तेल मिलाकर औटावे पानी जलकर तेल मात्र रहजाय काम में लावे ।

बावची का तेल

पक्ष घात का गुणदायक है । बावची आधसेर सुर्ख अजवायन तीन तोले कूट छानकर पानी में टिकिया बनाले, धतूर के पेड़ का रस और आध सेर मीठा तेल मिलाकर लोहे की कढ़ाही में पकावे जब टिकिया जलजाय तब छानकर मले ।

तेल

मस्तक के सर्दी मात्र के रोगों को गुण करे । मालकांगनी, भिलावे, बाबर सन बराबर ले कूट छान गोलियां बनाकर तीन दिन सुखा के पातालयन्त्र में तेल खींचे मात्रा एक रत्ती से ४ रत्ती तक पान में रखकर दें ।

तेल

अस्तरखा अर्थात् फोला और वाय और सीत मात्र के रोगों को गुण करे । मैनफल पांच तोला दशमांश, सोंठ, कूजा, बाबूना, कुटकरवा, प्रत्येक साढ़े तीन तोले कलौंजी, पवार के बीज, धतूरे के बीज, अजमोद, अकरकरा, मालकांगनी, अस्पद, पीपलामूल, कायफल, खुरासानी अजवायन, दसी बायविडंग, प्रत्येक

एक तोला दो माशे, तिल्ली का तैल दो सेर, रेंडी का तेल आधपाव और अलसी का तेल आधपाव तेल की क्रिया से तेल बनाकर मले और सर्दी के दिनों में ठंडी पवन और सीतल वस्तु से बचे।

सफूफ

अर्थात् फक्की अर्द्धांगवात और वायरोगों को गुणकारी है। अजमोद, बायविड़ंग, सैंधानौन, देवदारु, चीता, पीपलामूल, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, प्रत्येक ढाई टंक अर्थात् दस माशे बड़ी हड़ का बक्कल साढ़े चार तोले विधारा और सोंठ प्रत्येक एक तोले आठ माशे कूट छान कर एक से डेढ़ तोले पर्यन्त खाना चाहिये।

लहसनपाक

आधपाव लहसन की बड़ी २ कली छीलकर गाय के डेढपाव दूध में औटा. जब घुल मिल जायं छानकर और चाशनी करके बाबूने के फूल, सोंठ, काली-मिर्च,पीपल बड़ी हड़ का बक्कल, अकरकरा, कबाबचीनी, वज, कुलीजन प्रत्येक चौदह माशे कूट छानकर चाशनी में पाक बनाले।

नफूख

अर्थात् नाक में फूंकने की औषधि पक्षाघात और लक्वे को गुण करे सोंठ और सैंधानौन पीसकर नाक में फूके।

भिलाये का पाक।

शीत के रोगों को गुण करे। बावची, सोंठ,तेजपात,बालछड़, नागरमोथा, काली मिर्च, कूट, अक्करा, कलोंजी, शहद और भिलाये प्रत्येक दो भाग, भांग, राई, और पीपल एक भाग कूट छान कर बादाम रौगन में मरको कर तिगुना शहद मिलाकर रखे छ महीने पीछे काम में लावे मात्रा साढ़े तीन माशे से सात माशे तक देवे।

सऊत

लक्वा और मिर्गी को गुण करे तथा मस्तक को कफादिक से पाक करे। थोड़ी कलोंजी और इस्पन्द लेकर चुकन्दर और इन्द्रायन की जड़ों के रस में पीस छानकर थोड़ी बूंद नाक में टपकावे।

शर्बत

लक्वा और पक्षाघात वाले के मस्तक पाक करने में काम आता है।

सोंठ, बालछड़, कुलीजन, प्रत्येक साढ़े तीन माशे, काली मिर्च, पीपल, प्रत्येक पौने दो माशे जौकुट करके थैली में बांध आधसेर शहद और तीन सेर पानीमें औटावे थैली को बारंबार मीड़ता रहे कि चाशनी होजाय मात्रा दो तोले।

चटनी पक्षाघात और कफके रोगों को गुण करे बच, अकरकरा, कायफल, कुलीजन, कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, नरकचूर और पीपलामूल बराबर लेकर सब के बराबर शहद मिलावे मात्रा वैद्य बुद्धि के अनुसार दे।

फसल माली खोलिया

अर्थात् बावलेपन की चिकित्सा में। जो विशेष बावलाहो तो उसका नाम जुनूनहै। जो बावलेपनमें क्रोध और सोच प्रबलहो तो उसको मानियां कहतेहैं।

जो हसी, खेल, दुख देना प्रबल हो तो उसे दाउलकल्ब कहते हैं।

जो गुस्सा स्वभाव में हो और मनुष्यों से एकान्त रहे उसे कुतुर्ब कहतेहैं।

बावलेपन की चिकित्सा में फुर्ती करना उचित है आदि में फस्द खोले क्योंकि प्रथम तो इसकी चिकित्सा सहल है और जब रोग जड़ पकड़ जाय तब कठिन पड़जाता है। हर हाल में रोगी को प्रसन्न मन रक्खे और उत्तम स्थान में जहां सर्दी गर्मी विशेष न हों बैठावे। और आहार तर खिलाना, अत्यन्त निद्रा कराना यह उत्तम चिकित्सा है।

बार बार जुल्लाब देकर सफाई करना उचित है और दिल को बल प्राप्त कराना जिस कर्म से उसका मन प्रसन्न रहे वह काम करना उचित है। परन्तु एकान्त में बैठाना और डर हानि कारक हैं।

जो बावले का कामदेव जागे तो उसे थोड़ासा स्त्रीसंग करने दे अत्यन्त भोग न करने दे। फस्द के पीछे पनीर का पानी पिलावे यह उत्तम विधि है और जिस समय माउलजुब्न पिलावे उस समय यथा शक्ति जुल्लाब देता रहे

अमलबेद की शिकञ्जबीन।

वात रोगों को गुण करती है। अमलबेद दो तोले, पित्तपापड़ा और गावजुबां प्रत्येक चौदह माशे तिगुना कंद और अत्यन्त खट्टा सिरका कंदका तीसरा भाग सब की चाशनी करे और बकरी का दूध जिसका माउलजुब्न जुल्लाब अर्थात् पनीर का पानी इसको शिकञ्जबी से फाड़े बावलेपन के रोगोंमें बहुधा करके मस्तक पर मारना गुण करता है कि उसे बोध होजाता है, और दर्द के मारे बुद्धि ठिकाने आजाय और फिर रोग का वेग हो आवे तो फिर मारे अफीम खिलावे यह भी उत्तम चिकित्सा है। प्रथम दो दो रत्ती खिलावे

फिर डेढ़ माशे तक दे परन्तु यह तरुण पुरुषको गुण करे और डाह लगाकर डाहको छोड़ देना यह भी उत्तम चिकित्सा है और नित्य नाच देखना और मदिरा पान तिब्ब यूसुफी में इस रोग की चिकित्सा लिखी है।

दूसरी अमल बेद की शिकंजबी

इस को बादी के रोगों में मात्र जोबन जुलाब देवे हैं काली हड़, सेंधानोन प्रत्येक साढ़े तीन माशे अमल बेद डेढ़ तोले सिरके में भिगोकर इस सिरके को सादा शिकंजबीन बनावे तीन पाव दूध में मिलाकर पकावे ठंडा करके टपकावे आधपाव से सवापाव पर्यन्त जितना चाहे पीवे। (संक्षप)

मनुष्य के दांत जलाकर गुल रोगन में मिलाकर घोट नाक में टपकावे॥

एक मनुष्य की बात है कि वह प्रति दिन एक कोने में जा बैठा करता था और बावले पने की बातें करता तथा मन ही मनमें डरा करता था और अपनी गरीबी के कारण दवा नहीं कर सक्ता था मैंने प्रथम तो उसकी फस्द खोली पीछे बकरी का दूध और खाकशी अर्थात् खूबकला पिलायी तो विशेष गुण किया।

और एक भेद पागलपन का मिराक के मिलने से होता है मिराक उदरके ऊपरके पर्दे का नाम है रोहकी विशेषता, और पेठ की पीड़ा, जलन होना, पेट का फूलना यह उसके लक्षण हैं। और जलन के साथ खट्टी डकारों का आना, अन्न न पचना, खञ्त होना यह भी उसी का लक्षण है।

चिकित्सा इस की हर चिरले में फस्द खोलना ताजखरूस के पत्तों का रस पिलाना गुण करता है।

और एक भेद पागलपनका इश्क यानी चाहत है इसकी चिकित्सा यह है कि रोगी को किसी और काम में लगादे और उसे उसके प्यारेसे मिलादेना उत्तम चिकित्सा है और ऐसे मनुष्यों को उसके पास रक्खे जो उसके प्यारे की खोटी कहा करे और औरों से भोग कराना यह भी इश्क को घटाता है। फरेदी नाम किताब में यह लिखा है कि लोहे का बुझा पानी पीना इश्क को दूर करता है। उसकी यह विधि है कि लोहे को गर्म करके जब पानी में बुझाने लगे तो यह कहे कि जैसे गर्म लोहा पानी में ठंडा होता है उसी प्रकार फलाने के लड़के का मन फलाने के लड़के के इश्क से ठंडा करदे। यह तीन बार कहकर लोहा ठंडा करे फिर उस पानी से आशिक का मुंह धोवे और उस की छाती पर छिड़के तो तीन दिन के कृत्य से सब भूल जाय। तिब्ब फरेदी और दूसरी पुस्तकों में लिखा है कि जो उस लगाम रसन टुकड़े को जिसमें किसी की मौत की विधि लिखी हो लेकर उसे यादासा घिसके आशक और माशूक की जुदाई

की नीपत कर दोनों को परोक्ष में खिलादे इस रीति से इश्क दूर होवे और एक पुस्तक में मेरी दृष्टि में यह आया कि जो बीछूका डक और कुत्ते का नोंह ऊंटकी खाल में तावीज बनाकर पागल के कंठ में बाधे तो यह रोग जाय तथा मिर्गी को गुण करे (सकुल) इंग्रेजी डाक्टरों ने पागलपन दूर करनेको लिखा है कि बबलू का मेंगा चार रत्ती और कौड़ी भर कपूर मिलाकर पीसे कि अच्छी तरह घुल मिलजाय फिर ४ रत्ती कौए का रुधिर मिला दो जौ की बराबर में थोड़ा तुलसी का रस मिलादो चार बूंद नाकमें टपकावे तो जनून रोग दूर हो।

दूसरी दवा कद्दू और काहू का तेल जो जागने और सरसाम के रोगों में कह आये हैं मलना पागलपन के रोगों को गुण करे।

दूसरी तुहफा जोतुलमोमनीन की किताब में लिखा है स्त्री के मस्तक के बाल कोरे शिकोरे में जलाकर उस शिकोरे में आशक को पानी पिलावे तो इश्क रोग दूर हो उससे घिन आजाय

फसल इख्तिलाज

अर्थात् शरीर फड़कने की चिकित्सा में इस रोग का पूर्वरूप वायु है किसी रोगके पूर्वरूप से शरीर विशेष फड़कता है उसकी चिकित्सा यह है।

नोन और भुसी से सेंके और उन तेलों का मर्दन करे जो अर्द्धांगवायु में कह आये हैं और गर्म औषधियों का लेप भी गुण करता है और जो इन वस्तुओं से रोग का नाश नहो तो कफ को निकाल डाले।

फसल राशह

अर्थात् कंपनवाय की चिकित्सा में। जो कंपनवाय कफ के दोष से हो तो उसके लक्षण पहचान कर उस जोड़ की सफाई करे और अति मैथुन से कंपन वायु हो तो मैथुन का त्याग करे और जो अति मदिरा पान से हो तो मदिरा त्याग करे और इस रोग में ताजा दूध पानी और अधकच्चा मुर्गी का अंडा खाना गुण करे।

फसल नेत्र रोगों की चिकित्सा में

नेत्र सारे शरीर में उत्तम वस्तु हैं। जो रोग नेत्र में पीड़ा कारक हों उन की चिकित्सा में ढील करना अयोग्य है,नेत्रकी,गुबार,धुआं और बाहरी कुत्सित पवन से रक्षा करना योग्य है अति रुदन, अति मैथुन, अति नशा और अति गरम वस्तु विशेष खाना नेत्रों को अवगुण करता है और हर सफ़ेद महीन वस्तु पर निगाह रखना मना है। परन्तु कसरत के तौर पर उचित है और हरी वस्तु देखना नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है और नेत्रों की बीमारी में तीन दिवस पर्यन्त कोई औषधि न करनी चाहिये।

फसल रमद में

अर्थात् नेत्रों की उस पीड़ा और सूजन जो कोयों की सुर्खीके साथ होती है उसे रमद कहते हैं।

चिकित्सा उसकी सरेरू फस्द खोले जो सब प्रकार के रमद को माफिक़ आती है और गुण करती है और जोंक लगाना भी गुण करताहै इस रोगमें मांस, मिष्टान, खट्टा, खारा और चरपरा न खाय रमद के रोग की आदि में शीतल जल नेत्रों से न लगावे और हल्दी का रगाया पीला कपडा नेत्रों के आगे लटकाना उचित है अब थोड़ीसी सहज औषधियां रमद रोगकी कहता हूं।

हुब्ब

अर्थात् गोली लिखा है कि रमद के लिए इस गोली से बढ़कर और औषधि दूसरी नहीं है। भुनी फिटकरी साढ़े तीन तोले, हलदी सात माशे, जो कची हो तो उत्तम है अफ़ीम पांच माशे, पके कागजी नीबू के रस से लोहे की कढ़ाई में मदी आंच से पकावे और पानी में रगड़ कर नेत्रों के ऊपर पतला २ लेप करे और थोड़ी सी नेत्रों में भी किनारों की तरफ़ आंजे।

शियाफ़ अबीज

अर्थात् सफ़ेद का फाया रमद के रोगों को गुण करे। जो इस को कान में टपकावे तो कान के रोगों को गुण करे। जो दूध में मिलाकर इन्द्री में पिच-कारी लगावे तो मूत्र रुकजाने के घावों को गुण करे।

धोया हुआ सफ़ेदा पौने दो तोले, निशास्ता, कतीरा, बबूल का गोंद, प्रत्येक सवा पाच माशे, काफूर आठ रत्ती, कुदरू गोंद और अफ़ीम प्रत्येक दो माशे लेकर शिआफ़ बनावे।

दवा

नेत्र पीड़ा को तुर्त ही फ़ायदा करे। लोध, गेंहू की मैदा और घी प्रत्येक चौदह माशे सब का खोया करके चार गोलियां बनावे और एक ठिकरा आंच पर रखके उस में एक गोली रखदे जब थोड़ी गर्म हो तब, नेत्र पर बांधे इसी प्रकार चारों गोली बांधने से दर्द को आराम हो जाता है।

पोटली

इस पोटली के तुल्य और कोई नहीं है। ग्वारपाठे का गूदा एक माशे अफ़ीम एक रत्ती, पीसकर पोटली बांधे पानी में भिगो २ कर नेत्रों पर फे एक बूंद नेत्रों के भीतर भी टपकावे।

तथा

लोध और भुनी फिटकरी एक२ माशे, अफीम ४ रत्ती, इमली की पत्तियां चार माशे, सब को पीसकर पोटली बनाकर नेत्रों पर बार २ फेरे।

तथा

इमली और सिरस की पत्तियां, हलदी, फिटकरी प्रत्येक पौने दो माशे महीन पीस पोटली बनाकर पानी में भिगोकर बार २ नेत्रों पर फेरे और थोड़ासा पानी उसका नेत्रों में भी जानेदे। तथा टपकावे तो नेत्रों की पीड़ा जाय और फूला को गुण करे।

तथा

पोस्त का डोड़ा एक, एक रत्ती अफीम, लौंग दो, भुनी फिटकरी चारमाशे, चने बराबर हलदी, थोड़ीसी इमली की पत्तियां, पोटली बांधकर पानीमें भिगोकर नेत्रों पर फेरे और भीतर टपकावे तो रमद को गुण करे।

अथवा

कपूर तीन भाग, पठानीलोध एक भाग, पीसकर पोटली बांधे और दो घड़ी पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे और भीतर भी टपकावे।

अथवा

लोध, फिटकरी, मुर्दासंग, हलदी और सफेदजीरा, प्रत्येक चार माशे अफीम ४ रत्ती, चना, कालीमिर्च चारनग, नीलाथोथा चरद् प्रमाण; कूट छानकर पोटली बांध और पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे।

अथवा

बड़ी हड़का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आमला, रसोत, गेरु, इमली की पत्तियां, अफीम, भुनी फिटकरी और सफेदजीरा थोड़ा २ ले कपड़े में पोटली बांधकर गुलाबजल हो तो उत्तम नहीं तो पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे।

दवा

किसी प्रकार की नेत्र पीड़ा हो सब को गुण करे। सफेदजीरा, लोध महीन पीसकर और भुनीफिटकरी पीसकर प्रत्येक थोड़ी २ ग्वारपाठे के गूदे में मिलाकर पोटली बांध पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे।

दवा

नेत्र पीड़ा को गुण करे। अफीम एक माशे, भुनी फिटकरी दो माशे, इमली की पत्तियां दस माशे सब को महीन पीसकर पोटली बांध और पानीमें भिगोकर नेत्रों पर फेरे और भीतर टपकावे।

दवा

रमद को दूर करे। फिटकरी एक माशा, असली दो माशे दोनों की पोटली बांधकर पानी में भिगो २ कर नेत्रों पर फेरे।

कुतूर

गर्मी की नेत्र पीड़ा को गुण करे। ईसबगोल का लुआब नेत्रों में लगावे।

कुतूर

रमद को गुण करे। जिस दिन नेत्र पीड़ा हो उस दिन धतूरे के पत्ते का रस गुनगुना कर कान में टपकावे जो पीड़ा दाहिनी ओर हो तो बायें कान में जो बायीं ओर हो तो दायें कान में टपकावे।

कुतूर

बच्चों के रमद को गुण करे। नीम की कोंपल पीस कर ऊपर लिखे अनुसार टपकावे और जो पीड़ा दोनों नेत्रों में हो तो दोनों कानोंमें टपकावे।

कुतूर

नेत्र रोग को गुण करे। निरा ग्वारपाठे का गूदा पीस कर सोते समय कान में टपकावे।

दवा

गर्मी की नेत्र पीड़ा को गुण करे। गोंदनी की पत्ती मलकर उसका रस नेत्रों में टपकाव

कुतूर

नेत्र पीड़ा को गुण करे। हल्दी पानी में पीसकर उसी प्रकार कानमें टपकावे।

दवा

गर्मी के रमद को गुण करे। बीदाने का लुआब पुत्री की मा के दूध में धनिये के पत्तों का रस मिलाकर छानकर नेत्रों में टपकावे।

दवा

नेत्र पीड़ा को गुण करे। नीबू [illegible] लोहे के [illegible] लोहे के मूसले से घोटे जब काला होजाय तब नेत्रों [illegible] पतले [illegible] करे।

लोध, आंवला, गाय के घी में [illegible]
परन्तु नेत्रों के [illegible] जाने

लेप पतला

नेत्र पीड़ा को गुण करे। बड़ी हड़ का बक्कल, गेरू, रसौत और छोटी हड़ घिसकर लेप करे।

तथा

रमद को गुण करे। सूखी इमली के चीयां निकाल कर पानी में भिगो मसल कर छान तीन रत्ती अफीम, पांच रत्ती फिटकरी, उसी इमली के पानी से लोहे के बासन में पकावे जब गाढ़ा होजाय तब सीप में रखकर लेप करे। और जो इमली न मिले तो उसके पत्तों का रस लेकर पकाकर पतला लेप करे।

अथवा

सोंठ, बबूल का गोंद प्रत्येक साढ़े तीन माशे कूट छान पानी में पीसकर लेप करे।

अथवा

अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़े पानी के संग खूब पीस कर पतला लेप करे और नेत्रों में टपकावे।

दवा

नेत्र पीड़ा को तुर्त आराम करे। बड़ का दूध नेत्रों में आंजे अथवा नीम के पत्ते और सोंठ बराबर लेकर अलग २ पीस छानकर चने के प्रमाण गोलियां बांधे पीड़ा के समय पानी में घिसकर लगावे।

दवा

नेत्रों की लाली और धुन्धलापन का गुण करे। ढाई कालीमिर्च थोड़ीसी चूल्हे की मिट्टी लाल जली हुई दोनों को बांस के चोंगे अथवा चीनी के प्याले में खूब पीस जब काली होजाय नेत्रों में आंजे।

दवा

रमद को गुण करे। अडूसे के पत्तों को घोट कर टिकिया बनाकर तीन दिन नेत्रों पर बांधे अथवा कपास की पत्ती दही में पीसकर नेत्रों पर लगावे।

दवा

अनार की पत्ती पीसकर टिकिया बना सोने के समय नेत्रों पर बांधे।

दवा

बच्चों के रमद को गुण करे। लड़की के मूत्र में रुई भिगोकर नेत्रों पर बांधे।

दवा

रमद रोग पैदा होने की आदि में जो पीड़ा दाहीं तरफ हो तो बायें पाव के अगूठे के नोह में और बायीं तरफ हो तो दायें पाव के अंगूठे के नोह में आक का दूध भरदे।

दवा

रमद को गुण करे। गोथी पीस कर टिकिया बनाके नेत्र पर बान्धे।

दवा

नेत्र छाती और पेट के जलन को गुण करे। मकोय, आमला, मुलहटी, नागरमोथा, खस, नीलोफ़र के बीज प्रत्येक साढ़े तीन माशे, मिश्री दो तोला दश माशे कूट छानकर मात्रा सात माशे लेवे।

दवा कफ़ के रमद को गुण करे। सहजने के पत्तों का थोड़ा रस शहद में मिलाकर नेत्रों पर लगावे तो तीन दिवस में आराम होवे।

दवा बच्चों आदि के रमद को गुण करे। शुद्ध चाकसू सात माशे, लाई, मिश्री प्रत्येक साढ़े तीन माशे महीन कूट छानकर छिड़के, बाजे लाई के बदले ममीरा डालते हैं।

दवा

रमद को गुण करे। भुनी मेथी का लुआब थोड़े से कतीरे के संग टपकाना विशेष पीड़ा को आराम करता है।

दवा

कटेरी के पत्ते पीस कर नेत्रों पर बांधे और रस नेत्रों में टपकावे तो नेत्रों को गुण करता है।

दवा

कैरी अर्थात् कच्चा आम पीस कर नेत्रों पर बांधे आराम होवे।

दवा नेत्रों की सुर्खी को दूर करे। छिली मुलहटी कूट के थोड़े पानी में पीसकर उस में रुई भिगोकर नेत्रों पर रक्खे।

दवा

रमद को गुण करे। लोध पौने दो तोले, बड़ी हड़का बक्कल सात माशे अनार के पत्तों के रस में पीसकर उसमें रुई भिगोकर तीन रात्रि नेत्रों पर रक्खे।

गुसल

अर्थात् जोड़ों के धोने की औषधि। नेत्रों की गर्मी को दूर करे और खुजली को मिटावे और आदिक रमद रोगों को मिटावे। त्रिफला का वक्कल जौकुट करके रात्री को पानी में भिगोकर प्रातःकाल नेत्र धोवे यह औषधि एक दिन करे तो एक वर्ष तक पीड़ा नहो परन्तु नेत्र दुखते नहो। बीस मुद्दी निगल ले तो दो वर्ष नेत्र न दुखें यह आजमाऊी है और यूनानी हकीम यह कहते हैं कि बुद्धि के दिन सूर्योदय के पहले एक अनार की कली जो फूली हो पेड़ पर से मुह से तोड़ निगल जाय तो एक वर्ष तक रमद का रोग न हो और जो दो निगले तो दो वर्ष न हो॥

फ़सल अशा अर्थात रतोंद की चिकित्सा में

कालीमिर्च, कबेला पीपल बराबर के महीन पीसकर नेत्रों में आंजे॥

दवा

काली हड़, सोंठ, कालीमिर्च कूटछानकर गोली बनावे पानी में घिसकर नेत्रों में आंजे।

दवा

शेख बूअली सेना की आजमायी हुई। बकरी के कलेजा का कबाब बनावे उसका जो पानी टपके नेत्रों में लगावे और जो साबत पीपल कलेजे में रख आंच पर इतनी देर रखते हैं कि जलजाय फिर पीपल निकाल शहद में मिलाकर नेत्रों में लगाते हैं।

दवा प्याज का रस नेत्रों में लगावे।

दवा सिरस के पत्तों का रस नेत्रों में लगावे।

दवा सेंधेनोन की सलाई नेत्रों में लगावे।

दवा समुद्रफल की गुठली बकरी के मूत्र में घिसकर नेत्रों में लगावे।

दवा दही के तोड़ में थूक मिलाकर नेत्रों में आंजे।

दवा अदरक का रस नेत्रों में टपकावे जो अदरक नहो तो सोंठ पानी में घिसकर दो तीन बूंद नेत्रों में टपकावे।

दवा काली मिर्च थूक में घिसकर नेत्रों में लगावे।

दवा रोहू मछली का पित्ता नेत्रों में लगावे।

दवा कसोंदी के फूलका रस नेत्रों में लगावे।

दवा सहजने की नरम २ डालियों का रस सात मांशे शहद में मिलाकर नेत्रों में टपकावे।

दवा

सिरस के बीज चार तोले आठ माशे खूब पीस चून में मिलाकर रोटी पकाकर तीन दिन खाय।

दवा

हड़ और लाल मिर्च शहद में मिलाकर नेत्रों में आंजे।

दवा काली मिर्च रोहू मछली के पित्त में भिगो कर सुखाले जब सब पित्त को मिर्च सोखले तब घिसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा गधेका तुर्त का रुधिर नेत्रोंमें लगावे तो तीन दिनमें रसौंद जाय।

अथवा मनुष्य के कानका मैल और बड़ी हड़का बकल बराबर पीसकर गोलियां बनावे और पानी में घिसकर शामको नेत्रों में आंजे।

अथवा सरकंडा गांठ पर से तोड़कर उसका खोखला जलावे जब चार अंगुल जलने से रहे उसके दो टूक करके वह लाल २ तरी जो उसमें इकट्ठी होगयी हो उसे नेत्रों में लगावे। बहुधा तेजी के कारण पीड़ा और जलन पैदा करेगी परन्तु दोष आंसुओं के संग बहाकर खोदेगी।

अथवा हुक्के नैचे की चीकट नेत्रों में आंजे।

फ़सल ज़हर

अर्थात दिनोंधी की चिकित्सा। मस्तक को तर करे—उद्द करे कि रुधिर गाढ़ा होजाय, ठंढे पानी में डुबकी लगाना रखना गुण करे।

फ़सल सलाक

अर्थात पलकों का मोटा होजाना, सुजाना, खुश्की होनी गिरजाना इसकी उत्तम चिकित्सा सरु फ़स्दका खोलना है और पीछे पछने लगाना उसके पीछे औषधि काम में लाना है।

दवा भाफ निगलना गुण करे। कि पलकों को घास की तरह उगाती है आकके दूध में रुई भिगोकर सुखाले और दीये में मीठा तेल भरकर उस बत्ती को जलाकर काजल पाड़के नेत्रों में लगावे और बाजी किताबों में तेल के बदले घी लिखा है **अथवा** धतूरे और भागरे की पत्तियों का रस लेकर उसमें रुई

भिगो कर छाया में सुखाकर मीठे तेल में जलाकर काजल पाड़े इसे बासे पानी से नेत्रों में लगावे।

अथवा पुराने ढोल की खाल कोयलों की आंच पर जलाकर कोयले कर पीस धुनी हुई रुई में रख बत्ती बना सरसों के तेल में जलाकर काजल पाड़े उसे नेत्रों में लगावे।

अथवा आक की जड़ जलाकर उसकी राख पानी के साथ नेत्रों के आस पास पतला २ लेपकरे नेत्रों की खुजली और सुरखी और पलकों के फूलने को दूर करे। बाजी पुस्तकों में लिखा है कि नीम के पत्ते पीसकर उनका रस नेत्रों में लगावे तो खुजली को दूर कर और बाफ निगल जाने को गुण करे।

दूसरी दवा परवालों और बाफ निगल जाने को और नेत्र के आंसुओं और खुजली तथा लाली को गुण करे। जस्त दो तोले चार माशे, लोहे के बासन में कोयला की आंच पर पिघला कर थोड़ा २ उसपर बथुए का रस टपकावे कि पीली वा सफेद भस्म हो जावे उसे महीन पीसकर नेत्रों में आंजे।

दूसरी दवा बाफ निगल जाने और पलकों की सुरखी को गुण करे चकचूंदर की विष्ठा आधी कच्ची आधी पक्की दोनों को पीसकर शहद में मिला कर पतला लेप करे।

दूसरी दवा बाफ निगल जाने और पलकों की खुजली और पीड़ा को गुण करे। सफेद घिसलपरा की जड़ छाया में सुखाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे।

अथवा मांखी का मूड़ दूर कर सुखा के पानी में पीसकर पतला लेप करे।

अथवा बेरी का फल पानीमें औटाकर उसका बफारा लेवे।

अथवा सीप जला पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा कबूतर की बीट शहद में मिलाकर पलकों पर लगावे।

अथवा सांपकी कांचली जलाकर तिलके तेल में मिला पलकों पर लेप करे।

दवा यह दवा उस बाफनी गलजाने का गुण करे जिसकी पलक गिर पड़ें और किनारे लाल पड़जांय। बबूल की सेरभर पत्तियों को पांचसेर पानी में औटावे जब चौथाई रहै छानकर नित्य दोनोंबार पलकों पर पतला लेप करे थोड़े दिनों में आराम हो जायगा

अथवा गधे की लीद सुखा के पाताल यंत्रकी रीति से तेल खैंच पलक

पर मले । अथवा कद्दू को जला पीसकर उसकी राख सुर्मे की तरह नेत्रों में लगावे ।

अथवा पुराना कपड़ा या रुई तीनबार हल्दी में रगके सुखाकर फिर उसी प्रकार तीनबार बिनौले के गूदे में भिगोकर सुखावे, फिर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकार काजल पाड़े उकसो नेत्रों में लगावे ।

अथवा खपरिया नीलाथोथा कपूर मिश्री बराबर ले कूट छानकर पानी में खरल कर गोलियां बना और सोते समय पर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे।

अथवा कुदरूगोंद को काजलसा महीन पीस के नेत्रों में लगावे तो ज्योति को बढ़ावे नेत्र का घाव, जमा हुआ रुधिर, आंसू बहने बाफनी गलजाने, नेत्रों की सफ़ेदी और खुजली को गुण करे। और धुन्ध को दूर करता है। जो शहद में मिलाकर लगावे तो कुदरू गोंद का काजल भी यही गुण करता है।

काजल की विधि यह है कि कुदरू गोंद को दीये में रख जलाकर उस पर औंधा बासन रखदे कि उसमें काजल पड़ जाय उसको नेत्रों में आंजे यह दवा पलक भड़जाने को गुण करे छुहारे की गुठली दस माशे, बालछड़ सात माशे पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

दवा पलकों के बाल जमाने की जो कोढ़की बीमारी से गिरगये हों गुण करती है जवाहड़ और माजूफल जलाकर उसमें सुर्मा मिलाकर पतला लेपकरे।

फ़सल नजूल खमाय अर्थात मोतियाबिंद की चिकित्सा में।

जिस मनुष्य के नेत्रों के आगे मच्छर या मक्खी से उड़ते दिखाई दें दिन ब दिन विशेषता होतीजाय तो जानिये कि इसके मोतियाबिंद होगा। इस के पीछे पुतली बदलजाय और नेत्रों की ज्योति जाती रहे ।

इसकी आदिमें चिकित्सा यहहै कि कनपटियों पर गुललगावे तथा कनपटियों पर जोंकें लगाना भी गुण करता है और जब पानी उतर आवे उसके पीछे दोष को पकाकर मस्तक की सफ़ाई करे और मोतियाबिंद के आदि में बचपाक खिलाना गुण करता है। वह यह है बच, हींग, सोंफ सोंठ, बराबर ले शहद में मिलाकर पाक बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे की है।

अथवा निर्मली शहद में पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा हिंगोट की मिंगी दो भाग अफ़ीम एक भाग, कूट छानकर शियाफ़ बनावे ।

अथवा नोसादर को सुर्मेसा महीन पीस नेत्रों में लगाना मोतियाबिंद । गुण करे ।

अथवा सफ़ेद चिरमिठी का रस नीबू के रस में मिलाकर भाव काल नेत्रों में लगावे।

अथवा यह दवा मोतियाबिन्द को उत्तम है इसको बढ़ने नहीं देती इमली के पत्ते दस तोले फूल (कांसी) के कटोरे में नीम के घोटे से जिस में पैसा गढ़ा हो यहां तक घोटे कि वह गाढ़ा होजाय पीछे बेटी की मा के दूध में चालीस पहर खरल कर काम में लावे।

अथवा सौंफ का काजल लगावे। वह यह है कि सौंफ का हरा पेड़ लेकर शीशे तथा चीनी के बर्तन में रखे जब सूख जाय तब पीसकर सुर्मा लगावे।

अथवा सेवती के फूल और कुदरूगोंद बराबर लेकर पीस के रुई में लपेट बत्ती बनावे और मीठे तेल में डाल काजल पाड़के लगावे।

अथवा बहुत चोखा भीमसेनी कपूर लड़के की मा के दूधमें पीसकर लगावे।

अथवा कौएका पित्ता आधे तोले शहदमें खूब रगड़के नेत्रोंमें लगावे रोग दूरहो।

अथवा निर्मली, हींग, फिटकरी, सफ़ेदा, खपरियानीलाथोथा, प्रत्येक चौदह मांशे खूब महीन पीसकर दही में घोटे कि आठसेर दही उसमें समाजाय पीछे उसकी गोलियां बनावे और सोते समय पर स्त्री के दूध में घिसकर लगावे।

अथवा आदि में इस दवा को काम में लावे जो मोतियाबिन्द को होने न देवे। इड़की मिंगी तीस पहर निर्मल पानी में घोटे और गोलियां बना नेत्रों में आंजे।

अथवा जो रोग के आदि में लगावे तो बढ़ने न पावे दो कागज़ी नीबू का रस चार तोले गऊ के माखन में खूब मल के माखन में थोड़ा पानी डालकर दो रात्रि दिन रखदे फिर मक्खन को पानी से धोकर उसी प्रकार दो नीबू के रस में घोटकर पानी डालकर दो रात्रि दिन रखकर धोवे इसी प्रकार पचीस बार करके चीनी तथा शीशे के बासन में रक्खे और खस के दो दाने की बराबर लगाया करे।

अथवा नील के बीजों का सुर्मा लगाना मोतियाबिन्द नहीं होने देता।

अथवा मनुष्य के कान का मैल और हींग बराबर ले शहद में पीस के नेत्रों में लगाया करे और दूध, मछली इस रोग में खाना योग्य नहीं है।

फ़सल नेत्र और पलकों की खुजली की चिकित्सा में

आदि में फ़स्द सरेरू खोले उसके पीछे खुजली की औषधि काम में लावे।

पर मले। अथवा कदद् को जला पीसकर उसकी राख सुर्मे की तरह नेत्रों में लगावे।

अथवा पुराना कपड़ा या रुई तीनबार हल्दी में रगके सुखाकर फिर उसी प्रकार तीनबार बिनौले के गूदे में भिगोकर सुखावे फिर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकर काजल पाड़े उसको नेत्रों में लगावे।

अथवा खपरिया नीलाथोथा कपूर मिश्री बराबर ले कूट छानकर पानी में खरल कर गोलियां बना और सोते समय पर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे।

अथवा कुदरूगोंद को काजलसा महीन पीस के नेत्रों में लगावे तो ज्योति को बढ़ावे नेत्र का घाव, जमा हुआ रुधिर, आंसू बहने बाफनी गलजाने, नेत्रों की सफेदी और खुजली को गुण करे। और धुन्ध को दूर करता है। जो शहद में मिलाकर लगावे तो कुदरू गोंद का काजल भी यही गुण करता है।

काजल की विधि यह है कि कुदरू गोंद को दीये में रख जलाकर उस पर औंधा बासन रखदे कि उसमें काजल पड़ जाय उसको नेत्रों में आंजे यह दवा पलक झड़जाने को गुण करे छुहारे की गुठली दस मांशे, बालछड़ सात मांशे, पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे।

दवा पलकों के बाल जमाने की जो कोढ़की बीमारी से गिरगये हों गुण करती है जराहड़ और माजूफल जलाकर उसमें सुर्मा मिलाकर पतला लेपकरे।

फसल नजूल लमाय अर्थात मोतियाबिंद की चिकित्सा में।

जिस मनुष्य के नेत्रों के आगे मच्छर या मक्खी से उड़ते दिखाई दें दिन ब दिन विशेषता होतीजाय तो जानिये कि इसके मोतियाबिंद होगा। इस के पीछे पुतली बदलजाय और नेत्रों की ज्योति जाती रहे।

इसकी आदिमें चिकित्सा यह है कि कनपटियों पर गुललगावे तथा कनपटियों पर जोंकें लगाना भी गुण करता है और जब पानी उतर आवे उसके पीछे दोष को पकाकर मस्तक की सफाई करे और मोतियाबिंद के आदि में बचपाक खिलाना गुण करता है। वह यह है बच, हींग, सोंफ सोंठ, बराबर ले शहद में मिलाकर पाक बनावे मात्रा साढ़े तीन मांशे की है।

अथवा निर्मली शहद में पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा हिंगोट की मिंगी दो भाग अफीम एक भाग, कूट छानकर शियाफ बनावे।

अथवा नोसादर को सुर्मेसा महीन पीस नेत्रों में लगाना मोतियाबिंद गुण करे।

चमेली की गोली नेत्र की कम जोति को गुण करती है चमेली के फूलों की डंडी में बराबर का चूर्ण मिलाकर खरल कर नेत्रों में लगावे।

दवा खपरिया छः माश को टुकड़े २ कर दो तीन नींबू के रसमें भिगोवे और मिट्टी के बासन में रख कपरौटी कर आरने कंडों में रख आंच दे फिर निकाल पीसकर नेत्रों में आंजे।

अथवा बड़ी हड़ की १२ गुठली, ५ पीपल, ५ कालीमिर्च आमलेके रसमें घोटके जब कि घोटते २ काढ़ा पड़ जाय तब गोलिया बनाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे।

अथवा रीठाकी गोली की मिंगी नींबू के रसमें घोट कर गोलि य बनावे और नित्य प्रात काल थूक में घिसके नेत्रों में आंजे।

अथवा यह गोली नेत्रों की कमजोति और लाली को गुण करे। जवा-खड़ और मिश्री बराबर पीसकर गोलियां बनाके नेत्र से लगावे।

सलाई इसको मिसरानी वैद्य काम में लाते हैं सीसे को आंच में गलाकर त्रिफला के पानी में बुझाव फिर गलाकर मेह के पानी में बुझावे इसी प्रकार भांगरे के रस, घी और शहत में बुझा २ कर सलाई बना नित्य प्रात काल नेत्रों में फेरे नेत्रों के सब प्रकार के रोगों को गुण दायक है और नेत्रों की जोति बढ़ाती है यह सलाई बहुधा नेत्र के मात्र रोगों को गुण करती है इसके नित्यप्रति लगाने से नेत्रों को चैन रहे। जब सोते से उठे तब अपना थूक नेत्रों में आंजे तो नेत्र रोग कभी नहीं।

दवा हिंगोट की मिंगी पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा निर्मली पानी में घिसकर लगावे तो नेत्र की जोति बढ़ावे।

सिर्सका काजल नेत्रों की जोति को बढ़ावे। सिर्सके पत्तों के रस में रुई भिगोकर सुखावे इसी प्रकार तीन बार करके बत्ती बना चमेली के तेल में काजल पाड़के रख और उसका अंजन आंखों में लगाया करे।

लेप पतला लेप करना आंखों की गर्मी, सुर्खी और ज्योति घटजाने को गुण करता है परन्तु बहुत दिन पर्यन्त लगाने से बहुत छोटी जवाहड़ तीन, शुद्ध अफीम चार रत्ती, आधी लौंग फूल की तरफ से कूए के पानी में भिगोकर रख और नेत्रों पर लगाया करे कदाचित नेत्रों में चली भी जाय तो हानि नहीं।

दवा कि बहुधा नेत्र रोगों को और नेत्र की जोति घटजाने तथा नजले

चिकित्सा माजूफल और जवाहड़ पीसकर नेत्रों पर लेप करे बालों का काजल नेत्र की खुजली को दूर करे । मनुष्य के मस्तक के बाल जला महीन पीस नेत्रों में लगावे । अथवा अंड का छिलका जला महीन पीसकर लगावे ।

नीम का काजल बहुधा करके नेत्र रोगों को गुण करे । नीम के पत्तों को कुल्हड़े में रख कपरोटी कर इतनी देर आग पर रखे कि जलकर भस्म हो जाय उस भस्म को नीबू के रस में खरल कर लगावे ।

दवा नेत्रों की खुजली और जलन को गुण करे । सीसे का मैल नेत्रों में लगावे सीसे का मैल उस कलौंस से मतलब है कि सीसे के टूक को जूते के तले तथा बांस की चौंगली पर रगड़ने से दृष्टि में आवे उस चगली में लग नेत्रों में लगावे ।

फसल नेत्र ज्योति घटजाने की चिकित्सा में

पूर्व रूप इसके विदित हैं बहुधा नेत्रों की ज्योति वृद्धावस्था में घटजाती है मस्तक क्षीण और निर्बल पड़जाने के कारण इस में आराम नहीं होता परन्तु चिकित्सा करना उचित है क्योंकि बढ़ न जाय । इसकी चिकित्सा मस्तक की सफाई और बल प्राप्त कराना उचित है । कच्ची, पकी शलजम खाना नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है और बालों में कंघी करना वृद्धों के नेत्रों की ज्योति घटजाने को गुण करता है । नित्य कंघी को दिन में पांच चार बार मस्तक पर फेरना नेत्रों की गर्मी सोख लेता है और शेख रईस का यह बयान है कि साफ पानी में तैरना उसमें नेत्रों को खोले रखना भी गुण करता है । थोड़ीसी उलटी करना और पांव दबाना और मसलवाना कम जोति को गुण करता है और विशेष रोना गले के पीछे पछने लगवाना अत्यन्त भूखा रहना और अति मैथुन करना तथा सोया मसूर और जो २ अजीर्ण करने वाली वस्तु हैं यह सब को गुण करता है ।

नुसखा शर्बत गुलमुंडी नेत्रों की ज्योति घट जाने और मस्तक की तरी को गुण करती है और ऊपर को गर्मी नहीं चढ़ने देती । मुंडी के पावसेर फूल तीन पाव बूरा सफेद गुलमुंडी को डेढ़सेर पानी में रात को भिगोकर प्रात काल औटावे जब तीसरा भाग रहे छान कर बूरा मिला शर्बत की चाशनी करले मात्रा चार तोले देवे और मुंडी का अर्क भी नेत्रों को बलदायक है ।

सौंफकी फक्की नेत्र की कम जोति को गुण करती है । तिब्ब दारा शिकोह में लिखागया है हर रात को सात माशे सौंफ कूट छानकर सात माशे सफेद मिलाके फांक के सो रहे इसी प्रकार नित्य खाकर सोरहा करे और सौंफ का फूल के अर्क में से निकालकर नेत्रों में लगावे विशेष गुण करता है ।

चमेली की गोली नेत्र की कम जोति को गुण करती है चमेली के फूलों की डंडी में बराबर का चूरा मिलाकर खरल कर नेत्रों में लगावे।

दवा खपरिया छः माशे को टुकड़े २ कर दो तीन नींबू के रसमें भिगोवे और मिट्टी के बासन में रख कपरोटी कर आरने कंडों में रख आंच दे फिर निकाल पीसकर नेत्रों में आंजे।

अथवा बड़ी हड़ की १२ गुठली, ५ पीपल, ५ कालीमिर्च आमलेके रसमें घोटके जब कि घोटते २ ढाला पड़ जाय तब गोलियां बनाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे।

अथवा रीटाकी गोली की मिंगी नींबू के रसमें घोट कर गोलि य बनावे और नित्य प्रात काल थूक में घिसके नेत्रों में आंजे।

अथवा यह गोली नेत्रों की कमजोति और लाली को गुण करे। जवाहड़ और मिश्री बराबर पीसकर गोलियां बनाके नेम से लगावे।

सलाई इसको मिसरानी वैद्य काम में लाते हैं सीसे को आंच में गलाकर त्रिफला के पानी में बुझावे फिर गलाकर मेह के पानी में बुझावे इसी प्रकार भांगरे के रस, घी और शहत में बुझा २ कर सलाई बना नित्य प्रात काल नेत्रों में फेरे नेत्रों के सब प्रकार के रोगों को गुण दायक है और नेत्रों की जोति बढ़ाती है यह सलाई बहुधा नेत्र के मात्र रोगों को गुण करती है इसके नित्यप्रति लगाने से नत्रों को चैन रहे। जब सोते से उठे तब अपना थूक नेत्रों में आंजे तो नेत्र रोग कभी नहीं।

दवा हिंगोट की मिंगी पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा निर्मली पानी में घिसकर लगावे तो नेत्र की जोति बढ़ावे।

सिर्सका काजल नेत्रों की जोति को बढ़ावे। सिर्सके पत्तों के रस में गजी भिगोकर सुखावे इसी प्रकार तीन बार करके बत्ती बना चमेली के तेल में काजल पाड़के रखे और उसका अंजन आंखों में लगाया करे।

लेप पतला लेप करना आंखों की गर्मी, सुर्खी और ज्योति घटजाने को गुण करता है परन्तु बहुत दिन पर्यन्त लगाने से बहुत छोटी जवाहड़ तीन, शुद्ध अफीम चार रत्ती, आधी लौंग फूल की तरफ से कुए के पानी में भिगोकर रख और नत्रों पर लगाया करे कदाचित नेत्रों में चली भी जाय तो हानि नहीं।

दवा कि बहुधा नेत्र रोगों को और नेत्र की जोति घटजाने तथा नजले

चिकित्सा माजूफल और जवाहरा पीसकर नेत्रों पर लेप करे पालों का कामल नेत्र की खुजली को दूर करे । मनुष्य के मस्तक के हाड़ पतला महीन पीस नेत्रों में लगावे । अथवा भेड का छिलका जला महीन पीसकर लगावे ।

नीम का काजल बहुधाकर नेत्र रोगों को गुण करे । नीम के पत्तों को कुल्हड़े में रख कपरोटी कर इतनी देर आग पर रखे कि जलकर भस्म हो जाय उस भस्म को नीबू के रस में खरल कर लगावे ।

दवा नेत्रों की खुजली और गलन को गुण करे । सीसे का मैल नेत्रों में लगावे सीसे का मैल उस कलौंस से मतलब है कि सीसे के टूक को जूते के तले तथा घास की चौंगली पर रगड़ने से दृष्टि में आवे उसे उंगली में लगा नेत्रों में लगावे ।

फ़सल नेत्र ज्योति घटजाने की चिकित्सा में

पूर्व रूप इसके विदित हैं बहुधा नेत्रों की ज्योति वृद्धावस्था में घटजाती है मस्तक क्षीण और निर्बल पड़जाने के कारण इस में आराम नहीं होता परन्तु चिकित्सा करना उचित है क्योंकि बढ़ न जाय । इसकी चिकित्सा मस्तक की सफाई और बल प्राप्त कराना उचित है । पक्षी, पक्षी शिकमम खाना नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है और बालों में कघी करना वृद्धों के नेत्रों की ज्योति घटजाने को गुण करता है । नित्य कघी को दिन में पांच चार बार मस्तक पर फेरना नेत्रों की गर्मी सोख लेता है और शेख रईस का यह बयान है कि साफ पानी में तैरना उसमें नेत्रों को खोले रखना भी गुण करता है । थोड़ीसी उलटी करनी और पांव दबाना और मसलवाना कम ज्योति को गुण करता है और विशेष रोना गले के पीछे पछनें लगवाना अत्यन्त भूखा रहना और अति मैथुन करना तथा सोया मसूर और जो २ अजीर्ण करने वाली वस्तु हैं यह सब को गुण करता हैं ।

नुसखा शर्बत गुलमुंडी नेत्रों की ज्योति घट जाने और मस्तक की तरी को गुण करती है और ऊपर को गर्मी नहीं चढ़ने देती । मुंडी के पावसेर फूल तीन पाव बूरा सफेद गुलमुंडी को डेढ़सेर पानी में रात को भिगोकर प्रातःकाल औटावे जब तीसरा भाग रहे छान कर बूरा मिला शर्बत की चाशनी करले मात्रा चार तोले देवे और मुंडी का अर्क भी नेत्रों को बलदायक है ।

सौंफकी फकी नेत्र की कम ज्योति को गुण करती है । तिब्ब दारा शिकोह से लिखा गया है हर रात को सात माशे सौंफ कूट छानकर सात माशे सफेद मिलाके फाक के सो रहे इसी प्रकार नित्य खाकर सोरहा करे और सौंफ का ... अर्क में से निकालकर नेत्रों में लगावे विशेष गुण करता है ।

चमेली की गोली नेत्र की कम जोति को गुण करती है चमेली के फूलों की डंडी में बराबर का चूरा मिलाकर खरल कर नेत्रों में लगावे।

दवा खपरिया छः माशे को टुकड़े २ कर दो तीन नींबू के रसमें भिगोवे और मिट्टी के बासन में रख कपरोटी कर आरने कंडों में रख आंच दे फिर निकाल पीसकर नेत्रों में आजे।

अथवा बड़ी हड़ की १२ गुठली, ४ पीपल, ४ कालीमिर्च आमलेके रसमें घोटके जब कि घोटते २ काला पड़ जाय तब गोलियां बनाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे।

अथवा रीठाकी गोली की मिंगी नीबू के रसमें घोट कर गोलि य बनावे और नित्य प्रातः काल थूक में घिसके नेत्रों में आजे।

अथवा यह गोली नेत्रों की कमजोति और लाली को गुण करे। जवा-हड़ और मिश्री बराबर पीसकर गोलियां बनाके नेत्र में लगावे।

सलाई इसको मिसरानी वैद्य काम में लाते हैं सीसे को आंच में गलाकर त्रिफला के पानी में बुझावे फिर गलाकर मेह के पानी में बुझावे इसी प्रकार भांगरे के रस, घी और शहत में बुझा २ कर सलाई बना नित्य प्रात काल नेत्रों में फेरे नेत्रों के सब प्रकार के रोगों को गुण दायक है और नेत्रों की जोति बढ़ाती है यह सलाई बहुधा नेत्र के मात्र रोगों को गुण करती है इसके नित्यप्रति लगाने से नेत्रों को चैन रहे। जब सोते से उठे तब अपना थूक नेत्रों में आजे तो नेत्र रोग कभी नहीं।

दवा हिंगोट की मिंगी पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा निर्मली पानी में घिसकर लगावे तो नेत्र की जोति बढ़ावे।

सिर्सका काजल नेत्रों की जोति को बढ़ावे। सिर्सके पत्तों के रस में रुई भिगोकर सुखावे इसी प्रकार तीन चार करके बत्ती बना चमेली के तेल में काजल पाड़के रखे और उसका अंजन आंखों में लगाया करे।

लेप पतला लेप करना आंखों की गर्मी, सुर्खी और ज्योति घटजाने को गुण करता है परन्तु बहुत दिन पर्यन्त लगाने से बहुत छोटी जवाहड़ तीन, शुद्ध अफीम चार रत्ती, आधी लौंग फूल की तरफ से कुएके पानी में भिगोकर रख और नेत्रों पर लगाया करे कदाचित नेत्रों में चली भी जाय तो हानि नहीं।

दवा कि बहुधा नेत्र रोगों को और नेत्र की जोति घटजाने तथा नज़के

की आदि को गुण करे। प्याजका पानी शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे।

सुर्मा ज्योति की कमी को गुण करे। सोलह कालीमिर्च, सोंठ पीपल, पचास चमेली की कली, अस्सी तिल के फूल सबको खरल कर सुर्मा बनावे।

अथवा कालीमिर्च एक माशे, बड़ी हड़का बक्कल दो माशे, छिली हल्दी तीन माशे, गुलाबजल वा पानी में घोटकर सुर्मा बनाकर आंखों में लगावे।

अथवा दो अखरोट और तीन हड़की गुठलियों को जलाकर पीसे और चार कालीमिर्चे मिलाकर खरल कर सुर्मा बनाके लगावे।

अथवा रसौत को सुर्मे की तरह नित्य लगाना विशेष गुण करता है।

काजल कि जोतिको बलवान करे। नीम के फूल छाया में सुखाकर उन की बराबर कलमीशोरा लेके सुर्मासा करके आंखों में लगावे तो फुली और नेत्रों की सुर्खी को गुण करे।

दवा धुनीरुई आक के दूध में भिगोके छाया में सुखा बत्ती बना के सरसों के तेल में जला के धीरे २ काजल पाड़ के नीम के सोटे में जिस में पैसा जड़ा हो फूल कासी के बरतन में गुलाब जल के साथ घोटे और सलाई से नेत्रों में आंज।

फ़सल सवल

अर्थात् मांड़ा और फुली जफ़रा अर्थात् नाखूना और प्याज अर्थात् जाला, फुली एक पर्दा है जो आंख में मवाद भर जाने से उत्पन्न होजाती है और नाखूना नेत्र के बड़े कोए की तरफ़ उत्पन्न होता है और जाला सफ़ेदी है जो नेत्र की स्याही पर उत्पन्न होती है।

चिकित्सा प्रथम फ़स्द सरेरू ललाट देश की नस को खोले पीछे नेत्रों की जोति बढ़ाने वाली औषधि काम में लावे।

गोली जो नेत्र पीड़ा नाखूना और आंसुओं को गुण करे। अरहर के पत्तों का रस १४ माशे छानकर नीम के सोटे से जिसमें पैसा जड़ा हो दस कागजी नीबू के रस में खरल करके गोलियां बनावे और समय पर नेत्रों में लगावे।

गोली मांड़ा और [illegible] गुण करे। सिरस के बीजों की मिंगी खिरनी के बीजों की मिंगी [illegible] पत्तों के रस में मिलाकर खरल करे और गोली बनावे [illegible] दूध में घिसकर लगावे।

गोली [illegible] फूल

एक भाग सेंधानोन मिलाकर खूब पीसके सुर्मा सा करले और नेत्रों में लगावे सात दिन में मोतियाविन्दु जाय।

दवा कि फूली को गुण करे। कबूतर या मुर्गी की बीट कागजी नीबू के रस में खरल करके तांबे के बासन में रखे समय पर नेत्रों में लगावे।

अथवा अबाबील की बीट शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे किंग्र वेदी वाले ने अच्छा लिखा है।

अथवा बारहसींगे का सींग दूध में घिसकर लगावे।

अथवा सेंधेनोन की सलाई बनाकर प्रति दिन कई बार आखों में फेरे नाखूना और जाला जाय।

अथवा कबूतर या चिड़िया की बीट पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा आक की जड़ पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे तो नाखूना जाय।

अथवा कटेरी की जड़ नीबू के रस में घिसकर नेत्रों में लगावे तो धुंध जाय और जाला दूर होवे।

अथवा अरहरकी जड़ घिसके नेत्रों में लगावे तो फूली दूर होवे।

अथवा बैंगनकी जड़ पानी में घिस के नेत्रों में लगावे तो जाला दूर होवे।

अथवा कड़वी तोरई के बीजों की मिंगी मीठे तेल में घिस के लगावे तो फूली दूर होवे।

अथवा बड़ का दूध नेत्रमें भर दें तो जाला दूर होवे।

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे। बाजे समुद्रफेन को बिनौले के तेल में पीसकर लगाते हैं।

अथवा लाल के फूल शहद में पीसकर लगावे तो जाला जाय।

अथवा पुत्रवती स्त्री के दूध में मिश्री घिसकर लगावे तो बच्चों की फूली दूर हो।

अथवा सोंठ, फिटकरी और सेंधानोन बराबर महीन पीस छानकर नित्य प्रति नेत्रों में लगावे तो जाला दूर हो।

अथवा गधे का खुर जला महीन पीसकर लगावे तो जाला दूर होवे।

अथवा चमेली के फूलों की गोली जो नेत्रों की जोति घटजाने के विषय में वर्णन कर आये हैं जाले को दूर करती हैं।

अथवा लाल प्याज का रस नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होवे।

में एक भाग सेंधानोन मिलाकर खूब पीसके सुर्मा सा करले और नेत्रों में लगावे तो सात दिन में मोतियाबिन्दु जाय ।

दवा कि फूली को गुण करे । कबूतर या मुर्गी की बीट कागज़ी नीबू के रस में खरल करके तांबे के बासन में रख समय पर नेत्रों में लगावे।

अथवा अबाबील की बीट शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे हिन्द फ़रीदी वाले ने अच्छा लिखा है ।

अथवा बारहसींगे का सींग दूध में घिसकर लगावे ।

अथवा सेंधेनोन की सलाई बनाकर प्रति दिन कई बार आंखों में फेरे तो नाखूना और जाला जाय ।

अथवा कबूतर या चिड़िया की बीट पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा आक की जड़ पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे तो नाखूना जाय ।

अथवा कटेरी की जड़ नीबू के रस में घिसकर नेत्रों में लगावे तो धुंध जाय और जाला दूर होवे ।

अथवा अरहरकी जड़ घिसके नेत्रों में लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बैंगनकी जड़ पानी में घिस के नेत्रों में लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा कड़वी तोरई के बीजों की मिंगी मीठे तेल में घिस के लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बड़ का दूध नेत्रमें भर दें तो जाला दूर होवे ।

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे । बाजे समुद्रफेन को बिनौले के तेल में पीसकर लगाते हैं ।

अथवा लाले के फूल शहद में पीसकर लगावे तो जाला जाय ।

अथवा पुत्रवती स्त्री के दूध में मिश्री घिसकर लगावे तो पर्वा और फूली दूर हो ।

अथवा सोंठ, फिटकरी और सेंधानोन बराबर महीन पीस छानकर नित्य प्रति नेत्रों में लगावे तो जाला दूर हो ।

अथवा गधी का खुर जला महीन पीसकर लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा चमेली के फूलों की गोली जो नेत्रों की ज्योति बढ़ाने के विषय में वर्णन कर आये हैं जाले को दूर करती है ।

अथवा लाल प्याज का रस नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होवे ।

एक भाग सेंधानोन मिलाकर खूब पीसके सुर्मा सा करले और नेत्रों में लगावे तो सात दिन में मोतियाबिन्दु जाय ।

दवा कि फूली को गुण करे । कबूतर या मुर्गी की बीट कागजी नीबू के रस में खरल करके तांबे के बासन में रखे समय पर नेत्रों में लगावे ।

अथवा अबाबील की बीट शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे ति्ब्ब फरेदी वाले ने अच्छा लिखा है ।

अथवा बारहसींगे का सींग दूध में घिसकर लगावे ।

अथवा सेंधेनोन की सलाई बनाकर प्रति दिन कई बार आखों में फेरे तो नाखूना और जाला जाय ।

अथवा कबूतर या चिड़िया की बीट पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा आक की जड़ पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे तो नाखूना जाय ।

अथवा कटेरी की जड़ नीबू के रस में घिसकर नेत्रों में लगावे तो धुंध जाय और जाला दूर होवे ।

अथवा अरहरकी जड़ घिसके नेत्रों में लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बैंगनकी जड़ पानी में घिस के नेत्रों में लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा कड़वी तोरई के बीजों की मिंगी मीठे तेल में घिस के लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बड़ का दूध नेत्र में भर दें तो जाला दूर होवे ।

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे । बाजे समुद्रफेन को बिनौले के तेल में पीसकर लगाते हैं ।

अथवा लाले के फूल शहद में पीसकर लगावे तो जाला जाय ।

अथवा पुत्रवती स्त्री के दूध में मिश्री घिसकर लगावे, तो बच्चों की फूली दूर हो ।

अथवा सोंठ, फिटकरी और सेंधानोन बराबर महीन पीस छानकर नित्य प्रति नेत्रों में लगावे तो जाला दूर हो ।

अथवा गधे का खुर जला महीन पीसकर लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा चमेली के फूलों की गोली जो नेत्रों की जोति बढ़ाने के विषय में वर्णन कर आये हैं जाले को दूर करती है ।

अथवा लाल प्याज का रस नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होवे ।

में एक भाग सेंधानोन मिलाकर खूब पीसके सुर्मा सा करले और नेत्रों में लगावे तो सात दिन में मोतियाबिन्दु जाय।

दवा फूली को गुण करे। कबूतर या मुर्गी की बीट कागजी नीबू के रस में खरल करके तांबे के बासन में रखे समय पर नेत्रों में लगावे।

अथवा अबाबील की बीट शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे किन्तु फ़रेदी वाले ने अच्छा लिखा है।

अथवा बारहसींगे का सींग दूध में घिसकर लगावे।

अथवा सेंधेनोन की सलाई बनाकर प्रति दिन कई बार आंखों में फेरे तो नाखूना और जाला जाय।

अथवा कबूतर या चिड़िया की बीट पीसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा आक की जड़ पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे तो नाखूना जाय।

अथवा कटेरी की जड़ नीबू के रस में घिसकर नेत्रों में लगावे तो धुंध जाय और जाला दूर होवे।

अथवा अरहरकी जड़ घिसके नेत्रों में लगावे तो फूली दूर होवे।

अथवा बैंगनकी जड़ पानी में घिस के नेत्रों में लगावे तो जाला दूर होवे।

अथवा कड़वी तोरई के बीजों की मिंगी मीठे तेल में घिस के लगावे तो फूली दूर होवे।

अथवा बड़ का दूध नेत्रमें भर दें तो जाला दूर होवे।

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे। बाजे समुद्रफेन को बिनौले के तेल में पीसकर लगाते हैं।

अथवा लाले के फूल शहद में पीसकर लगावे तो जाला जाय।

अथवा पुत्रवती स्त्री के दूध में मिश्री घिसकर लगावे तो बच्चों की फूली दूर हो।

अथवा सोंठ, फिटकरी और सेंधानोन बराबर महीन पीस छानकर नित्य प्रति नेत्रों में लगावे तो जाला दूर हो।

अथवा गधे का खुर जला महीन पीसकर लगावे तो जाला दूर होवे।

अथवा चमेली के फूलों की गोली जो नेत्रों की जोति बढ़ाने के विषय में वर्णन कर आये हैं जाले को दूर करती है।

अथवा लाल प्याज का रस नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होवे।

अथवा तेजपात महीन पीसकर नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की स्याही नाखूना आगज और तपलक दूर होवे।

दवा अत्यन्त सफ़ेद कलमी शोरा महीन पीसकर थोड़ी सी हलदी मिलावे कि जिससे रगत आजाय फिर उसको नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति बढ़े, नाखूना जाले आदि बहुत से रोगों को गुण करे।

अथवा बिसखपरे की जड़ और सफ़ेदा पानी में पीसकर लगावे तो नाखूना दूर हो।

अथवा एकरेंडी, साढ़े तीन माशे मिश्री और शुद्ध चाकसू पांच माशे पीसकर नेत्रों में लगावे तो फूली कटे।

अथवा कगात, बबूल का गोंद, सफ़ेदा काशगरी सब बराबर ले पीसकर पानी में शियाफ़ बना सुखा रक्खे और समय पर पानी में घोलकर लगावे तो फूली नाखूना और खुजली दूर होवे।

कुतूर दो तोले चार माशे आमले जौकुट करके दो घन्टे पानी में औटावे फिर छानकर नित्य तीन चार नेत्रों में टपकावे तो जाला दूर होवे।

सुर्मा फूली जाले और नाखूने को दूर करे हरी चूड़ी चौदह माशे महीन पीसकर नीबू के रस में खूब घोटे जब सूखजाय तब नेत्रों में लगावे।

अथवा नौसादर और फिटकरी खूब बारीक पीसकर और खूब खरल करके लगावे तो जाला और फूली, रवौंदी, ढलका और नेत्रों की कमजोति को गुण करे।

अथवा आधसेर प्याज के रस में कपड़ा भिगोकर, धूप मिट्टी से बचाकर सुखावे पीछे बत्ती बना पाव सेर मीठे तेल में जलाकर काजल पाड़के नेत्रों में लगावे तो जाला जाय।

काढ़ा

मिसरानी वैद्यों का बनाया हुआ। जो इसे पदरह दिवस काम में लावे तो फूली दूर हो। जायफल का बक्कल, नीमकी छाल, गिलोय, कड़वा चिरायता, लाल चन्दन, पित्तपापड़ा, खस और गुलमुंडी प्रत्येक एक तोले पानी में औटा छानकर चौदह माशे साफ़ शहद मिलाकर पीवे।

अथवा लालचंदन, देवर, नीम की छाल, आंबाहलदी, त्रिफले का बक्कल और अडूसा प्रत्येक दो तोले चार माशे, कुटकी साढ़े तीन तोले, अमलतासका

गूदा चार तोले आठमाशे, कडुवा चिरायता पौने दो तोले, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा प्रत्येक चौदह माशे सब को कूटकर नित्य दो तोले चार माशे लेकर तीन पाव पानी में औटावे जब आधपाव रहे छानकर दो तोले चार माशे साफ सहद मिलाकर पीवे इस प्रकार चौदह दिन पीवे ।

मुंडी पाक

नेत्र रोगों को गुण करे । त्रिफला का बक्कल, जवाहड़, काबली हड़का बक्कल, धनिया, पित्तपापड़ा, मुकइटी प्रत्येक एक तोले, सब की बराबर गुलमुंडी और तिगुना कंद, हड़ आदि को घी में तलकर कंद की चाशनी में मिलादे मात्रा दो तोले ।

फसल ढलका

ढलकासे प्रयोजन आंसू बहने को कहते हैं, हर समय नेत्र तर ही रहते हैं।

चिकित्सा प्रथम मवाद पकाकर सफाई करे पीछे औषधि करनी चाहिये।

गोली नेत्र की खुजली और ढलके को गुण करे । बड़ी हड़की गुठली की मिंगी दो भाग, बहेड़े की गुठली की मिंगी तीन भाग, आंवले की गुठली की मिंगी तीन भाग पीसकर गोली बनावे समयपर पानी में घिसकर लगावे ।

अथवा सिरस के बीज, कालीमिर्च, बनफशा, प्रथक २ कूट छानकर, शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर नेत्रोंमें लगाया करे तो ढलका जाय ।

अथवा जवाहर, माजूफल, बालछड़, बड़ीहड़का बकल बराबर ले पानीमें पीसके गोलियां बना नेत्रों में लगावे तो ढलका दूर होवे ।

शियाफ़ अर्थात् रगड़ा कोयोंकी सुर्खी और ढलका नेत्रों की सुर्खी और खुजली को गुण करे । समुद्रफेन, कत्था सफेद, भुनी फिटकरी, बड़ी हड़का बकल, रसौत, अफीम, नीलाथोथा सबको बराबर ले साफ जल में घोटकर रगड़ा बनावे ।

सुर्मा ढलके को गुण करे । बड़ी हड़की गुठली की भस्म दश माशे माजूफल, सेंधानोंन प्रत्येक पांच माशे पीस छान काममें लावे और बाजोंने बड़ी हड़ की जगह छोटी की भस्म लिखी है ।

अथवा कालानोंन, कालीमिर्च प्रत्येक एक भाग, पीपल २ भाग समुद्रफेन आधा भाग सुर्मा सबसे तिगुना लेकर महीन पीसकर नेत्रोंमें लगावे तो ढलका दूरहोवे

दवा ।

घोड़ेका ऊपरका दांत पानी में घिसकर नेत्रोंमें लगाना नजलेको गुणदायक है।

दवा ढलके की विशेषता को गुणकरे । धुनी रुई की तीन बत्ती बनाकर

दो तोले धतूरे के रसमें दो बार भिगो २ कर सुखावे और फिर दो बार आक के दूध में भिगो भिगोकर छाया में सुखाके रेंडी के तेलमें चिराग भरके उन्हीं बत्तियों को जलाकर काजल पाड़े उसमें थोड़ी भुनी फिटकरी मिलाके थोड़ा नीलाथोथा मिलावे और नेत्रों में लगावे।

अथवा।

कुदरूगोंद गुलाबमें मिलाकर नेत्रों को धोवे यदि गुलाब न मिले तो पानीही हो।

अथवा आबनूस की लकड़ी घिसकर नेत्रों में लगावे।

अथवा बड़ी हड़ का बक्कल और चाकसू बराबर पीसकर बुरके।

फ़सल जर्का अर्थात् कंज

उत्पत्ति से हो तो उसकी चिकित्सा नहीं परन्तु लिखा है कि जो लड़का कंजा उत्पन्नहो तो अत्यन्त काली स्त्रीका दूध पिलाना उचित है। और शेखरईस ने क़ानूनमें लिखाहै कि इन्द्रायनके ताज़ाफलमें सलाई चुभोकर नेत्रों में फेरे इसी प्रकार गाजरका छिलका महीन पीसकर लगाना अत्यन्त गुण करता है।

फ़सल गर्भ अर्थात नासूर

जो नाक की ओर के कोये में होता है जब उसे दबावे तो उसमें से राध लोहू निकलता है।

चिकित्सा

उसकी यह है कि उसका राध लोहू पोंछकर मरहम लगावे।

दवा सेमलकड़ी के दो टुकड़े रेंडी के तेल में घिस जब गाढ़ा होजाय तब उसमें बत्ती लपेटकर नासूर में रक्खे।

अथवा दीये की चीकट कपड़े पर लगाकर नासूर पर रक्खे।

अथवा बथवे के पत्ते का तम्बाकूका फूल घी में घोटकर नासूरपर लगावे।

अथवा हुक्के की कीट और अफ़ीम बराबरले पीसकर बत्ती बना नासूर में रक्खे।

अथवा समुद्रसोख नरम पीस पानी मिला बत्ती बनाकर रक्खे।

अथवा नीम और पैवन्दी बेर के पत्ते पीसकर कपड़े में लपेटके नासूर पर लगावे।

अथवा कत्था एलुआ बराबर पीसकर लगावे।

अथवा कुत्तेकी जीभ काटकर जलावे और थूकमें लपेटकर पतलार लेपकरे।

तेल गिलोय हल्दी कूटकर मीठे तेलमें औटा छानके नासूर पर टपकावे।

दवा खालिस शहद औटावे जब गाढ़ा होजाय उस में थोड़ा समुद्रफेन मिलाकर उतारले उसमें बत्ती डबोकर नासूर में भरे।

अथवा मसूर भुनी और अनार का छिलका कूट छानकर लगावे।

अथवा रसोत, गेरू, जवाहस, पोस्त के डोड़े, पीसकर लेप करे।

अथवा लोंग और हल्दी पीसकर लेप करे।

अथवा हींग सिरके में घोटकर गुनगुना २ लेपकरे।

अथवा पुरानी कची भींतका कोयला गर्म पानी में घिस के लगावे।

फ़सल शरह वोहसूज

घोहसूज वह है कि पलक पर जोंके आकार का होता है।

चिकित्सा मक्खी का सिर अलगकर उस स्थानमें मलकर गरम मोमसे सेके।

फ़सल शअरजायद

अर्थात् परवाल की चिकित्सा में भीतर से बालों को उखाड़कर खटमल का रुधिर लगावे।

दवा प्रथम बालों को उखाड़ के नौसादर बकरी के पित्ते में मिलाकर पतला लेप करे।

फक्की कि नेत्रों के बहुत से रोगों को गुणकरे। मुंडी की जड़ छाया में सुखा उसकी बराबर बूरा मिला सात माशे प्रति दिन पंद्रह दिवस पर्यन्त फांके।

फ़सल कर्णरोगों की चिकित्सा में

हकीम लोगों का यह मत है कि जो लोग कानके रोगों से बचना चाहे वह सोते समय कानों में रुई रखकर सोया करें और कानों में जो वस्तु टपकावें गुनगुनी करके टपकावें। अब यहां कानके रोगों की औषधि वर्णन करता हूं।

बफारा कि कान की पीड़ा को गुण करे। बकरी की मेंगनी अजवायन मनुष्य के मूत्र में औटाकर बफारा दे।

अथवा नीम के पत्ते औटाकर बफारा दे तो कान की पीड़ा जाय और घाव को मल से शुद्ध करता है।

मूली का तेल मूली के पत्तों का रस तीन भाग एक भाग मीठे तेल औटावे जब रस जलकर तेल मात्र रहजाय कान में टपकावे।

अथवा इस्पद, मालकांगनी, अजवायन सब को इन के बराबर मीठे तेल में औटा छानकर कानमें टपकावे तो सर्दी मात्रके कानों के रोग को गुण करे।

अथवा खट्टा इस्पंद और सोंठ बराबर पीसकर टिकिया बनाके सरसों के तेल में पकावे जब जलजाय छानकर तेल की बूंद कान में टपकावे।

अथवा कूट, चिरायता, वायविडंग, असगंध, बिधारा हल्दी, संभालू के पत्ते, अजीरकी जड़, इस्पंद, सुहागा, सोंठ, आंबाहल्दी, कालीमिर्च प्रत्येक साढ़े तीन मांशे, तेल दो सेर दवा कूटकर रात को आध सेर पानी में भिगो के प्रातःकाल औटा छानकर तेल में मिला आंच पर रक्खे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तब कानमें लगावे तो सर्दी की मस्तक पीड़ा तथा कानकी पीड़ाओं को गुणकरे।

अथवा सुदर्शन के पत्तों का रस कानमें निचोड़े तो कानकी पीड़ा जाय।

अथवा भांगकी पत्तियोंका रस गुनगुना कर कान में टपकावे तो सर्दी गर्मी की कर्ण पीड़ाको गुण करे।

अथवा भांगकी पत्ती के रसमें बत्ती भिगोकर कानमें रक्खे।

अथवा भांग को पीसकर तिल्ली के तेल में जलाकर छाने उसे कान में टपकावे तो पीड़ा जाय।

अथवा रात्रि के समय महावर पानी में भिगोके प्रातःकाल छानके गुन-गुना कर कानमें टपकावे तो पीड़ा दूर होवे और कान बहने को बंद करे।

अथवा नीमकी हाई पत्ती पीली, थोड़ी अजवायन और चनेकी बराबर हल्दी लड़के के मूत्रमें पीसकर दो तीन बूंद गुनगुनी २ कानमें टपकावे तो सर्दी की कर्ण पीड़ा को गुणकरे।

अथवा सिर्स तथा आमकी पत्ती का रस गुनगुनाकर कानमें टपकावे।

अथवा थोड़ीसी मक्खी की बीट पानीमें पीस गुनगुनी कर कानमें टपकावे तो कर्ण पीड़ाजाय।

अथवा कालानोन मूत्र में पीसकर गुनगुना कर कानमें टपकावे तो सर्दी की कर्ण पीड़ा दूर हो।

अथवा दूध पीते बचे का मूत्र गुनगुना कर कानमें टपकावे।

अथवा मनुष्यके सिरके बालोंकी भस्म गुलरोगनमें पीसकर कानमें टपकावे।

अथवा ग्वारपाठे के पत्तों का रस गरम कर दूसरे कानमें टपकावे और

जो पीड़ा सर्दी से हो तो मुरमुको गायके मूत्रमें मिला गुनगुनाकर कानमें टपकावे।

अथवा नाजबूके पत्तों का रस गुनगुना कर कानमें टपकावे तो पीड़ाजाय।

अथवा चुकंदर कानमें निचोड़े।

अथवा एक रत्ती अफ़ीम जलाकर उसकी चार चावल भस्म गुलरोग़न में घोटकर कान में टपकावे।

अथवा करमकल्ला के पत्तों का रस, सिर्का या गदनाके रस में मिला गुनगुना कर कान में टपकावे तो जमाहुआ रुधिर घोलकर निकाल डाले।

अथवा गायका पित्ता गुनगुना कर कानमें टपकावे तो बादी और कफ़ की कर्ण पीड़ा को गुणकरे।

अथवा मुर्गी के अंडे की सफ़ेदी कान में टपकाना गर्मी की सूजन को गुण करे।

अथवा पके इंद्रायन के फलका छिलका मीठे तेलमें मिलाकर कान में टपकाना बहरेपन को दूर करे।

अथवा राईका तेल कानमें गांठ पड़जाने को खोलता है और पुराने बहरेपनको दूर करता है।

अथवा पपरियाखार गुनगुने पानी में मिलाकर कानमें टपकाना अत्यंत पीड़ा को गुण करता है।

अथवा खट्टे अनार का रस शहद में मिलाकर कान में टपकाना गरम पीड़ा को गुण करता है।

अथवा खुरफ़े के पत्तों का रस तेलमें मिलाकर कान में टपकाना गरम पीड़ा को हरता है।

अथवा प्याज़ के रस में अंडे की सफ़ेदी मिलाकर कान में टपकाना गुण करता है।

अथवा पपरिया खार और खतमी पीसकर लेप करे तो कान के कड़े पन को जो गर्मी से हो गुण करता है।

फ़सल तुर्श गोश।

अर्थात् बहरापन जो आदि में हो सफाई करे और जब विशेष दिन का हो जाता है नहीं जाता तब यह उचित है कि इस रोग में तुर्श अयारज की गोलीसे

जिसे प्रथम कह आये हैं मस्तक की सफाई करे।

कुतूर कि कानके बहरेपन को गुण करे आक के पीले पत्ते कि जिन में छेद नहीं आंच पर गरम कर उसका रस कान में टपकावे, इसी प्रकार पदरह दिन तक करे।

अथवा लहसन में बकरी का पित्ता मिलाकर थोड़े तेल में गुनगुना कर कान में टपकावे तो कानका बहरापन दूर हो।

अथवा ऊंट का मूत्र गुनगुना कर कान में टपकावे तो बहरापन दूर हो।

अथवा बिना ब्याई गाय का सवासेर मूत्र मंदाग्नि से औटावे जब पांच तोले दस मांसे रहजाय छानकर शीशे में रखे प्रतिदिन ढाई बूंद कान में टपकावे तो कान के भारीपन और भिन भिनाहट को दूर करे। पीड़ा और बहाव को गुण करे।

तेल इन्द्रायन कान के भारीपन और भिन भिनाहट को दूर करे इन्द्रायन के ताजा फल मीठे तेल में औटा छानकर रखे दो तीन बूंद कान में टपकावे।

दवा फूकने की कि कानके बहरेपन को गुण करे काली मिर्च दो नग पीसकर चमचे में रखकर प्रति दिन एकबार कान में फूंके और निरन्तर का शब्द नक्कारे शहनाई और तोप आदि के शब्द सुनाना कान के भारीपन को गुण करता है यह कान का भारीपन बचाने का व्यायाम है।

अथवा पपरिया खार सिरके में घोटछानकर गुनगुना कर कानमें टपकावे।

फ़सल क़ुर॰ गोश

अर्थात कान के घाव से जिस समय राध लोहू निकले उस समय सूखी दवा डालना उचित है कि उससे पीड़ा बंद होजाती है तब प्रथम यह दवा करे पीछे सूखी दवा डाले शहद कान में टपकाना तथा शहद की मक्खी कान में डालना कान के मवाद को पाक करती है और पीड़ा को आराम देती है और नीम के पत्तों का भफारा भी कान के मलको शुद्ध करता है।

अथवा प्याज का रस मुर्गी के अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर कान में टपकावें तो घाव को अच्छा करे।

दवा नीमका तेल शहद मिलाकर उसमें बत्ती भिगोकर कान में रखखे।

अथवा एलुआ, समुद्रफेन, गेरू, कुंदरु गोंद मस्तंगी थोड़ा २ गुल रोगनमें पीसकर उस में सुर्मा मिलाकर कान में टपकावे।

अथवा बकरी का दूध कान में टपकावें।

अथवा अनारका छिलका लड़के के मूत्रमें औटा छानके कानमें टपकावे।

अथवा भुनी फिटकरी बीजाबोल बराबर ले शहद में मिला उसमें बत्ती भिगोकर कान में रखें।

ज़रूर अर्थात बुर्की जो मवाद को निकाले और घाव को पूरलावे बहुधा कर बच्चों को विशेष गुण करती है कांगनी की धूल कान में बुर्के।

अथवा मेथी दूध में पीस गुनगुना करे और छानकर कान में टपकावे तो कानके पीप बहने और खुजली को गुण करे।

अथवा स्त्री के दूधकी धार कानमें लगावे तो इससे उत्तम कोई दवा नहीं।

अथवा गिलोय पानी में घिस गुनगुनी कर कान में टपकावे तो कानके मल को दूर करे।

बुर्की कि कानके घावको गुण करे। पीला कौड़ी जलाकर कानमें बुर्के।

अथवा महीन लोद पीसकर कानमें डाले।

अथवा काकसाग का रस निचोड़ कर कान में टपकावे तो कान के कीड़े मरजाय और घाव को आराम हो।

अथवा एक जुगनू गुलरोगन में पीसकर कान में टपकावे तो घाव अच्छे हों।

अथवा कानके नासूर को गुण करे। पावभर छोटी चींटी महीन खरल करके उनकी बराबर सरसों पीस के मिलावे और दो सेर पानीमें आग पर चढ़ावें जब पानी जलकर तेल मात्र रहजावे तब नित्य कानमें टपकावे और जो घोंघ तेल में भूनकर कानमें टपकावे तो उसमें भी यही गुण है जहां सरसों का तेल न मिले वहां मीठा तेल लेवें

अथवा पावभर कड़वा तेल आंवले और सोंठ एक २ तोले नीम के पत्ते दस कवेला और कालीमिर्च तीन २ मांशे नीलाथोथा मांशेभर प्रथम तेल गरमकर कवेले के सिवाय सब औषधि उसमें डालकर जलावे फिर निकालकर पीसे और कवेला पीसकर उस में मिलावे और कान में टपकाया करें तो नासूर और कानकी फुंसी को दूर करे यह दवा उस घावको गुण करती है जो बहुधा करके बालकों के कानके नीचे होते हैं लोतो को लड़के के मूत्र या पानीमें पीस कर लगावें यद्यपि थोड़ी जलन होगी परन्तु विशेष गुण करती है।

फ़सल अनफ़ जारुल अज़न

अर्थात् कान का बहना और उसमें से मवाद निकलना जो बौरान अर्थात् प्रकृति बिगड़ जाने के कारण से हो। माजूफल जौकुटकर, सिरके में औटा, मवछान कर कान में टपकावे।

फसल वर्म गोश

अर्थात् कानकी सूजन इसका अत्यन्त डर है। इसमें फस्द सरेरु खोले। लेप कि सूजन को गुण करे। जो कान के पीछे हो चाकसूनी की नई पत्तियाँ और सेंधानोन पीसकर लेप करे।

अथवा सुपारी बिस्मारी की जड़ करेले के बीज गेरू स्याह जीरा कुचला पानी में पीस गुनगुना कर लेप करे तो पिछाड़ी की सूजन को आराम करे।

अथवा यह पतला लेप उसी सूजन को गुणकरे सोसन की जड़ पीसकर गुनगुना २ पतला लेप करें।

दवा कानकी सूजन को गुण करे। और तुर्त मलको पकाकर निकाल डाले गुलगुल की पत्तियों का रस कान में टपकावे।

अथवा प्याज का रस मेथी तथा अलसी तथा ईसबगोल के लुआब में पकाकर टपकाना यही गुण रखता है।

फ़सल कुम गोश।

अर्थात् कानमें कीड़े पड़जाना। जो गर्मी के कारण कीड़े पड़गये हों तो उसकी चिकित्सा यह है। एलुआ पानी में पीसकर उसको कानमें भरदे और देर तक भरा रहनेदें तो कीड़े मरजाय फिर कान को इस प्रकार झुकावें कि पानी निकल जाय।

दवा सुलीम एक लकड़ी होती है। उसे महीन पीस कानमें डालेतो कीड़े दूरहों।

अथवा सम्भालू के पत्तों का रस कान में टपकावे।

अथवा एक गांठ हलदी सात माशे सहत नीम के पत्तों का रस सिरसों के तेल में डाल कर खूब औटावें कि औषधि जलकर तेलमात्र रहजाय तब दो बूंद कान में टपकावे तो तुरत आराम होवे।

अथवा दो माशे तिल का तेल कानमें टपकावे तो कानके कीड़ और वह छोटी छोटी कृम जो कान में पड़गयी हों मरजाती हैं। इसी प्रकार प्याज का

रस और वह मक्खी जो घोड़े और कुत्ते पर बैठती है कान में घुसजाय तो मकरा के पत्ते हिन्दू जिसे चन्दन के तुल्य मानते हैं कान में टपकाते हैं इस से भी अत्यन्त फ़ायदा होता है।

अथवा तेज मदिरा टपकाना पीड़ा और मल बढ़ने को दूर करता है।

फ़सल खारिश गोश।

अर्थात कान की खुजली में तेल और सिरका कान में औटाकर डालें।

अथवा चमेली के तेल में थोड़ा एलुआ पीस गुनगुना कर कानमें डालें।

फ़सल कान में पानी रहजाना।

छींकने और खांसने को दूर करता है माथ को उस तरफ़ झुका रखना जिस ओर के कानमें पानी है तथा सोंफ की लकड़ी कानमें लगाकर चूसे और तिल का तेल गुनगुना कर कान में टपकाना गुण करता है।

अथवा हथेली जिस कान में पानी है उस पर रख उसी ओर के पांव से खड़ा हो और उसी ओर मस्तक झुकाकर कूदे।

फ़सल नाक के रोगों की चिकित्सा में

नाक में दो द्वार हैं एक मस्तक की ओर दूसरा मुंह की ओर है नाक के रोगों में से एक रुआफ़ अर्थात् नकसीर है जो ज्वर तथा सरसाम या बोहरान के दिन जो चौथा सातवां ग्यारहवां चौदहवां दिन है नकसीर फूटे तो बन्द करे क्योंकि बोहरान में नकसीर दोषयुक्त प्रकृति को इस तरफ़ नहीं लगने देती है परन्तु विशेषता के समय तुरत बन्द करें जो दोनों जांघें और दोनों पांव और दोनों भुज कोणों को जकड़कर बांधें तो नकसीर बन्द हो, ठंढा पानी मस्तक पर डालना और उससे कुल्ले करना गुण करे।

लेप नकसीर को गुण करे सरेस मुलतानी मिट्टी बराबर पीसकर गुनगुना कर कनपटी और नाक पर पतला लेप करे।

अथवा माजूफल खूब महीन पीसकर नाक में फूके अथवा रसौत की राख नाक में फूके अथवा चाकी की धूल नाक में फूके।

लेप बड़दका चून नर्म गूंदकर तालु पर लेप लगावे।

अथवा बेर के पत्ते पीसकर कनपटी पर लेप करें।

अथवा छोटी कटेरी पानी में पीसकर तालु पर लगावें और उसके पत्ते तथा जड़ का रस निचोड़कर नाक में टपकावें।

हुलास केले के पेड़ का रस सुड़कना नकसीर को गुण करता है अंडी का छिलका खूब जलावे कि वह काला पड़जाय उसे पीस चमचे में रख जिस ओर के नकुए में नकसीर फूटी हो फूके।

अथवा घोंघा, गाय का सींग और बकरी का सींग जला महीन पीस नाक में फूंके।

दवा आमले भिगोवे जब नरम होजांय टिकिया बनाकर तालुए पर बांधे।

अथवा गधे की लीद निचोड़ के नाक में टपकावे।

अथवा गाय का सूखा गोबर पीसकर नाक में फूंके और ताजे गोबर का कनपटी पर लेप करना गुण करता है।

लेप नीम के पत्ते और अजवायन पीसकर कनपटी पर लगावे।

अथवा कलमी शोरा सिरके में पीसकर कनपटी पर लेप करे।

दवा मुर्गी के अंडे की सफेदी में बत्ती भिगो थोड़ा कपूर उस पर बुरक नाक में रक्खे।

अथवा गधे की लीद जला उसकी राख नाक में फूके।

अथवा आरने कंडे की राख महीन पीसकर नाक में फूंके।

दवा गूलर के पेड़ की छाल पानी में पीसकर तालुए पर लगावें।

अथवा नीमके पत्ते और चौलाई पीसकर कनपटी पर लगावें।

अथवा पुरानी बच पानी में पीसकर कनपटी पर लगावें।

अथवा सौंफ चून मुलतानी मिट्टी धनियां ईसबगोल आंवले और गेरू बराबर लेकर पीसके कनपटी पर लगावें।

अथवा ऊट के बाल जलाकर उनकी राख घी में मिलाकर सूंघे।

दवा ढाक के फूल ४ सेर पानीमें औटावें जब आध सेर रहे ठंढा करके दश मांशे सहद मिलाकर पियें तो नकसीर और ऋतुका रुधिर बन्द करे।

अथवा कुंदरू गोंद महीन पीस कर नाक में फूंके।

अथवा हरी दूब कूट निचोड़ कर उसका नितरा पानी सूंघे।

दवा लाल चन्दन थोड़े कपूर के साथ घोट कर कुछ दिन पीवे तो नकसीर जाती रहे।

अथवा निशास्ता सिरके में मिलाकर मस्तक पर आगे की तरफ रक्खे

प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा दो गोली की है ।

अथवा लौंग पीसकर तालूपर लगावे तो सर्दी के नजले को दूर करे।

अथवा गेहू की भुसी पानी में भिगोकर उसका पानी ले सिरके में मिला कर औटावे और माथे को उसकी गरमाई पर रक्खे तो जुकाम जाय ।

अथवा सोंठ, धायके फूल डेढ़ २ माशे और एक पोस्त का डोडा तीन पाव पानी में औटावे जब चार तोले आठ माशे रहे तब उसको क़हवा की तरह पीवे और जो मीठा करले तो कफ का जुकाम जाय ।

नास कि पुरानी आधाशीशी को गुण करे और बद नजले को खोले। हड़की गुठली छः माशे सफ़ेद चिरमिठी की मींगी चार माशे, कालीमिर्च दो माशे, नौसादर एक माशे, कूट छानकर नास ले तो नाक से पानी टपके परन्तु अत्यन्त तेज हो ।

अथवा सिरस के बीज महीन पीसकर नास ले ।

फ़सल नेतुलअनफ़ अर्थात् नाक की बास की चिकित्सा में।

जो दुर्गंध मस्तकके दोष से हो तो मस्तक को पाक करे और जो नाक के घाव के कारण हो तो घाव पर मरहम लगावे ।

दवा नाक की दुर्गंध को गुण करे कड़वे तूंबेका रस एक बूंद नाक में टपकावे और जो ताजा तूंबा न मिले तो सूखे को पानी में भिगोकर ओस में रक्खे प्रात काल उसमें से एक बूद नाक में टपकावे अथवा गधे का मूत नाक में टपकावे ।

फ़सल अतसह मुफ़रत ।

अर्थात विशेष छींक आना यह आराम का लक्षण है लेकिन बहुत मनुष्य इसे रोग जानते हैं ।

विधि जो छींक को रोके अंगुलियाको उसी हाथकी अंगली और अगूठे से पकड़कर जोर से दबावे और खूब मले धनिये की पत्ती और चदन सूंघना भी छींक को गुण करता है ।

दवा कलौंजन की पोटली बांधकर सूंघना छींक को गुण करे जो लड़कों को छींक आवे तो बकरी का कुल्ला आंचपर भूने उस में से जो पानी टपके लड़के की नाक में टपकावे ।

पीनस इस रोग का रोगी नाक में बोलता है और बहुधा कर अश्रु पानी नाक की राह से निकलता है ।

गोली पीनस को गुण करे सोंठ,पीपल,छोटी इलायची के दाने प्रत्येक साढ़े तीन माशे,पुराना गुड़ सात तोले, कूटकर गोलियां बनावे और दो माशे रात को खाया करे विशेष मुफ़ीद है ।

॥ इति ॥

फ़सल अमराज दहान बतलान जोक

अर्थात् किसी वस्तुका स्वाद जुबान पर न मालूम हो और कभी ऐसा हो जाता है कि रोगी को खटाई मिठाई का भेद नहीं मालूम होता इसका पूर्वरूप तरी की विशेषता है ।

चिकित्सा प्रथम मस्तक की सफ़ाई करे प्रवाद पकजाने के पश्चात अजवायन और तेज वस्तुओं का चाबना जैसे मिर्च राई सिरका लहसन और प्याज़ गुण करे ।

फ़सल दांत के रोगों की चिकित्सा में।

दांतों के रक्षक को कड़ी वस्तु तोड़ना उचित नहीं और जिस वस्तु से दांत कुद होजावें उसे न खावे और जो वस्तु भोजन के समय दांतों में रहजाय तो तिनके से कुरेद के निकाल दे कि दुर्गंध न आवे परन्तु विशेष न कुरेदे कि दांतों की जड़ ढीली पड़जाती है और जिस की प्रकृति ठंडी हो अति गरम वस्तु न खाय इसी प्रकार जिस वस्तु की तासीर गर्म हो उसे अति ठंडी न खाय

फसल वजाउस्नान अर्थात् दांतों की पीड़ा की चिकित्सा में ।

जो दांतों के हिलने से पीड़ा हो और दांत थोड़े हिलते हों और वृद्धावस्था न हो तो चिकित्सा करे और जो विशेष हिलते हों तो उखड़वा डाले और जो थोड़ा नरकचूर दांतों में रक्खा करे तो सदैव दांतों की रक्षा रहती है जो मसूड़ों में सूजन पीड़ायुक्त हो तो उस की चिकित्सा उन वस्तुओं से कुल्ला करे जो सूजन को दूर करें और एक बार गर्मजल से और एक बार ठंढे जल से कुल्ला करे और यह ध्यान रक्खे कि कौन से पानी से आराम मालूम होता है। जो गर्म पानी से आराम हो तो जाने पीड़ा सर्दी से है और जो ठंडे से हो तो जाने कि पीड़ा गर्मी से है अब यहां थोड़ीसी सरल औषधि जिन से दांतों की पीड़ा दूर हो लिखते हैं ।

अथवा अरहर और मसूर की दालों को औटा, छानके और कपूर मिलाके कुल्ले करे।

अथवा मरदी भिगोकर उस के पानी से कुल्ले करे।

अथवा त्रिफला, मोचरस और पोस्त के डोड़े औटाकर थोड़ा सा रेंडी का तेल मिलाकर कुल्ले करे तो पारे और रसकपूर के खाने के कारण मुंह आये को गुण करे।

अथवा विहसोड़े मुंह में रखना और ईसफगोल के लुआब से कुल्ले करना और कत्था मुंह में रखना जीभ के फटजाने को गुण करता है।

फसल मुंह से लार बहने की चिकित्सा में

बहुधा करके उदर की तरी से सोते समय मुंह से राल बहा करती है उस की चिकित्सा उदर को पाक करे और इतरीफल सगीर अर्थात अवलेह खाय।

अथवा राई पीस के उसमें बूरा मिला के फांकना गुण करता है।

अथवा देर तक दांतन किया करे।

अथवा कासनी जौकुट करके थोड़ा नोन मिलाके फक्की बना कई दिन फांके। जवारिश मस्तगी अर्थात मस्तगी पाक राल बहने को गुण करता है। आध पाव सफेद बूरे की चाशनी करके सात माशे मस्तगी पीसकर उसमें डाल कर मिलावे मात्रा बच्चों को दो माशे और तरुण को नौ माशे देना योग्य है।

फसल शकाकलब

अर्थात होठों का फटजाना उसका पूर्व रूप खुश्की है। चिकित्सा उसब घी में नोन मिलाकर नित्य तीनवार ढूंढी पर मले तो गुण करे।

अथवा मीठे घीया और तर्बूज की मिंगी पानी में घोटकर पतला लेप करे तो होठों और जीभ के फटजाने को गुण करे।

अथवा कतीरा और ईसफगोल का लुआब होठों पर मले।

अथवा बायबिडंग का फेन निकालकर होठों पर मले।

फसल अमराज़ हल्क

अर्थात कंठ के रोगों में खनाक अर्थात कंठ की सूजन यह सूजन कंठ के नल में तथा नल के बदले में तथा चीनी हड्डियों में पैदा होता है और जल बह है जिसमें से शब्द निकलता है और चीनी हड्डी वह है जिनमें होकर भोजन पानी जाता है जो नल में सूजन हो तो स्वास रुकजाय और जो अन्न

पानी कंठ में न उतरे और कठिन से उतरे तो जाने कि इसकी चोंना हड्डियों में सूजन है।

चिकित्सा उसकी सरेरू और जीभ के नीचे की नस को फस्द खोले और अमलतास मुंह में रखना विशेष गुण करता है। इस रोग वाला जो पानी में जिसमें मसूर और पोस्त के दाने पकाये हों आहार करे जौ दो भाग, पोस्त के दाने और मसूर बराबर।

शर्बत शहतूत कंठ गले और काक की सूजनों को (काक वह है कि जो तालु में लटकता है) और जीभ की सूजन को गुण करे खट्टे शहतूत के रस में बराबर का बूरा मिला के चाशनी करे।

गरारा गले की सूजन और पीड़ा को गुण करे नीम की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय में औटाकर छान के गुनगुने २ गरारे करे।

अथवा अमलतास, मसूर मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर गुन गुने २ गरारे करे।

अथवा शहतूत का रस, धनियां, मसूर भिगोकर उसका पानी मिलाकर गुनगुने २ से गरारे करे।

अथवा जौ कूटकर भिगोकर उसका पानी निथार के गुनगुने से गर गरा करे तो गर्मी और सर्दी की सूजन को और कंठ की पीड़ा को गुण करता है और इसी प्रकार गुन गुने पानी से गरगरे करना कंठ की सूजन को गुण करता है।

अथवा मसूर की पत्तियां औटाकर गरारे करे।

अथवा अरहर की पत्तियों का रस निकाल गुनगुना करके गरारे करे जो पत्तियां न मिलें तो अरहर की दाल पानी में भिगोकर गुनगुना करके गरारे करे।

अथवा बबूल की जड़, पत्तियां और नरम २ डालियां पानी में औटाकर गरारे करे।

अथवा धनिया चबाना गले की पीड़ा को गुण करता है।

अथवा मकोय, कालीमिर्च, कालीजीरी, खड़िया मिट्टी, बराबर पानी में पीसकर लगावें तो गले और कंठ की सूजनों को गुण करता है।

अथवा निर्बिसी रेवंद चीनी प्रत्येक तीन माशे अफीम तीन रत्ती गुनगुने पानी में मिलाकर लेपकरे।

अथवा अरहर और मसूर की दालों को औटा, छानके और कपूर मिलाके कुल्ले करे।

अथवा मरदी भिगोकर उस के पानी से कुल्ले करे।

अथवा त्रिफला, मोचरस और पोस्त के डोडे औटाकर थोड़ा सा रेंडी का तेल मिलाकर कुल्ले करे तो पारे और रसकपूर के खाने के कारण मुंह आये को गुण करे।

अथवा बिहसोदे मुंह में रखना और ईसबगोल के लुआब से कुल्ले करना और कत्था मुंह में रखना जीभ के फटजाने को गुण करता है।

फसल मुंह से लार बहने की चिकित्सा में

बहुधा करके उदर की तरी से सोते समय मुह से राल बहा करती है उस की चिकित्सा उदर को पाक करे और इतरीफल सगीर अर्थात अवलेह खाय।

अथवा राई पीस के उसमें बूरा मिला के फांकना गुण करता है।

अथवा देर तक दांतन किया करे।

अथवा कासनी जौकुट करके थोड़ा नोन मिलाके फक्की बना कई दिन फांके। जवारिश मस्तगी अर्थात मस्तगी पाक राल बहने को गुण करता है। आध पाव सफ़ेद बूरे की चाशनी करके सात माशे मस्तगी पीसकर उसमें डाल कर मिलावे मात्रा बच्चों को दो माशे और तरुण को नौ माशे देना योग्य है।

फ़सल शकाक़लब

अर्थात होठों का फटजाना उसका पूर्व रूप खुश्की है। चिकित्सा उसकी घी में नोन मिलाकर नित्य तीनबार टूंडी पर मले तो गुण करे।

अथवा मीठे घीया और खर्बूज की मिंगी पानी में घोटकर पतला लेप करे तो होठों और जीभ के फटजाने को गुण करे।

अथवा कतीरा और ईसबगोल का लुआब होठों पर मले।

अथवा वायविडंग का फेन निकालकर होठों पर मले।

फ़सल अमराज़ हल्क़

अर्थात कंठ के रोगों में खनाक अर्थात कंठ की सूजन यह सूजन कंठ के नल में तथा नल के मसुड़े में तथा चीनी हड्डियों में पैदा होता है और नल वह है जिसमें से शब्द निकलता है और चीनी हड्डी वह हैं जिनमें होकर भोजन और पानी जाता है जो नल में सूजन हो तो स्वास रुकजाय और जो अन्न

पानी कंठ में न उतरे और कठिन से उतरे तो जाने कि इसकी पीना हड्डियों में सूजन है।

चिकित्सा उसकी सरेरू और जीभ के नीचे की नस को फस्द खोले और अमलतास मुंह में रखना विशेष गुण करता है। इस रोग वाला जो पानी में जिसमें मसूर और पोस्त के दाने पकाये हों आहार करे जो दो भाग, पोस्त के दाने और मसूर बराबर।

शर्बत शहतूत कंठ गले और काक की सूजनों को (काक वह है कि जो तालु में लटकता है) और जीभ की सूजन को गुण करे खट्टे शहतूत के रस में बराबर का बूरा मिला के चाशनी करे।

गरारा गले की सूजन और पीड़ा को गुण करे नीम की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय में औटाकर छान के गुनगुने २ गरारे करे।

अथवा अमलतास, मसूर मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर गुन गुने २ गरारे करे।

अथवा शहतूत का रस, पनियां, मसूर भिगोकर उसका पानी मिलाकर गुनगुने २ से गरारे करे।

अथवा जौ कूटकर भिगोकर उसका पानी निथार के गुनगुने से गर गरा करे तो गर्मी और सर्दी की सूजन को और कंठ की पीड़ा को गुण करता है और इसी प्रकार गुन गुने पानी से गरारा करना कंठ की सूजन को गुण करता है।

अथवा मसूर की पत्तियां औटाकर गरारे करे।

अथवा अरहर की पत्तियों का रस निकाल गुनगुना करके गरारे करे जो पत्तियां न मिलें तो अरहर की दाल पानी में भिगोकर गुनगुना करके गरारे करे।

अथवा तूत की जड़, पत्तियां और नरम २ डालियां पानी में औटाकर गरारे करे।

अथवा पनियां चबाना गले की पीड़ा को गुण करता है।

अथवा मकोय, कालीमिर्च, कालीजीरी, खड़िया मिट्टी, बराबर पानी में पीसकर लगावें तो गले और कंठ की सूजनों को गुण करता है।

अथवा निर्बिषी रेवन्द चीनी प्रत्येक तीन माशे अफीम तीन रत्ती गुनगुने पानी में मिलाकर लेप करे।

अथवा अरहर और मसूर की दालों को औटा, छानके और कपूर मिलाके कुल्ले करे।

अथवा मरदी भिगोकर उस के पानी से कुल्ले करे।

अथवा त्रिफला, मोचरस और पोस्त के डोडे औटाकर थोड़ा सा रेंडी का तेल मिलाकर कुल्ले करे तो पारे और रसकपूर के खाने के कारण मुंह आये को गुण करे।

अथवा लिहसोड़े मुंह में रखना और ईसबगोल के लुआब से कुल्ले करना और कत्था मुंह में रखना जीभ के फटजाने को गुण करता है।

फ़सल मुंह से लार बहने की चिकित्सा में

बहुधा करके उदर की तरी से सोते समय मुंह से राल बहा करती है उस की चिकित्सा उदर को पाक करे और इतरीफल सगीर अर्थात अवलेह खाये।

अथवा राई पीस के उसमें बूरा मिला के फांकना गुण करता है।

अथवा देर तक दातन किया करे।

अथवा कासनी जौकुट करके थोड़ा नोन मिलाके फक्की बना कई दिन फांके। जवारिश मस्तगी अर्थात मस्तगी पाक राल बहने को गुण करता है। आध पाव सफ़ेद बूरे की चाशनी करके सात माशे मस्तगी पीसकर उसमें डाल कर मिलावे मात्रा बच्चों को दो माशे और तरुण को नौ माशे देना योग्य है।

फ़सल शकाक़लब

अर्थात होठों का फटजाना उसका पूर्व रूप खुश्की है। चिकित्सा उसकी घी में नोन मिलाकर नित्य तीनबार टूंडी पर मले तो गुण करे।

अथवा मीठे घीया और तर्बूज़ की मिंगी पानी में घोटकर पतला लेप करे तो होठों और जीभ के फटजाने को गुण करे।

अथवा कतीरा और ईसबगोल का लुआब होठों पर मले।

अथवा बायबिडंग का फेन निकालकर होठों पर मले।

फ़सल अमराज़ हल्क़

अर्थात कंठ के रोगों में खनाक़ अर्थात कंठ की सूजन यह सूजन कंठ के नल में तथा नल के बग़लों में तथा चीनी हड्डियों में पैदा होता है और नल वह है जिसमें से शब्द निकलता है और चीनी हड्डी वह है जिनमें होकर भोजन पानी जाता है जो नल में सूजन हो तो स्वास रुकजाय और जो अन्न

पानी कंठ में न उतरे और कठिन से उतरे तो जाने कि इसकी चीना-हाड़ियों में सूजन है।

चिकित्सा उसकी सरैरू और जीभ के नीचे की नस को फस्द खोले और अमलतास मुह में रखना विशेष गुण करता है। इस रोग वाला जो पानी में जिसमें मसूर और पोस्त के दाने पकाये हों आहार करे जौ दो भाग, पोस्त के दाने और मसूर बराबर।

शर्बत शहतूत कंठ गले और काक की सूजनों को (काक वह है कि जो तालु में लटकता है) और जीभ की सूजन को गुण करे खट्टे शहतूत के रस में बराबर का बूरा मिला के चाशनी करे।

गरारा गले की सूजन और पीड़ा को गुण करे नीम की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय में औटाकर छान के गुनगुने २ गरारे करे।

अथवा अमलतास, मसूर मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर गुन गुने २ गरारे करे।

अथवा शहतूत का रस, धनियां, मसूर भिगोकर उसका पानी मिलाकर गुनगुने २ से गरारे करे।

अथवा जौ कूटकर भिगोकर उसका पानी निथार के गुनगुने से गर रारा करे तो गर्मी और सर्दी की सूजन को और कंठ की पीड़ा को गुण करता है और इसी प्रकार गुन गुने पानी से गरगरा करना कंठ की सूजन को गुण करता है।

अथवा मसूर की पत्तियां औटाकर गरारे करे।

अथवा अरहर की पत्तियों का रस निकाल गुनगुना करके गरारे करे जो पत्तियां न मिलें तो अरहर की दाल पानी में भिगोकर गुनगुना करके गरारे करे।

अथवा तूत की जड़, पत्तियां और नरम २ डालियां पानी में औटाकर गरारे करे।

अथवा धनिया चबाना गले की पीड़ा को गुण करता है।

अथवा मकोय, कालीमिर्च, कालीजीरी, खड़िया मिट्टी, बराबर पानी में पीसकर लगावें तो गले और कंठ की सूजनों को गुण करता है।

अथवा निर्विषी, रेवद चीनी मस्तगी तीन माशे अफीम तीन रत्ती गुनगुने पानी में मिलाकर लेप करे।

अथवा सूखा करेला सिरके में पीसकर गुनगुनी करके पतला लेप करे

अथवा ईस की जड़ पानी में घिसकर गुनगुनी कर पतला लेप करे तो गले की पीड़ा जाय।

अथवा नौसादर का लेप कंठ की सूजन को गुण करता है।

अथवा मुर्गी की बीठ सिरके में मिलाकर कंठ पर लगावे तो सूजन को गुणकरे।

अथवा तोया के बीज, गेरू, लालचंदन, काला जीरा, सिरस की छाल, मसूर, काली मिर्च, काली जीरी, सूखा करेला, सोया के बीज, सब बराबर ले पीस के सिरके में मिलाकर गुनगुना पतला लेप करे।

अथवा मोरिया की मैले रंग की एक हिन्दी जड़ है पीस के लगावे तो गले की पीड़ा को गुणकरे।

अथवा रेवदचीनी, गेरू, कालीजीरी, कालीहड़, हल्दी, आमले, मुलतानी मिट्टी, बराबर कूटछान कर गुनगुने पानी में मिलाकर पतला लेपकरे।

अथवा बच्चों का काग लटक आया हो तो उसको गुण करे। मुलतानी मिट्टी सिरके में मिलाकर तालू पर रखे।

अथवा माजूफल सिरके में घिस के उंगली पर लगा के लटके हुए काग को उससे उठावे।

अथवा चूल्हे की लाल मिट्टी में एक कालीमिर्च पीसकर काग को उससे उठावे।

अथवा गले की सूजन को गुणकरे। समालू की छाल जलाकर ति के तेल में पीसकर पतला लेप करे।

अथवा मेथी और जौ का चून बराबर सिरके में मिलाकर पतला लेपकरे

अथवा यह नुसखा उस्तादों का आजमाया हुआ है ख़नाक की सूजन को गुणकरे। कछुए को लेकर उसका मुंह रोगी के मुंह की बराबर रखे कि कछुए के मुंह का सांस रोगी के कंठ में जाय तो उसकी सूजन हलकी पड़े और गले के पीछे पछने लगाना सूजन को गुण करता है॥

फ़सल वहतुस्सूत यानी गला पड़जाने की चिकित्सा में।

जो नज़ला गले की तरफ़ पड़े और उसके कारण गला पड़जाय तो यों

सी अफ़ीम खाय और पोस्त के डाड़ और अजवायन दोनों को औटा कर गरगरा करे तो गुण करे और जो पूर्व रूप उसका कफ हो तो तीन वर्ष की पुरानी गोंदनी की जड़ जो पृथ्वी के नीचे गड़ी होती है थोड़ी २ मुंह म रख और इस्पद से गरगरा करना आवाज को साफ करे।

अथवा अद्रक को भीतर से खाली करके थोड़ी हींग और नोंन उसमें भरे और उस पर कपड़ा लपेट कर चूनका पुर्त लगाके भूमल में गाड़दे जब सीज जाय और सुगन्धि आने लगे तब आंच में से निकाल छीलकर खाय तो आवाज खुलजाय।

अथवा मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि चांवल गुड़ में पकाकर सोते समय खाय फिर एक घटे पीछे दो चमचे गुनगुना पानी पिये तो तीन दिन में आवाज खुल जावे।

अथवा थोड़ी सी हींग गर्म पानी से निगले।

अथवा मूली के बीज कूटकर गर्मपानी में मिलाकर खाय।

अथवा हड़की गुठली की गिरी, पीपल, सेंधा नोन बराबर शहद में मिला-कर गोलियां बनाके खाय नित्य १ तोले पदरह दिन तक खाय।

अथवा मालकांगनी, बच, खुरासानी अजवायन, कुलीजन, पीपल पीस के शहद में मिलाके चौदह माशे दोनों समय चाटे तो गला खुलजाय।

अथवा दीपे का गुल पान में रखकर खाय यह मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है और जो सिंदूर खाने से गला पड़गया हो तो उसको भी गुण करे।

अथवा गोंडा भूमल में गुनना कर कतरके खाय तो गला खुले।

अथवा कबाबचीनी मुंह में रखे तो गला खुले और गोभी की चटनी भी आवाज खोलती है। गोभी के पत्ते और डंडी पानी में उबालकर कपड़े में छान थोड़ा शहद डाल चाशनी कर काम में लावे।

फसल खनाजीर अर्थात् कण्ठ माला की औषधियों के प्रकर्ण में।

कंठमाला एक सूजन होती है जो गले में पैदा होती है चिकित्सा उस की कफ को पकाकर उसकी सफ़ाई करे।

दवा कठ माला को गुण करे मूली के बीज बकरी के दूध में पीसकर लेपकरे

अथवा विहसोंढे की नर्म २ पत्तियां भूमल में गर्म कर दस दिन कठ-

माला पर बांध ।

अथवा पसौंदी की पत्तियां और चार काली मिर्च पीसकर लेप करे।

अथवा सरसों पीसकर लगाया करे यह लिखा है कि सफ़ाई के पीछे जब तक रोग दूर नहो तब तक चार मोशे जवाहर कूट छानकर सायंकाल के समय नित्य खाया करे यह मरहम लगावे, तोलेभर गूगल, तीन माशे, काली मिर्च सिरके में पीस और पकाकर लगाया करे ।

अथवा सोंठ साढ़े तीन माशे, कुलथी के बीज दस माशे, गाय के पेशाब में खदकाकर ठंडी कर के लेप करे ।

अथवा कथीरा पांच भाग, अजवायन दो भाग, कूट छानकर धनिये की पत्ती का रस निचोड़ कर खूब मिला के लेप करे यह क़रावादीन सफ़ाई में लिखा है।

अथवा बकरी के कंधे का हाड़ जलाकर पंद्रह दिन तक खाय ।

अथवा मोरिया की लकड़ी और मदनमस्त कूट छान गुनगुना कर लेप करे और ऊपर से पुरानी रुई गर्म कर बांधे ।

अथवा गाय के खुर और सींग जलाकर तेल में मिलाकर कंठ माला पर लेप करे ।

अथवा पीलू की पत्तियां कूट तथा गाय के पेशाब में पीसकर लगावे उस पर पान बांधे ।

अथवा दो तोले मुलहठी रात को पानी में भिगो प्रातः काल छान के पिये इस प्रकार एक महीने पर्यन्त पिये ।

अथवा एक भाग सिरस के बीज कूट छान के, दो भाग शहद में मिला कर हांडी में रख ऊपर से परिया रख के उड़द के चूनका लेसा लगा सात दिन धूप में रखे बाद को खोलकर एक तोले प्रति दिन खाय और खट्टा खारा न खाय तो कंठ माला के मवाद को उखाड़ यह मुफ़रिदात अकबरी में लिखा है हां यह नुसखा दुर्गंधि युक्त तो है परन्तु कंठ माला का दोष दूर करने में उत्तम है

अथवा चूका की जड़ बांधना कंठमाला को गुण करता है ।

अथवा बकरी के सींग की मिंगी आरने कंडों की आग में ऐसी जलावे कि सफ़ेद हो जाय तब फंकी बनाकर चौदह दिन तक नित्य सात माशे प्रात फांके और खिचड़ी खाय ।

अथवा जौका आटा, अलसी, कबूतर की बीट, सिरके में पीसकर लगावे तो कठमाला जाय।

अथवा धनियां और जौका सत्तू हमेशा लगाना कठमाला को गुणकरे।

अथवा सिरस की छाल, तूरा, कालीमिर्च, कालीजीरी, बराबर पीसकर लगाया करे और बड़का दूध कठमाला पर लगाना गुणकरता है।

गुण, सरेरू की फ़स्द खोलना सूक्ष्म भोजन करना उत्तम चिकित्सा है।

फ़सल कण्ठ में जोंक चिमिटजाने की चिकित्सा में।

नोंन तथा नौसादर सिरके में पीस मिलाकर गरारा करे और गधक का धुआं कठ में पहुचाना जोंक को कठ से गिरा देता है। धुआं पहुचाने की बिधि यह है। कि मरसल के एक मुह पर गधक रखे और उस पर आग रख दूसरी तरफ़ से हुक्केकी तरह खींचे और जो कठ से छूटकर जोंक उदर में गिरजाय तो तुर्त वमन करा देव और जो न निकली हो तो जुल्लाब देवे।

अथवा काली मिट्टी कपड़े में बांध कर रोगी के मुह में रखे तो मिट्टी की सुगधि से तुर्त जोंक निकल आवेगी।

अथवा राई दो भाग पीसकर आठ भाग सिरका मिलाके गरारे करे।

अथवा राई कलोंजी मिलाकर पीसके नाक में फूके गुणकरे।

अथवा नागरमोथा मुह में रखे तो उसके कारण जोंक निकल आवे।

फ़सल छाती के रोगों की चिकित्सा में।

जीक्रुमफ्स अर्थात् स्वास में यह रोग वृद्धावस्था में कफ़ की प्रबलता से होता है और अत्यन्त वृद्धको होता है इसकी चिकित्सा तुरतही करे कभी २ कफ़ पकजाने के पीछे जुल्लाब से सफ़ाई करते हैं।

गोली स्वास को गुणकरे। कआकी सिंगी और पीपल पीस के अद-रक के रस में मिर्च के प्रमाण गोलियां बनाके तीन गोली तड़के के समय खाया करे।

अथवा हल्दी राई और लोहन सज्जी प्रत्येक चार भाग गुड़ अठारह भाग कूटछान के जगली बेर के प्रमाण गोलियां बनाय सुबह शाम खावे इस प्रकार चालीस दिन तक खाय।

अथवा हींग जलाके अदरक के रस में घोट चने के प्रमाण गोलियां बनाके खाय।

अथवा मुंह मुंदी आक की कली दो भाग, पीपल एक भाग, सेंदा नोन एक भाग, महीन पीसकर झाड़ी बेर के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली

अथवा आक का पत्ता एक, काली मिर्च २५, कूटछान कर काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा तरुण को एक और बच्चों को आधी गोली देवे।

अथवा पीपल, काली मिर्च प्रत्येक साढ़े तीन मासे, काकड़ासिंगी दो मासे, सफ़ेद सज्जी १ मासे, अफ़ीम चार रत्ती, कूटछान कर अदरक के रस में बेर के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली और जो अदरक न मिले तो डेढ़ तोले सोंठ मिलाकर गोलियां बनावे।

अथवा एलुआ, सफ़ेद सज्जी, कालीमिर्च, हल्दी, कूटछान कर ग्वारपाठे के रस में घोटकर झारीबेर के प्रमाण गोलियां बनावे, मात्रा एक गोली गुनगुने पानी के साथ लेनी चाहिये।

अथवा नील, चूके की लकड़ी प्रत्येक सात मासे, मालकांगनी एक मासे, कूटछान पानी में घोट चने के प्रमाण गोलियां बनावे सांझ सवेरे एक १ गोली खाया करे और खट्टा खारा न खाय चिकनाई युक्त भोजन करे।

अथवा अकरकरा, काली मिर्च, अनार की छाल, अजमोद, अडूसे के पत्ते, छोटी कटेरीकी जड़ बबूलकी छाल, सफ़ेद सज्जी, सेंधानोंन, सांभरनोंन प्रत्येक एक मासे अफ़ीम दो मासे कूटछान कर अदरक के रसमें चने के प्रमाण गोलियां बनावे और मुंह में रखके चूसे तो सांस और कफकी खांसी को गुणकरे।

अथवा एलुआ, सुहागा, बीजाबोल, कूट छानकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे सांझ सवेर दो २ खाया करे तो स्वास जाय।

अथवा भीगे कपड़े में एक तोले पीपल बांध भूभल में गाड़दे घंटेभर बाद निकालके भुना कुलींजन, कालीमिर्च प्रत्येक साढ़ेतीन मासे, पीपल, अकरकरा डेढ़ भाग, महीन पीसकर ग्वारपाठे के रस में खूब घोटकर चनेके प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली नित्य खाया करे।

अथवा अडूसे के फल, पोहकरमूल, काकड़ासींगी, कालीमिर्च, कलौंजी पीपल, भारंगी, कटेरी की जड़ सबको बराबर ले अदरक के रसमें गोलियां बांधे मात्रा साढ़ेतीन मासे।

अथवा कसौंदी के ताज़ाफल भूनकर खाय।

अथवा रेंडी की मिंगी खाय तो स्वास जाय।

अथवा रींसाके बीज, नकछिकनी और पान सबको भून पीसकर ४ रत्ती प्रमाण पान में रख के खाय, अति उत्तम नुसखा है।

अथवा आक के पत्ते, बीजाबोल, सफेद कत्था, पानी में पीस के पतला लेप करे और सुरमुकी घी मिट्टी के बासन में रख उसका मुह बंदकर जलते हुए चूल्हे तथा तन्दूर में रखे जब जलकर राख होजाय तब पीस नित्य पान में रखकर खाया करे, मात्रा एक रत्ती।

अथवा सेरभर आक के पीले पत्ते जो झड़कर गिर गये हों चूना और नोंन प्रत्येक सात माशे, दोनों को पानी में पीसकर पत्तों पर लेपकर सुखावे और मिट्टी के बासन में रख आरने कंडों की आग से एक प्रहर जलावे जब राख होजाय एक रत्ती नित्य खाय। दूध दही खटाई न खाय तो स्वास खांसी दूर होवे।

अथवा आक की कौंपल पान में रखकर जाड़े के दिनोंमें तीन दिन तक नित्य एक कौंपल खाय चौथे दिन डेढ़ और पांचवें दिन दो इसी प्रकार चालीस दिन तक प्रति दिन आधी कौंपल बढ़ाकर खाय।

अथवा आक की सुरमुदीकली चाहे जितनी लेकर हरएक में एक २ कालीमिर्च रखके माटी की हांडी में रखे और उन पर खारी नमक बिछाकर हांडी का मुह बंद करके तन्दूर में रखे जब स्वास शीतल होजाय तब निकाल कर चार रत्ती नित्य खाया करे।

अथवा इलायची के दाने, मालकांगनी लेकर दो माशे रोज निगले तो कफ का स्वास जाय।

अथवा अदरक और ग्वारपाठे के रस और शहद सब बराबर ले चीनी या शीशा के बासनमें रख धरती में गाढ़ दे तीन दिन बाद निकाले और एक कौड़ी की बराबर रोज खाय।

अथवा बिसखपरा की जड़ थोड़ी नित्य पान में धरकर खाय।

अथवा तम्बाकू का गुल आग में सफेद जलाके पीसे दो रत्ती पान में रखकर खाया करे और खट्टी तथा बादल वस्तु न खाय।

अथवा तम्बाकू का गुल इकट्ठा करके जलावे जब सफेद होजाय उसे

पानी में रगड़कर एक दिन रात रहने दे और हर घड़ी हिलाता रहे फिर छानकर पानी को हंडिया में औटावे जब नोन होजाय तब दो रत्ती पान में रखकर खाया करे।

अथवा थूहर की लकड़ी पोलीकर १४ माशे फिटकरी उसमें रख कपरौटी कर कंडों की आंच से फूंके जब शीतल होजाय फिटकरी निकाल के दो रत्ती के प्रमाण पान में रख के खाया करे।

अथवा हथेली भर ईसबगोल लेके तीन चार नित्य सांझ सवेरे एक महीने फांके तो सर्दी गर्मी के स्वांस रोग को आराम हो।

अथवा गुड़ की बराबर सरो के पत्ते पान में रखकर खाया करे।

अथवा दो समुद्रफल और चार पीपल जला पीसकर कौड़ी भर पान में रखकर खाया करे।

अथवा मकड़ी का जाला पोंछकर गुड़ में लपेट के खाय यद्यपि गर्मी विशेष करेगा परन्तु गुणदायक है।

अथवा रौसा के पत्तों का रस स्वांस को गुण करे।

अथवा चार तोले गेहूं आक के दूध में तीन दिन भिगो माटी के बासन में रख मुंह बंदकर आरने कंडों में जलावे जब शीतल होजाय तब पीसकर चार तोले गुड़ मिलाके एक तोले दो माशे के प्रमाण गोली बांधे एक गोली प्रातःकाल खाय परन्तु खट्टी और बादी वस्तु न खाय।

अथवा चिड़चिड़ का नोन थोड़ा २ खाया करे तो छाती के कफ को दूर करे और स्वांस को खोवे और थूहर का नोन भी यही गुण करता है और आक का नोन भी यही गुण करे और इनका नोन बनाने की यह विधि है कि आक के पत्ते सुखा जलाकर रात को पानी में भिगोकर प्रातःकाल छानके पानी को जलाव कि सब पानी जलकर नोन हो जायगा और नोन भी इसी प्रकार बनते हैं।

अथवा शुद्ध जमालगोटा दिये में जलावे जब राख होजाय तब पीसकर चार भाग करे प्रतिदिन एक भाग पान में रखके खाय तो स्वांस को अति गुण करे।

अथवा भुनी फिटकरी और मिश्री दोनों को बराबर ले कूटकर फंकी॰ मात्रा एक माशे से छः माशे तक है।

अथवा थोड़े से गेहूं ले कोरे शिकोरे में रख जलाकर कोले करे और इन्हीं की बराबर हल्दी लेकर जलावे फिर दोनों को महीन पीसकर मिलावे प्रथम दिन साढ़े पांच माशे शीतल या गर्मजल के साथ लेवे इसी प्रकार नित्य कौड़ीभर बढ़ाता जाय एक महीना इकीस दिन तक यानी परमेश्वर की कृपा से सात दिन पीछे ही आराम मालूम पड़े।

अथवा आक की कालीजड़ डेढ़ भाग, अजवायन एक भाग, कूटछान कर गुड़ मिलाके गोलियां बनावे एक तोले नित्य सवेरे खाया करे।

अथवा करील की लकड़ी की राख एक माशे नित्य खायाकरे।

अथवा आमलासार गंधक सात माशे मिश्री चौदह माशे शहदमें मिला कर दो माशे पान में रखकर खाय।

अथवा मकूमा का छोटा पेड़ जड़ पत्तों सहित छाया में सुखा के कूट-छान फकी बनाके एक हथेली भर नित्य खाय।

अथवा बारहसींगे का सींग जलाके शहदमें मिला प्रथम दिन एक माशे खाय फिर एक २ माशे नित्य बढ़ाकर एक तोले तक खाय जो इस बीच में गर्मी विशेष मालूम पड़े तो उतनी ही बहुत है।

अथवा आककी छाल सहमने की छाल दस २ माशे, जवाखार साढ़ेतीन माशे, पीपल दो तोले, नीलाथोथा माशेभर भूनकर फकी बनाके दो माशे खाय।

अथवा इंद्रायनकी जड़, पीपल, सज्जी, बराबर कूट छान कर एक २ माशे सुबह शाम खाया करे।

अथवा सेंधानोंन पीसकर पहले दिन दो माशे सोते वक्त चाटे और नित्य आधमाशे बढ़ाता जाय कि छःमाशे तक पहुंचावे और इसके ऊपर पानी न पीवे जो तृषा बहुत लगे तो गुनगुना पानी पीवे।

अथवा ढाईपाव आककी पत्ती और मदारकी डाली सवासेर, टुकड़े २ करके अजवायन, आमलासार गंधक, जौकुट सवासोलह तोले, पवाना चार तोले, सब दवाई हांडी में भरकर ऊपर परिया रख माटी से मुंह बंदकरे इस के ऊपर और एक कपरौटी कर बहुतसी लकड़ियों में रखके जलावे जब राख होजाय पीसकर खायाकरे और थोड़ी २ बढ़ाताजाय कि एक हथेलीभर होजाय परन्तु इस दवा से रुधिर आनेका भय है विशेष न खाय।

फक्की कि इसे हिन्दुस्तानी लोग खाते हैं। पोहकरमूल, भारंगी, काली मिर्च, पीपल, कटेरी की जड़, काकड़ासींगी, सेंधानोंन, सज्जी, बिजालोटन बराबर कूट छानकर फक्की बनावे एक २ माशे सायं, प्रात खाया करे और भोजन में घृत विशेष खाय।

तम्बाकू का शर्बत तम्बाकू की हरी पत्तियों का रस और गुड़ बराबर लेकर शर्बत बना छानकर रक्खे चौदह से अट्ठाईस माशे तक देवे और निबल को थोड़ीदे ताकि उलटी न होवे और दस्त न होजांय यह स्वास के रोगी को अति गुणदायक है पांच दिनमें बिलकुल आराम होजाय।

चटनी कफकी खांसी और स्वांस को आराम करे। अलसी और अस्पंद बराबर पीसकर दूने शहद में मिलाकर नित्य एक तोले चाटे और बाजोंने लिखा है कि भुनी अलसी आधपाव, कालीमिर्च तीन तोले, तिगने शहद में मिलाकर चाटे बाजोंने मिर्च के बदले पोदीना मिलाया है और कोई २ निरी अलसी तिगुने शहद में मिलाते हैं।

अथवा तीन तोले भुना सुहागा, चार तोले शहद में मिलाकर रक्खे उसमें से तीन उंगली लेकर सोते समय चाटे तो स्वांस रोग जाय।

अथवा कायफल, सोंठ, पोहकरमूल, काकड़ासींगी, भारंगी, पीपल बराबर लेके कूटछानकर शहद में मिला के साढ़े तीन माशे नित्य खाया करे तो कफ के रोगों को निश्चय दूर करे।

अथवा चावभी, हल्दी, पीपल, दारुहल्दी, कालीमिर्च, कालानोंन, चीता, भुना सुहागा, चौदह २ माशे, सज्जी सात माशे, कूट छानकर साढ़े तीन माशे नित्य गरम पानी के साथ फांके।

अथवा काकड़ासींगी, पोहकरमूल, भारंगी और कायफल बराबर कूट छानकर सोंठ भिगोकर उसके पानी में भिगोवे सभा सवेरे एक २ टांक की बराबर खाय।

अथवा हर्र, बहेड़ा एक २ भाग कूट छानकर सभा सवेरे चार २ माशे की मात्रा खाय तो स्वास और खांसी जाय।

अथवा सात माशे रीठा नित्य खाय तो स्वांस को गुण करे।

अथवा कड़ुआ कूट दो भाग शहद में मिलाकर चाटे तो स्वांस और खांसी को गुण करे।

अथवा अलसी और मेथी सात २ माशे, मुनक्का तोलेभर पानी में औटाकर और छानकर पिये।

अथवा बड़ी कटरी की जड़ टुकड़े २ कर पावभर पानी में औटावे जब छटांक भर रहे तब पीवे।

अथवा जंगली प्याज, चीता, सोंठ, भारंगी, कटेरी की जड़ और पत्ती सहित रासा और बबूल की छाल प्रत्येक दो तोले चार माशे जौ कूट करके दो भाग करे एक भाग आध सेर पानी में औटावे जब आधपाव रहे छानकर पिये तो कफ की खांसी जाय।

अथवा छोटी कटेरी की जड़, गिलोय, पोहकरमूल, पीपल, भारंगी, काकड़ासींगी, और नरकाचूर प्रत्येक तीन माशे एक सेर पानी में औटावे जब आधपाव रहे तब छानकर पिये तो स्वांस और खांसी दूर होय।

अथवा मीठे घिया की मिंगी, खीरा, ककड़ी की मिंगी, खसखास, निशास्ता सब बराबर लेके शीरा निकाल कर सफ़ेद क़न्द या तुरंजबीन या शीरखिश्त या शर्बत बनफ़शा मिलाकर पीवे तो रुधिर थूकने और सूखी खांसी को गुण करे।

अथवा पानी में निशास्ता औटाकर बूरा मिलाके चाशनी करे फिर पोस्त के दाने और घिया के बीजों की मिंगी का शीरा मिलाके हलवा बनाके खाय तो छाती के रोग और रुधिर थूकने तथा खांसी आदि और आंतों के घाव को गुण करे और मस्तक को तर करने वाला और बल देने वाला है।

फ़सल सिल अर्थात् रुधिर थूकने के रोगों की चिकित्सा में।

सिल फेफड़े के घाव को कहते हैं इस रोग में ज्वर और खांसी होती है कभी खांसी से रुधिर भी निकलता है और रोगी प्रतिदिन सूखता जाता है हरचन्द यह रोग असाध्य है परन्तु रोगी शीघ्र काल को प्राप्त न हो जाय इस कारण प्रथम बासलीक नसकी फ़स्द खोले पीछे ज्वर और खांसीकी चिकित्सा करे।

गोली जो रुधिर थूकने को गुण करे। संगजराहत, जहरमोहरा, सफ़ेद कत्था, कतीरा, बबूल का गोंद, निशास्ता, पोस्त के दाने सफ़ेद, खतमी के बीज और गेरू प्रत्येक साढ़े तीन माशे, अफ़ीम माशेभर कूट छानकर गोलियां बनावे और कभी ज्वर की विशेषता में थोड़ासा कपूर मिलाते हैं।

क़ुर्स अर्थात् टिकिया फेफड़ा जलाकर तीन तोले निशास्ता, सफ़ेद पोस्त के दाने और काले पोस्त के दाने प्रत्येक तीन तोले कुलफा के बीज बिनेचुने, छिली मुलहटी, खतमी के बीज शुद्ध प्रत्येक दस माशे बबूल का गोंद और कतीरा प्रत्येक साढ़े तीन माशे, ईसबगोल के लुआब में गोलियां बनावे मात्रा

सात माशे की देनी योग्य है।

खसखास की चटनी

यह नुसखा हकीम इस्माईलखां ने आजमा लिया है बहुत सहल क्रिया है। यह रुधिर थूकने के रोग को गुण करता है। सफेद खसखास तीन तोले लेकर दस माशे ईसबगोल लेकर आधसेर पानी में औटावे जब आधा बाकी रहे तब आधसेर कंद की चाशनी करे ऊपर से सफेद खसखास, बबूल का गोंद प्रत्येक सात माशे पीसकर मिलावे मात्रा तोले भर।

दवा रुधिर थूकने को गुण करे सात माशे मुलतानी मिट्टी पीसकर पिये।

फ़सल डब्बह अतफाल अर्थात् बच्चों की पसली के रोग की चिकित्सा में

इस रोग में ज्वर और खांसी का होना तथा पसली का दबना उत्पन्न होता है इसके दो भेद हैं एक तो यह जिसके दोष में गर्मी पाई जाय इसमें ज्वर भी होता है इस कारण बहुधा डर नहीं होता इसमें सात दिन तक गर्म वस्तु न दे कि जिससे भीतर के जोड़ छिल जाय जैसे नीलाथोथा और जमालगोटा आदि सबसे उत्तम यह है कि मादे को नरम करे अमलतास, उन्नाव, मुनक्का, बनफशा, इनसे नरम करे और पकाव की बाट न देखे और दूसरा वह है जो कफ के दोष से हो इस में ज्वर और स्वांस का चलना भी होता है प्रथम इस रोग में डर है।

गोली पसली के रोगों को गुण करे। कथेला, चूना, नीलाथोथा, बड़ी हड़, बहेड़े का बक्कल और सफेद कत्था, बराबर लेकर महीन पीस के गोलियां बनावे समय पर थोड़े घी में मिलाके पतला लेप करे।

अथवा केंचुआ, पीलू के बीज, लौंग सब बराबर लेके गोलियां बनावे एक गोली नित्य दे तो दो तीन दिन में रोग जाय।

अथवा कपास के बीजों की मिंगी एक, नीलाथोथा कच्चा एक रत्ती महीन पीसकर सरसों की बराबर गोलियां बनाके एक गोली नित्य खाय।

अथवा एलुआ, जमालगोटा सब्जी दूर किया हुआ बराबर लेकर लोहे के खरल में बछिया का पेशाब डालकर लोहे के दस्ते से घोटकर मूंग के प्रमाण गोलियां बनाके उम्र को देखकर माता के दूध में देनी चाहिये।

अथवा कथेला आठ माशे, हींग एक माशे, कूट छानकर दही के तोड़ में कालीमिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा दूध पीते बच्चे को एक गोली गरम के साथ देनी भी

अथवा थूहाकी लकड़ी, कालीमिर्च, बड़ी हड़का बक्कल पीली निसोत; सब बराबर पीसकर कालीमिर्चके प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली देवे तो पसली का रोग दूर होवे ।

वजूर अर्थात् कंठ में टपकाने की दवा

" पसली के रोग को गुण करे " सूखे केंचुए पानी में पीसकर एक बूंद बच्चे के कंठ में टपकावे अति गुण दायक है ।

दवा बकायन की पत्ती सेंक कर प्रथम रेंडी का तेल पेट पर मले फिर उस पर पत्ता बांधे ।

अथवा यह काढ़ा दे । कसूम के फूल माशे भर सात माशे लड़के के पेशाब में औटावे जब आधा या चौथाई रहे पिलावे ।

अथवा जवासे की दो माशे जड़ पानीमें औटाकर बच्चे को पिलावे बबूर का गोंद एक तोले, एलुआ छः माशे, कूट छानकर ग्वारपाठ के रसमें मिला- कर लगावे तो पसली का रोग जाय ।

गुण पिसरानी वैद्यों के मत में घुड़चढ़ी की गोली अति उत्तम है और यह औषधि योगियों की बताई हुई है यह गोली गरीबनवाज है नुसखे तो इस के बहुत हैं परन्तु दो एक सरल से लिखता हू बहुधा रोगियों का गुण करते हैं और बच्चों की पसलियों के रोग दूर करने को अति उत्तम हैं ।

गोली घुडचढ़ी पारा, गंधक, हरताल, सोंठ, कालीमिर्च पीपल त्रिफला का बक्कल सुहागा, तर्बूज के बीजों की मिंगी, रेहां के पत्तों का रस, सब बरा- बर लेके प्रथम पारे और गंधक की कजली करे फिर सब औषधियों को खरल में डाल के भंगरे का रस डाल दस्ते से तीन दिन घोटे और मूंग के प्रमाण गोलियां बनाके एक गोली नित्य खाय ।

घुढ़चढी की गोली का दूसरा नुसखा

पारा साढ़े तीन माशे, गंधक और सफेद निसोत सात २ माशे, कालीमिर्च दस माशे, सुहागा चौदह माशे, बड़ी हड़ का बक्कल दो तोले चार माशे, रेंडी दो तोले, जमालगोटा शुद्ध दो तोले चार माशे, इलायची माशे भर, कूट छान कर गोलियां बनावे ।

गुण यह गोली स्वांस रोगमें त्रिफला के संग सर्दी में गुड़के साथ सूखी खांसी में भांगरे के रसमें और आदर दूर करने को चिड़चिड़े के रसमें वायु

दूर करने को सहद में और बायशूल के दर्द को सौंफ के अर्क में खाय।

बकरी के पेशाब में रगड़ कर सफ़ेद दाग पर लगावे और स्त्री के दूध में घिसकर नेत्रों में आंजे तो जाला दूर हो और फोड़ा दूर करने को नींबू के रस में, और रोगों में अदरक के रस में एक गोली निगल जाय तो गुणकरे।

फ़सल जातुलजंब

अर्थात् पहलू की पीड़ा की चिकित्सा में। जो इस पहलू की पीड़ामें ज्वर और खांसी भी हो तो बासलीक नसकी फ़स्द खोले और बाक़ी जो पुस्तकों में चिकित्सा लिखी हो सो करे।

जो पहलू में दर्द बादी और सर्दी से हो तो पीड़ा कभी यहां और कभी वहां होवे और इसमें ज्वर नहीं होता।

दवा पहलूके दर्दको जो वह बादी और सर्दी से हो गुण करे थोड़ीसी सोंठ और अकड़की जड़ जौ कूट करके पानी में औटा के पिलावे।

अथवा आककी जड़ लड़के के पेशाब में घिसकर पीड़ा के स्थान पर लेप करके धूप में बैठे और आरने कंडे से सेके।

अथवा बारहसींगे का सींग और पांच काली मिर्च पीसकर गुनगुना करके जमाद अर्थात् गाढ़ा लेप करे।

दवा छाती की पीड़ा को गुण करे। देवदारू ढाई माशे पीसकर पांच माशे गुड़ में मिला के खाय और बाज़े उसमें बराबर की सोंठ बढ़ाते हैं।

अथवा सहजने की पत्तियां भिगोकर खाय।

अथवा मेथी और शहद मिलाकर औटाके पीवे तो छातीके पुराने दर्द और स्वांस को गुण करे।

फ़सल सआल अर्थात् खांसी की चिकित्सा में।

जो खांसी पहलू तथा सदर जो कि छातीके समीप एक स्थानहै या छाती वा फेफड़े की पीड़ा तथा कलेजे की सूजन के कारण हो अथवा रुधिरके थूकने से हो तो उसकी चिकित्सा उस रोग का दूर करना है। और खांसीका हाल यह है कि कभी सूखी होती है कि कोई वस्तु उसमें से नहीं निकलती है और कभी तर होती है कि उसमें कफ निकलता है और छाती में घुरघुराट होता है।

कफ़की खांसी की चिकित्सा में

कफ को पका के सफ़ाई कर डाले और सूखी खांसी में तर दवा देवे।

गोली कफ की खांसी को गुण करे। काकड़ासींगी कूटछानकर काली मिर्च की बराबर गोलियां बनाकर मुह में रक्खे।

अथवा छिली मुलहटी, कतीरा, बबूल का गोंद, निशास्ता और मिश्री बराबर लेके कूट छानकर चने के प्रमाण गोलियां बना के मुख में राखे तो सूखी और तर दोनों प्रकार की खांसी दूर होवे।

अथवा पिस्ता के फूल और बड़ी हड़ दोनों बराबर लेके अदरक के रस में मूग के प्रमाण गोलियां बनाके मुह में रक्खे तो खांसी जाय।

अथवा कालीमिर्च, सज्जी और खिल्ले चने बराबर लेके अदरक के रस में गोलियां बनावे।

अथवा हल्दी साढ़े तीन माशे, सफेद सज्जी एक माशे, कूट छान कर पानी में पीस के छोटे बेर की बराबर गोलियां बना के सांझ सबेरे एक २ गोली खायाकरे तो सात दिन में खांसी जाय।

अथवा कालीमिर्च, सुहागा, काकड़ासींगी, लौंग, फिटकरी भारंगी, हड़का वक्कल, पीपल, सेंधानोंन, चने २ बराबर लेके और सब की बराबर सोंठ मिलाके कूटछान नीबू के रस में घोटकर बेर के प्रमाण गोलियां बनाके सोते समय एक दो गोली खाया करे।

अथवा आधा कच्चा आधा पक्का सुहागा, उसकी बराबर काली मिर्च लेके ग्वारपाठे के रस में घोटकर चने के प्रमाण गोलियां बना के काम में लावे तो बच्चों की खांसी जाय।

अथवा छोटी कटेरी की जड़, मुलहटी, काकड़ासिंगी, कुलीजन, हड़का बक्कल पानी में औटाके बबूल की छाल मिलाके चने के प्रमाण गोलियां बनाके मुह में रक्खे।

अथवा काली मिर्च, पीपल, कूजा की मिंगी, कटेरी के बीज, भुना सुहागा और सफेद कत्था प्रत्येक साढ़े तीन माशे, अफीम दो माशे, कूट छान कर एक प्रहर अदरक के रस में घोट के काली मिर्च के बराबर गोलियां बनाके मुंह में राखे तो खांसी और स्वास जाय।

अथवा हड़ का बक्कल, कौंच के बीजों की मिंगी, काकड़ासींगी, काली मिर्च और मुलहटी बराबर लेके कूट छानकर चने के प्रमाण गोलियां बना मुहमें रक्खे

अथवा थोड़ेसे पोस्त के दाने भून पीस कर थोड़ासा सेंधानोंन और कालीमिर्च मिलाके एक माशे दिन में दो तीन बार लेके खाया करे।

दवा बलगम पर कपरोटी करके तंदूर में पकाके उसका गुनगुना २ पानी निचोड़ कर मिश्री मिलाकर पिये।

अथवा मुलहटी, कालीमिर्च भूनकर उनकी बराबर मिश्री मिलाके कूट छानकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे रातको दो गोली मुह में रखे तो, कफ की खांसी जाय।

अथवा हड़ और बहेड़े के बक्कल, काकड़ासींगी, भारंगी, पीपल, फिटकरी, सुहागा, चीता, लौंग, सेंधानोंन और सोंठ सब बराबर लेके सुहागा भूनकर डाले और छोटे बेर के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक २ गोली सांझ सबेरे खाय।

दवा पवार के बीज पीसकर प्रतिदिन चार माशे के प्रमाण इक्कीस दिन तक फांक तो कफ की खांसी जाय।

अथवा केले क पत्ते जलाके उनकी राख थोड़े नोंन में, मिलाके नित्य दो तीन बार खाया करे।

तदहीन अर्थात् तेल मलना गुदा के ऊपर खांसी को आराम देता है

अथवा पीपल चिलम में रखकर तमाकू की तरह पिये तो पुरानी खांसी दूर होवे।

अथवा रियाज आलमगीरी में लिखा है कि-कौए की बीठ थैली में बांधके लड़के के गले में लटकावे तो खांसी जाय।

अथवा कुचला घी में भून पीसकर रखे और प्रात काल दो रत्ती खाय तो कफ की खांसी जाय॥ गेहू की भुसी पानी में भीड़कर उसका अर्क लेके बादाम की मिंगी का शीरा, निशास्ता और कद मिलाके हरीरा बनाके गुन गुना २ पीवे।

अथवा सांभर, सेंधा और काला तीनों नोंन अजवायन सुहागा और जवाखार सब बराबर लेके मिट्टी के कुल्हड़े में रखे ऊपर से कपरोटी करके आध गज गहरे गढ़े में आरने कंडे भर उसमें कुल्हड़ा रख फूक दे जब शीतल होजाय पीसके उसके बराबर बबूल का गोंद मिला के एक माशे खाया करे।

अथवा बड़ फलकी फांके तो खांसी जाय। त्रिफला सेंधानोंन अनार का छिलका कौंच के बीजों की मिंगी अडूसे के पत्तों की भस्म जवासे की राख

प्रत्येक एक भाग पीपल काली मिर्च प्रत्येक आधा भाग कूट छान, फक्की बना, माशे भर प्रातः सबरे फांके तो तीन दिन में आराम हो ।

अथवा विलायती अनार का छिलका हो तो उत्तम है नहीं तो देसी ही का होवे पीपल, काकड़ा सींगी छै २ माशे, सेंधा और काला नोंन एक २ तोले इनका वक्कल दो तोले कूट छानकर फक्की बना के नित्य दो तीन बार फांके ।

अथवा काकड़ा सींगी छिली मुलहटी बबूल का गोंद पोस्त के डोडे पीपल समुद्रफल की मींगी बराबर ले कूट छान सफूफ यानी फक्की बना के तीन माशे खाय ।

जूफा का शर्बत

कफ की खांसीको गुण करे । छिली मुलहटी सौंफ खतमी के बीज काली झाँप प्रत्येक सात माशे जूफा और मेथी प्रत्येक साढ़े तीन माशे लिसोढ़े आठ तोले नौ माशे पोस्त के डोड़े दानों सहित ग्यारह पाव सेर बूरेका शर्बत बनावे।

अथवा अमलतास का गुलकन्द, खांसी की प्रकृति के नरम करनेमें गुणदायक है अमलतास एक भाग कन्द दो भाग का गुलकंद की तरह से गुलकन्द बनावे मात्रा एक तोले की देवें ।

अमलतास की चटनी

तबियत को नर्म करे और छाती पर से कफ को दूर करे और खांसी को गुण करे। अमलतास पानी में घोटकर तिगुने बूरे की चाशनी में मिलाके चटनी बनावे मात्रा दो तोले सौंफ के अर्क या उसी के रसके संग देवें ।

अथवा हालम की चटनी कफ की खांसी को गुण करे और मवाद को छाती पर गिरने नहीं देती अर्थात् दूर करती है और पहलू की पीड़ा को खो देती है । हालों कूट शहद में मिलाकर चाटें ।

अथवा सरसों पीस के शहद में मिलाकर चाटें तो कफ की खांसी जाय।

अथवा मुनक्का सात माशे सहद दस माशे कालीमिर्चे, अडूसा, भारंगी, नागरमोथा, काकड़ासींगी, प्रत्येक छ माशे अतीस, खुरासानीबच, प्रत्येक चार माशे कूट छानकर शहद में मिला के बच्चों की उम्र देख के उनकी मा के दूध में मिला के देवें तो खांसी स्वांस दम चढ़जाना और घरघराट को गुण करे।

अथवा खसखास की चटनी मजले की खांसी को गुण करे। दाने समेत पोस्त के डोडे तीस लिसोढ़े तीस सौंफ, खतमी के बीज तोले २ भर आधसेर

पानी में औटावें जब आधा रहे छानकर पाव सेर बूरे की चाशनी करें उस चाशनी में छिली मुलहटी सात माशे बबूल का गोंद साढ़े तीन माशे और कतीरा दो माशे पीसकर मिलावें सोते समय और प्रातःकाल एक २ तोले चाटें।

अथवा गोंदनी की चटनी खांसी को गुण करे। गोंदी का लुआब निकाल के बराबर का बूरा मिलाके चाशनी बनाके पीछे थोड़ासा बबूल का गोंद पीसकर मिलाके काम में लावें।

अथवा काकड़ासींगी, पीपल, अतीस, मुलहटी और बबूल का गोंद, सब बराबर लेके कूट छानकर शहद में मिलावें और चाटें तो खांसी जाय और बच्चों की खांसी तथा पसली बंद होवे।

अथवा बबूल का गोंद डेढ़ तोले कतीरा निशास्ता तोले २ भर छिली मुलहटी छ माशे सफेद कंद चौदह तोले और कभी गर्मी के समय बबूल की मींगी एक तोला बढ़ाते हैं खायं तो खांसी दूर होवे।

अथवा काकड़ासींगी पीस के शहद में मिलाकर बच्चों को चटावें मात्रा उम्र देखकर दें तो बच्चों की कफ की खांसी और घरघराट को बंद करे और सदैव खाना बच्चों को मोटा और बलवान करता है।

अथवा मुनक्का के बीज निकालकर उन में काकड़ासींगी को मिलाकर चाटें तो खांसी दूर होवे और यह पहली दवा से पराक्रम में विशेष है।

अथवा नागरमोथा और मुलहटी कूटछान कर शहद में मिलाके उसमें से थोड़ीसी मा.के दूध में मिलाके बच्चों को दें।

अथवा मुसन्निफ अर्थात् ग्रन्थकारकी बनाई हुई चटनी खांसी को गुण करे। छिली मुलहटी और मुनक्का प्रत्येक चौदह माशे पोस्त के डोडे दानों सहित सात लिहसोड़े सात अलसी सात माशे अंजीर सादा दस माशे सौंफ की जड़ और जूफा प्रत्येक साढ़े तीन माशे सब को तीन पाव पानी में औटावें जब पाव सेर रहे छानकर पाव सेर कंद में चाशनी करे फिर बादामकी मिंगी निशास्ता चिलगोजे की मिंगी प्रत्येक चौदह माशे काकड़ासींगी मुलहटी बबूरका गोंद प्रत्येक साढ़े तीन माशे पीपल दो माशे शीतलचीनी एक माशे, पीसकर मिलावे मात्रा साढ़े तीन माशे से सात माशे तक दें।

अथवा गावजुबां साढ़े तीन माशे सौंफ साढ़े तीन माशे मुलहटी चौदह माशे पोस्तका डोडा एक बबूल का गोंद दो माशे लिहसोड़े सत्रह दाने खतमी

के बीज साढ़े तीन माशे मुनक्का ग्यारह दाने औटाकर मिश्री मिलाकर पियें तो खांसी जाय।

अथवा—गेहू चौदह माशे पावसेर पानी में औटाकर दो माशे सेंधानोंन डाले जब तीसरा भाग रहे तब छानकर पीयें तो खांसी दूर होवे।

अथवा पोस्त के डोडे डंडी तोड़कर बारह नग और सेंधा नोंन दो माशे ढाई पाव जल में औटावें जब तीसरा भाग रहे छानकर सोते समय पीवे तो नजले की खांसी जाय।

फ़सल नफ्सदम अर्थात रुधिर थूकने की चिकित्सा में

जो खखार के साथ रुधिर आवे तो जाने कि गर्मी है और जो बे खखार आवे तो जाने कि मस्तक से है और जो खांसी में आवे तो जाने कि पीनी रहों और मुह और कलेजे से है।

चिकित्सा जो मस्तक से रुधिर आवे तो सरेरू नसकी फ़स्द खोलें और जो छाती से रुधिर आवे तो बासलीक नसकी फ़स्द खोले और जो मुंहे के जोड़ों से रुधिर आवे तो चार नसकी फ़स्द खोलें।

क़ुर्स कहरुवा

अर्थात् कहरुवा की टिकियां रुधिर थूकने और स्त्री धर्म की विशेषता तथा मूत्र में रुधिर आने को गुण करे। कहरुवा सात माशे कुलफ़ा के बीज भुने गेहू धुले भुना धनिया निशास्ता गिल अरमनी कीकर कतीरा प्रत्येक चौदह माशे लेकर टिकियां बनावे मात्रा सात माशे।

अथवा अनार के फूल की टिकिया रुधिर थूकने को गुण करे। अनार के फूल चार तोले आठ माशे खुर्फ़ा के बीज और धनिया सात २ माशे कतीरा बबूल का गोंद सहजना माजूफल प्रत्येक साढ़े तीन माशे लेकर टिकिया बनावें मात्रा सात माशे और जो विशेष निद्रा भी चाहे तो चार रत्ती अफ़ीम बढ़ावें।

दवा बबूर का गोंद मुलतानी मिट्टी और कतीरे का सफ़ूफ़ अर्थात् फंकी बनाके सात माशे खसखास के शीरा और अदरक के रस में मिला के पीवे।

अथवा गेरू कुंदरु गोंद अनार के फूल और बबूल का गोंद सब बराबर लेके पीसकर आमले के शर्बत में मिलाके खाय।

अथवा अति उत्तम दवा रुधिर थूकने तथा रुधिर की उलटी को गुण करे। नील की कोंपल अनार की पत्तियां और आमले प्रत्येक चार माशे धनियां दो माशे रात को पानी में भिगो कर प्रातः काल छानकर थोड़ी मिश्री या बूरा मिलाकर पीवें।

अथवा यह काढ़ा दे तो रुधिर थूकना बंद होवे, गिलोय अडूसा की पत्तियां प्रत्येक एक २ तोले औटा छान क,सात माशे बबूल का गोंद पीसकर मिलाकर पीवें।

अथवा यह यूष दे गुलखैरू तोले भर रात को पानी में भिगोकर प्रातःकाल मल छान के पीवें।

शर्बत हब्बुलास

रुधिर के थूकने को जो हौलदिली और अतीसार के संग हो गुण करे। हब्बुलास चार तोले आठ माशे चंदनचूरा आमले की गुठली निकालकर अनार के फूल प्रत्येक सात माशे सफ़ेद बूरे पावसेर की चाशनी करे जब ठंडी होजाय तब बबूर का गोंद भून पीसकर डाले।

दवा रुधिर थूकने को गुण करे। अडूसे की सूखी पत्तियां चार माशे और जो गीली हों तो तोले भर पीस के शहद में मिलाकर खाय।

अथवा कुलफा का रस सात माशे पीना रुधिर थूकने को गुण करे।

अथवा चौदह माशे गोभी पानी में पीसकर खाय तो रुधिर थूकने और रुधिर की उलटी को गुण करे।

अथवा खतमी के बीज छोटी माई कूट छान पानी में मिलाके पीवे।

अथवा अफ़ीम खाना रुधिर थूकने को गुण करे इस रोग वाला मनुष्य तोरई घीया पालक का साग लाक, साग कुलफा बिनी मसूर कचनार और उसकी कोंपल का रस यह सब खाय तो रुधिर थूकने को गुण करे।

फसल कल्ब के अमराज के इलाज में

अर्थात् हृदय के रोगों की चिकित्सा में। खफ़कान अर्थात् हौलदिली इस के दो भेद हैं, एक का पूर्व रूप हृदय में होता है और दूसरा किसी और जोड़ों के मिलने से होता है। जैसे उदर, कलेजा मस्तक आत्मा इन्द्री आदि के मिलने से जो हौलदिली किसी जोड़ के मिलाप से हो तो प्रथम उस मिश्रित जोड़ की चिकित्सा करे और वे मिश्रित की सफ़ाई करे और सादा हौलदिल में प्रकृति का बदल ही बस है।

खमीरा संदल

गर्मी के हौलदिल को गुण करे। आधपाव चन्दनचूरा गुलाबजलमें या गुलाबजल न मिले तो पानी में रात के वक्त भिगोकर प्रात काल औटाके छान ले उस में आधसेर बूरे की चाशनी करे और जो चाशनी पतली हो उसको चन्दन का शर्बत कहतेहैं और जो खट्टा करना चाहो तो नीबूका रस मिलादो।

शर्बत गावजुवां

जोकि दिलको बलवान करे और हौलदिल को गुणकरे। पावभर गावजुवां और सेर भर क़द लेके शर्बत बनावे।

शर्बत आबरेशम कच्चा रेशम सवा ग्यारह तोले तीन दिन पानी में भिगोकर औटावे जब तिहाई रहे तब तेजपात बालछड़ आठ २ माशे चंदन चूरा इलायची के दाने सोलह २ माशे थैली में बांधकर डाले फिर तुरन्त मल छान आध सेर क़द की चाशनी कर शर्बत बनावे।

बिनौले का शर्बत बिनौले गुलाबजल में गुलाबजल नहो तो पानीमें भिगोके औटावे जब आधा पानी रहे दूने क़दकी चाशनी कर शर्बत बनावे मात्रा छःतोले तक ले तो दिल को अति बलवान करे और मन प्रसन्न रखे बहम जखन और हौलदिल होवे ही दूर करता है।

शर्बत नारंगी

दिल की गर्मी को दूर करता है। नारंगी का जीरा फांकों में से निकाल कर बीज दूर कर निचोड़ले उसका निरा रस लेके बराबर का क़द डाल चाशनी करके शर्बत बनावे और चाशनी होजाने के बाद थोड़ा गुलाबजल मिलावे।

शर्बत अनन्नास

अनन्नास का रस एक भाग और क़द दो भाग लेके शर्बत बनावे और थोड़ा गुलाब और कस्तूरी बढ़ावे तो उत्तम और बलवान होगा।

शर्बत बर्गतबोल

अर्थात् पान का शर्बत—सर्द दिल को बलवान करता है। भूख, कफ और मंदाग्नि को दूर करता है। पके पान सौ पीछे कूटकर पानी में औटा छानकर आधसेर बूरे की चाशनी करे यदि थोड़ा गुलाब मिलावे तो अति उत्तम है।

दवाउल्‌मिस्क वारद

अर्थात् दिमाळमुश्क–सर्दी गर्मी के होल दिल को गुण करे। और दिल को प्रसन्न करे। जहरमुहरा घिसकर साढ़े तीन माशे, गुलाब के फूल, सूखा धनिया बिना हुआ कुलफा चन्दन गुलाब में पीसकर प्रत्येक सात माशे, कस्तूरी पौने दो माशे, गावजुवाँ और वंसलोचन प्रत्येक साढ़े तीन माशे शहद बराबर।

अथवा दीवालमुश्क सर्दी गर्मी के हौलदिल को गुण करे। नरकाचूर, बालछड़, छबीला, सोंठ और पीपल प्रत्येक साढ़े तीन माशे तेजपात बड़ी इलायची प्रत्येक सात माशे लौंग और कस्तूरी दो २ माशे तिगुना शहद।

जवारिश साजज़हिन्दी

अर्थात् तेजपात की बर्फी–सर्दी के हौलदिल को दूर करे और रूह की रक्षा करे श्वास उदर और तिल्ली को बलदे तथा पसीने की दुर्गन्धि को दूर करे, और आँतों की वाय को पचावे, शरीर को आनंद दे मुह की दुर्गन्धि को दूर करे मस्तक के कीड़े बिगड़े मल, जनने के कष्ट और जलंधर रोग को गुण करता है। सवा ग्यारह तोले तेजपात पीस कर पाव सेर सफ़ेद बूरा की चाशनी में डालके बर्फी जमावे मात्रा चौदह माशे तक।

जवाहर मोहरा

यह नुसखा अत्यन्त सहल है दिल की ताक़त को बढ़ाता है। लाल जहर मोहरा घिसा हुआ संग यशब, बिसद मूंगा प्रत्येक दो भाग गुलाब जल में घिस कर दर्याई नारियल निर्विषी और बंसलोचन प्रत्येक एक भाग गुलाब में घिस कर सब दवाओं को मिलाकर घोटे और गोली बनावे और पत्थर पर चिकना कर उनपर सोने का तबक लगावे और चार रत्ती गुलाब जल में घिस कर पिये।

चांदनी का गुलक़ंद

गर्मी के हौलदिल को गुण करे। सौ चांदनी के फूल सवापाव सफ़ेद क़ंद में मथकर गुलक़ंद बनावे और थोड़ासा गुलाब मिलाके चालीस रात चांदनी में रखे मात्रा १ तोले।

सेवती का गुलक़न्द

पहले मिस्त्रानी वैद्योंका आजमाया है यह हौलदिली को गुण करे तथा ताबे यत को नर्म करे। सेवती के फूलों की हरी पखड़ी दूर करके जीरा निकालके दूने क़न्द में मिलावे और शीशे में भर के चालीस रात चांदनी में रखे और जो दे

तीन नग सेवती के फूलों की हरी पखड़ी और जीरा दूर कर के चबाकर खाय तो हौलदिल जाय ।

गुड़हल के फूलका गुलकंद

दिल, वहम और बुद्धि को बल प्रदान करे आनन्द को बढ़ावे और हौल-दिल को निश्चय दूर करे। गुड़हल की हरियाली दूर करके दूने क़न्द में मलकर रखे।

हारसिंगार का गुलक़न्द

दिल को बल प्रदान करे और गर्मी के हौलदिल को दूर करे । हारसिंगार के फूलों की डंडी दूर कर के सफ़ेद २ ले दूने बूरे में मलके शीशे में भर के चालीस रात चांदनी में रखके प्रातः काल एक तोले खाया करे ।

दवा गर्मी के हौलदिल को । लालचन्दन छःमाशे, आंवले और धनिया पांच पांच माशे, आधपाव पानी में भिगोकर प्रात काल छानके दो तोले चार माशे, सफ़ेद बूरा डालकर पिये ।

काढ़ा सर्दी के हौलदिल को गुण करे । गावज़ुबां सातमाशे, चार लौंग औटाकर थोड़ासा बूरा मिला के पीवे ।

माजून मुक़व्वी दिल

आमलेका मुरब्बा, हड़का मुरब्बा दो२ नग, गावज़ुबां सात माशे, घिसा चन्दन साढ़े तीन माशे, गुलाब के फूल सात माशे, बनतुलसी गावज़ुबां के फूल साढ़े तीन माशे, सेवती का गुलक़न्द चार तोले, किशमिश चार माशे, तिगुने क़न्द में बनाले

दवा तुर्श के टूटे चपा के फूल चार नग दो तोले चार माशे शहद में मिलाकर खाय ।

अथवा छोटी कथी के सात पत्तों का रस पानी में निचोड़ कर क़न्द मिला के पीवे तो गर्मी का हौलदिल दूर हो ।

अथवा नाजबो के तोले भर बीज रात को पानी में भिगो कर हवा में रख प्रातःकाल दो तोले चार माशे बूरा मिलाके चमचा से निगल जाय ।

अथवा तोले भर ईसबगोल का लुआब निकाल के थोड़ासा बूरा मिला के पीवे ।

अथवा इमली पानी में भिगो कर उसका पानी लेके थोड़ासा सफ़ेद बूरा मिला के पीवे तो गर्मी के हौलदिल और तबियत के नर्म करने को गुण दायक है।

अथवा पान का खाना सर्दी के हौलदिल को गुण करे और अफीम खाना गर्मी के हौलदिल को दूर करता है।

बिजोरेकी सादा जवारिश

बादी के हौलदिल को गुण करे। उदरके रोगों तथा उलटी आदि को भी गुण करे।

अथवा चने की दाल चार तोले आठ माशे रात को पांच सात तोले पानी में भिगोकर प्रातःकाल खूब मलके बूरा मिला के पीवे और खट्टी तथा बादल वस्तु न खाय।

अथवा रेवद चीनी पानी में पीसकर दोनों कर्णों के बीच में मले।

अथवा खुलास्तुलनार बाचले ने अपनी मुजर्रिबात में लिखा है कि चुकन्दर को भूभल में गाड़ कर थोड़ी देर बाद निकाले उसका छिलका दूर करके गरम २ पत्र उतारे और मिश्री पीसकर सब पत्रों पर बुर्के उनमें से जो मीठा पानी निकले उसे पीवे इसी प्रकार कई बार करे।

अर्क खस

खसका रस निकाल के काम में लावे और जो इसमें सफेद बूरा मिला के शरबत बना के थोड़ा खसका इत्र उसमें मिला के काम में लावे तो हौलदिल को गुण करे और ज्वर की गर्मी को शान्ति करे।

अर्क धनियां

दिलको बलवान करे। भिना हुआ धनियां और गावजुबां दो २ तोले, इलायची के दाने, चमेली के फूल, गावजुबां के फूल, गुलाब के फूल और चन्दन चूरा प्रत्येक पांच तोले, अगर तोले भर, कस्तूरी एक माशे, गायका दूध पाव सेर, पांच सेर पानी में जितना चाहे उतना अर्क खींचे।

खमीरा अब्बासी

अब्बासी के लाल फूल सेर भर लेके अर्क खींचे फिर गुलाब जल और बूरा मिला के चाशनी करे जब चाशनी हो चुके तब थोड़ा जहरमोहरा और बसलोचन पीसकर मिला के खमीरा बनावे।

फसल गशी अर्थात् अचेतनता की चिकित्सा में।

गश शरीर के शून्य पड़जाने को कहते हैं इसके पूर्व रूप सो विशेष हैं। जैसे दिल की निर्बलता बिगड़े बुखारों की प्राप्ति और दुर्गन्धि आदि दिल की

तरफ। बहुधा कर अचेतनता में मुहपर ठंडा पानी छिड़के और सुगंधि सुंघावे। और जो प्रकृति की गर्मी से अचेतनता हो तो गुलाब जल या पानी में मिट्टी भिगो कर सुंघावे और जो सर्दी से हो तो कस्तूरी सुंघावे और लोबान का धुआं दे और पांव मलना तथा उलटी कराना अचेतनता को गुण करे और आराम करने के समय उसके पूर्व रूप का निदान करके चिकित्सा करे। शेख रईसीने लिखा है कि खीरा सुंघाना अचेतनता को दूर करता है।

गुण कभी सुपारी खाने से बेहोशी प्राप्त होती है तो तुर्त थोड़ा पानी पीवे और छींके ले और ठंडे पानी से दोनों हाथों की उंगलियों के पोरुए धोवे क्योंकि सुपारी का फोक खाने से छाती छिलजाती है परन्तु सुपारी मुह में रखकर उसका रस निगले और फोक थूक दे तो दिलको बलवान करे।

फ़सल पिस्तां अर्थात् स्तन के रोगों की चिकित्सा में

लेप कि लटके हुए स्तनों को कड़ा करे बड़ी और छोटी कटेरियों की जड़ अनार का छिलका कदूरी की जड़ कच्ची मौलसरी बराबर ले महीन पीस कर लेप करे।

अथवा जो यह उत्तम लेप स्तन लटकने के पहले काम में आवे तो स्तनों को लटकने न देवे। कुंदरु गोंद और कौड़ी जलाकर पीसकर हर महीने में तीन बार लगाया करे।

अथवा कभी २ चमगीदड़ का रुधिर लगाया करे।

अथवा गिजाई जो चौमासे में होती हैं चालीस नग लेके नोन में डाले जब मिलजाय तब मुलतानी मिट्टी मिलाके लगावे, स्तन कड़े होवें।

अथवा बड़की दाढ़ी जो जमीन तक लटकी हों उनकी नर्मे २ पीली और लाल टहनी लेकर सुखाले और पानी में पीसकर लगावें।

अथवा तमाल् और असगन्द की जड़ नित्य पीसकर लगावे।

अथवा यह लेप जो दूध की गर्मी और खुश्की के प्रताप से जमगया हो उसे बहा देता है। मूग और साठी चावल दोनों को पीसकर गुनगुना कर लगाया करे।

अथवा मकोय गुलखैरू निर्बिषी अफ़ीम और गेरू प्रत्येक एक माशे पीसकर गुनगुना करके लेप करे तो स्तनों की सूजन दूर हो।

अथवा अनार के छिलकों का तेल मलना स्तनों को कड़ा करता और योनि को सिकोड़ता है। अनार के छिलके सेर भर और छोटा माजूफल आधपाव दोनों को जौ कुट कर के चौगुने मीठे पानी में औटावे जब चौथा जलजाय तब उसको बराबर तिलका तेल मिलाकर औटावे जब जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तब काम में लावे।

अथवा अनार का छिलका और माऊ महीन पीसकर दूध में मिलावे दिनमें दो बार निर्विघ्न लगावे।

अथवा अरंड की पत्ती सिरके में पीसकर लेप करे।

दवा शीशम की पत्तियां पानी में पीसकर औटाकर सूजन को धोवे और उसके पत्ते गरम कर बांधे।

अथवा यह फक्की दूध को बढ़ाती है सोंफ और सतावर बराबर कूट छान फक्की बनावे और चने भिगोकर उनके पानी के संग फांके तो दूध बढ़ जायगा।

और बाजों ने लिखा है कि चनों को दूध में भिगो कर इनका लेप करे तो दूध सूख जाय काहू के बीज मसूर और जीरा सिरके में पीसकर लेपकरे तो दूध सूख जाय।

फसल मेदे अर्थात् उदर के रोगों की चिकित्सा में

जो उदर की पीड़ा भोजन की गिरानी यानी न पचने के कारण हो तो उसकी चिकित्सा—पानी में नोन डाल गरम करके पिला उलटी करावे। और जब तक क्षुधा न लगे भोजन न करे और क्षुधा के समय नर्म और तुर्त पचने वाले भोजन करे।

और जो बादी से पीड़ा हो और तबियत फिरे तो गेहूं की भुसी, खारी नोन तथा बाजरा और कागजी कपड़े में बांध के गर्म तवे पर गरम कर २ के सेके या गरम रेत से सेके और सादा अजवायन का अर्क पीना गुण करता है।

जवारिशात

अर्थात् शरक्रियां। पीपल की कतरियां बाय रोग को दूर करे और भोजन को पचावे और उदर तथा मैथुन की रुचि को बल देवे और उदर की तरी को सोखे। पीपल टड़ तोले पीसकर पावसेर बूरे की चाशनी में मिलाकर जमावे।

अथवा सोंठ की कतरी जमावे तो बादी और उदर की सर्दी की पीड़ा को गुण करे और अन्न को पचावे तथा भूत रोग को खोवे और उदर तथा

कलेजे की सर्दी को दूर करती है। डेढ़ तोले सोंठ पीस छान के पावसर बूरेकी चाशनी में मिला के कतरी जमावे। बाजे लोग सोंठ को तीन दिन नीबूके रस में भिगो सुखा के पीस छानके चाशनी में डालके जमाते हैं और बाजे छःतोले अदरक पीस कर पाव सेर बूरे की चाशनी में जमाते हैं।

अथवा अगर की मीठी और खटी कतरी जमाते हैं यह उदर को पराक्रम देती है और पाचन शक्ति को बढ़ातीहै सातमाशे लोबान पीसके पावसेर कदकी चाशनी कर कतरी जमावे और खट्टी करनी हो तो नीबूका रस जितना चाहे डाले।

अथवा कुदरूगोंद की कतरी कफके दस्तों को गुण करे। भोजन को पचावे, उदर की सर्दी को दूर करे। कुदरूगोंद बड़ी इलायची सात २ माशे सोंठ, कुलीजन, अजवायन, बालछड़, कलोंजी, छोटी इलायची के दाने, काली मिर्च प्रत्येक साढ़े तीन माशे तिगुने बूरे की चाशनी में जमावे।

अथवा आंवले की कतरी सादा। उदर को बलवान करती है आमले का शीरा सात तोले, गुलाब जल हो तो उत्तम, नहीं तो पानी में निकाल कर आध सेर बूरे की चाशनी कर डेढ़ तोले मस्तगी मिलावे।

अथवा सादा अजवायन की कतरी भोजन को पचावे तथा क्षुधा को बढ़ावे और बादी को दूर करे अजवायन को नीबू के रस में भिगोकर सुखाले और तीन तोले पीसकर आधपाव बूरे की चाशनी में डालकर कतरी जमावे।

अथवा कुलीजन की कतरी सादा बादी को दूर करती है और भोजन को पचाती है और उदर तथा कलेजे को गुण करती है उदर की तरी और खट्टी डकार और गुरदे की सर्दी की पीड़ा दूर करती है। पावसेर बूरे की चाशनी करके डेढ़ तोले कुलीजन पीसकर मिलाके कतरी जमावे।

अथवा कलोंजी की कतरी कफ को दूर करती है और उदर की बादी तथा अफरे को पचाती है और जानवरों के विष तथा बावले कुत्ते के काटे को गुण करे और उदर के कीड़ों को मारती है और स्त्री धर्म तथा पेशाब को खोल देती है और गुरदे तथा मसाने की पथरी को गुण करे और योनि तथा गुरदे की पीड़ा को गुण करती है। बाय और कफ के विषमज्वर को गुण दायक है। दस तोले कलौंजी एक रात सिरके या पानी में भिगो के सुखा भून कर पीस छान आधसेर बूरे की चाशनी में डालके कतरी जमालेवे।

जवारिश कमोनी

उदर की पीड़ा को गुण करे। कलोंजी जीरा बीनके सात तोले पान

छड़ काली मिर्च तीन तीन तोले, पपड़िया खार नौमाशे और सब दवाओं का तिगुना शहद लेकर बनालेवे।

तथा दूसरी बनावे वो उदर की बादी और सर्द प्रकृति को गुण करे, उदर को बलवान करे और भोजन को तुर्त पचावे। आधपाव स्याहजीरा भिना हुआ, सोंठ तीन तोले, चार माशे, अजवायन, पीपल, बालछड़, तज और पपरिया खार प्रत्येक आठ माशे तिगुने शहद की चाशनी में तयार करे।

जवारिश मस्तगी

उदर की सर्दी को गुण करे और बल देवे और तुर्ष पचाने वाली है। इसका नुसखा वार पहले में लिख आये हैं।

जवारिश बच उदर की बादी को गुण करती है इसकी विधि स्वन रोग में कह चुके हैं।

जवारिश पोदीना- उदर पीड़ा को गुण करे। पोदीना की पत्तियां पौने दो तोले, सोंठ, अजवायन, काला जीरा दस २ माशे, बड़ी इलायची के दाने, सोंफ, काली मिर्च प्रत्येक सात माशे तिगुने शहद में कतरी बनावे।

जवारिश अनीसू उदर को ताक़त देती और पचाव करती है और क्षुधा तथा कफ के दस्तों को गुण करे और उदर की पीड़ा और अफ़रा और बादी को दूर करे है। इनीसू सिरके में भिगो कर छाया में सुखावे फिर थोड़ी सी भूनकर तीन तोले कूट छान कर आध सेर शहद में चाशनी करे।

खवेसुल हदीदी अर्थात् लोहे के मैलकी कसली क्षुधा बढ़ाती है और उदर को गुण दायक है और स्त्री प्रसंग को प्रबल करती है और क्रांति को बढ़ाती है। और बवासीर को खोती है। काबली हड़का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आमले, मुलहटी, सोंठ, इलायची के दाने, बालछड़, गुलाब के फूल सब बराबर लोहे का मैल, त्रिफला को कूट छान कर घी में तर कर के सब दवा की बराबर क़न्द तथा शहद में मिलावें मात्रा साढ़े तीन माशे से आठ माशे तक।

इत्रीफल कबीर अर्थात् बड़ा अवलेह उदर को प्रबल करता है अफ़रा को दूर करता है और क्रान्ति बढ़ाता है। बड़ी हड़ का बक्कल, काली हड़ का बक्कल, आमले कूट छानकर घी में मकरो कर पीपल काली मिर्च प्रत्येक एक तोला नौ माशे, सोंठ, चीता, इन्द्रजौ, गीठ तिल धुले, पोस्तके दाने सफ़ेद मिश्री प्रत्येक सात सात माशे तिगुने शहद में मिलावे।

नोशदारू भोजन को पचाती है और क्षुधा लगाती है। गुलाब के फूल एक तोले नौ माशे, नागर मोथा डेढ़ तोले, बड़ी इलायची के दाने चौदह माश, बालछड़, तगर, कुलीजन, तेजपात प्रत्येक दस दस माशे, तज, खसखी, मस्तगी किशोर के छिलका, नरकचूर प्रत्येक सात २ माश आमले का रस आधसेर कंद सेर भर माजून की विधि से माजून बनावै।

नोनकी गोली उदर की बादी को शुध करे और उदर को यश प्राप्त करे और हुचकी को दूर करे और भोजन को पचावे है सांभरनोन, सेंधानोन, कालानोन प्रत्येक डेढ़ तोले भर, पोदीना, नरकचूर डेढ़ डेढ़ तोला, बड़ी हड़का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आमरे, पीपल, काली मिर्च, सोंठ, बच, काला जीरा, सफ़ेद जीरा, लाल नोन प्रत्येक तीन तीन तोला, धनियां दो तोले चार माशे सौंफ, अजवायन प्रत्येक छे छे तोले सब कूट छानकर नीबू के रस में भिगा के सुखावे फिर तर तथा सूखे आमले के रसमें मिला के सुखा के कूट छान के नीबू के रस में बेर के प्रमाण गोलियां बांधे।

अथवा यह गोली तबियत को नरम करती है और अग्नि को प्रज्वलित करती है। बड़ी हड़ का बक्कल, सोंठ, पीपल, अनारदाने, सनाय छेदोंदार निसोत मुनक्का प्रत्येक एक एक भाग कंद छे भाग लेके गोलियां बनावे।

अथवा सनाय की गोली अजीर्ण और अफरा और मंदाग्नि को दूर करती है। सनाय, बड़ी हड़का बक्कल, कालीमिर्च प्रत्येक साढ़े तीन २ माशे मुनक्का तीन तोले कूट छानकर पानी में गोलियां बांधे मात्रा आठ माशे की प्रात काल के समय और जो विशेष चाहे तो दोनों समय ले।

अथवा सुहागे की गोली क्षुधा लगाती है और उदर की पीड़ा को दूर करती है सुहागा सात माशे अजवायन तीन तोले काली मिर्च साढ़े तीन तोले एलुआ चार तोले आठ माशे कूट छान कर ग्वारपाठे के रसमें घोट के गोलियां चना के प्रमाण बनाव मात्रा बादी में तीन गोली और अजीर्ण दूर करने में दो गोली और जिस पुरुष का पेट बढ़जाय उसको शुध करे है।

अथवा पाचन की गोली, काली जीरी, राई, गुड़ बराबर लेके बेर के प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली पानी के संग निगल जाय।

अथवा बड़ी हड़ का बक्कल, सनाय चौदह २ माशे, सोंठ साढ़े तीन माशे, मुनक्का नौ माशे बूरा डेढ़ तोले कूट छानकर जायफल के प्रमाण गोलियां बांधे मात्रा एक गोली सोते समय ले।

अथवा हींग की गोली भोजनको पचाती है और बादी तापतिल्ली और

उदर के अफरा को दूर करती है। और क्षुधा लगाती है सोंठ दो भाग, भुना सुहागा, बड़ी हड़का बक्कल सेंधा नोन हींग प्रत्येक एक भाग सहजने की जड़ का रस तथा उसके पत्तों के रस में झाड़ी बेर के प्रमाण गोलियां बना कर नित्य एक गोली खाय।

अथवा बड़ी हड़ का बक्कल, बहेड़ा, आमला, कालानोन, सनाय बराबर कूट छान के नीबू के रस में गोलियां बनावे मात्रा तोले भर तथा थोड़ी विशेष जितनी चाहे उतनी लेनी सोते समय खाय तो क्षुधा लगे और चित्त प्रसन्न रहे।

अथवा एलुआ की गोली अजीर्ण को दूर करती है और पेट और पसली की पीड़ा को खोवे। एलुआ, शातरा सात २ माशे, काली मिर्च, हिंगोटा के फल की मिंगी चौदह चौदह माशे कूट छान कर नीबू के रस में चना के प्रमाण गोली बनावे मात्रा चार गोली गरम पानी के संग लेनी।

अथवा यह गोली क्षुधा लगाती है बड़ी हड़ का बक्कल, सोंफ, पोदीना, सेंधा नोन, खट्टा चूका प्रत्येक एक २ तोले सोंठ, मिर्च, पीपल, चीता अजवायन प्रत्येक साढ़े तीन माशे दो नग नीबू के रस में पीस कर गोलियां बनावे।

अथवा पाचक गोली, काला नोन, खट्टाचूक दो दो तोले, अजवायन दो माशे लोंग काली मिर्च प्रत्येक माशे भर सबको कूट छानकर चूके में मिला के गोलियां बनावे मात्रा माशे भर भोजन के पिछाड़ी लेनी।

अथवा अमलबेद की गोली भोजन को पचाती है क्षुधा लगाती है और बायसूल और जलधर के रोगों को गुणदायक है और बाय को पचाती है पीपल, हड़, पांचों नोन आदि को नीबू के रस में तथा खट्टे की खटाई में भावना करके एक खट्टा को भीतर से खाली करके उसमें यह दवा भरे और खट्टे के दो भेद हैं एक तो हरा खट्टा कि जिसमें सुई धरे तो गल जाय और दूसरे में खटाई और तेजी कम होती है।

गोली अजीर्ण और कफ और बाय और उदर की सर्दी को गुण करे है और बहुधा करके दूध पीने वाले बच्चों को गुणदायक है काली हड़ चार तोले आठ माशे नरकाचूर सोंफ प्रत्येक दो दो तोले चार चार माशे, भुना सुहागा चौदह माशे कूटछान कर चना के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली।

अथवा नोन की गोली बादी को खोती है और भोजन पचाती है और विसूचिका को गुण करती है। सेंधा नोन, नमक, इन्द्रायनी, सांभर नोन कालानोन, पोदीना, बड़ी हड़ का बक्कल, बहेड़ का बक्कल, आमले, सोंफ, अजवायन प्रत्येक साढ़े तीन माशे, स्याहजीरा, सफेदजीरा, चीता, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, सुहागा, नोसादर, सनाय, मक्की प्रत्येक छैः छैः माशे भुनी हींग एक माशे सबको महीन पीस कर चौबीस नग नीबू के रस में घोट कर के झाड़ी बेर की बराबर गोलियां बनाके एक गोली नित्य खाया करे।

अथवा यह गोली उदर की बादी को दूर करती है। बड़ी हड़ का बक्कल, सोंठ, कालानोन बायबिड़ग, चीता, हींग सब बराबर लेके कूट छान कर तिगुने गुड़ पुराने में मिलाके छ छः माशे की गोलियां बनाके प्रातःकाल के समय गुनगुने पानी के संग खाय।

अथवा कालानोन की फकी पचाव करती है और क्षुधा लगाती है अजवायन, चीता प्रत्येक दो दो तोले पीपल सात माशे बड़ी हड़की बक्कल सात माशे सोंठ साढ़े तीन तोले, कालानोन पौन पाव कूट छान कर नींबू के रस में तीन वार घोट के सुखावे मात्रा सात माशे।

हरीरा कि उदर की पीड़ा को गुण करे कसूमों के बीजों की मिंगी एक तोले पानी में शीरा निकालकर दो तोले बूरा मिलाकर हरीरा पकाकर गुनगुना २ पीवे।

अथवा यह दवाई भूख को अति उत्तम है लालमिर्च नीबू के रस में चालीस दिन तक घोटे और दो रत्ती के प्रमाण पान में रखकर खाय।

अथवा दो तोले चार माशे सोंठ, चौदह माशे सोंफ, साढ़े तीन तोले कूट, छानकर नीबू के रस में टिकिया बनावे तवे को कोले की आंच पर गरम करके टिकिया को उस पर रखे जब लाल होजाय पीसकर जितनी चाहे उतनी खाय।

अथवा सिरस की पत्तियां, काली मिर्च बारह नग पीस कर पीवे तो उदर की पीड़ा जाय।

अथवा अजवायन, कालानोन, भांगरे के रस में मिला के खाय।

अथवा राम पत्री कि रूप और स्वाद में जावित्री के तुल्य होती है तोले भर लेके खरल में बारीक पीसकर उस में पारा मिला के फिर दो पहर तक घोटे जब खूब मिलजाय तब प्रातःकाल के समय एक दो चांवल के प्रमाण पान

उदर के अफरा को दूर करती है। और क्षुधा लगाती है सोंठ दो भाग, सूना सुहागा, बड़ी हड़का बक्कल सेंधा नोन हींग प्रत्येक एक भाग सहजने की जड़ का रस तथा उसके पत्तों के रस में झाड़ी बेर के प्रमाण गोलिया बना कर नित्य एक गोली खाय।

अथवा बड़ी हड़ का बक्कल, बहेड़ा, आमला, कालानोन, सनाय बराबर कूट छान के नीबू के रस में गोलियां बनावे मात्रा तोले भर तथा थोड़ी विशेष जितनी चाहे उतनी लेनी सोते समय खाय तो क्षुधा लगे और चित्त प्रसन्न रहे।

अथवा एलुआ की गोली अजीर्ण को दूर करती है और पेट और पसली की पीड़ा को खोवे। एलुआ, शातरा साथ २ माशे, काली मिर्च, हिंगोटा के फल की मिंगी चौदह चौदह माशे कूट छान कर नीबू के रस में चना के प्रमाण गोली बनावे मात्रा चार गोली गरम पानी के संग लेनी।

अथवा यह गोली क्षुधा लगाती है बड़ी हड़ का बक्कल, सोंफ, पोदीना, सेंधा नोन, खट्टा चूका प्रत्येक एक २ तोले सोंठ, मिर्च, पीपल, चीता अजवायन प्रत्येक साढ़े तीन माशे दो नग। नीबू के रस में पीस कर गोलियां बनावे।

अथवा पाचक गोली, काला नोन, खट्टाचूक दो दो तोले, अजवायन दो माशे लोंग काली मिर्च प्रत्येक माशे भर सबको कूट छानकर चूके में मिला के गोलियां बनावे मात्रा माशे भर भोजन के पिछाड़ी लेनी।

अथवा अमलबेद की गोली भोजन को पचाती है क्षुधा लगाती है और, बायसूल और जलंधर के रोगों को गुणदायक है और बाय को पचाती है पीपल, हड़, पांचों नोन आदि को, नीबू के रस में तथा खट्टे की खटाई में भावना करके एक खट्टा को भीतर से खाली करके उसमें यह दवा भरे और खट्टे के दो भेद हैं एक तो हरा खट्टा कि जिसमें सुई धरे तो गल जाय और दूसरे में खटाई और तेजी कम होती है।

गोली अजीर्ण और कफ और बाय और उदर की सर्दी को गुण करे है और बहुधा करके दूध पीने वाले बच्चों को गुणदायक है काली हड़ चार तोले आठ माशे नरकाचूर सोंफ प्रत्येक दो दो तोले चार चार माशे सूना सुहागा चौदह माशे कूटछान कर चना के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा-एक गोली।

अथवा नोन की गोली बादी को खोती है और भोजन पचाती है और विसूचिका को गुण करती है। सेंधा नोन, नमक, इन्द्रायनी, सांभर नोन कालानोन, पोदीना, बड़ी हड़ का बक्कल, बहेड़ा का बक्कल, आमले, सोंफ़, अजवायन प्रत्येक साढ़े तीन माशे, स्याहजीरा, सफ़ेदजीरा, चीता, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, सुहागा, नोसादर, सनाय, मक्की प्रत्येक छः छः माशे भुनी हींग एक माशे सबको महीन पीस कर चौबीस नग नींबू के रस में घोट कर के झाड़ी बेर की बराबर गोलियां बनाके एक गोली नित्य खाया करे।

अथवा यह गोली उदर की बादी को दूर करती है। बड़ी हड़ का बक्कल, सोंठ, कालानोन बायबिड़ंग, चीता, हींग सब बराबर लेकर कूट छान कर तिगुने गुड़ पुराने में मिलाके छ छः माशे की गोलियां बनाके प्रातःकाल के समय गुनगुने पानी के संग खाय।

अथवा कालानोन की फक्की पचाव करती है और क्षुधा लगाती है अजवायन, चीता प्रत्येक दो दो तोले पीपल सात माशे बड़ी हड़की बक्कल सात माशे सोंठ साढ़े तीन तोले, कालानोन पौन पाव कूट छान कर नींबू के रस में तीन बार घोट के सुखावे मात्रा सात माशे।

हरीरा कि उदर की पीड़ा को गुण करे कसूमों के बीजों की मिंगी एक तोले पानी में शीरा निकालकर दो तोले बूरा मिलाकर हरीरा पकाकर गुनगुना २ पीवे।

अथवा यह दवाई शूल को अति उत्तम है लालमिर्च नीबू के रस में चालीस दिन तक घोटे और दो रत्ती के प्रमाण पान में रखकर खाय।

अथवा दो तोला चार माशे सोंठ, चौदह माशे सोंफ़, साढ़े तीन तोले कूट, छानकर नीबू के रस में टिकिया बनावे तवे को कोयले की आंच पर गरम करके टिकिया को उस पर रख जब लाल होजाय पीसकर जितनी चाहै उतनी खाय।

अथवा सिरस की पत्तियां, काली मिर्च बारह नग पीस कर पीवे तो उदर की पीड़ा जाय।

अथवा अजवायन, कालानोन, भांगरे के रस में मिला के खाय।

अथवा राम पत्री कि रूप और स्वाद में जावित्री के तुल्य होती है माशे भर लेके खरल में बारीक पीसकर उस में पारा मिला के फिर दो पहर तक घोटे जब रूप मिलजाय तब प्रात काल के समय एक दो चावल के प्रमाण पान

में धर कर खाया करे और जाड़ों की ऋतु में चालीस दिवस पर्यंत खाय तब उस का गुण मालूम पड़े और कच्चा पारा भी औगुन नहीं करेगा यह औषधी क्षुधा को बहुत बढ़ाती है।

अथवा

अमलतास प्रथम ग्वारपाठे के रस में भिजो कर सुखाले पश्चात नीबू के रसमें सात बार भिगोकर सुखाव जितनी चाहे उतनी खाय।

अथवा त्रिकुटा कूट छान कर खाय तो बादी जाय और भोजन पचै।

अथवा चित्र चातक अर्थात् चार औषधी तज, तेजपात, नाग केसर, इलायची सब बराबर कूट छान के चूरन बना के उसकी बराबर कंद मिलाके फांके तो उदर को गुण करै और बाय को दूर करै है।

अथवा नागरस क्षुधा लगावे है और स्त्री प्रसंग को बल करती है और स्वांस कास को दूर करै है एक तोले नौ माशे शीशा गला कर उसमें थोड़ी थोड़ी पिसी हरताल बुर्के और लोहे के दस्ता से चलावे जाय फिर उतार कर ठंढा करै पीछे फिर गला के चौदह माशे हरताल की चुटकी बुर्के इसी प्रकार चार चार गला कर चार तोले आठ माशे हरताल की चुटकी दे उसके पीछे दो तोले चार माशे पारा और चौदह माशे शुद्ध तावा रिता हुआ मिला के तुलसी के रस में चार पहर घोटे और दो सकोरों में रख कर कपरोटी चढ़ा कर गजपुट की आंच में फूके जब स्वांग सीतल होजाय तब निकाल कर ग्वार पाठे के रस में चार पहर खरल करके फिर आंच दे फिर भांगरे के रस में घोटे चार पहर गजपुट में फूके फिर आध रत्ती पान में रखकर खाय और गजपुट एक गज ओंडे गजभर गढ़ेला को कहते हैं।

अथवा पचकोल अर्थात् पांच दवा पीपल, बहेड़ा, मूलपात, चीता, सोंठ, कूट छान कर फक्की बनावे तो क्षुधा पैदा करै और बाय कफ को दूर करै।

अथवा अरंड के पत्तों का तेल बाय की उदर पीड़ा को गुण करै अरंड के पत्तों का रस निकालकर बराबर के तेल में औटावे जब रस जलजाय और तेल मात्र रह जाय तब उतार कर पेट पर मले।

अथवा सोया के पत्तों का तेल सरदी की पीड़ा को दूर करता है और बादी को गुण करै है सोया के पत्तों का रस और उस का आधा तेल तिल्ली का लेके औटावे और बाजे चौथा भाग का तेल डालत हैं।

अथवा नकछिकनी का तेल भूख को गुण करै है सूखी नकछिकनी चार

सेर पीसकर छानकर दस सेर अदरक के रसमें घोटके टिकिया कर दस सेर घी में भून कर जब टिकिया जल जाय घी को छानकर रक्खे और उसमें से दो माशे खाया करे ।

अथवा यह फक्की पेट की पीड़ा को गुण करे त्रिफला त्रिकुटा हींग सेंधा नोंन पीपलामूल, नाखूना, चीता, चाब, बराबर कूट छानकर फक्की बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे से सात माशे तक देनी ।

अथवा सोंठ का चूरन उदर की तरी को दूर करता है और क्षुधा लगाता है । सोंठ तीन तोले, सोंफ डेढ़ तोले, मस्तगी दस माशे बराबर की मिश्री मिलाकर चूरन बनावे ।

अथवा सनाय की फक्की पेट की पीडा और बायसूल के दरद को गुण करे है और बाय पित्त कफ तीनों दोषों को निकाले है सनाय, बक्की, बड़ी हड़का बक्कल, काला नोन बराबर कूट छानकर चूरण बनावे मात्रा दो तोले की गरम जल के संग लेनी ।

अथवा यह चूरन खाय तो भूख लगे काला नोन, काली मिर्च, पीपल प्रत्येक दो तोले चार माशे भुना सुहागा चौदह माशे, नींबू के रसमें बारह पहर घोट के मात्रा चार रत्ती से एक माशा तक भोजन के पिछाड़ी लेनी ।

अथवा आमले, काबली हड़ प्रत्येक डेढ़ तोले, पीपल, चीता सेंधा नोन बराबर कूट छानकर साढ़े तीन माशे की मात्रा लेनी ।

अथवा काली मिर्च, अजवायन, चीता, पीपल प्रत्येक दो २ तोले चार२ माशे बड़ी हड़ का बक्कल तीन तोले, काला नोंन पोनपाव, कूट छानकर तीन चार नींबू के रस में घोटकर सुखाले मात्रा साढ़े तीन माशे ।

अथवा बड़ी हड़का बक्कल तीन नग, दो माशे सेंधा नोन, कूट छान कर चूरन बनावे एक तोले भर मुनक्का के संग खाय तो अजीर्ण दूर होय ।

अथवा लोंग, काला नोन, पीपल, काली मिर्च, सोंठ गुलाब के फूल, भुना नौसादर बराबर कूट छान कर खाय मात्रा साढ़े तीन माशे ।

अथवा अनारदाने का चूरन क्षुधा लगाता है और उदर को बलवान करता है और दस्तों को रोकता है अनार दाने, पावसेर, सोंठ, जीरा सफेद प्रत्येक चौदह २ माशे सैंधानोन तीन तोले, सबको कूट छानकर तोले भर से न्यूनाधिक खाय और औषधी को बहुत महीन न करे ।

अथवा यह चूरन भोजन को पचावे और तबियत को नरम करे। पोस्त, हलेलाजर्द पहेड़ेका पक्कल, आमरे, सुफेद ज़ीरा, सोंफ, काला नोन, सनाय प्रत्येक तोले तोले भर सोंठ छैः माशे चूरन बनावे मात्रा छै माशे सोते समय खाय।

अथवा नोन भूनकर दो भाग सोंफ लेकर पोदीना सातरा और थोड़ी सोंठ और हींग और काली मिर्च मिलावे।

अथवा पानका अर्क उदर की पीड़ा को गुण करे और अग्नि को दीपन करे है। पान दो सौ नग, तेजपात आधपाव, बालछड़, अजवायन, सोंफ छटांक २ भर इलायची के दाने आधपाव पोदीना की पत्ती कुलीजन नरकाचूर प्रत्येक दो २ तोले चार २ माशे इलायची के दाने कुलीजन नरकाचूर तीनों जौकुट करके रातको पानसेर पानी में सब दवाइयों के सग में भिजोवे प्रात काल पान मिला के अर्क खींचे।

अथवा यह टिकिया उदर को बल प्राप्ति करे है। लोहबान चौदह माशे, बिजौरे का छिलका दस माशे, लौंग, मस्तगी, बालछड़, इलायची, जावित्री, प्रत्येक सात सात माशे कूट छानकर गुलाब के जल में टिकिया बनावे मात्रा सात माशे बहुधा यह टिकिया गरीबों के योग्य नहीं है परन्तु किताब वाले ने जो एक गरीब की मन्दाग्नि दूर करने के वास्ते बनाई थी सो गुण किया इस कारण लिखी है।

शरबत संबलताप अर्थात बालछड़ का शरबत।

सरदी के रोगों और जिगर के रोगों को गुण करे है। बालछड़ छैः तोले डेढ़ सेर पानी में औटावे जब आधसेर पानी रहे तब सेर भर सहद की चाशनी करे।

अथवा यह लेप पेट की पीड़ा और इन्द्री की पीड़ा को गुण करे है भूसे की मेंगनियां जो पसारी की दूकान से मिलें तो उत्तम हैं नहीं तो जिस स्थान में मिलें तहां से छैनी और उसकी बराबर सोंफ लेके पानी में पीस कर गुनगुना २ लेप करे।

अथवा निर्मली पानी में पीस [illegible] ी कर [illegible] से लगावे तो पेट की पीड़ा जाय।

अथवा कालेतिल अजवायन बड़ी हड़ का बकफल खारीनोन सिरके में मिला के सेक करे।

अथवा यह चूरन उदर की सरदी और मन्दाग्नि और कलेजे की निर्बलता को गुण करे है ढाई सेर शरबत रैहां आधसेर शहत, मिश्री, बालछड़, आठ माशे लौंग आठ माशे बड़ी छोटी इलायची के दाने प्रत्येक छै छै माशे जोहबान तोले भर दालचीनी तोले भर, सोंठ कालीमिर्च प्रत्येक आठ आठ माशे केसर दो तोले, कस्तूरी माशे भर, अम्बर इंद तोले सब को जौकुट कर के थैली में बांध कर रैहां के शरबत में दो दिन तक चांदी तथा तांबे के कलईदार बासन में भिजोवे फिर शहत में सफ़ेद बूरा मिलाकर चाशनी पकावे और थैली को बार बार मसलते रहैं फिर केसर और कस्तूरी और अम्बर उसमें मिलावे और बाजे मनुष्य कालीमिर्च के बदले पीपल मिलाते हैं।

अथवा गुलकंद बूरा कि उदर को बल बढ़ाता है और भोजन को पचाता है और तबियत को नरम करे एक भाग गुलाब के फूल, दो भाग बूरा मिला के चालीस दिन तक धूप में धरे और बूरे के बदले शहत मिलावे उसको गुलकंद असली कहते हैं।

फ़सल हेज़े के इलाज अर्थात् विसूचिका की चिकित्सा में

जब कि आहार उदर में सड़ जाय तब उसको उलटी और दस्तों के द्वारा निकाले और जब तक वह सड़ा भोजन सब न निकल जाय तब तक बंद न करे और जिस मनुष्य को अत्यन्त तृषा लगे और गरमी विशेष मालूम हो और हरे हरे पित्त पटके तो उसे कदापि गरम औषधी देना उचित नहीं है और पानी के बदले गुलाब जल सौंफ का अर्क तथा मकोय का अर्क पिलावे और इस रोग में बहुत और भोजन न करे।

अथ हैजा की गोली

आक की जड़ बराबर के अदरक के रस में घोट के काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे एक गोली विसूचिका वाले को देनी जो असाध्य भी हो तो भी गुण करे।

अथवा यह काढ़ा दे तो विसूचिका जाय सौंफ दस माशे पोदीना सात माशे लौंग चार नग गुलकंद दो तोले औटाकर पीवे या चौथ हयात घिसकर पीवे।

अथवा नरकाचूर औटाकर पीना हैजे को गुण करता है।

अथवा छोटी इलायची का छिलका एक तोले या दो तोले जो गुबार भड हो तो उत्तम है नहीं तो आधसेर पानी में औटाकर जब आधा रहे तब पीवे तो हैजा जाय।

अथवा पेठे के फूल छै माशे पीसकर विसूचिका वाले को पिलावे तो तुर्त आराम हो जाय।

अथवा सरफोका की जड़ दो माशे पानी में घिसकर पीये।

अथवा कोला कपड़ा जलाकर मनुष्य के मूत्र में मिलाकर पीवे और यह वर्णन हो चुका है कि जब मनुष्य को विसूचिका होती मालूम पड़े तो उसी समय अपना मूत्र पीले तो विसूचिका का रोग न हो और बहुत से मनुष्य ऐसा ही कर्म करते हैं।

अथवा पांच माशे खरहटी की जड़ पानी में घिसकर पीवे तो विसूचिका जाय जो लालमिर्च का बीज एक नग मोम में गोली बनाकर खवावे तो विसूचिका जाय।

अथवा तवली थोड़े पानी में पांच नग काली मिरच के सग पीसकर पिलावे जो उलटी हो जाय तो अति उत्तम है।

फसल चक्हुी की चिकित्सा में

जो भोजन के पीछे बराबर हुचकियां आवें तो उलटी करडाले और हाथ पांव का बांधना गुस्सा डर और खुशी तुर्त चित्त में ले आना और अचानक मुह पर ठंढा पानी छिड़कना और छींकना और हरकत मालूम करना और स्वास रोकना और उदर और कंधों पर विना पछने के सींगी लगाना हुचकी को दूर करता है।

अथवा यह दवा हुचकी को उत्तम है कलौंजी तीन माशे, पीसकर साढ़े तीन माशे माखन में मिलाकर खाय।

अथवा काले उर्द हुक्का में भरकर तमाकू के प्रकार पीवे या चने पीवे,

तथा अरहर की भूसी तमाखू के प्रकार हुक्का में पीवे।

अथवा मूंफ हुक्का में पीना हुचकी दूर करता है।

अथवा नारियल की डाढ़ी जला के उसकी राख पानी में मिलावे जब

राख पानी के नीचे बैठजाय तब उसका नितरा पानी लेके पीवे।

अथवा मोर के पर जला के तीन माशे शहद में मिला के चाटे।

अथवा सुहारी का जीरा औटाके पीवे।

अथवा छप्पर की पुरानी रस्सी हुक्का में धरकर पीवे।

अथवा बबूर के सूखे कांटे या गांठे आधसेर पानी में औटाके जब आध पाव पानी रहे तब छान के थोड़ासा शहद मिलाके पीवे और जो शहद न होय तो भी उत्तम है।

अथवा टाट जला के उस की राख चार माशे पानी में मिला के फिर उस पानी को छान के पीवे।

अथवा जमालगोटा हुक्का में धरके पीवे तो बादी की हुचकी जाय।

अथवा दो तीन माशे हींग, चार नग बादाम की मींगी मिलाके पीस के पीवे।

अथवा जीरा सिरकमें औटाकर पानी त्रषा और हुचकी को दूर करता है और आम की सूखी पत्ती चिलम में धरकर पीवे।

अथवा पोदीना बूरे में मिलाके चाबे अथवा यह दवा ज्वर की हुचकी को दूर करे है सिकंजबी पानी में घोल के पिलावे तो दोष उलटी करने से दूर हो जायगा, पच जायगा।

अथवा कोयल के बीज पीसकर पीना हुचकी को दूर करता है।

अथवा कासनी के बीज उर्द के चून में सड़ा चमड़ा मिलाके हुक्का में धर के पीवे।

अथवा कुदरू गोंद की टिकिया बादी की हुचकी और पेचवा और अफरा तथा आंतों के फूलजाने, भीतर से इन रोगों को गुण करे है। कुदरू गोंद साढ़े तीन माशे, तज, पोदीना, अजवायन, नागरमोथा, छोटी इलायची के दाने, सोंफ प्रत्येक साढ़े तीन माशे लेके पानी में टिकिया बनावे।

अथवा गिरी बूरे में पीसकर दें और यह भी कहा है कि जो दूध पिलाने वाली के कपड़ों का एक टूक लेके पानी में भिगोके बच्चे की कनपटी पर लगावें तो हुचकी बंद होजाय अथवा रीठा बच्चे के कंठ में लटकावें।

फ़सल अटश अर्थात विशेष त्रषा की चिकित्सा में।

बहुधा करके त्रषा गरमी से लगती है उसकी चिकित्सा कुलफा के बीजों का शीरा तथा सिकञ्जबीन सादा पीवे।

अथवा ईसबगोल का लुआब नीलोफ़र के शरबत में मिलाकर दें और नीबू का शरबत और उसका रस त्रषा को बुझाता है।

दवा त्रषा और वमन को दूर करे पीपल की छाल जला के पानी में डालें जब गाद बैठजाय उसका नितरा पानी लेके पीवें।

अथवा कमलगट्टा, जौ कुट करके जिस बर्तन में लड़का पानी पीता होय डालदें और वही पानी बच्चे को पिलावें और वह हरी मींगी जो कमलगट्टा में होती है पीसकर बच्चे को पिलावें तो गरमी की त्रषा जाय।

अथवा नीम की पत्तियां पिंडोल की माटी में मिलाके गोला बना के आंच में डालें जब खूब गरम होजाय तब पानीमें ठंढा करके वह पानी पिलावें और जो त्यौस हो तो आरने कंडा जलाकर उसकी राख कांसी के बासन में डालें फिर उसमें पानी मिलाके उस बर्तन को प्यासे की टूंडी पर धरे तो उस समय जलन और गरमी और त्रषा दूर होजायगी।

अथवा आमले और कत्था मुंह में रखे तो त्रषा जाय।

फ़सल दूध और रुधिर उदर में जमजाने की चिकित्सा में।

जो पेट फूलजाय और अचेतन्ता होय और शीतल पसीना होय तो यह उसके लक्षण जानने और कभी जाड़े का ज्वर हो और कभी खाली ज्वर हो आवे और जिसने रोग से प्रथम दूध पीया हो तो चिकित्सा उसकी इस भांति से करे।

अजीर की लकड़ी की राख करके ताजे पानी में मिलावें जब गाद नीचे बैठ जाय तब उस पानी को नितारले फिर उसमें राख मिलावें इसी प्रकार सात बेर करके उसको निर्मल पानी पिलावें और जो वमन करडालें तो अति उत्तम है।

अथवा पोदीना के अर्क में बूरा मिला के या पोदीना सूखा ही पीस के खाय तो रुधिर जमना दूर होय।

अथवा खुरफ़ादाना पानी में पीसकर खिलावें।

अथवा दो तोले चार माशे राई पानी में पीस के पीवें तो रुधिर को न जमने दे।

अथवा चन भून के खारी, नौन मिलाके काम में लावें तो गुण करै और कपूतर के बच्चे की हड्डी भूनकर चाबना गुण करै

फ़सल फिसाद शहवत अर्थात् माटी, कोइला खाने को मन चले तो इसकी चिकित्सा में

उदर की सफ़ाई करै और जो साढ़ तीन माशे अजवायन नित्य खाय तो यह रोग जाय।

फसल गिसियान और तिहके इलाज में

अर्थात् जी मचलाने और उबाकी लेने की चिकित्सा॥ जी मचलना तो वमन की आदि है और उबाकी इस प्रकार होती है कि चित्त वमन करने को चले पर कोई वस्तु न निकले और वमन यह है कि उदर में से कोई वस्तु मुंह के द्वारा निकलै।

जिस समय वमन विशेष होय और बंद न होय तो प्रत्येक के पूर्वरूप और लक्षण और चिकित्सा उसकी इस पुस्तक में लिखी हैं और क्रिया सहज से उसकी यह है कि थोड़ासा गरू लेके आग में गरम करके दो तीन बेर पानी में बुझावें और वह पानी पिलावें।

गोली मितली और वमन को गुण करे कपूर कचरी कूट छानकर मूंग के प्रमाण गोली बनाकर दो तीन गोलियां खाय।

अथवा रीठा की मिंगी तीन चार घड़ी पानी में भिगोवें जब नरम हो जाय तब थोड़ा २ चाखै तो मितली जाय।

अथवा मांस का पुराना दीया आंच में जलावें जब लौ उसकी बुझ जाय तब पानी में ठंढा करके उस पानी में से थोड़ासा पीवै तो अत्यन्त वमन और उबाकी बन्द होय।

अथवा इस गोली से पुरानी मितली दूर होय झरबेरी की गुठली की मिंगी तुलसी की पत्तियां मिश्री प्रत्येक साढ़ तीन माशे कालीमिर्च पौन दो माशे कूटछान कर पानी में जंगली बेर के प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली खाय।

अथवा थोड़ी मक्खी की बीट गुड़ में मिला के खाय तो वमन बंद होय।

अथवा साठी चावल पानी में भिगोवें वह पानी लेकर पीवैं तो मदिरा के पान करने की वमन की विशेषता दूर होय।

अथवा बादाम का शीरा पानी में निकाल कर पीवै तो वमन बंद होय।

यह क़ानून में लिखा है।

अथवा नीम की डाली कि उसमें पत्ता भी होय भूभल में गाड़े कि जब गरम होजाय पीसकर छानकर पीवै तो वमन और मितली दूर होय।

अथवा टाट जलाकर उसकी राख पानी में डालें जब राख नीचे बैठ जाय तब वह पानी नितारकर पीवैं।

अथवा इमली मुह में रक्खैं तो वाय की मितली और वमन दूर होय।

अथवा अनारदाना मुनक्का प्रत्येक सात २ माशे कालाजीरा एक माशे पीसकर थोड़ा २ दें।

अथवा पीपल की लकड़ी तथा सूखी छाल जला के इसकी राख एक तोले लेके माटी के वासन में सद पानी में मिला के जब गाद उसकी नीचे बैठ जाय तब उसको नितार पानी लेके पीवैं तो वमन बंद होय।

अथवा दो बताशों को घी गरम करके उसमें डालै फिर निकाल ठंडा करके एक बताशा एक घड़ी ठहर कर खाय तो कफकी वमन को गुण करे है।

अथवा बड़की डाढ़ी जलाकर उसकी थोड़ी राख खाय तो वमन बंद होय।

अथवा इलायचीकी जवारश वमनको बंद करती है और पाचक है और उदर को बलवान करती है अगर इलायची छोटी होय तो उत्तम है नहीं तो बड़ी लेय। साढ़े छै तोले पीसकर पावसेर बूरे की चाशनी करै और जो उसमें गुलाबजल मिलावें तो अति उत्तम है।

अथवा खट्टे नीबू का सादा शरबत वमन को आराम करै है। बहुधा करके वायु के वमन को खट्टा नीबू का रस सवा तीन छटांक सेरभर बूरे की चाशनी करै।

अथवा इमली का शरबत वाय की वमन को गुण करै और उदर को बल प्राप्त करै है और गरमी के ज्वर को गुण करै इमली के चीया निकाल के उस से आधा बूरा मिला के पानी में भिजोव फिर छान के उसका पानी लेके दूने बूरे की चाशनी करै।

अथवा अनार का शरबत वमन को बंद करै मीठे अनार का रस और बराबर के बूरे में चाशनी करैं।

अथवा शरबत फालसा बादी के वमन और उबाकी को गुण करै है और उदर को बलवान करै है अनार के शरबत के तुल्य है गरमी ज्वर और

रुधिर के फ़िसाद को गुण करे है और स्वाद का है भोजन के संग भी खाय काले रंग का मीठा फालसा का रस पानी तथा गुलाब में मिलाकर छानकर दूने क़द में चाशनी करे।

अथवा साढ़े तीन माशे चावलछड पानी में पीसकर काम में लाना कफ की वमन को गुण करे है।

अथवा नागरमोथा खाना वमन को गुण करे है।

अथवा पोदीना हरा आधसेर डेढ़ सेर पानी में औटाकर जब आधा रहै एक सेर क़द की चाशनी करें और साढ़े तीन माशे मस्तगी पीसकर मिलावे तो मितली उबाकी और हुचकी को गुण करे है।

अथवा मिर्च की गोली कि हिन्दू मनुष्य उस को मिर्चा और गुटका कहते हैं वमन और मितली को दूर करे है और पाचक क्षुधा लगावे है कालीमिर्च साढ़े तीन तोले पीपल पोने दो तोले अनारदाने साढ़े तीन तोले जवाखार साढ़े चार माशे कूट छान कर गुड़ में गोली बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे

फ़सल जिगर की बीमारियों का इलाज

इस्तसक़ा अर्थात् जलधर और इसकी आदि को सूयुलक़ीना कहते हैं और उसका पूर्व रूप यह है ऊपरी सरदी के सब दाप जोड़ों में आजाते हैं और जलधर के तीन भद हैं लहमी, जक़ी, तबली। लहमीमें सब जोड़ोंपर सूजन आ जाती है कलेजे की निर्बलता उसका पूर्व रूप है और जक़ी में पेट बढ़जाता है त्वचा भारी हो जाती है जिस समय स्पर्श करें तो भरी मश्कक तुल्य मालूम होय और तबली में पेट बढ़ जाता है और टूंडी निकल आती है और जब पेट पर हाथ मारें तो तबल सदृश शब्द मालूम होय लहमी अर्थात् वातोदर असाध्य है यूनानी किताबों में इसकी चिकित्सा में लिखा है कि पानी न पीवे पानी के बदले सौंफ तथा मकाय का अर्क पीवें जो पानी पर विशप चित्त चले तो गरम करके पीवें पर थोड़ा २ पीवें और आहार शोर्वा और जो रोगी को कंठ तक गरम बारू रेत में गाड़ दे तो गुण करे है और सूर्य की तरफ़ पीठ करके धूप में बैठ तो गुण करे और इतना व्यायाम करें कि जिसमें पसीना निकल आवे यह भी गुण दायक है।

अथवा रेवतचीनी का शरबत वातोदर को गुण करे है। रेवतचीनी डेढ़ तोला, कासनी के बीज दो तोले, कासनी की जड़ तीन तोले, सौंफ, शुद्ध लाख प्रत्येक सात २ माशे, क़ंद पाव सेर लेकर शर्बत बनावे मात्रा दो तोला।

अथवा यह दवा दे पुराना लोहे का मैल सम्रह तोले तीन बर बछिया के पेशाब में भिजोवै और तीस बर मठा में और तीन बेर कडुव तेल में बुझा कर कूट छान कर दस सेर बाछिया के पेशाब में मिलाकर लोह की कड़ाही में डाल के चूल्ह पर घरे जब पेशाब जल जाय और नोन सा जम जाय तब पौने दो माशे उस में से लेकर खाया करै॥

अथवा यह काढ़ा दे अजवायन, सोंफ औटाकर पिलावै तो बिना हरारत के वह पित्तोदर को गुण करे।

अथवा आड़ तीन तोल चना पाव सेर पानी में औटा कर जब आधा रहे छानकर पीवे तो जलधर की आदि को गुण करे है।

अथवा यह गोली जलधर को गुण करै आक के पत्ता हरे हरे पाव सेर, चौदह माशे हलदी, दोनों पीस कर उर्द प्रमाण गोली बनावे नित्य चार गोली सर्द पानी के संग खाय और नित्य एक गोली बढ़ाते जाय कि सात गोली तक पहुचावे और बाजी किताबोंमें इस प्रकार लिखा है ब्यालीस नग आक के पत्ता दो माशे हलदी बरकी लकड़ीका कोयला पांच माशे खूब महीन पीसकर घोट के खूब गरम करके उसमें मिलाकर उरद के प्रमाण गोलियां बनावे सुपेद दाग लिये एक गोली प्रात काल खाय और कफ ज्वर में चार गोली, गठियाबाय में दो गोली और प्रकृति के बदल के लिये और अर्द्धांग वाय दोष के लिये एक गोली प्रात काल चार दिन तक दे और जलधर में चार गोली से सात गोली तक काम में लावैं।

गुण जलधर वाले का चित्त स्नान करने को चले तो पानीमें खारी नोन डालकर उस पानी को धूप में धर के गरम करके उस जल से स्नान करै तो गुण दायक होय और जो खारी समुद्र के पानी से स्नान करे तो विशेष गुण दायक है।

और रेवतचीनी की टिकिया पातोदर को गुण करै है रेवतचीनी चौदह माशे-घुली लाख मजीठ सोंफ कासनी के बीज बालछड़ प्रत्येक सात २ माशे लेकर टिकिया बनावे मात्रा सात माशे की सिकजबी और मकोय के अर्क के संग लेनी।

एलुआ की गोली जलधर को गुण करै है। एलुआ चौदह माशे, बड़ी हड़का बकल अजवायन कालीमिर्च बिधारा प्रत्येक सात माशे कूट छानकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे की।

दवा सिस की छाल औटाकर पीवे अकबरनामे में लिखा है कि एक

क्रिले में विशेष दिन व्यतीत होजाने के कारण धान अति पुराना होगया था उस अन्न को किले वाले मनुष्यों ने खाया तो उससे सूजन पैदा हुई फिर त्रिस मनुष्य ने सिर्स की छाल पान कीनी उसको आराम होगया और अब को यहां तक हुआ कि सिर्स की छाल सुवर्ण के मोल महगी बिकी।

दवाई जलधर की। अत्यन्त सड़ा हुआ हुक्के का पानी पीवै तो जलंधर को गुण करे है।

अथवा गाय का गोबर नोंन मिलाके लेप करैं तो जलधर दूर होय।

अथवा गोबर जलाके साढ़े तीन माशे राख उसकी नित्य खाय।

अथवा इन्द्रायन की जड़ औटा के पीना दोष को दस्तों के द्वारा पचाकर दूर करता है।

अथवा ऊट का पेशाब पीना गुण करता है और उसके पीने की यह क्रिया है कि पांच छै तोले पेशाब तीन माशे यड़ी हडका चकल मिलाके प्रातःकाल पीवे और जो पानी के बदले ऊंटनी का दूध पीवे तो विशेष गुण करे और भोजन भी यही समझे तो इसके तुल्य कोइ चिकित्सा नहीं है।

अथवा मूली के पत्तों का रस पीना गुण करै है।

अथवा काली बकरी का पेशाब और चौदह माशे बालछड़ उसमें मिला के पीवे तो जलधर दूर होय।

अथवा यह दवा करै तो भी जलधर दूर होय हरे करेला का रस पीने दो तोले निचोड़कर छानकर पीवे और जो उसमें थोड़ा सा शहद मिलाले तो दो तीन दस्त लाकर दोष को दूर करता है।

अथवा ककरौंद का रस तोले भर प्रातःकाल पीवें नित्य बढ़ाकर दस तोले तक पहुचावें।

अथवा केसर पाक जलधर और कड़ेपन और कलेजे और तापतिल्ली और उदर को गुण करे है केसर, तज, कूट, तगर बालछड़, अजमोद, रदनी, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, प्रत्येक दो भाग बीजाबोल, रेवतचीनी एक २ भाग शहद तिगुना मिलाके माजू बनावे मात्रा चार माशे तक सौंफ के अर्क के संग लेना।

अथवा यह गोली जलधर को गुण करै॥ शुद्ध गंधक और पारा, हड़ बहेड़ा, आमला, सज्जी, जवाखार, कालानोंन, सेंधानोंन, साम्भरनोंन, सोंठ, कालीमिर्च, भुना सुहागा, सब बराबर लेकर और जमालगोटा दो भाग दवाई

कूटछान कर नीबू के रसमें इक्कीस बेर घोट के सुखा के कालीमिर्च के प्रमाण गोलिया बनावे मात्रा एक गोली ऊटनी के दूध के संग लेनी।

अथवा यह चूरन ले तो वातोदर और पित्तोदर दोनों दूर होंय सोंठ नागरमोथा, चीता, सुपेद जीरा, कटेरी, हलदी, गजपीपल, पीपलामूल, बराबर कूट छानकर चूरन बनावे मात्रा तीन टक गरम जल के संग।

अथवा अजमोद, वायविडंग, चीता, कालीमिर्च, पीपल, पीपलामूल, सोंफ, कालानोंन प्रत्येक साढ़े तीन माशे पाच नग हड़का वक्कल, सोंठ तीन तोले कूट छानकर चूरन बनावे मात्रा सात माशे सोंफ के अर्क के संग लेय।

अथवा अजमोद, सोंफ, रदनी, तगर, कड़वी कूट रेवद चीनी प्रत्येक सात २ माशे नागरमोथा, बालछड़ प्रत्येक पांच २ माशे, कालाजीरा दस माशे कूट छानकर सात माशे लें तो वातोदर जाय।

अथवा मुंडी को चूरन कचनार के रस में गूंध के रोटी पकाकर नोंन के संग खाय और पानी की जगह कचनार के पत्ता औटाकर पीवे या उसका रस निकालकर पीवे और कचनार के पत्तों के काढ़े के सिवाय खाने पीने हाथ पांव धोने नहाने में और दूसरा पानी काम में न लावें तो ईश्वर की कृपा से सात दिन के बीच में गुण मालूम होय यह मुजरबात अकबरी में लिखा है।

अथवा धोंधीफली माशे भर नित्य खाया करै और भोजन में मूंगकी खिचड़ी खाय।

अथवा यह दवा जलधर को गुण करै सुपेद जीरा कूट के तीन भाग, कंधी जौकुट नो भाग उस में से तोले भर रात्री के समय एक प्याले भर पानी में भिजोवे प्रातःकाल औटावे जब आधापानी रहे तब छान के गुनगुना २ पीवे तो जलधर दूर होय।

अथवा जो पेट बढ़जाय तो यह दवा करै दो तोले चार माशे शहद दूने पानी में मिलाके औटा के कई दिन पर्यंत इसी प्रकार पीवें और बहुधा करके यह रोग बच्चों के बहुत होता है।

गुण जो जलधर वाला गेहू की रोटी न खाय और जौ की रोटी खाय तो उत्तम है और जो निरे जौ की रोटी न खाई जाय तो गेहू के चून में जौ का चून मिलाके उसकी रोटी खाय।

अथवा यह गोली उस स्त्री को गुण करै है जिसका जन्मे के पीछे पेट

बढ़ गया होय मिर्च, पीपल, पीपलामूल, बच, चीता, छर्बीला, नागरमोथा, वायबिड़ग, देवदारू, त्रिफला, कूट, चीनावोल, सौंफ, गजपीपल, इन्द्रजौ, प्रत्येक साढ़े तीन २ माशे निसोत दस माशे, कूट छान कर सब के बराबर पुराना गुड़ मिलाके दो माशे के प्रमाण गोलियां बना के प्रात काल के समय नित्य पंद्रह दिवस पर्यंत एक गोली खाय।

अथवा यह लेप करे तो जन्म के पीछे जिस स्त्री का पेट बढ़ गया होय उसको गुण करे इन्द्रायन को पानी में पीस के लेप करे।

अथवा लाख की माजून जलधर और उदर की सरदी और कलेजे की सरदी को गुण करे धोई हुई लाख चार भाग, बालछड़, रेवतचीनी प्रत्येक तीन २ भाग, तगर, अजमोद प्रत्येक दो २ भाग, कड़वा कूट कड़वे बादाम की मींगी, मिर्च, सोंठ, जीरा, तेजपात, मस्तगी प्रत्येक-एक २ भाग तिगुने शहद में माजून बनावे।

अथवा यह दवा जलधर दूर करे बारह नग टीड़ियों के हाथ पांव दूर करके पीस कर चौदह माशे दन्बुल्लास के संग खाय।

अथवा नील, अफ्तलास, कूट छानकर बच्चों को चार जौ भर और तरुण को दस माशे तक देनी।

अथवा लाख की टिकिया बनाकर दे तो जलधर दूर होय लाख चार भाग, रेवतचीनी, कासनी के बीज, खरबूजा के बीज, खीरा ककड़ी के बीज प्रत्येक तीन भाग, मजीठ, सौंफ, मकोय, अजमोद, बालछड़, तज प्रत्येक दो दो भाग, अजवायन, कूट, प्रत्येक एक २ भाग लेके टिकिया बनावे मात्रा सात, तीन माशे से साय पावे तक शरबत बिजूरी के संग लेना।

अथवा बकरी की मैंगनियां, गाय का गोबर, गोखरू सिरके में मिला-कर लेप करे।

अथवा नोन बावछड सिरके में मिलाकर लगावे।

फ़सल यरक़ान के इलाज अर्थात् कमल बाय की चिकित्सा में

यह त्वचा की तरफ़ बाय पित्त की दुर्गन्धि जारी होने के कारण से पैदा होती है। जो पित्त से पैदा हो उसे पित्त की कमल बाय कहते हैं। और जो बाय से हो उसे बाय की कमल बाय कहते है। और जिस में दुर्गन्धि

कूटछान कर नीबू के रसमें इक्कीस बेर घोंट के सुखा के कालीमिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली ऊंटनी के दूध के संग लेनी।

अथवा यह चूरन ले तो बातोदर और पित्तोदर दोनों दूर होंय सोंठ नागरमोथा, चीता, सुपेद जीरा, कटेरी, हलदी, गजपीपल, पीपलामूल, बराबर कूट छानकर चूरन बनावे मात्रा तीन टंक गरम जल के संग।

अथवा अजमोद, बायविड़ंग, चीता, कालीमिर्च, पीपल, पीपलामूल, सोंफ, कालानोंन प्रत्येक साढ़े तीन माशे पांच नग हड़का बकल, सोंठ तीन तोले कूट छानकर चूरन बनावे मात्रा सात माशे सोंफ के अर्क के संग लेय।

अथवा अजमोद, सोंफ, रदनी, तगर, कड़वी कूट, रेवंद चीनी प्रत्येक सात २ माशे नागरमोथा, बालछड़ प्रत्येक पांच २ माशे, कालाजीरा दस माशे कूट छानकर सात माशे लें तो बातोदर जाय।

अथवा सुठी को चूरन कचनार के रस में गूंध के रोटी पकाकर नोंन के संग खाय और पानी की जगह कचनार के पत्ता औटाकर पीवे या उसका रस निकालकर पीवे और कचनार के पत्तों के काढ़े के सिवाय खाने पीने हाथ पांव धोने नहाने में और दूसरा पानी काम में न लावें तो ईश्वर की कृपा से सात दिन के बीच में गुण मालूम होय यह मुजरबात अकबरी में लिखा है।

अथवा घोंघीफली माशे भर नित्य खाया करै और भोजन में मूंगकी खिचड़ी खाय।

अथवा यह दवा जलधर को गुण करै सुपेद जीरा कूट के तीन भाग करो जोकुट नो भाग उस में से तोले भर रात्री के समय एक प्याले भर पानी में भिगोवे प्रातःकाल औटावे जब आधापानी रहे तब छान के गुनगुना २ पीवे तो जलधर दूर होय।

अथवा जो पेट बढ़जाय तो यह दवा करै दो तोले चार माशे शहद दूने पानी में मिलाके औटा के कई दिन पर्यंत इसी प्रकार पीवैं और बहुधा करके यह रोग बच्चों के बहुत होता है।

गुण जो जलधर वाले गेहूं की रोटी न खायं और जौ की रोटी खायं तो उत्तम है और जो निरे जौ की रोटी न खाई जाय तो गेहूं के चून में जौ का चून मिलाके उसकी रोटी खाय।

अथवा यह गोली उस स्त्री को गुण करै है जिसका जन्ने के पीछे पेट

बढ़ गया होय मिर्च, पीपल, पीपलामूल, चव, चीता, छबीला, नागरमोथा, वायविड़ंग, देवदारु, त्रिफला, कूट, बीजाबोल, सोंफ, गजपीपल, इन्द्रजौ, प्रत्येक साढ़े तीन २ माशे निसोथ दस माशे, कूट छान कर सब के बराबर पुराना गुड़ मिलाके दो माशे के प्रमाण गोलियां बना के प्रात काल के समय नित्य पंद्रह दिवस पर्यंत एक गोली खाय।

अथवा यह लेप करे तो गर्भ के पीछे जिस स्त्री का पेट बढ़ गया होय उसको गुण करे इन्द्रायन को पानी में पीस के लेप करे।

अथवा लाख की माजून जलधर और उदर की सरदी और कलेजे की सरदी को गुण करे धोई हुई लाख चार भाग, बालछड़, रेवतचीनी प्रत्येक तीन २ भाग, तगर, अजमोद प्रत्येक दो २ भाग, कड़वा कूट कड़वे बादाम की मींगी, मिर्च, सोंठ, जीरा, तेजपात, मस्तगी प्रत्येक एक २ भाग तिगुने शहद में माजून बनावे।

अथवा यह दवा जलधर दूर करे बारह नग टीड़ियों के हाथ पांव दूर करके पीस कर चौदह माशे इक्जुल्लास के संग खाय।

अथवा नील, अमलतास, कूट छानकर बच्चों को चार जौ भर और तरुण को दस माशे तक देनी।

अथवा लाख की टिकिया बनाकर दे तो जलधर दूर होय लाख चार भाग, रेवतचीनी, कासनी के बीज, खरबूजा के बीज, खीरा ककड़ी के बीज प्रत्येक तीन भाग, मजीठ, सोंफ, मकोय, अजमोद, बालछड़, वग प्रत्येक दो दो भाग, अजवायन, कूट, प्रत्येक एक २ भाग लेके टिकिया बनावे मात्रा सात, तीन माशे से साढ़े माशे तक शरबत बिजूरी के संग लेना।

अथवा बकरी की मैंगनियां, गाय का गोबर, गोखरू सिरके में मिला-कर लेप करे।

अथवा नोन बालछड़ सिरके में मिलाकर लगावे।

फ़सल यरक़ान के इलाज अर्थात् कमल वाय की चिकित्सा में

यह त्वचा की तरफ़ वाय पित्त की दुर्गन्धि भारी होने के कारण से पैदा होती है। जो पित्त से पैदा हो उसे पित्त की कमल वाय कहते हैं। और जो वाय से हो उसे वाय की कमल वाय कहते हैं। और जिस में दुर्गन्धि

होय उसका मल वाय में ज्वर आजाता है उसकी सहज चिकित्सा यह है कि इमली का पानी और कासनी का शीरा और सिकंजवीन सादा मिलाके काम में लावे सिकंजवीन सिरका दो भाग कद तीन भाग की चाशनी करे।

अथवा मलियागिर चन्दन गुलावजल हो तो उत्तम है नहीं तो पानी में पांच माशे आंबा हलदी पीस कर सात माशे शहत मिला के खाय और सात दिन तक दाल भात का भोजन करे।

अथवा चंडाल रात को पानी में भिजो कर प्रात काल उसका निथरा पानी लेके दो तीन बूद नाक में टपकाना कमल वायको दूर करता है।

अथवा बाजी २ दवा के सग बकरी की मैंगनी खाना कमल वाय को दूर करता है यह तिब्ब फ़रदी में लिखा है लौंग हरी तीन पाव, रात को पानी में भिजो कर रक्खे प्रातःकाल उसका निर्मल पानी पीवै और दाल भात का भोजन करे तो कमल वाय जाय।

अथवा बबूर की फली सुकाहुवी आमले प्रत्येक सात माशे को छूं करके सेर भर घूरे के सग औटावे जब चौथाई भाग रहे थोड़ासा बूरा मिल के छान के पीवे तो कमल वाय जाय।

अथवा कड़वी तूमड़ी पानी में पीसकर नाक में टपकावे तो कमल वाय जाय।

अथवा सात माशे कंघी पीसकर शहत में मिला के चाटे और दाल भात खाय तो कमल वाय जाय।

अथवा सात माशे विनौले रात को पानी में भिगो के प्रात काल पीस के उनका पानी छान के सेंधा नोन मिलाके पीवे और खटाई और बादी का परहेज करें।

अथवा रीठा, गावजुबां दो तोले चार माशे पाव सेर पानी में रात के समय भिजोवें और प्रात उसका निर्मल पानी पीवे तो ईश्वर की सहायता से सात दिन में आराम होय।

अथवा दो तीन कसौंदी की पत्ती दो तीन काली मिर्च के सग पीस के पीवे।

अथवा यह शरबत कलेजे की गरमी और कमल वाय को गुण करे चंदन चूरा मुनक्का दो तोले जरिश्क कासनी के बीज खीरा ककड़ी के बीज

प्रत्येक दो तोले भर सेंधानोन, इलायची के दाने प्रत्येक सात २ माशे क़न्द पाव सेर लेके शरबत बनावे मात्रा तोले भर मुनासिब आब शीरीं के संग।

हिन्दी दवा कमल वाय को गुण करे तरुण मनुष्य को तीन माशे चूना पकी केले की फली के टुकड़े में धर कर खिलावे ऊपर से बाकी फली को खिलावे और बच्चों को माशे भर चूना चौथाई फली बहुत है।

अथवा यह चूरन दे तो कमल वाय जाय बबूर के फूल मिश्री बराबर लेके पीस के तोले भर खाय।

अथवा सात दाने कलौंजी के स्त्री के दूध में पीसके नाक में टपकावे तो कमल वाय की जरदी जो पीछे रहजाती है दूर होय।

अथवा नीबू का रस नेत्र में टपकाव।

अथवा सिरके में डाली मूली का अचार खाना गुण करता है।

अथवा कहरवा लटकाना और पीले कपड़ा पहरना कमलवाय को गुण करे है।

अथवा

मेहदी के पत्ता सात माशे जौ कुट करके रात को पानी में भिगोवे प्रात काल उसका निथरा पानी पीवे तो सात दिन में कमलवाय जाय।

अथवा कलौंजी का काढ़ा पीवे कमलवाय जाय।

फसल अमराज तहाल के इलाज में

अर्थात् तापतिल्ली की चिकित्सा में उसका कड़ा होने का पूर्व रूप वादी से रुधिर का गाढ़ा होना है और ज्वर में बे तदबीरी से पानी पीना यह भी उसका पूर्व रूप है इस रोग में कठिन से आराम होता है।

चिकित्सा जेमने हाथ की फ़स्द खोलना गुण करे है।

गुण जो तिल्ली वाले रोगी के दहने हाथकी नस कपड़ा की बाती जला के दाग दें और बहुत दिनों तक उसको बहने दें तो बहुत गुण करे।

विधि

चूने की कली थोड़ी रीठे की मींगी में कूटकर केलाकी पकी फली के टूक में धर के दहने हाथ के पहुंच के नीचे की तरफ़ जोड़ पर बीच की उंगली के सामने एक पहर तक मोटे कपड़ा से बंधा रहने दे कि चूने की तेजी से वहां पर फफोला पड़जाय फिर खोल डाले तो निश्चय आराम होगा।

अथवा सरसों का तेल गुनगुना २ तिल्ली पर मलै।

अथवा अजवायन जितनी खासके दोनों समय खाया करे।

अथवा भुना सुहागा एक भाग राई तीन भाग दोनों को महीन पीस कर एक २ माशे सभा सवेरे खाया करे वा नींबू का रस एक तोले आठ माशे प्याज का रस एक तोले आठ माशे परस्पर मिलाकर चौदह दिन पर्यन्त पीवे और सिवाय नर्म वस्तु खिचड़ी जैसी कि दाल भात के और कुछ न खाय या नौसादर पौने दो माशे मूली के जल में मिलाकर पीवें और मूली तथा तिल बराबर पीस के तिल्ली पर बांध ॥

अथवा चूने की कली महीन पीसकर शहद में मिलाकर तिल्ली पर मलें और लेप करें ॥ और उस पर अजीर के पत्ते बांधे ॥

अथवा शीतरज सिरकेमें पीसकर लगावें तिल्ली के शोथ को घुलाता है

अथवा मूली के बीज पीसकर सिरके वा सिकंजबीन में मिलाकर खाना तिल्ली को दूर करता है ॥

अथवा करील की सूखी कोंपल एक तोले पौने चार माशे कालीमिर्च पौने आठ माशे कूट छान कर प्रातःकाल पानी के संग पिये तिल्ली की सख्ती को दूर करता है।

अथवा गेहूं की भुसी और लहसन की मींगी जलाकर क्षार उस की राख सिरके में मिलाकर गुनगुना लेप करे और प्याज तिल्ली के रोगी के गले में लटकाने से गुण करती है जो तिल्ली वाला अपना वा बालक का मूत्र तीन चुल्लू भर पिये और प्रति दिन ऐसा ही करे तो तिल्ली दूर होय ॥

अथवा मनुष्य जो तरुण हो छ माशे सज्जी और जो बालक हो दो माशे गुड़ में मिलाकर यदि ज्वर न होय तो खाय और खटाई तथा बादी वस्तुओं से बचा रहे।

चूर्ण कि तिल्ली और वायशूल और तबियत नरम करने के लिये गुणदायक है अजवायन आधसेर, गुआर पाठा ताजा बीस नग, त्रिफला त्रिकुटा पांचों निमक, सफ़ेद सज्जी, कटेरी, त्रिवी, कालाजीरा, अजमोद, सोंफ, बिधारा, प्रत्येक साढ़े तीन माशे घी गुआर पाठे के रस में भिगोकर छाया में सुखावे और कूट छानकर रक्खे, मात्रा तीन माशे तक ठंडे पानी के संग दे।

अथवा झाऊ की पत्तियां साढ़े तीन माशे सुखा कूट छानकर साढ़े तीन

माशे बूरा मिलाकर खाय तथा ऊट का मूत्र पीना तिल्ली को गुण करता है और झाऊ की पत्तियों का अर्क तथा उसका पानी शहद मिलाकर पीना तिल्ली को गुण करता है।

अथवा नमदे का टुकड़ा सिरकेमें भिगोकर तिल्ली पर बांधे गुण करता है

माजून कि तिल्ली के लिये परीक्षित है। क्रिमकी जड़ का छिलका इफ़्तीमून बराबर शहद में मिलाकर माजून बनावे और प्रति दिन साढ़े दस माशे खाय।

दवा तिल्ली की सख्ती को दूर करती है कबाबा, पुष्करमूल, जवाखार, कालीहड़, हींग, सेंधानोन, सोंचरनोन, कालीविडग, शीतरज, समुद्रफैन अजवायन बराबर कूट छानकर दोनों समय एक २ तोले खाय।

फ़रास के पत्तों का शरबत कि तिल्ली को गुण करे फ़रास की पत्तिया पावसेर दो दिन दो सेर जल में भिगोकर औटावे जब तीसरा भाग रहे छानकर पाव सेर बूरे में चाशनी करे मात्रा दो तोले।

फ़सल इलाज अमराज अमआ अर्थात् आंतों की बीमारियों की चिकित्सा में

इसहाल अर्थात् दस्तों का आना यह कई प्रकार से होता है जो दस्त उदर के हों तो फ़ारसी में उसे खलफ़ा और हिन्दी में संग्रहणी कहते हैं और जो कलेजे से हों जूसन्तारिया कहते हैं और यह रुधिर का दस्त है मांस के धोवन जैसे दस्त आते हैं या कलेजे की स्थिति है उससे पीब निकलता और जो आंतों से हो तो उसको सहज जलकुल अम और जहीर अर्थात् पेचशवा पेचक कहते हैं इसका विशेष हाल बड़ी २ पुस्तकों में लिखा है इस स्थान पर कई एक सरल औषधि जो दस्तों को गुणदायक हैं लिखी जाती हैं।

नरकाचूर की जवारिश अर्थात् पाक कि वाय को दूर करता है और संग्रहणी को गुणदायक है सफ़ेद बूरा-पावसेर, नरकाचूर पीस के एक तोले साढ़े पांच माशे पाक बनाय मात्रा दो तोले।

आमले का सादा पाक जो उदर रोग में वर्णन हुआ है गुण करता है।

आमले की गोली कि दस्तों को रोकती है संग्रहणी और पेचक को गुणदायी है एक तोले आमले थोड़े पानी में भिगोदे जब नर्म होजाय पीसकर और कालानोन मिलाकर जंगली बेर के समान गोलियां बनावे और दोनों समय एक २ गोली खाया करें।

गोली कि दस्तों को गुण करे राळ, पाषाणभेद, बेलगिरी, नरकाचूर, आंवळे, अफ़ीम, बबूर का गोंद भुना हुआ, भुनी इन्द्र, माई, मुनक्का, भुनी हुई अजवायन, गेरू, गुल अनार, सब कूट छानकर बराबर और चने के बराबर गोळियां बना के एक एक गोली दोनों समय खाया करे ।

अनार की गोली कच्चा अनार मिट्टी में लपेटकर भूभल में रक्खें जब पकजाय मिट्टी उतारकर अनार को कूटपीस कर आंवला, बबूर का गोंद बेल गिरी की भुनी मींगी, अजवायन प्रत्येक दो माशे, अफ़ीम नरकाचूर एक माशे पीसकर उसमें मिलावें और मूग की बराबर गोलियां बनाकर सझा सबेरे खाया करें।

जायफल की जवारिश काबिज़ अर्थात् विष्टम्भी और संग्रहणी तथा उदर की सख़ती को गुण दायक है और पाचन शक्ति को प्रबल करती है बालछड़, अजवायन, भुनी सौंफ भुनी सोंठ, नागरमोथा प्रत्येक एक तोले पांच माशे गुलनार, माई, बड़ी इलायची के दाने प्रत्येक एक तोले साढ़े पांच माशे अम-लतास एक तोला नौ माशे शहद व बूरे में चाशनी करे ।

शिंगरफ की गोली कि दस्तों को रोके सुहागा एक माशे, शिंगरफ़ दो माशे अफ़ीम चार माशे कूट छान कर कालीमिर्च के प्रमाण गोळियां बनावे ॥

लिखा है कि जो रात्रि के समय दस्त अधिक आवें तो यह गोळी शहद में मिलाकर खाय और जो दिन में दस्त अधिक आवें तो नीबू के रस में मिलाकर सेवन करे ॥

अथवा शिंगरफ़, लौंग, अफ़ीम तीनों बराबर मिश्री कूट छान कर चार माशे के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली की ॥

गोली कि रुधिर और पित्त के दस्तों को गुण करे बबरी के दाने सात माशे, माजू, अनारका छिलका प्रत्येक पौने दो माशे, अमलतास दो तोले ग्यारह माशे, मुनक्का साढ़े दश माशे, बबूर का गोंद कूट छान कर गोलियां बनावे मात्रा दो गोली तक देवे ॥

विष्टम्भी गोली

कि कफ़ के दस्तों को दूर करती है और पाचक है कालीमिर्च पीपल, सोंठ, लौंग, अकरकरा प्रत्येक साढ़े तीन माशे, अफ़ीम सात माशे, अदरक के जल में पीसकर चने के प्रमाण गोळियां बनावे मात्रा एक गोली ॥

अथवा रसौत, गेरू प्रत्येक डेढ़ तोले, मुर्दासंग तीन तोले, पीसकर चने के समान गोलियां बना के दोनों समय एक २ गोली खावे ॥

गोली कि बालकों के दस्तों को गुण करे ॥ यदि वमन हो तो भी गुण करती है सफ़ेद कत्था, गुलनार प्रत्येक तीन माशे जहरमोहरा पीस के आमला, बबूर का गोंद, बेलगिरी की मींगी भुनी हुई, प्रत्येक दो माशे, अफ़ीम, माजू, सौंफ भुनी, सफ़ेद जीरा प्रत्येक एक माशे कपूर एक रत्ती, कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनाकर प्रकृत के अनुसार दें और कभी जहरमोहरा के बदले बंसलोचन मिलावे और कभी बंसलोचन बढ़ावे हैं और जो भय हो तो कपूर न मिलाव ॥

गोली कि अतीव विष्टम्भी है मुनक्का बीजों सहित सात नग, आम की गुठली एक नग, अफ़ीम चार रत्ती, कूट छान कर परस्पर मिलाकर सात गोलियां बनावे और प्रतिदिन एक गोली खाय ॥

माजू की गोली कि दस्तों के रोकने में शीघ्र गुण करती है और आंतों के घाव को भी गुणदायक है ॥ माजू चौदह माशे, अफ़ीम दो दिरम, अर्थात् सात माशे, अजवायन साढ़े चार माशे चने के बराबर गोलियां बनावे मात्रा एक गोली ।

नकछिकनी की गोली उन दस्तों को गुण करती है जो नाभी के सरक जाने सो हों । नकछिकनी भलाकर अजवायन, सोंठ बराबर कूट छान कर एक माशे गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे और घृत के संग खाय ।

लेप कि नाभी के सरक जाने को गुण करे फिटकरी साढ़े दस माशे, माजू तीन नग कूट छान कर सिरके में मिलाकर लगावे ऊपर से पट्टी दृढ़ कर बांधे ॥

गोली कि दस्तों को रोकती हैं भुनी सोंठ, माई, पठानीलोद, सफ़ेद राल, धाय के फूल, मीठे इन्द्रजौ, बेलगिरी की मिंगी, मोचरस, आम की गुठली, भुना छुहारा, कालीमिरच कूट छान कर गोलियां बनावें ।

अथवा भुनी भंग, बेर की पत्तियां, नकचूर, बराबर कूट पीस कर चने के प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय खाय ॥

गोली कि आंतों के छिलजाने और रुधिर के दस्तों को जो बिना आंव के हों गुण करे गेरू, कत्था, राल, कतीरे का गोंद, कौंच के छिले बीज, बेल-

गिरी की मींगी कूट छान कर जगली बेर के प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय एक २ गोली खाया करें।

गोली कि लड़कों के दस्तों को गुण करे गुलनार एक नग, इलायची, अफीम प्रत्येक एक माशे चाकसू, रसौत, नरकाचूर, सफ़ेद जीरा, हल्दी, नीम की छाल, बकायन की कोंपल, बबूर की कोंपल, प्रत्येक दो माश कूट छानकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर मात्रा दो गोली तक दे सके हैं।

गोली कि बच्चों के हरे दस्त को गुण करें। बबूर की पत्तियां, लौंग, मुर्दासंग, गुलनार, केसर, नीम की कोंपल, सौंफ, कालाजीरा, सफ़ेद जीरा, सोंचर नोन, तज, अमलताश, कायफल बिड़ंग प्रत्येक सात माशे महीन पीस कर चने के प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय एक २ गोली दें और कभी मुर्दासंग के बदले जहरमोहरा या बंसलोचन और कभी तज के बदले भुनी कौड़ी मिलाते हैं।

इलायची का चूर्ण

विष्टंभी और पाचक है भुनी सौंठ, सौंफ भुनी हुई, बड़ी इलायची का छिलका बराबर पीस कर फक्की बनावें और एक हथेली भर खाया करे।

कौड़ी का चूर्ण

संग्रहणी को गुण करता है। कौड़ी मिट्टी की छोटी घड़िया में रखकर, कपरमिट्टी करके गरम तनूर में रखे जब ठंढा हो निकालकर पीसे उस में से साढ़े तीन माशे सात माश शहद में थोड़ासा नोन मिला कर खाय साठी चावल का भात दूध के संग भोजन करे।

गोली हिन्दी

कि दस्त और खूनी बवासीर को तथा पेचक और रग के पीले पन को दूर करे। मस्तगी, कालीमिर्च, बंसलोचन, अनारदाना, आम की गुठली की मींगी पीसकर मुलहटी धाईधवा के फूल, माजू सब बराबर पोस्त के डोड़े के रस में गोलियां बनावें मात्रा एक टांक साठी चावल के संग खाय तथा भात और मूंग की दाल भोजन करे।

काली हड़का चूर्ण

कि संग्रहणी और पेचक रत्य के लिये गुणदायक है इस घृत वा रोगन बादाम में भूनकर दो तोले पोस्त के डोड़े घी में भूनकर एक तोले कूट छानकर फक्की बनाकर बराबर का चूर्ण मिलावे मात्रा एक तोले प्रातःकाल और सायं

माशे सायकाल को खाया करे ग्रन्थ कर्त्ता ने बबूर का भुना गोंद मिलाया था अत्यन्त गुण किया।

तज का चूर्ण

कि दस्तों को रोकता है। तज, गुलनार, सुपारी के फूल सब बराबर कूट छानकर माकृति के अनुसार पानी के साथ फांके।

सौंफ का चूर्ण

कफ के दस्तों को गुण करे और उदर को बल देने वाला तथा वाय को दूर करने वाला है सौंफ को घी में इतना भूने कि लाल होजाय फिर कूट छान के पूरा मिलाके सात माशे ठंडे जल के साथ खाया करें।

अनार का चूर्ण

कि पित्त के दस्तों को गुण करता है खट्टे अनार के दाने, भुना स्याह जीरा प्रत्येक एक तोला साढ़े पांच माशे, गूगल, पिसा हुआ धनियां चौदह माशे, अनार का फूल, बबूल का गोंद प्रत्येक साढ़े तीन माशे फक्की बनावे मात्रा सात माशे तक है।

धनिये का चूर्ण

कि रुधिर के दस्त रोकने में जो बिना आम के हों परीक्षित है जामन की गुठली जलाई हुई, बेर की गुठली जलाई हुई, बारह सींगे का सींग जलाया हुआ, भुनी हींग, भुने पोस्त के दाने, भुनी मुनक्का प्रत्येक साढ़े तीन माशे, काली हड़, सौंफ, अनारदाना, धनिया, चूका के बीज, बबूर का गोंद, निशास्ता, सियाह जीरा, सफेद जीरा, कुलफा के बीज, सोंठ, ईसबगोल, बालगा, नाखून प्रत्येक सात माशे लेके भूनकर कुलफ के बीज, ईसबगोल और बालगा को साबित रक्खें और अतीस बावा के फूल, माई, आंवला, बेलगिरी की मींगी राल, सफेद कत्थो, कसीरा, कौंच के बीजों की मिंगी, बड़ी इलायची का छिलका, नकोचूर अनारके फूल प्रत्येक पौने दो माशे कूट छानकर फक्की बनाय मात्रा प्रकृति के अनुसार नौ माशे तक पानी के संग देवे।

अथवा सोंठ, सौंफ, राल, भुना छुहारा, कालीहड़ घीमें भुनी हुई बेल-गिरी की मींगी, सब बराबर लेकर फक्की बनाय॥

अथवा अनार की कली, बबूर की पत्तियां, भुनी सौंफ प्रत्येक थोड़ा जलाया हुआ पोस्त के डोडा सब औषधियों के बराबर कूट छान कर फक्की

दवा कि दस्त और पेचक को गुण करे। आम की छाल लेकर काला छिलका उतार कर भीतर का जो कि पीलाहट लिये होता है छककर पानी में घिसकर और थोड़ा जल उसमें मिलाकर शीघ्र पीलें क्योंकि यदि एक पल की देर होगी तो जम जायगा फिर पिया न जायगा इस दवा के सेवन करने से तीन दिवस में आराम होता है।

दवा कि उस पेचक को गुण करती है कि जो गरमी के साथ में हो भुना ईसबगोल सात माशे, बबूर का गोंद, गेरू प्रत्येक साढ़े तीन माशे, अजवायन पौन माशे, और जो गरमी नहीं किन्तु अफरा हो तो भुनी हारयों सात माशे, भुनी अलसी, बबूर का गोंद, गेरू प्रत्येक साढ़े तीन माशे ककाल पौने दो माशे, अजवायन पौन माशे।

द्वितीया दवा

सत्य पेचक के वास्ते रेंडी के बीज, बबूर का गोंद दोनों भूने बराबर पीस कर और रेंडी के बीजों को साबित रखकर एक तोला सफेद जीरे के शीरे में मिलाकर पियें।

अथवा बेर की पत्तियां साढ़े तीन माशे, सफेद जीरा पौने दो माशे पीस के पियें।

अथवा राल, कत्था, बेलगिरी की मींगी, कोंच के बीज, बराबर कूट छानकर सात माशे तक खाय।

चूर्ण

कि आंतों के घाव और रुधिर के दस्तों को गुण करे कतीरा, बारहसींगे का सींग, जलाकर बराबर पीसकर फक्की बनावे मात्रा साढ़े चार माशे।

अथवा अजवायन पांच माशे, सफेद जीरा चार माशे, अफीम दो रत्ती महीन कूटछान कर तीन मात्रा कर और साठी चावलों के संग खाय और खिचड़ी भोजन करे।

काढ़ा कि पेचक सत्य को गुण करे धावा के फूल, सेमर का गोंद, बरो, बर पानी में औटाकर छानकर पिये और गुनगुन मीठ जल से हुकना अर्थात् वस्तिकर्म करना प्रेचक दूर करने में परीक्षित है।

दवा

कि पेचक तथा रुधिर और कफ के दस्तों को गुण करे मरोरफली एक

तोले आठ माशे जल में भिगोकर हाथ से मळे फिर छानकर पिये और खिचड़ी भोजन करे खटाई और सलौनी वस्तुओं से बचे।

अथवा सांकर की फळी पकाकर भात के संग खाय।

अथवा सफेद राल, भूरा प्रत्येक एक तोले आठ माशे, पोस्त का डोडा एक नग भुना हुआ कूट छानकर एक हथेली भर खाय।

मुलैयन चूर्ण।

कि सत्य पेचक को गुण करै। गेरू रैहां के बीज भुने हुए दोनों साबित रखकर भूका के बीज प्रत्येक सात माशे, अनार का फूल, बबूर का गोंद, निशास्ता प्रत्येक साढ़े तीन माशे कूट छानकर फक्की बनावै।

हड़ का चूर्ण कि बिष्टमी पेचक को गुण करे और उदर की पीड़ा को गुण करै, काबली हड़ घी में भूने जब फूलजाय बराबर पीसकर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माशे। मर्दन। आंब की छाल दही के जल में पीसकर नाभि के आसपास मळें और बाजों ने सिरके में पीसकर मर्दन करना लिखा है।

अथवा आंवले घी में पीसकर नाभि के गिर्द मंडल बनावे और मंडल का किनारा ऊंचा रखे फिर उसमें अदरक का रस भरदें और इसी भांति थोड़ी देर रहने दें यदि पानी के दस्त आते हों तो बंद होजांय मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि यह औषधि सब दवाइयों की राजा है।

दवा

कि संग्रहणी को गुण करे हरी बेलगिरी भूनकर और थोड़ी शक्कर मिला कर एक तोले खाय।

गुण

दस्तों में वमन कराना दस्त को रोकता है और कैथी के बीज भूनकर नौ माशे नीम के शहद में मिलाकर खाना और गूगल की कोंपळ एक तोले पानी में पीसकर पीना दस्तों को गुण करता है।

अथवा

आंवला घी में भूनकर पानी में पीसकर नाभि के आसपास लगावे और थोड़ीसी अफीम अदरक के रस में पीसकर दो तीन बूंद नाभि में टपकावें।

अथवा गूलर के पेड़ का दूध माशे के प्रमाण खाय।

दवा कि दस्त और पेचक को गुण करे। आम की छाल लेकर ऊपर का छिलका उतार कर भीतर का जो कि पीलाहट लिये होता है लेकर पानी में घिसकर और थोड़ा जल उसमें मिलाकर शीघ्र पीलें क्योंकि यदि एक पल की देर होगी तो जम जायगा फिर पिया न जायगा इस दवा के सेवन करने से तीन दिवस में आराम होता है।

दवा कि उस पेचक को गुण करती है कि जो गरमी के साथ में हो भुना ईसबगोल सात माशे, बबूर का गोंद, गेरू प्रत्येक साढ़े तीन माशे, अजवायन पौन माशे, और जो गरमी नहो किन्तु अफरा हो तो भुनी हाऊबेर सात माशे भुनी अलसी, बबूर का गोंद, गेरू प्रत्येक साढ़े तीन माशे कंकोल पौने दो माशे अजवायन पौन माशे।

द्वितीया दवा

सत्य पेचक के वास्ते रेंडी के बीज, बबूर का गोंद दोनों भूने बराबर पीस कर और रेंडी के बीजों को साबित रखकर एक तोला सफेद जीरे के शीरे में मिलाकर पियें।

अथवा बेर की पत्तियां साढ़े तीन माशे, सफेद जीरा पौने दो माशे, पीस के पियें।

अथवा राल, कत्था, बेलगिरी की मींगी, कौंच के बीज, बराबर कूट छानकर सात माशे तक खाय।

चूर्ण

कि आंतों के घाव और रुधिर के दस्तों को गुण करे कतीरा, बारहसींगे का सींग, जलाकर बराबर पीसकर फक्की बनावे मात्रा साढ़े चार माशे।

अथवा अजवायन पांच माशे, सफेद जीरा चार माशे, अफीम दो रत्ती महीन कूटछान कर तीन मात्रा करे और साठी चावलों के संग खाय और खिचड़ी भोजन करे।

काढ़ा कि पेचक सत्य को गुण करे धावा के फूल, सेमर का गोंद, बरा बर पानी में औटाकर छानकर पिये और गुनगुने पीठ जल से हुकना अर्थात् वस्तिकर्म करना पेचक दूर करने में परीक्षित है।

दवा

कि पेचक तथा रुधिर और कफ के दस्तों को गुण करे मरोरफली एक

तोले आठ माशे जल में भिगोकर हाथ से मले फिर छानकर पिये और खिचड़ी भोजन करे खटाई और सलौनी वस्तुओं से बचे।

अथवा सांकर की फली पकाकर भात के संग खाय।

अथवा सफेद राल, पूरा प्रत्येक एक तोले आठ माशे, पोस्त का डोड़ा एक नग भुना हुआ कूट छानकर एक हथेली भर खाय।

मुलैयन चूर्ण।

कि सत्य पेचक को गुण करै। गेरु रेहां के बीज भुने हुए दोनों साबित रखकर चूका के बीज प्रत्येक सात माशे, अनार का फूल, बबूर का गोंद, निशास्ता प्रत्येक साढ़े तीन माशे कूट छानकर फक्की बनावे।

हड़ का चूर्ण कि विष्टमी पेचक को गुण करे और उदर की पीड़ा को गुण करै, काबली हड़ घी में भुने सब फूलनाय बराबर पीसकर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माशा। **मर्दन**। आंब की छाल दही के जल में पीसकर नाभि के आसपास मलें और बाकों ने सिरके में पीसकर मर्दन करना लिखा है।

अथवा आंवले घी में पीसकर नाभि के गिर्द मंडल बनावे और मंडल का किनारा ऊंचा रखे फिर उसमें अदरक का रस भरदें और इसी भांति थोड़ी देर रहने दें यदि पानी के दस्त आते हों तो बद होजांय मुगरिबात अकबरी में लिखा है कि यह औषधि सब दवाइयों की राजा है।

दवा

कि सग्रहणी को गुण करे हरी बेलगिरी भूनकर और थोड़ी शक्कर मिलाकर एक तोले खाय।

गुण

दस्तों में वमन कराना दस्त को रोकता है और कैथी के बीज भूनकर नौ माशे नीम के शहद में मिलाकर खाना और गूलर की कोंपल एक तोले पानी में पीसकर पीना दस्तों को गुण करता है।

अथवा

आंवला घी में भूनकर पानी में पीसकर नाभि के आसपास लगावे और थोड़ीसी अफीम अदरक के रस में पीसकर दो तीन बूंद नाभि में टपकावें।

अथवा गूलर के पेड़ का दूध मात्रा के प्रमाण खाय।

गुण पेट के सब अजीर्ण और दस्तों को खोते हैं और उदर को तथा पित्त के दस्तों को गुण करते हैं और चावलों की पीच पीनी भी दस्तों को बंद करता है।

दवा हरी दुधी पीसकर एक प्याला पीवे।

अथवा पुराना पनीर लेकर पानी में इतना धोवे कि नोन का लेश शेष न रहे फिर उसको भूनकर खाय।

अथवा- मसूर बिनी छिली भूनकर खाय या जो जमालगोटे के खाने से दस्त हों तो कतीरा पीस कर दही में मिलाकर खाय।

फ़सल इलाज ज़हीर अर्थात् पेचश वा पेचक की चिकित्सा में।

प्रति दिन सभा सवेरे खाया करें भात और मसूर की दाल भोजन करें।

अथवा बेलगिरी एक तोले, करा की छाल दो तोले, सौंफ, कालीहड़ प्रत्येक एक २ तोला ईसबगोल छः माशे, मिश्री तीन तोले, इनको घी में भून कर सिवाय ईसबगोल के सबको कूट छानकर सबको मिलावें मात्रा सात माशे से एक तोले तक।

अथवा यह सत्य पेचक को गुण करे काली हड़, घी में भुनी हुई सोंठ, सौंफ भुनी हुई प्रत्येक एक तोला बराबर बूरा मिलाकर दें।

द्वितीय कि आंतों के छिल जाने को गुण करे बेलगिरी, कत्था, बराबर लेके फक्की बनावें।

अथवा

बबूर का गोंद प्रतिदिन एक तोला डेढ़ माशा तीन या ग्यारह दिवस पीस कर खाय और जो दस्तों की विशेषता होवे तो पोस्त का डोडा महीन पीसकर साढ़े चार माशे से नौ माशे तक पीना अत्युत्तम है यदि बबूर का गोंद मिलावे तो अधिक गुण दायी होगा।

गोली कि दस्त और पेचक की बीमारी का नाश करे सोंठ, सौंफ पोस्त के दाने, तीनों को भूनकर सात माशे कूट छानकर गुड़ और घृत में गोलियां बनाकर खाय।

अथवा माई, कत्था, अफ़ीम बराबर लेकर कालीमिर्च के समान गोलियां बनाकर और एक गोली साठी चावल के जल के साथ खाया करें।

अथवा अफ़ीम शुद्ध चूना [illegible] लेकर [illegible] या मसूर के समान गोलियां बनाकर प्रकृत्यानुसार सभा [illegible]

पेचक को गुण करे ।

अथवा माजू, माई, प्रत्येक सात माशे, बबूर का गोंद साढ़े तीन माशे, अफीम दस माशे, स्याह मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावें मात्रा तरुण के लिये एक गोली और बालक के लिये आधी ।

अथवा माजू चार भाग, अफीम दो भाग, अजवायन एक भाग, कूट छान कर चने वा मूंग के प्रमाण गोलियां बनावे और प्रातःकाल एक गोली खांय ।

दवाई कि सरप पेचक और दस्तों को दूर करे महुवे के नवीन पेड़ की छाल लेकर उसका रस छै तोले आठ माशे के प्रमाण निकाल कर भाजन में रख अग्नि पर रखें और तीन माशे सोंठ पीस कर उसमें मिलावें जब दो तीन उफान आवें उतार कर गुनगुना २ पियें खट्टे और बादी भोजन का निषेध है ।

अथवा खजूर साढ़े तीन माशे पीसकर थोड़े से दही में मिलाकर खांय ।

अथवा अनार की पत्तियां एक प्याले पानी में पीसकर पियें ।

अथवा रातको कतीरा पानीमें भिगोकर प्रात काल चूरा मिलाकर पियें ।

अथवा सिरसोड़े की कोंपलें पीसकर और गोलियां बनाकर खांय ।

अथवा सुपारी जलाकर और दही में मिलाकर खांय ।

अथवा रेंडी के बीज मिट्टी के पात्र में रखकर ऊपर से दो तीन बूंद तेल की डालें और आंच पर लाल करके खांय ।

अथवा मुलतानी मिट्टी पीसकर बीहदाने वा ईसबगोल के लुआब में मिलाकर खांय ।

अथवा सफेद जीरा दही के संग खावें ।

अथवा बबूर का गोंद चौदह माशे ठंडे जलमें मिलाकर पान करे तो आंतों की खरखराहट आदि को गुण करे ।

फसल इलाज कुलज अर्थात वायशूल की पीड़ा की चिकित्सा में ।

यह रोग आंतों के मध्य में गांठ पड़जाने से होता है और इस में अधोवायु और पुरीष का निकास अत्यन्त कठिन पीड़ा के संग होता है ।

चिकित्सा यदि बायशूल वायु से होव तो सेक करे जिस भांति उदर पीड़ा में उसका वर्णन हुआ है और जो फोक वा कफ के कारण से हो तो मुलैयन देकर विरेचक पिलावें और मुलैयन काढ़ा जो पेचक रोग में कहा गया है बायशूल रोग को भी गुण दायक है और रेंडी के तेल से जो उदर पीड़ा में कहागया है, मर्दन करे ॥

गुण बाजे रहे कि मुलैयन उस दवा को कहते हैं कि जिससे कम दस्त आवें और मुसहिल वा विरेचक उसको जिससे अधिक आवें मुलैयन में मुजिस अर्थात् दोष पकाने वाली औषधि की आवश्यकता नहीं और मुसहिल में अवश्य है ॥

गोली कि बायशूल को गुण करे भारतवर्षीय लोग इसे काम में लाते हैं भुनी फिटकरी, अजवायन, पीपलामूल, स्याहमिर्च, कजा के बीजों की मींगी, बायबिड़ंग, एलुआ, काला नोन बराबर कूट छान कर अदरक के रस में चार माशे के प्रमाण गोलियां बनाकर सोते समय एक गोली खांय।

आवज़न कि बायशूल को गुण करती है रेंडी, सोये के बीज, मकोय, खतमी के बीज, बाबूना प्रत्येक थोड़ा लेकर जल में औटावें जब आधा रहे छानकर उसको पीये। -

मुनक्का का पाक कि तबियत अर्थात् प्रकृति को नरम करे और कफ का विरेचक तथा उदर को प्रबल करने वाला और बायशूल को दूर करने वाला है।

मुनक्का पावभर, मस्तगी दो तोले, सफेद चंदन दो तोले दस माशे, कूट छान कर मुनक्का के बीज निकाल कर गुलाब में पीस कर औषधियों में मिलावे मात्रा सात माशे और जो सदैव सेवन करे तो दस माशे तक है।

गोली भारतवर्षियों की बनाई हुई कि बायशूल को गुण करती है कजा के बीजों की मिंगी, नकछिकनी, हींग, सोंठ बराबर पीस कर बेर के समान गोलियां बनावे मात्रा एक गोली गरम जल के संग खांय और उदर पीड़ा तथा विसूचिका को सोंफ के शीरे के संग दो गोली और पेट की गिरानी को एक गोली अजीर्ण दूर करने के लिये पांच गोली ठंडे जल के संग और दस्त लाने के लिये दस गोली उष्ण जल के संग अत्यन्त गुण करती हैं और जो गर्मी मालूम हो तो मिश्री गुलाब में पीसकर पियें। नुसखा गोलियों का यह है गुद

समालगोटा साढ़ तीन माशे, रेंडीके बीजों की मींगी ढा तोला ग्यारह माशे कायली हड़का बक्कल सात माशे, पारा, भुना सुहागा, जवाखार, हल्दी, कालीमिर्च, प्रत्येक साढ़े तीन माशे स्याह मिच के प्रमाण गाल्त्रियां बनावे।

गोली—कि उदर की पीड़ा को दूर करे पीपल की पत्तों ढाई नग पीसकर गुड़ में मिलाकर गोलिया बनाकर खाय।

गोली कि वायगोला को गुणदाई है समन्दरफल के बीजों की मींगी, समुद्रझाग, सेंधा नोन, काला नोन, सफेद सज्जी, जवाखार, सुहागा, काबली हड़ का बक्कल, पीपल, सोंठ, हींग, काबली बिडंग, प्रत्येक दस माशा अम-लबेद तीन तोले चार माशे कूट छानकर गोलियां बनावे मात्रा चार माशे।

अथवा एलुआ, सुहागा, सेंधा नोन, जवाखार, गुआरपाठे के रस में बेर के प्रमाण गोलियां बनाकर खाय।

माजून विरेचक

सनाय सात तोले साढ़े तीन माशे, बनफशा, शीरखिस्त व तुरंजबीन गुलाब के फूल, काबली हड़ का बक्कल, पित्तपापड़ा प्रत्येक एक तोले साढ़ पांच माशे मुनक्का पावभर, शहद तिगुना मात्रा एक तोले छड़ माशे।

चूर्ण पाचक

कि दस्त लाता है कायली हड़ का बक्कल, काली हड़, सेंधा नोन, सनाय, बराबर पीसकर नौ माशे के प्रमाण सोते समय खाय और ऊपर से गरम जल पियें।

शियाफ़ अर्थात् बत्ती कि दस्त लाती है गुड़ तांबे के पात्र में आग्नि पर रक्खें जब घुलजाय नोन पीसकर मिलावे जम जाय बत्ती बनाकर नित्य काम में लावे और केवल नोन क पानी में कपड़ा भिगो कर गुदा में रक्खे अच्छी प्रकार दस्त लाती है।

बत्ती कि वायसूल खोने के वास्ते अद्भुत है महुवे के बीजों की मींगी पानी में पीस कर बत्ती बनाकर काम में लावें।

अथवा मोम सात माशे, उसमें पौने दो माशे नोन मिलाकर घृतसे चुपड़ बत्ती करे और जब गुदामें से बत्ती निकल आवे फिर रखदें।

अथवा आककी जड़ खरल करे और गुदा में रखे तो खुलकर दस्त आवें। और पानी में पीसकर गुनगुना पेट पर लेप करे।

अथवा चूहेकी मेंगनियां, सांभरनोन, शक्कर, बराबर नर्म आंच पर जमावें

फिर छुहारे की गुठलीके समान बत्तियां बनाकर घी से चुपड़कर गुदामें रक्खें।

अथवा साबुन का टुकड़ा छुहारे की गुठलीसी बनाकर घृत से चुपड़ कर गुदा में रखें।

काढ़ा कि बादशूल को गुण करे। सोये के बीज, मेथी, प्रत्येक दो तोले वा न्यूनाधिक प्रकृत्यानुसार लेवें औटाकर और दो तोले घृत मिलाकर पिये।

अथवा यह कि बादशूल और उदर की पीड़ा को गुण करे सोंठ, अरंड की जड़ प्रत्येक साढ़े तीन माशे हींग सोंचरनोन प्रत्येक एक माशे सोंठ और अरंड की जड़ तीन पाव पानी में औटावें जब आधपाव रहे छानकर पहिले हींग और नोन को बारीक पीस कर गोली बनाकर खावें फिर ऊपर से काढ़ा पीवें।

दवाई अरंड की लकड़ी जलाकर उसकी राख हथेली भर खाया बाय और पेट की पीड़ा दूर होजाती है मुहम्मद जकिरिया ने कहा है कि मैंने देखा कि बहुत मनुष्यों के बायशूल उठा करता था उन्होंने भेड़िये का चर्म ही अपने बर्ताव में रखा यहां तक कि उसी पर बैठना और सोना तथा घोड़े पर डाल कर सवार होना बस बायशूल उठना बंद होगया और तिलली का तेल मर्दन करना कि नुसखा उसका पहले लिखा गया है बायशूल की पीड़ा को अत्यन्त गुण करता है॥

काढ़ा कि उस बायशूल और अजीर्ण को दूर करे कि जो प्रकृति की सर्दी के साथ होवे अरंडकी जड़ तीन तोले चार माशे जो हरी हो तो छः तोले आठ माशे लेकर आधसेर जल में औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर रेंडी का तेल दो तोले हींग तीनमाशे परस्पर मिलाकर गुनगुना पियें।

अथवा हाव्यों के बीज एक तोले साढ़े पांच माशे पानी में औटाकर शकर और थोड़ा तिली का तेल मिलाकर पियें।

दवा कि अवश्यमेव बायशूल को गुण करती है मरदी के बीज ---- माशे सौंफ के अर्क वा उसके शीरे में मिलाकर खांय।

अथवा जो मनुष्य बारह सींगे का सींग जलाकर एक चमचे पानी में मिलाकर पियें तो फिर बायशूल कभी नहो और पीड़ा जात रियाज में लिखा है और पौने दो माशे तेल शकर में मिलाकर पीना को दूर करता है तथा गर्म जल पीना उस बायशूल को जो निर्बलता से दूर करता है।

अथवा बकरी की मेंगनी बालक के मूत्र में औटावे फिर पीसकर कपड़े पर लगाकर गुनगुना २ लेपकर मर्दन करे।

अथवा सांभू की पत्तियों का रस निचोड़कर उस में पारा पीसकर नाभि के आस पास मलें।

अथवा चमेली का तेल गरम कर रुई उस में भिगोकर नाभि पर रखें।

अथवा साबन पानी में घिस कर पेट पर और उसके आस पास लगावें और हुक्का पीना वायशूल को गुण करता है।

अथवा जब लड़का पैदा हो नाभि उसकी काट कर अपने पास रखें वायशूल उत्पन्न न हो।

अथवा रेंडी की मींगी, एलुआ, महुवे के बीजों की मींगी सब को कूट छान कर सिरके में औटा कर मर्दन करे।

अथवा लहसन खाना वायशूल की पीड़ा के लिये अद्भुत औषधि है।

अथवा बकरी का पित्ता अर्द्धोष्ण नाभि के नीचे मलना दस्त लाता है और विशेष करके बालकों के अजीर्णों को बहुत गुण करता है।

लेप भारतवर्षीय वैद्यों का बनाया हुआ कि दस्त लाता और बच्चों की पसली चलने को गुण करता है सुहागा, तेलिया, नीलाथोथा कमालगोटे की मींगी प्रत्येक साढ़े तीन माशे थूहर के दूध में पीस कर नाभि के आस पास लेप करे।

कुदर की टिकिया

कि आंतों की पीड़ा और पेचक को गुण दायक है कुदर, सौंफ, सोये के बीज प्रत्येक एक तोले साढ़े पांच माशे अजवायन पौने नो माशे कूट छान कर पानी में टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माशे।

एक मनुष्य के पेट में कीड़े पड़ गये थे उसको मैंने विरेचक दिया कीड़े दूर हो गये फिर पाचन शक्ति कम हुई और अफरे तथा भोजन के यथोचित न पचने से कभी २ कीड़े उत्पन्न होते थे जब मैंने यह माजून उसके लिये उचित समझी गुण दायक है।

पोदीना, सौंफ, सातर, अनीसू, जीरा, असरत का छिलका, दालचीनी सोंठ प्रत्येक साढ़े तीन माशे अजवायन पौने दो माशे, इलायची, धनिया, चन्दन गुलाब में पीसकर प्रत्येक सात माशे आंवले का मुरब्बा गुठली निकाल कर

चार जग त्रिगुन शहद में माजून बनावे ।

फसल ददान शिकम अर्थात् पेट में कीड़े पड़ जाने की चिकित्सा में

वे आंतों में उत्पन्न होते हैं और उनके कई भेद होते हैं एक लांबे सांपके सदृश होते हैं दूसरे चौड़े कि जिनको हब्बुल किरह और कद्दू दाने कहते, तीसरे छोटे कि सिरके के कीड़ों के समान आंतों के मध्य में उत्पन्न होते हैं और यह केवल भोजन की बुराई और गुदा के न धोने के कारण बालकों की आंतों में उत्पन्न होजाया करते हैं ।

चिकित्सा एक दो दिवस दुग्ध पीकर यह गोली खाय सनाय, गुल प्रत्येक पांच तोले काबली हड़का बक्कल काली हड़ प्रत्येक दो तोले, सोंठ मुनक्का प्रत्येक एक तोले शहद में गोली बनावें मात्रा एक तोले । और धनिये का पाक खाना कि जिसका उदर रोग में वर्णन हुआ है गुण करता है ।

इतरीफल

अर्थात् अवलेह कि कीड़ों को निकालता है काबली हड़ का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आंवला, काबली विड़ंग प्रत्येक दो तोले ग्यारह माशे, कालादाना पौने दो माशे, कबेला, कड़वा कूट, सेंधानोंन प्रत्येक साढ़े दस माशे कूट छान कर त्रिगुने शहद में मिलावें मात्रा चौदह माशे तक ।

चूर्ण कि पेट के कीड़ों को मारता है और दूर करता है तथा भोजन को पचाने वाला है अजमोद, काबली विड़ग, सेंधानोंन, जवाखार, काबली हड़का बक्कल, पीपल, सोंठ सब औषधि बराबर और हींग भुनी हुई एक भाग की आधी कूट छानकर फक्की बनावे मात्रा सात माशे ।

कबेले की गोली कि पेट के कीड़े दूर करने में अद्भुत गुण रखती है हींग, पोदीना, बायविड़ंग सेंधानोंन, काबली हड़का बक्कल, कबला बराबर कूट छान कर गोलियां बनावें मात्रा तीन गोली और कभी इस में निसोत भी बढ़ाते हैं ।

अथवा काबली विड़ंग, सेंधानोन प्रत्येक सात माशे कूट बराबर करके गोलियां बनावें मात्रा नौ माशे गरम जल के साथ ।

चूर्ण कि सब प्रकार के कीड़ों को दूर करता है काबली विड़ग, सेंधानोंन, कबेला, काबली हड़का बक्कल बराबर कूट छान कर दस माशे गौ दधि के

सग खाय और खिचड़ी भोजन करें।

गोली कि दस्त लाती है और कीड़ों को निकालती है स्याह जीरा तीन माशे, काबली विड़ग, तुर्की दरमना प्रत्येक दो माशे सूखी निसात, अफ़तीमून, सोंठ, कतीरा, एलुआ प्रत्येक एक माशे कूट छान कर गोलिया बनाकर खाय यह सब एक मात्रा है।

काढ़ा भारत वर्षीय वैद्यों का बनाया हुआ कि कीड़ों को दूर करता है खट्टे अनार का छिलका तूत की छाल प्रत्येक दो तोले जौ कुट कर के पानी में औटा छान के पिये।

द्वितीय काढ़ा

कि बड़े कीड़ों और कदू दानों को दूर करता है बकायन की छाल दो तोले आठ सकोरे पानी में औटावे जब एक सकोरा जल रहे थोड़ा गुड़ मिला कर खाकर सो रहे और इसी भांति तीन दिवस पर्यन्त करे।

गोली कि उदर के कीड़ों को गुण करती है कजा की मींगी, पलास पापड़े के बीज, अजवायन, कबेला बायविडग गुड़ बराबर लेकर गोलिया बनावें मात्रा पौने दो माशे।

अथवा यह छोटे कीड़ों को जो बालकों की गुदा में पड़ जाते हैं दूर करे रसौत चाकसू, हींग प्रत्येक दो माशे, एलुआ एक माशे कालीमिर्च, आध माशे, नीम की पत्ती दो नग, ककरौंदे के रस में पीस कर ज्वार के प्रमाण गोलिया बनावे मात्रा एक गोली।

अथवा खुलीम सफ़ेद कत्था, अफ़ीम, बेर की पत्ती, पुराना खोपरा बराबर लेकर मूंग के समान गोलियां बनाकर एक गोली खाय।

अथवा मुनक्का में उसके बीज की बराबर काबली विड़ग भरदें तरुण को बीस नग और बालक को पाच नग से दस नग तक दें और उत्तम तो यह है कि मुनक्का निगल जाय।

अथवा बैल का खुर जलाकर उसकी राख शहद या गुड़ में मिलाकर खाना कीड़ों को दूर करती है।

अथवा शफ़तालू जलाकर कड़वे तेल में मिला कर गुदा पर मलें तो बच्चों की गुदा के बड़े कीड़े दूर होजाय।

अथवा स्याह धतूरे के पत्तों का अर्क प्रति दिन दो बार बगलों में लगाकर

गुदा के भीतर फेरे वा कपड़े की बत्ती बनाकर दवा में भिगो कर गुदा में फेरें तो सब कीड़े मरजाय।

और नोन से बत्ती करना बच्चों की गुदा के कीड़ों को मारता है

अथवा पहिली राति को दो मुट्ठी तिल गुड़ में मिलाकर खाय और उस के प्रातःकाल कबेला साढ़े तीन माशे साबन मिलाकर गोली बनावें और गरम जल के संग निगल जाय सब कद्दू दाने दस्त की राह निकल जावेंगे।

अथवा तुर्की तुमना अनारदाने के साथ जौकुट करके प्रति दिन प्रातःकाल के समय बादाम के बराबर खाय। खुलासतुल जाख वाले ने इस औषधि को परीक्षित लिखा है।

अथवा

अरंड के पत्तों वा भांगरे के पत्तों वा धतूरे के पत्तों का रस दो तीन बार प्रति दिवस गुदा में मला करें।

फ़सल खरूजुल मिक्रद अर्थात कांच निकलने की चिकित्सा में

प्रायः यह रोग बालकों को दस्त के पश्चात् होता है।

बुर्की कि बच्चों की कांच निकलने को गुण करे पुरानी चालनी का चमड़ा जलाकर उसकी राख गुदापर छिड़के।

अथवा प्रथम गुदा को घी से चुपड़ ले फिर लिसौड़ा जलाकर और पीसकर उसपर बुर्के।

दवा कि बालकों की कांच निकलने को गुणदायक है रोगी अपना मूत्र बासन में लेकर जब पाखाना फिर चुके उस मूत्र से पहिले गुदाको धोवे फिर पानी से शुद्ध करे दो तीन दिवस में आराम होता है।

अथवा बबूर की फली तांबूल धावा के फूल औटाकर उसके काढ़े में बैठे वा गुदा को धोवे।

अथवा

आम की पत्तियां जामन की पत्तियां और उसकी छाल जौकुट कुटवाकर औटावे फिर उस जल से गुदा को धोवें और जब गुदा सोजके कारण भीतर न जावे कई बार गरम पानी में बैठना और गुलाब के फूलों का सेक उसपर

मर्दन करना गुण करता है ।

बुर्की कि कांच को निकलने से रोके । बकरी का खुर जलाकर माजू, अनार का फूल, अनार का छिलका, भुनी फिटकरी बराबर कूटछानकर बुर्के ।

मर्दन कि कांच निकलने को गुण करै मुर्गी के अंडे की सफेदी गुदा पर बाहर और भीतर से लगावे तो पीड़ा तथा सूजन दूर हो बासलीक नस की फस्द खोलना सूजन और पीड़ा को गुणदायक है मात्रा ७ माशे ।

लेप जौ का आटा मसूर अंडेकी सफेदी गुलाब के फूलों के तेल में मिला के लेप करै ।

चूर्ण ।

कि कांच निकलने और उस की पीड़ा को गुण करै सोंठ, आवला प्रत्येक साढ़े तीन माशे धनियां सेंधानोंन कालानोंन प्रत्येक सात माशे कालीमिर्च चौदह माशे पीपलामूल साढ़ेतीन तोले कूट छानकर फंकी बनावै ।

फसल बवासीर की चिकित्सा में

यह दो प्रकार की होती है एक यह कि गुदा के किनारे के मस्से फूलजावें और उस से रुधिर निकले उसको खूनी बवासीर कहते हैं ।

दूसरी वह कि गुदा में मस्से नहों और पेट में कुराकुर अर्थात् गरगराहट हो और जो गुदा पर मस्सों की अधिकता हो तो फूल जाय और रुधिर न निकले उसको बवासीर बादी कहते हैं ।

चिकित्सा चूतड़ की हड्डी पर सींगी लगावें और आदि ही में बवासीर का खून बन्द न करें परन्तु जब विशेष निकले, और रोगी निर्बल हो जावे बंद कर दें ।

वैद्यों ने लिखा है, कि अनामिका और कनिष्ठका के मध्य में दाह देना बवासीर को गुण करता है और हंसली पर भी दाह देने से बवासीर नहीं रहती और दाह देने के पश्चात् रुई जल में भिगोकर उस पर रक्खें कि वह तर रहे ।

गोली हारसिंगार के बीजों की मींगी बवासीर को अति गुणदायक है । हारसिंगार के बीज बीन छीलकर एक तोले कालीमिर्च तीन माशे कूट छान-कर गोलियां बनावे मात्रा तीन माशे शीतल जल के साथ देवें ।

गोली कि बवासीर बादी को गुण करै और अजीर्ण नहीं करती किन्तु

प्रकृति को नर्म करता है सोंफ कासनी हड़ का वक्कल बहेड़ा का वक्कल आंवला प्रत्येक सात माशे गूगल रसौत प्रत्येक चौदह माशे गद्ना के पीज साढ़े तीन माशे अंजीर चार नग इन्हों को प्रथम त्रा में मकोय दो भाग किशमिश अर्थात् द्राक्षा या दाख कूट कर इस में मिलाकर गोलियां बनावे मात्रा यथोचित।

दवाई गौ का दुग्ध आध सेर पिये जब दूध का कटोरा मुंह से लगावे कागजी नीबू का रस उसमें डालकर तुरन्त ही पिये तीन दिवसमें गुण प्रकट होगा।

गोली ककरौंदे की, कि भारतवर्षीय वैद्यों की परीक्षित है एक सेर ककरौंदे का अर्क मदाग्नि पर औटावें जब गाढ़ा होजाय साढ़े तीन माशे काली मिर्च पीस कर मिलावें फिर खरल करके जंगली बेर के समान गोलियां बनाकर एक एक गोली दोनों समय खाय।

कंघी के पत्तों की गोली कि बवासीर बादी और खूनी को गुण करती है कंघी की पत्तियां कालीमिर्च प्रत्येक २१ नग जल में पीस कर सात गोलियां बनाकर एक २ गोली सन्ध्या सवेरे खाय।

गोली कि बवासीर को दूर करे कलमी शोरा और रसौत बराबर पीस कर जंगली बेर के समान गोलियां बनाकर दोनों समय एक २ गोली खायें और लेप के लिये भी यह गोली अत्युत्तम है।

अथवा नीम की गुठली की मींगी बकायन के बीजों की मींगी गूगल रसौत एलुआ स्याह मिर्च गेरू सब बराबर मकोय के पत्तों के रस में जंगली बेर के समान गोलियां बनावें दोनों समय एक २ गोली खाय।

अथवा रसौत सात माशे मुनक्का बीजों सहित चौदह माशे कतीरा सात माशे सबको कूट छानकर जगली बेर के समान गोलियां बना कर प्रात काल एक गोली खाकर ऊपर से घी के संग दो ग्रास रोटी के खाय तो बवासीर का खून बंद हो।

अथवा

रसौत दो भाग अनार का छिलका चार भाग गुड़ आठ भाग कूटछान कर गोलिया बनावे मात्रा चौदह माशे तक खाय तो खूनी और बादी बवासीर को गुण करे।

अथवा

सफेद सज्जी सफेद चूना भुने चने प्रत्येक दो तोले चार माशे कूट छानकर नौ तोले चार माशे गुड़ में मिलाकर बत्तीस नग गोलियां बनावे एक २ गोली दोनों समय खाय।

अथवा

साढ़े तीन माशे हड़ और पौने दो माशे स्याह जीरा दोनों को भून कूट छानकर गदना के जलमें गोलियां बनावे मात्रा एक गोली।

गोली गूगल की, कि बवासीर खूनी और बादी को गुणदायक है काबली हड़का बक्कल बहेड़े का बक्कल आंवला प्रत्येक दो तोले ग्यारह माशे सीप जलाकर बारहसींगे का सींग जलाकर प्रत्येक साढ़े तीन माशे अजवायन साढ़े दस माशे गूगल सब औषधियों के बराबर लेकर पानी में गोलियां बनावें।

अथवा स्याह हड़ बहेड़ा आंवला प्रत्येक एक भाग कंद बराबर गुलाब वा पानी में पीसकर गोलियां बनावें मात्रा सात माशे।

अथवा बकायन के पत्ते पावसेर खारीनोन एक तोले आठ माशे पीसकर जंगली बेर के समान गोलियां बनावें।

गोली कि बवासीर खूनी को गुण करती है। मुर्गी के अण्डे का छिलका जला कर सदरूस चीता प्रत्येक पांच माशे लाल नौसादर कूट छान कर रीठे के बराबर गोलियां बनावे मात्रा छः गोली।

हलवा कि बवासीर के खून बहने को गुणदायक है मुचकुन्द के फूल महीन कूट छानकर बूरे और घी में हलवा बनावें मात्रा एक तोले।

अवलेह कि बवासीर खूनी और बादी को गुण करे। काबली हड़ का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आंवला, धनियां प्रत्येक एक भाग गूगल गदना के जल में पीस कर त्रिगुण शहद में बनावें।

चूर्ण कि बवासीर का खून बंद करे एक नग नारियल के ऊपर का छिलका लेकर जलावें और उस के बराबर बूरा मिलावें और तीन मात्रा करें रुधिर बंद हो और एक वर्ष पर्यन्त बंद रहे।

अथवा बकायन के बीजों की मींगी, सौंफ साढ़े तीन माशे कूट छान कर उसकी बराबर बूरा मिलाकर फक्की बनावें मात्रा पौने दो माशे।

अथवा अरण्ड जला कर गेहूं जलाकर बराबर पीसे तीन माशे तक

दो तोले घी के संग देवें बवासीर का खून बंद होवै।

अथवा कड़वे इन्द्रजौ कि सब काम में मीठों से उत्तम हैं बवासीर के दस्त के लिये परीक्षित हैं प्रति दिन छै माशे ठंडे जल के संग सेवन करें।

अथवा अंकोल की जड़ एक माशे कालीमिर्चें बराबर लेकर फक्की बनाकर खाय और उसकी धूनी लेना भी ववासीर को गुण करती है।

अथवा कसूम के फूल तीन माशे पानी में पीस कर दही में मिलाकर खाय।

अथवा मूली के पत्ते काट कर छाया में सुखावें फिर कूट छान कर एक हथेली भर बराबर बूरा मिलाकर फक्की बनावें और चालीस दिवस पर्यन्त फांकें।

चूर्ण कालीजीरी का, बवासीर खूनी और बादी को गुणदायक है कालीजीरी साढ़े दस माशे आधी भुनी आधी कच्ची प्रति दिन साठी चांवलों के पानी संग साढ़े तीन माशे खाय।

अथवा कालीहड़ घी में भून कर बूरा मिलावें और प्रति दिन एक तोले खाया करें।

चूर्ण अखरोट कि बवासीर के खून को बंद करता है अखरोट का छिलका जला करके पिसी विष्टम्भी रुब्ब के संग खाय।

चूर्ण हुलहुल का कि बवासीर खूनी और बादी को गुण करता है हुलहुल के बीज एक भाग बूरा दो भाग मिलाकर खाय मात्रा दो माशे।

अथवा निर्मली जला कर थोड़ासा बूरा मिला कर खाय।

अथवा इमली के बीजों की राख एक माशे से दो माशे तक दही के संग खाय।

अथवा पांच सेर कंडा जलाकर उनकी राख घड़े में रखकर आधा घड़ा पानी उसमें डालकर आठ दिन रक्खें और प्रति दिन घड़े को हिलाता रहे आठवें दिन पानी को निथारकर कपड़े में छान कर मिट्टी के तगार में रक्खें और उसको कपड़े में छान करके छाया में सुखावे फिर प्रति दिन छ माशे उसमें से लेकर सात दिवस पर्यन्त खाय और इस काल में भात और मूंग की दाल अथवा खिचड़ी भोजन करें और सात दिवस पश्चात फिर खाय और पथ्य न करें चौदह दिन में बवासीर दूर हो और फिर नहो।

अथवा एक नग फला के बीज की मींगी महीन पीसकर बूरा मिलाकर खाया करें और सेवन समय चिकना भोजन खाय ।

अथवा जंगली कबूतर की बीट धतूर के फूल की जर्दी बराबर लेके महीन पीस कर एक माशे प्रात काल थोड़ासा गुलाब मिलाकर खाय खटाई और बादी से बचते रहें तीन दिन में आराम हो ।

अथवा बबूर के फूल लेकर और कूट छान कर बराबर का बूरा मिलाकर प्रात काल एक हथेली भर खाया करें ।

अथवा सफाहूली छाया में सुखा कर महीन पीसें और अर्द्धभाग काली मिर्च पीस कर मिलावें दस माशे ताजा जल के संग खाय ।

अथवा गेरू खरिया मिट्टी बराबर कूट छान कर दस माशे दधि और भात के संग तीन दिवस पर्यन्त प्रात काल खाया करें तो बवासीर का रुधिर बंद होवे ।

अथवा जमीकंद के टुकड़े २ करके छाया में सुखावें फिर कूट छानकर दस माशे प्रात काल ही खायं ।

अथवा करील की छाल, रक्त चंदन, नागकेशर, रसौत बराबर फकी बनाकर नित्य सात माशे खाया करें ।

चूर्ण कि बवासीर की पीड़ा को शान्ति करता है कागली हड़ का बक्कल, घृत में भून के सोंफ प्रत्येक एक भाग कूट छान कर हाथयों के बीज दो भाग साबित मिलाकर प्रति दिवस नौ माशे एक चमचा मिठाई मिलाकर खाय ।

काढ़ा कि बवासीर को जड़ से खो देवे करील की जड़ छाया में सुखा के फिर जौकुट करके तीन सेर जल में औटावें जब आधसेर रहे छानकर पाव-सेर प्रात काल और शेष सायकाल को पान करें सात वा दस दिन में रुधिर बंद हो जाय नहीं तो बवासीर थोड़े ही काल में जाती रहेगी ।

अथवा बाबा के फूल एक तोला आठ माशे एक प्याले जल में भिगोदे और ओस में रखदे प्रातःकाल बिना छाने पिवें ऊपर से एक तोला आठ माशे बूरा खाय ।

अथवा

आंवला, महदी की पत्तियां प्रत्येक पन्द्रह तोले रात को डेढ़ पाव पानी में

अथवा खिसोड़े जलाकर या पुरानी चलनी की खाल जलाकर बुर्के।
अथवा माजूफल, अनार का छिलका पीस कर बुर्के तो काँच निकलने को गुण करे।

फसल गुरदे और मसाने के रोगों की चिकित्सामें।

गुरदे और मसाने की पथरी में स्थान की पीड़ा से फर्क निश्चय हो सक्ता है ऐसी और पथरी गुरदे में लाल रंगकी होती है और मसाने में सफ़ेद रंग की।

चिकित्सा गाढ़ी वस्तु न खाय और इस रोग में तबियत को नरम रखना उचित है अंगूर के पत्तों का शर्बत गुरदे की पथरी को गुण करता है।

विधि मुनक्का पंदरह दिरम अर्थात चार तोले साढ़े चार माशे, पियाबासा दो तोले, गोखरू तीन तोले, खर्बूजे के बीज जौ कुट डेढ़ तोले सौंफ जौ कुट दस माशे, अंगूर की नरम पत्ती ग्यारह तोले आठ माशे एक रात्रि दिन पानी में भिगोवे सवेरे ही औटा कर तिगुने बूरे की चाशनी कर शर्बत बनावें।

सफूफ हजरुल यहूद

कि गुरदे और मसाने की पथरी को दूर करे हजरुल यहूद दस माशे, खर्बूजे के बीजों की मींगी, खीरा ककड़ी के बीजों की मींगी, अजमोद, बबूर का गोंद, गोखरू, कुलथी, सात २ माशे, सौंफ कूट छान कर तीन माशे, अजमोद बबूर का गोंद साढ़े तीन माशे कूट छान कर चूरन बनावे मात्रा २८ माशे चने के काढ़े के संग और जो इन दवायों को तिगुने शहद के संग चाशनी में मिलावे तो उसे हजरुल यहूद का पाक कहते हैं।

चूर्ण दाऊदी के फूलों का, कि मसाने की पथरी को गुण करता है दाऊदी के फूलों की पंखड़ी सुखाकर कूट छान कर बराबर का बूरा मिलाकर खाय और औटा कर पीना भी गुण करता है।

दवा जवाखार, सुहागा दो २ माशे लेकर गोखरू के रस के संग पियें।
अथवा नीम के पत्ते जलाकर उनका सार निकाले दो माशे खाया करे।
अथवा अंगूर की लकड़ी की राख छ माशे गोखरू के रस के संग खाय।
अथवा कजा की कोंपल जलाकर सात माशे दो तोले शहद के संग खाय।
अथवा तिल की लकड़ी जलाकर सात माशे चौदह माशे सिरके संग खाय

अथवा भगली कबूतर की बीट सात माशे बराबर का बूरा मिलाकर पानी के सग खाय माय' उस कबूतर की बीट जिसको दाने के बदले अलसी खिलाई जावे ।

अथवा कंजा की मिंगी मसाने और गुरदे की पथरी को गुण करती है कंजा की मींगी कूट छानकर एक माशे, तीन माशे शहद के सग खाय और एक२ माशे नित्य बढ़ाता जाय और ग्यारह दिन पीछे इसी प्रकार घटावे जब तीन माशे रह जाय मसाने की पथरी दूर हो जायगी ।

आबजन जिसके दो भेद हैं एक तो यह कि दवा का पानी वा गरम पानी सादा बड़े बासन में भरके उसमें रोगी बैठे और दूसरा तरडा कि पानी को लोटा तथा मशक में भरके दूर से रोगी के जोड़ों पर डालें ।

आबजन कि गुरदे और मसाने की पथरी को गुण करता है । फर्ख के पत्ता, मूली के पत्ता, शलगम के पत्ता, बिस के पत्ता, खतमी के पत्ता पौने दो२ तोले पानी में औटाकर जब आधा पानी रहे तब उसमें बैठावे ।

अथवा कबूतर की बीट, सोया के बीज, करौंदा के बीज, सौंफ की जड़ गोखरू, खर्बूजे के छिलका, मेथी, खतमी के बीज, आबनाब थोड़ा लेकर औटाकर उस पानी में रोगी को बैठावे ।

काढ़ा कि गुरदे और मसाने की पथरी को तोड़ता है मुलहटी, कुलथी दस२ माशे, सौंफ तीन तोले चार प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला पानी रह जावे तब छानकर तीन माशे सेंधानोंन और थोड़ा घी मिलाकर पीवे

अथवा मुहम्मद जकरिया ने लिखा है कि जो आरुर के पेड़की कोंपल औटाकर थोड़ा बूरा मिलाकर नौ दिन पीवे वो मसाने की सब बीमारियों को दूर करे ।

अथवा काहू के पत्तों के सग औटाकर उसका पानी पीवे और फलोंनी की अबारिश जो उदर रोग में लिखी है वह गुरदे और मसाने की पथरी को दूर करती है ।

अथवा पत्थर की कोड़ी कि एक पेड़ है उसकी पत्ती चौदह माशे पीस छानकर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे तो गुरदे की पथरी दूर हो और सूखे पत्ते हरे पत्तों से थोड़ा गुण करते हैं ।

अथवा यह गुरदे की पथरी को गुण करे है और पेशाब को जारी करे

है बुहारी की सींकों के फूल दो तोले लेकर दो पहर पानी में भिगोवे उसका निथरा पानी लेकर उसमें खीरा, ककड़ी के बीज, गोखरू, जवासे प्रत्येक आ माशे नागरा दो माशे पीस छानकर मिलावे और थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

अथवा मूली के पत्तों का रस चार तोले आठ माशे निचोड़ कर तीन माशे अजमोद फाक और उसी से निगल जाय।

अथवा यह गुर्द और मसाने की पथरी को गुण करे पोई की पत्ती महीन पीस कर पिये और चौराई का साग खाना पथरी को गुण करता है।

अथवा जो गुरद में वाय का दर्द हो तो रेंडी की मींगी पीसकर गुनगुनी गुनगुनी लगावे।

आवजन कि पथरी को गुण करे नील की पत्ती पानी में औटा कर रोगी को उसमें बैठावे।

दवा कि सर्दी के गुरदे के दर्द को गुण करे अरंड के पांच दाने निगलना प्रारम्भ करे और नित्य पांच दाने बढ़ाता जाय जब सौ दाने तक पहुच जाय फिर इसी प्रकार कम करे तो गुरदे का दर्द बन्द होवे।

अथवा जो तिल के पेड़ की कोंपल छाया में सुखाकर जलावे और नित्य सात माशे अथवा दस माशे खाया करे तो गुर्दे की पथरी दूर होवे।

अथथा जवासे का रस पथरी के रोगों को गुण करता है और स्त्री धर्म की रुकावट को भी दूर करता है।

अथवा तिवली के तेल की मालिश गुर्दे और मसाने की पथरी और सर्दी को गुण करती है इस का नुसखा पक्षाघात में लिखा है।

गुण जालीनूस ने लिखा है कि लोहे की अगूठी तथा छल्ला पहनना भी पथरी को गुण करता है।

फ़सल सोज़ाक की चिकित्सा में.

इस रोग में ऐसी ठंडी दवा काम में लावें जो पेशाब लाने वाली हों और सब लुआब पेशाब की जलन को गुण दायक हैं कुलफा के बीज, सफ़ेद पोस्त के दाने, खीरा ककड़ी के बीज, खर्बूज के बीजों की मींगी, तरबूज के बीजों की मींगी हर २ तोले छोटे गोखरू बबूर का गोंद कतीरा साबे २ माशे इसबगोल के लुआब में गोलियां बनावें मात्रा तीन माशे

गोली कि पेशाब की जलन को बन्द करे सदरजि को जलाकर पानी

में डाले और उस की बराबर खिले चने भुना हुआ कतीरा पीसकर मिलावें और चने के प्रमाण गोलियां बनावे एक गोली गोखरू के रस में खाय।

गोली कि सोजाक को गुण करे। पियावासा का छोटा पेड़ जलाकर उसकी राख कतीरे के जल में मिलाकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे और प्रातः काल एक गोली गुलखैरा के जल के संग जो रात को भीगा हो पीवे तो नया और पुराना सोजाक जाय।

चूर्ण

कि सोजाक को गुण करे। सेलखड़ी, राळ, मिश्री दो दो तोला तालम खाने, गोखरू, सरफोंकी एक तोले कूट छानकर चौदह भाग करे और नित्य एक भाग बकरी के दूध के संग फांके।

अथवा यह सोजाक को गुण करे और पीब को गुण करे भुनी फिटकरी, गेरू, साढ़े तीन माशे बराबर बूरा मिलाकर चूर्ण बनावे और नित्य सात माशे गौ के दूध के संग खाय।

दवा

कि सर्द प्रकृति की सोजाक को गुण करे सहजने का गोंद नित्य प्रात काल पीस कर एक तोले सात दिन दही के संग खाय।

चूर्ण कि सोजाक को गुण करे। तालमखाने, कुलफा के बीज सिरफोंकी गोखरू, काहू के बीज, सेलखरी बराबर लेकर चूरन बनावे मात्रा एक तोले गौ के दूध के संग खाय।

अथवा

यह सोजाक के मवाद को दूर करे कतीरा, भांग के बीज, सिरफोंकी राल, कावाचीनी बद, लाल बीजबद, बराबर लेकर चूरन बनावे मात्रा सातमाशे

अथवा यह सोजाक को गुण करे हलदी, आंवले, बराबर कूट छान कर उसकी बराबर बूरा मिलावे मात्रा एक तोले पानी के संग फांके तो नया सोजाक सात दिन में जाय और रह जाय तो दो महीने तक लेना उचित है।

अथवा यह चूरन सोजाक के पीप को जो जलन के साथ जाती हो गुण करता है। राल पीसकर बराबर की मिश्री मिलाकर अठारह दिन तक दस माशे खाय।

अथवा

यह सोजाक को गुण करता है और पीब को दूर करता है ढाक की कोंपल

है बुहारी की सींकों के फूल दो तोले लेकर दो पहर पानी में भिगोवे उसका निवरा पानी लेकर उसमें खीरा, ककड़ी के बीज, गोखरू, जवासे प्रत्येक छः माशे भांगरा दो माशे पीस छानकर मिलावे और थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

अथवा मूली के पत्तों का रस चार तोले आठ माशे निचोड़ कर तीन माशे अजमोद फाक और उसी से निगल जाय।

अथवा यह गुर्दे और मसाने की पथरी को गुण करे पोई की पत्ती महीन पीस कर पियें और चौराई का साग खाना पथरी को गुण करता है।

अथवा जो गुरदे में वाय का दर्द हो तो रेंडी की मींगी पीसकर गुनगुनी गुनगुनी लगावे।

आवजन कि पथरी को गुण करे नील की पत्ती पानी में औटा कर रोगी को उसमें बैठावे।

दवा कि सर्दी के गुरदे के दर्द को गुण करे, असपंद के पांच दाने निगलना प्रारम्भ करे और नित्य पांच दाने बढ़ाता जाय जब सौ दाने तक पहुंच जाय फिर उसी प्रकार कम करे तो गुरदे का दर्द बन्द होवे।

अथवा जो तिल के पेड़ की कोंपल छाया में सुखाकर जलावे और नित्य सात माशे अथवा दस माशे खाया करे तो गुर्दे की पथरी दूर होवे।

अथवा जवासे का रस पथरी के रोगों को गुण करता है और स्त्री धर्म की रुकावट को भी दूर करता है।

अथवा तितली के तेल की मालिश गुर्दे और मसान की पथरी और सर्दी को गुण करती है इस का नुसखा पक्षाघात में लिखा है।

गुण जालीनूम ने लिखा है कि लोहे की अगूठी तथा छल्ला पहना भी पथरी को गुण करता है।

फ़सल सोजाक की चिकित्सा में

इस रोग में ऐसी ठंडी दवा काम में लावें जो पेशाब लाने वाली हों और सब लुआब पेशाब की जलन को गुण दायक हैं कुलफा के बीज, सफ़ेद पोस्त के दाने, खीरा ककड़ी के बीज, खर्बूजे के बीजों की मींगी, तरबूज के बीजों की मींगी डेढ़ २ तोले छोटे गोखरू बबूर का गोंद कतीरा सात २ माशे इसके गोली के लुआब में गोलियां बनावें मात्रा तीन माशे

गोली कि पेशाब की जलन को मन्द करे मेहदाने को भिगोकर पानी

में डाले और उस की बराबर खिले चने भुना हुआ कतीरा पीसकर मिलावे और चने के प्रमाण गोलियां बनावे एक गोली गोखरू के रस में खाय।

गोली कि सोजाक को गुण करे। पियाबांसा का छोटा पेड़ जलाकर उसकी राख कतीरे के जल में मिलाकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे और प्रातः काल एक गोली गुलखैरा के जल के संग जो रात को भीगा हो पीवे तो नया और पुराना सोजाक जाय।

चूर्ण

कि सोजाक को गुण करे। सेलखड़ी, राळ, मिश्री दो दो तोला तालमखाने, गोखरू, सरयाळी एक तोले कूट छानकर चौदह भाग करे और नित्य एक भाग बकरी के दूध के संग फांके।

अथवा यह सोजाक को गुण करे और पीब को गुण करे भुनी फिटकरी, गेरू, साढ़े तीन माशे बराबर बूरा मिलाकर चूर्ण बनावे और नित्य सात माशे गौ के दूध के संग खाय।

दवा

कि सर्द प्रकृति की सोजाक को गुण करे सहजने का गोंद नित्य प्रात काल पीस कर एक तोले सात दिन दही के संग खाय।

चूर्ण कि सोजाक को गुण करे। तालमखानें, कुलफा के बीज सिरयाळी गोखरू, काहू के बीज, सेलखरी बराबर लेकर चूरन बनावे मात्रा एक तोले गौ के दूध के संग खाय।

अथवा

यह सोजाक के मवाद को बंद करे कतीरा, भांग के बीज, सिरयाळी राळ, कालाबीज बंद, लाळ बीजबंद, बराबर लेकर चूरन बनाये मात्रा सातमाशे

अथवा यह सोजाक को गुण करे हलदी, आंवले, बराबर कूट छान कर उसकी बराबर बूरा मिलावे मात्रा एक तोले पानी के संग फांके जो नया सोजाक सात दिन में जाय और रह जाय तो दो महीने तक लेना उचित है।

अथवा यह चूरन सोजाक के पीब को जो जलन के साथ जाती हो गुण करता है। राल पीसकर बराबर की मिश्री मिलाकर अठारह दिन तक दस माशे खाय।

अथवा

यह सोजाक को गुण करता है और पीब को दूर करता है ढाक की कोंपल

सुखाकर ढाक का गोंद, ढाक की छाल और ढाक के फूल कूट छान कर बरा-बर का बूरा मिलाकर नौ माशे नित्य दूध के संग फांके परीक्षित है।

अथवा शोरा कलमी, बड़ी इलायची चौदह २ माशे कूटछान कर ऐ भाग करे एक भाग सन्ध्या और एक भाग सवेरे पानी के संग खाया करे और चौथे दिन से इस प्रकार खाय कि नौ माशे या एक तोले साठी चावलों को पानी में भिगो कर सवेरे उसके पानी के संग तीन दिन तक खाय।

अथवा ताजखरूस एक पेड़ है कि हिन्दी में उसे मुर्ग का कश कहते हैं उसकी जड़ एक तोले, दो तोले सफेद कंद में मिलाकर चूरन बनावें और नित्य बीस दिन तक खाय।

अथवा बड़ की कोंपल छाया में सुखा के पीसे और बराबर की बूरा मिलाकर दूध की लस्सी के संग नित्य प्रातःकाल के समय खाय दवा दो तोले गेहूं का सत एक प्याले पानी में रात को घोल दे प्रात काल पिये।

नकूय अर्थात् भीगी दवा मुहदी, आवले, सफेद जीरा दो तोले चार२ माशे, सब सेर भर पानी में भिजोय आठ पहर और उसमें से आधपाव प्रात काल और आधपाव सायंकाल पीवे जब पानी थोड़ा रह जाय तब और डाल दे।

अथवा फालसे की जड़ चौदह माशे जौकुट करके रात्रि को पानी में भिगोदे प्रात.काल-मल छान कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

अथवा आम की छाल जौकुट करके दो तोले चार माशे पावभर पानी में भिगोकर जब रात भर भीग चुके प्रातःकाल मल छान कर सात दिन पीवे।

अथवा सदासुहागन पेड़ के पत्ता एक तोले रात को पानी में भिगोवे प्रातःकाल मल छानकर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

अथवा कड़वी खल चौदह माशे जौकुट कर रात को पानी में भिगोवे प्रातःकाल उसका निथरा पानी पीवे।

अथवा-चार माशे बीजाबोल रात को पानी में भिगोवे प्रात काल उस के निथरे पानी में भिगो मिश्री मिलाकर पीवे।

अथवा एक तोले रीठा रात को पानी में भिगो दे प्रात काल उसको निथार कर पीवे।

कुर्सकाकनज अर्थात् पिटकौआ की टिकिया सुजाक और गुर्दे और मसाने के घाव को गुण करे और पेशाब को खोले पिटकौआ चौदह माशे,

खीरा, ककड़ी व बीज, कुलफे के बीज, छिली मुलहटी औकूट करके, सफेद पोस्त के दाने दस २ माशे, कतीरा, बबूर का गोंद, गेरू सात २ माशे, अजगोद, सोंद तीन माशे, अफीम पौने दो माशे, कूट छानकर ईसबगोल के लुआब से टिकिया बनावे मात्रा चौदह माशे।

काढ़ा सोजाक को गुण करे सखाहुली औटाकर पीवे।

अथवा यह काढ़ा सोजाक और पेशाब की कठिनता को गुण करे। खैर की जड़ सात प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला पानी रहे छान कर पीवे और इसी प्रकार तीन दिन तक पीवे।

अथवा यह सोजाक को गुण करे। गुड़हर के फूल पहले दिन एक नग बताशे में धर के खाय इसी प्रकार चार दिन तक नित्य एक २ बढ़ावे पांचवें दिन से इसी प्रकार घटावे जब एक नग रह जाय ईश्वर करे तो सोजाक जाता रहे।

अथवा नीम के पत्ता, चमेली के पत्ता औटाकर उसके गुनगुने पानी इन्द्री को रक्खे और भफारा से आध घड़ी पीछे उसमें पेशाब करे।

अथवा सर्यारा अर्थात् ताजखरूस के बीज जिन्हें हिन्दी में कुलफा कहते दस माशे महीन कूट कर आध सेर दूध में रात को भिगो कर चांदनी में धरे प्रात काल को पीवे तो सोजाक और प्रमेह को गुण करे और वीर्य पैदा करे परंतु थोड़ासा बूरा मिलालेना उचित है कि बूरा सुर्यारे की काग है।

अथवा केले के पेड़ का रस निचोड़ कर पीवे तो पेशाब की जलन जाय।

अथवा जोंक कि हिन्दी पेड़ है बहुधा करके चौमासे में पैदा होता है उस की पत्तियां और फल एक तोले लेकर पानी में पीस कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे तो सोजाक जाय और दो बताशे में भर कर बड़ का दूध तीन दिन प्रातःकाल खाय तो सोजाक जाय।

अथवा सात माशे जवाखार गाय के दही में पीवे तो सोजाक जाय।

अथवा गंधा बिरोजा थोड़े गुड़ में लपेट कर खाय और उस पर कुलफे का पानी में घोल कर पीवे।

अथवा सिरस के पत्ता पीस कर पानी में छान कर मिश्री या बूरा थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे तो सोजाक जाय।

अथवा बबूर की कोंपल एक तोले, गोखरू एक तोला दोनों को औटा छान कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

सुखाकर ढाक का गोंद, ढाक की छाल और ढाक के फूल कूट छान कर बराबर का बूरा मिलाकर नौ माशे नित्य दूध के संग फांके परीक्षित है।

अथवा शोरा कलमी, बड़ी इलायची चौदह २ माशे कूटछान कर पै भाग करे एक भाग संध्या और एक भाग सवेरे पानी के संग खाया करे और चौथे दिन से इस प्रकार खाय कि नौ माशे या एक तोले साठी चांवलों के पानी में भिगो कर सवेरे उसके पानी के संग तीन दिन तक खाय।

अथवा ताजखरूस एक पेड़ है कि हिन्दी में उसे मुर्ग का केश कहते हैं उसकी जड़ एक तोले, दो तोले सफेद कंद में मिलाकर चूरन बनावे, और नित्य बीस दिन तक खाय।

अथवा वड़ की कोंपल छाया में सुखा के पीसे और बराबर की बूरा मिलाकर दूध की लस्सी के संग नित्य प्रातःकाल के समय खाय दवा दो तोले गेहूं का सत एक प्याले पानी में रात को घोल दे प्रात काल पिये।

नकूय अर्थात् भीगी दवा मेंहदी, आंवले, सफेद जीरा दो तोले चार २ माशे, सब सेर भर पानी में भिगोय आठ पहर और उसमें से आधपाव प्रात काल और आधपाव सायंकाल पीवे जब पानी थोड़ा रह जाय तब और डाल दे।

अथवा फालसे की जड़ चौदह माशे जौकुट करके रात्रि को पानी में भिगोदे प्रात काल मल छान कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

अथवा आम की छाल जौकुट करके दो तोले चार माशे पावभर पानी में भिगोकर जब रात भर भीग चुके प्रातःकाल मल छान कर सात दिन पीवे।

अथवा सदासुहागन पेड़ के पत्ता एक तोले रात को पानी में भिगोवे प्रातःकाल मल छानकर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

अथवा कड़वी खल चौदह माशे जौकुट कर रात को पानी में भिगोवे प्रातःकाल उसका नितरा पानी पीवे।

अथवा चार माशे बीजाबोल रात को पानी में भिगोवे प्रात काल उस के नितरे पानी में भिगो मिश्री मिलाकर पीवे।

अथवा एक तोले रीठा रात को पानी में भिगो दे प्रात काल उसको निथार कर पीवे।

कुर्सकाकनज अर्थात् पिटकौआ की टिकिया सुजाक और गुर्दे और मसाने के घाव को गुण करे और पेशाब को खोले पिटकौआ चौदह माशे

खीरी ककड़ी के बीज, कुड़के के बीज, छिली मुलहटी जौकुट में एक सफेद पोस्त के दाने दस २ माशे, कतीरा, बबूर का गोंद, गेरू सात २ माशे, ... मोहर साढ़े तीन माशे, अफीम पौने दो माशे, कूट छानकर ईसबगोल के लुआब में टिकिया बनावे, मात्रा चौदह माशे।

काढ़ा सोजाक को गुण करे सखाहूली औटाकर पीवे।

अथवा यह काढ़ा सोजाक और पेशाब की कठिनता को ... गोहर की जड़ सात प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला पानी रह छान कर पीवे और इसी प्रकार तीन दिन तक पीवे।

अथवा यह सोजाक को गुण करे। गुड़हर के फूल पह नग बताशे में धर के खाय इसी प्रकार चार दिन तक नित्य एक २ बढ़ावे पाँचवें दिन से इसी प्रकार घटावे जब एक नग रह जाय ईश्वर करे तो सोजाक जाता रहे।

अथवा नीम के पत्ता, चमेली के पत्ता औटाकर उसके ... इंद्री को रक्खे और बफारा ले आध घड़ी पीछे उसमें पचाव

अथवा सर्पारा अर्थात् तालमखाने के बीज जिन्हें हिन्दी में ... दस माशे महीन कूट कर आध सेर दूध में रात को भिगा कर चांदनी में ... खरे प्रातःकाल को पीवे तो सोजाक और प्रमेह को गुण करे और वीर्य को ... गाढ़ा करे परन्तु थोड़ासा बूरा मिलालेना उचित है कि बूरा खुर्शी की खांड है ...

अथवा केले के पेड़ का रस निचोड़ कर पीवे तो पेशाब की जलन जाय।

अथवा चौंक कि हिन्दी पेड़ है बहुधा करके चौमासे में पैदा होता है ... स की पत्तियां और फल एक तोले लेकर पानी में पीस कर थोड़ा बूरा ... मिलाकर पीवे तो सोजाक जाय और दो बताशे में भरे कर बड़ का दूध तीन ... दिने प्रातःकाल खाय तो सोजाक जाय।

अथवा सात माशे जवाखार गाय के दही में पीवे तो सोजाक जाय।

अथवा गंधा बिरोजा थोड़ा गुड़ में लपट कर खाय और उस के ऊपर ... पानी में घोल कर पीवे।

अथवा सिरस के पत्ता पीस कर पानी में छान कर मिश्री के मुना... थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे तो सोजाक जाय।

अथवा बबूर की कोंपल एक तोले, गोखरू एक तोले दोनों ... छान कर थोड़ा बूरा मिलाकर ...

दवा कि सोजाक का गुण करे गाय का दूध थाड़े पूरे और कतीरा के सग सदैव पीना पुराने सोजाक को अच्छा करता है।

अमल अर्थात् टोटका कि स्त्री के सोजाक को गुण करता है स्त्री एक कपड़ा अपनी योनि में भिगाकर थवदार कुतिया को तीन दिन खवावे तो सोजाक जाय।

पिचकारी कि इन्द्री के भीतर के घव को गुण करे नीलाथोथा तीन माशे, फिटकरी छैः माशे, आध सेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहे तब शीशे में भर के पिचकारी ले जो इस दवा से रुधिर आने लगे तो कुछ डर नहीं और जो पीड़ा बढ़ जाय तो स्त्री के दूध की पिचकारी ले और कोई मनुष्य इस दवा में सफेद कत्था भी बढ़ाते हैं पिचकारी कि पशाब की जलन को दूर करे देकामाली एक तोला, तीन तोले कड़वे तेल में औटावे जब खूब जल जाय तब छान कर सब की पिचकारी ले।

अथवा कत्था, मुर्दासंग, रसौत सात २ माशे, भुना नीला थोथा चार रत्ती औटाकर पिचकारी ले सोजाक जाय।

अथवा त्रिफला का बक्कल दस माशे, नीलाथोथा सात माशे, सब को कूट कर रात को पानी में भिगोवे प्रातःकाल पिचकारी ले।

श्याफ अर्थात बत्ती जो सोजाक को गुण करे कत्थासफेद, मुर्दासंग, राल, बबूर का गोंद, गेरू सब बराबर महीन करके बत्ती बनाकर इन्द्री के छिद्र में रखे और कभी इस दवा में अधिक पीड़ा के समय अफीम बढ़ाते हैं और जलन की विशेषता में कपूर बढ़ाते हैं।

कुतूर अर्थात टपकाने की दवा इन्द्री के घाव का गुण करे। बबूर का गोंद, गेहूं का सत्तू, स्त्री के दूध में घोल के इसबगोल का लुआब यह सब इन्द्री के घावों को गुणदायक हैं।

अथवा तालाब की काई निचोड़ कर थोड़ासा पानी इन्द्री के छिद्र में टपकावे।

कसरत पेशाब की विशेषता में

जो मसाने की शिथिलता से और सरदी की विशेषता से हो तो मूत्र गरम करने वाली दवाई काम में लावें।

जारिशा अर्थात् पाचन जो पेशाब को रोके त्रिफला का बक्कल पं...

में पकरा कर गुलनार, नागरमोथा नौ २ माशे, लोहबान, अजवायन साढ़े चार २ मथ शहद में पाचन बनावे।

जवारिश नागरमोथा अर्थात पाचन पेशाब की विशेषता और निर्बलता और मसाने की सरदी और धरन की सर्दी को गुण करती है और उदर और कलेजे को गरम करे। नागरमोथा एक सालं दश माशे पीस कर सिरके में मिलावे तीन दिन शहद में भिगो और सुखाकर कूट छान कर पाव सेर गुरे में चाशनी करे।

लोहबान की जवारिश पेशाब की विशषता को गुण करती है लोहबान, गुलनार, साढ़ चार २ माशे, मस्तगी तीन माशे कूट छान कर शहद में मिलावे मात्रा एक तोले।

कबोजी की जवारिश

पेशाब की विशपता को गुण करे इस का नुसखा उदर विकार में लिख आये हैं।

चूर्ण कि पेशाब को रोकता है लोहबान, नागरमोथा, कुंदीमन, काला-जीरा, बतून इस्बगोलास, धनियां सिरके में भिगाकर सुखाओ और पीसकर चूरन बनाले मात्रा ६ माशे।

अथवा तिल, अजवायन एक भाग लेकर चूरन बनाय एक हथेली भर भर फांके या गुड़ में मिला के गोलियां बनावे मात्रा सात माशे।

दवा पेशाब की विशेषता को गुण करे। सिसौड़ की पत्ती एक तोले लेक उस का लेप निकाले और एक तोले चूंग मिलाकर पीवे।

तिला पेशाब की विशषता को गुणदायक है इमली के बीजों की मींगी संहभने के पत्ते, दोनों को पीस कर नित्य ठुड्डी के नीचे लगावे।

चूरण कि पेशाब की विशपता को गुण करे। सिंघाड़े खुश्क पीस छानकर एक तोले खाय।

अथवा खजूर की कच्ची फली छाया में सुखाकर कूटछान घी में भूनकर थोड़ा चूरा मिलाकर सध्या सवेर पेली २ भर खाया करें।

दवा कि सोते समय पेशाब हो जाने का गुण करे माजूफल एक नग, रेहां के बीज थोड़े कूट छानकर खा ले।

अथवा कुन्दीमन थोड़ा ठंडे पानी के संग खाना बहुत अच्छा है।

अथवा कबूतर की बीट आटे में गूंदकर रोटी बना कर खाय तो सोते समय पेशाब हो जाने को गुण करे।

अथवा बकरी का सींग जलाकर शहद में मिलाकर खाय मात्रा एक तोले आठ माशे तक।

कसल पेशाब के बंद होजाने में

इस रोग के उत्पन्न होने के बहुत से भेद हैं जो पेशाब मसाने और गुर्दे की सूजन से बंद हो तो प्रथम बासलीक नस की फस्द खुलवावे उसके पीछे पेशाब जारी होने की दवा काम में लावे।

अथवा

कि पेशाब बन्द होने को गुण करे। राई, कलमीशोरा एक २ माशे लेकर बराबर का बूरा मिलाकर दो मात्रा करे प्रातः काल खाय तो गुण करे।

दवा कि बंद पेशाब को खोले गेंदा की पत्ती दो तोले का पानी में शीरा निकाल कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

तिला कि पेशाब को खोले मूसे की मेंगनी एक तोले आठ माशे पानी में पीस कर गुनगुनी २ इन्द्री के नीचे लगावे।

दवा थोड़ा कपूर इन्द्री के छिद्र में रखे तो पेशाब खुले।

अथवा कलमीशोरा कपड़े में भिगोकर इन्द्री के नीचे रक्खे।

अथवा दो माशे पारा पिचकारी में रखकर इन्द्री के छिद्र में पहुंचावे तुर्त पेशाब खुले और जो सोथ करके पेशाब बन्द न हुआ हो तो थोड़ा शोरा इन्द्री में रखे तो पेशाब खुलजाय।

अथवा

पांच रत्ती कोंच पीस कर पानी के संग फांके तो पेशाब खुलजाय।

अथवा भैंस के कान का मैल रोगी की इन्द्री के नीचे मले।

अथवा टेसू के फूल औटाकर इन्द्री के नीचे तड़ी दे।

अथवा चिरचिटा का पेड़ू पर लेप करे।

अथवा बिसखपरा की पत्तियों का रस निचोड़ कर दूध में मिलाकर पिये।

अथवा एक जूआं इन्द्री के छेद में छोड़े।

अथवा खटमल पीस कर इन्द्री के छेद में भरदे।

अथवा रोगी को गर्म जल में बैठावे।

अथवा गोखरू, खीरा ककड़ी, सौंफ,खर्बूज के बीज पानी में पीसकर पीव।

अथवा बकरी के गुनगुने दूध में टूंडी को रखे।

अथवा रेवत चीनी सौंफ के अर्क में पीसकर टूंडी के गिर्द लगाव।

अथवा सीपी पीसकर टूड़ी क गिर्द लगावे।

अथवा बारियाजुल अदविये में लिखा है कि मुर्गी के अंडे के छिलके को अदर से साफ करके पीसकर बराबर का बूरा मिलाकर पीवे तो पेशाब खुले।

अथवा मूंग का दाना एक रत्ती पानी में घिसकर पीवे।

अथवा सेंधानोन गुदा में रखे तो पेशाब खुले और तबियत को भी नरम करता है।

अथवा बिनौला पीस कर टूड़ी के ऊपर लगावे और एक रत्ती कपूर खाय।

अथवा शहतूत के रस में कलमीशोरा पीसकर टूड़ी के नीचे लगावे।

अथवा चौदह माशे इन्द्रायन की जड़ पीवे।

फ़सल पेशाव में रुधिर आने की चिकित्सा में

फिटकरी की टिकिया खाय। विधि फिटकरी भूनकर बारहसींग का सींग जलाकर कतीरा, गेरू, गुलनार, बबूर का गोंद, साढ़े तीन २ माशे कूट छान कर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माशे कुलफे के शीरे के संग यह टिकिया सोजाक को भी गुण करती है।

दवा कि रुधिर के पेशाब को गुण करे इसबगोल दाने चाकसू क खूब महीन पीसकर खाय और ऊपर से चन्दन बूरे का पानी पीवे।

अथवा जवासे पीसकर पीवे तो गुण करे।

दवा कि रुधिर के पेशाब को गुण करे और जलन को बद करे अनार का छिलका, छिली मसूर, बबूर की फली, लाहिये, तुतस, बाजरा, चन्दन थोड़ा २ लेके पानी में औटावे जब आधा रहे तब उस में बैठे।

फ़सल जोफ़ं बाह

अर्थात स्त्री से भोग करने की इच्छा न रहे अत्यन्त इच्छा तो दिल, मस्तक, कलेजे, उदर और गुरदे क बल पर है यहां थोड़ी सी सहज दवा जो इस रोग

को गुण दायक है वर्णन की जाती है।

छोटा अवलेह पाक

हिन्दुस्तानियों ने बनाया है बल को बढ़ाता और वीर्य को गाढ़ा और पैदा करता है और मूत्र प्रमेह को गुण करता है और मस्ती लाता है। बिनौला, रूई की मींगी, खर्बूजे के बीजों की मींगी, चिरोंजी, तिल सफ़ेद, पोस्त के दाने सेमर का मूसरा, सफ़ेद मूसली, शतावर, असगंध, सिंघाड़े का चून, छिल इमली के बीयाँ, खिसोंड़े एक २ तोले, केवड़े के बीज, प्याज के बीज, शलगम के बीज, मूली के बीज, मूफली, भुने ताल मखाने, समुद्रसोख, पैदा लकड़ी नौ नौ माशे, कुलीजन, चुनियाँ गोंद, नागरमोथा, मज, कौंच के बीज, छोटा गोखरू, इन्द्रजौ, बबूर की फली, कमलगट्टा की मींगी, धावा के फूल, ममर का गोंद, बीजबंद मोचरस छै २ माशे, गुजराती असगंध, सूना बढगन के बीज, अकरकरा, सोंठ पीपर, खुरासानी अजवायन तीन २ माशे कूटछानकर तिगुन कंद की चाशनी करे और जो बादाम की मींगी, अखरोट की मींगी, गिरी, एक २ तोले की भांग दो तोले इस में डाले तो अत्युत्तम है नहीं तो गरीबों को इसी प्रकार से अच्छा है मात्रा एक तोले छुहारे के दूध के संग लेवे।

किशमिश पाक कि बल को बढ़ावे और वीर्य का पैदा और गाढ़ा करे मोचरस, सालिब मिश्री, समदरसोख, स्याह मूसली, सफ़ेद मूसली, बादाम की मींगी दस २ तोले, शतावर ग्यारह तोले आठ माशे, सोंठ कुलीजन सात सात माशे, किशमिश आधसेर, कंद सेरभर, चाशनी करे मात्रा दो तोले से तीन तोले तक गाय के दूध के संग जिस में छुहारे पड़े हों खावे।

मालकांगनी पाक कि बल को बढ़ावे, मालकांगनी, अकरकरा केवड़े के बीज, लोंग, केसर, चौदह २ माशे, अस्पद सात माशे, सफ़ेद पोस्त के दाने दस तोले, सफ़ेद तिल चार तोले आठ माशे, मुर्गी के अंडे की जर्दी पांच नग चौगुन शहद और कंद में सब को मिला पाक बनावे।

दूसरा नुसखा मालकांगनी पाक का

हिन्दुस्तानी तरह पर मालकांगनी गोंगरे के रस में भिगोवे और फिर गाय के दूध और पानी में, जब दूध को सोखले तब पीसकर बराबर के शहद में पाक बनावे प्रथम दिवस पौने दो माशे खाय और इतना ही नित्य बढ़ाता जाय दो तोले चार माशे तक पहुंचावे और चालीस दिन तक खाय तो वृद्ध को तरुण करे।

पाक कि बल को बढ़ाव अकरकरा, लौंग, सोंठ दो २ तोले, अंडा की जर्दी २५ नग, सात छटांक शहत की चाशनी करे मात्रा चार तोले आठ माशे भोजन के प्रथम खाय।

पाक प्याज का रस सेर भर, एक सेर शहद आंच पर रखे जब चाशनी हो जाय तब लाल और सफेद तोदरी लालच मिश्री, बहमन सुर्ख और सफेद सोंठ, प्याज के बीज, मूली के बीज, गदना, शलगम के बीज, लाल मखाने, काली और सफेद मूसली प्रत्येक एक सेर शाही कूट छानकर पाक बनाले।

पेठे का पाक कि अति प्रमेह को बहुत उत्तम है और वीर्य को गाढ़ा करता है खर्बूजे के बीज, सफेद मूसली, पठे की मिठाई आध २ पाव गुवारपाठा दो नग, कबाब चीनी छै माशे सब को महीन पीसकर आधसेर सफेद कंद में चाशनी करे मात्रा तोले भर।

लहसन पाक।

सर्द प्रकृति वालों को बल बढ़ावे और पक्षाघात और लकवे के रोगों को गुण करे लहसन को दूध में इतना औटावे कि सब दूध सोखजाय फिर उसको घी में भून और शहद में पाक बनावे।

पाक कि भुत प्रमह को गुण करे और पतले वीर्य को गाढ़ा करे और बल बढ़ाव त्रिफला का बक्कल, छुआरा भुना, लालच मिश्री, मेदा लकड़ी, गोखरू, दोनों मूसली, बालछड़ कौंच के बीज, सिंघाड़े सूखे, कमल गट्टा की मींगी, खिसोड़ मीठ, इन्द्रजौ, इमली के बीज की मींगी साव २ माशे गुलनार कालादाना, अजवायन, काला जीरा इख्खुरकास, धनियां बसलोचन, बड़ की कोंपल, मस्तगी, शाहबलूत, बीजबंद, सुपारी, लौंग, असबद भुना, साढ़े तीन२ माशे, अजमोद, वच, लाल मखाने, सुने, समदर से ख, बुनियां गोंद, नागरमोथा धावा के फूल, मोचरस, सतावर, बबूर की फली, केवड़े के बीज, साढ़े चार २ माशे तिगुने शहद की चाशनी में पाक बनावे।

कई का चूर्ण कि बल को बढ़ाव सरभर पीपल को दो सेर दूध में औटावे जब दूध सोख जाय तब पीपल को सुखाकर पीसके नित्य चौदह माशे सात तोले मिश्री में मिला कर दूध के संग खाय।

चूर्ण कि बल को बढ़ावे और वीर्य को पैदा कर सेमर का मूसरा महीन पीसकर बराबर का बूरा मिलाकर नित्य तोला भर गाय के दूध के संग फांके।

अथवा यह चूरन बिंदकुशाद को गुण करे। गोखरू डेढ़ तोले, सिंघाड़,

साठी चावल, कमलगट्टा की मींगी दस २ माशे, तालमखाने सात माशे, मोच रस समंदरसोख सिरयारी, बीजबंद साढे तीन २ माशे सब के बराबर बूरा मिलाकर चूरन बनावे मात्रा एक तोले।

अथवा यह वीर्य को गाढ़ा करता है। बबूर की कच्ची फली मौलसिरी की छाल, शतावर, मोचरस बराबर और सब की बराबर बूरा मिलाकर चूरन बनावे मात्रा एक हथेली भर।

अथवा बड़ की कोंपल, गूलर की छाल बराबर सबके बराबर का बूरा मिलाकर एक तोले दूध के संग खाय।

अथवा यह बल को बढ़ावे दो तोले पिस्ता, दो तोले मिश्री पिसी हुई छः माशे सोंठ सब को मिलाकर नित्य एक तोले शहद में लपेट कर रत्ती भर भांग महीन पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन खाय।

अथवा बबूर की कच्ची फली छाया में सुखाकर तालमखाने, चुनिया गोंद चने छिले हुए सब बराबर लेके सबकी बराबर मिश्री मिलाकर नित्य प्रातःकाल एक हथेली भर खाय तो श्वेत प्रमेह जाय।

अथवा खिरनी की छाल, तज, मैदा लकड़ी सब की बराबर बूरा मिला कर तोला भर गाय के दूध के संग खाय तो श्वेत प्रमेह और सादा प्रमेह जाय और वीर्य गाढ़ा होय।

अथवा चुनिया गोंद, भूफली बराबर पीसकर तोले भर नित्य गाय के दूध के संग खाय चालीस दिन तक।

अथवा सिरस के बीज, पलास के बीज, बराबर कूट छानकर बराबर की मिश्री मिलाकर तोले भर गाय के दूध के संग खाय तो बहुत गुण करे और श्वेत प्रमेह जाय।

अथवा तालमखाने, कुलफा के बीज, असगंध, नागौरी, समंदरसोख, मोचरस, बराबर कूट छानकर सब की बराबर बूरा मिलाकर हथेली भर खाय तो वीर्य गाढ़ा होय और बिंदकुशाद जाय।

गोली कि पतले वीर्य को गाढ़ा करे और श्वेत प्रमेह को मिटावे इमली के चीयें तीन चार दिन पानी में भिगोय फिर काका छिलका दूर कर पीस कर बराबर का सफेद बूरा मिलाकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा दो गोली।

चूरन कि बिंद कुशाद और श्वेत प्रमेह को गुण करे बबूर की छाल बबूर

की फली, बबूर का गोंद, बबूर की कोंपल बराबर कूट छानकर बूरा मिलाकर चूरन बनावे मात्रा तोले भर।

चूर्ण कि पतले वीर्य को गाढ़ा करे गूलर के पेड़ की जड़ कि जिसके सूत पृथ्वी में घुस हों गोखरू, तालमखाने, कमलगट्टा की मींगी पांच२ तोले, मूसली, मखाने, बीजबंद, सिरयाली के बीज, चुनियां गोंद तीन२ तोले कूट छानकर चूरन बनाव एक हथेली भर गाय के दूध के सग खाय।

अथवा कोंच के बीज कच्चे छाया में सुखाकर महीन पीसकर दश माशे पाव भर गाय के दूध के संग औटाकर खाय तो पतले वीर्य और भुत प्रमेह को गुण करे।

अथवा समदरसोख, असगन्ध पांच तोले दस माशे, अस्पद जला हुआ साढ़े तीन तोले कूट छान सझा सवेरे चौदह२ माशे पानी के सग फांके और खटाई और बादी वस्तुओं से बचा रहे तो बिन्दुकुशाद जाय।

अथवा हुलहुल के बीज साढ़ तीन तोले, इतने ही बीजबंद, तालमखाने, मीठे इन्द्र जौ, छोटे गोखरू, सात२ तोले मिसरी २८ तोले सब की बराबर बूरा, कूट छान कर चूरन बनावे और फांके तो बिन्दुकुशाद जाय।

अथवा समंदर सोख, तालमखाने, रैहां के बीज, डेढ़२ तोले कूट छान कर चूरन बनाकर सात माशे प्रात काल खाय खटाई और बादी वस्तु न खाय तो वीर्य गाढ़ा होय।

अथवा आंब की धूर दो तोले चार माशे, दोनों मूसली, मोचरस सात२ माशे, एक नग पोस्त के डोडा, दो माशे भांग, मात्रा दो तोले भर गाय के दूध के सग ले तो भुत प्रमेह जाय।

अथवा सूखे सिंघाड़े, चुनियांगोंद, समदरसोख दो२ भाग, बीजबंद, मोचरस, तालमखाने, गोखरू, कौंच के बीज, धनियां, मैदालकड़ी, एक२ भाग काहू के बीज आधा भाग, बराबर का बूरा मिलाकर तोले भर खाय तो वीर्य गाढ़ा होवे और वीर्य के बहाव को रोके।

अथवा गेंदा के बीज १४ माशे बराबर का बूरा मिला खावे तो वीर्य स्तंभन हो।

अथवा बड़ की कोंपल, चुनियां गोंद, खिरनी की जड़ की छाल, रिह-सोड़े, मूसली, शतावर बराबर लेके कूट छानकर चूरन बनावे, मात्रा एक तोले गाय के दूध के सग ले तो बिन्दकुशाद जाय।

अथवा बबूर की कच्ची फली साढ़े तीन तोले, छोटी दूधी जड़ पत्तों सहित तीन तोले छाया में सुखाकर पीस के बराबर का कंद मिलाकर चूरन बनाकर खाय तो वीर्य बढ़ने और बिंदकुशाद को गुण करे।

अथवा ढाक की छाल और गोंद, गूलर की छाल और गोंद, सेंमर का मूसरा और गोंद, मौलसिरी की छाल, भुने चना, बबूर का गोंद बराबर लेके चूरन बनावे मात्रा चौदह माशे खाय तो वीर्य गाढ़ा करे और बल को बढ़ावे।

अथवा दोनों मूसली, तालमखाने, कौंच के बीज, उटंगन के बीज, मोचरस, ऊंट कटेरा की जड़, बीजबंद काला और लाल, मूफली, कमरकस और साठी चावल, शतावर, समदरसोख, मीठे इंद्रजौ, साढ़े तीन २ माशे सिंघाड़े सवा पांच माशे सब को बराबर का बूरा मिला सात माशे गाय के दूध के संग खाय तो बिंदकुशाद जाय और बल बढ़े।

हलुआ कि पतले वीर्य को गाढ़ा करे इमली के चीयों की गुठली छिली हुई, ढाक का गोंद, गेहूं का सत्त एक २ तोले, तीन तोले लाल बूरा, चार तोले घी गरम करके सत्त को भूनकर इमली के चीयों और गोंद पीसकर मिलाके हलुआ बनावे मात्रा एक तोले से दो तोले तक खाय।

चूरण कि पतले वीर्य को गुण करे तालाब की काई ठीकरे पर रखके आंच पर रखके जलावे और उसकी राख में बराबर का बूरा मिलाकर चार माशे प्रति दिन खाया करे।

अथवा बरगद का फल छाया में सुखाके कूट छानकर गाय के दूध के संग खाय तो पतला वीर्य अत्यन्त गाढ़ा हो जाय।

गोली वीर्यस्तंभी, खसखस, सुना स्पद, सिंगरफ, गोखरू, कुचला सब के सब बराबर औषधियों को कूट छान कर उस जल से कि जिस में पोस्त के डोडे भिगोये हों गोलियां बनावे और स्त्री गमन के चार घड़ी पहले एक गोली खाय ऊपर से एक प्याला गरमागरम दूध पीवे।

अथवा अजवायन पांच माशे, कद्दू के बीजों की मींगी छ माशे, असपंद नौ माशे, भांग के बीज आठ माशे, भुने चने सात माशे, अफीम तीन माशे, केसर चार रत्ती, इलायची के दाने एक माशे, पोस्त के डोडा दो नग, सब को कूट छान करे उस में जल कि जिस में पोस्त के डोडा भिगाये हों

गूद कर जगली वर के समान गोलियां बनावे वांछित समय पर एक गोली खाय अधिक गर्मी करे तो कद्दू क खरबूज के और कुलफे के बीजों का शीरा पीवे ।

अथवा यह वीर्यस्तम्भ का नुसखा हकीम चलबीखां का बनाया हुआ कि विशेषता इस में यह है जो अफीम नहीं डाली गइ है खाय जब तक कि नीबू का रस न पियेंगे कभी वीर्य स्खलित न होगा विधि यह है कि अक्करकरा साढ़े तीन माशे, रेंहां के बीज दो तोले चार माशे, कद सफेद दो तोले साढ़े सात माशे कूट छान कर गोलियां बनावे एक गोली काम में लावे ।

गोली कि वीर्य को रोकती है भुना स्पद, काफूर, बीजाबोल, अजवायन बराबर कूट छान कर अदरक के पानी में चने के प्रमाण गोलियां बना कर एक गोली स्त्री गमन से पहले गाय के दूध के संग खाय ।

गोली जो जीरे के बराबर बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे तो अत्यन्त वीर्य स्तम होवे पिसी हुई सफेद खूबकलां, अफीम, मिश्री, कपूर, काली मिर्च मेंढक की मस्ती अर्थात मेंढक के सिर को खूब निचोड़े जो कुछ निकले सीपी से खुरच कर उतार ले

गोली कि इन्द्रियों को परीक्षित है स्त्री प्रसग की शक्ति को प्रबल करती है और भारी के पश्चात हारपन नहीं लाती और वीर्य को रोकती है जलाने का असपद एक तोले साढ़े पाच माशे, आधा कच्चा आधा पक्का, पोस्त के डोडे, काले तिल, प्रत्येक सात माशे, गुड़ छै तोले चार माशे, तीनों औषधियों को कूट छान कर पुराने गुड़ के सग कूटे जब खूब मिल जाय तब सात भाग करे प्रत्येक भाग की एक गोली बनावे और स्त्री प्रसग के समय एक गोली खाय ।*

गोली कि मूत्र प्रमेह और प्रमेह को गुण करती है इमली के बीज छिले हुए, बबूर के बीज छिले हुए, ताल मखाने, सेमल की मूसली, सिरस के बीज, छिले हुए कोंच के बीज, छिले हुए चटगन के बीज, भांग के बीज सब बराबर लेके भांगरे के रस में खरल कर के काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा ६ माशे दूध के सग सेवे ।

• **गोली** कि वीर्य के बहाव को रोके धतूरे के बीज छः माशे, काली मिर्च छः माशे, कूट छान कर उर्द के प्रमाण गोलियां बनावे और सदैव एक गोली

प्रात काल एक तोले सौंफ के शोरे के संग खाय यदि रोग थोड़ा और नवीन हो तो एक ही दिन में आराम होता है।

केंचुए की गोली कि स्त्री भोग की शक्ति को पुष्टि देती है, ताजा केंचुआ पाक और शुद्ध कर सुखा के दस तोले अजवायन तीन तोले चार माशे कूट छान कर छः तोले आठ माशे गुड़ मिलाकर एक २ तोले की गोलियां बनाकर नित्य एक गोली इक्कीस दिन पर्यन्त खाय।

अथवा कसौंदी का छिलका सुखा कर बारीक पीस के शहद में मिला कर गोलियां बनावे और तीन तोले चार माशे, अथवा, प्रकृति के अनुसार खाकर एक प्याला दूध ऊपर से पान करे।

अथवा स्याह धतूरे के फूल सुखा कर चने के प्रमाण, गोलियां बनाकर एक गोली खाय।

अथवा छोटी दुधी छाया में सुखा कर और महीन पीस कर जंगली बेर के समान गोलियां बनावे और प्रात काल एक गोली गाय के दूध के संग खाय तो वीर्य गाढ़ा होवे और स्त्री गमन की शक्ति पुष्ट होवे।

अथवा नकछिकनी, स्याह मूसली, शतावर कौंच के बीज, उटंगन के बीज, ऊद कटेरा की जड़ का छिलका, माल कांगनी, गुड़ सब बराबर कूट छान कर अदरक के रस में जंगली बेर के समान गोलियां बनावे नित्य एक गोली गाय के दूध के संग खाय।

अथवा

आधपाव गुड़, काले तिल तीन तोले चार माशे, असगंध नागौरी छः तोले आठ माशे आधा कच्चा आधा भुना कूट छानकर चौदह गोलियां बनावे एक गोली नित्य खाय।

चूर्ण कि प्रमेह को गुण दायक है त्रिफला, बदहर के फूल, हल्दी बराबर, मिश्री सब की बराबर कूट छानकर चूरन बनावे मात्रा साढ़े दस माशे गाय के दूध के संग लेवे।

अथवा अजवायन की भुसी आधसेर, मूली के बीज, भुने चने, जरदक के बीज, काले तिल प्रत्येक पावभर कूट छानकर प्रति दिन तोले भर खाय।

अथवा नकछिकनी, स्याह मूसली, सफ़ेद मूसली, सोंठ सब बराबर ले कर चूरन बनावे सदैव पौने दो माशे गाय के दूध के संग खाय।

अंड का हलुवा कि स्त्री गोग की शक्ति को अत्यन्त बढ़ाती है मुर्गी के प्रत्येक अंड के साथ सातर बताश, घी खूब मिलाकर कोयलों की आंच पर रखे और चमचे से चलाता रहे जब पकजावे तब ठंडा करके खाय ।

शकरक़न्द का हलुआ कि वीर्य को गाढ़ा और उत्पन्न करता है ताजा शकरकंद सुखा कूट छानकर घी और बूरा मिलाकर हलवा बनावे बाजे भुने शकरक़न्द का हलवा बनाते हैं ।

सिंघाड़े का हलुवा ।

कि वीर्य को गाढ़ा करता है सूखा सिंघाड़ा पीसकर बूरे और घी में हलवा बनावे ।

दवा कि विदकुशाद को गुण करे ढाक की कोंपल जो खिली न हो और हेमन्त ऋतु में अन्त में प्राप्त होती हैं जितनी हों नरम कूट छानकर छ वर्ष के पुराने गुड़ में मिला अखरोट की बराबर गोलियां बनावे चार दिन पर्यन्त एक गोली प्रात काल खाया करें ।

अथवा भुने चने, बादाम की छिली मींगी तोल में दोनों बराबर नित्य दोनों समय खाना बहुत बल देता है ।

अथवा दो तोल चने की दाल मुकश्शर अर्थात छिली हुई पानी में भिगोकर सोंठ और सफेद पोस्त के दाने प्रत्येक एक माशे शहद में मिलाकर सदैव प्रात काल खाया करे ।

द्वितीय दवा ।

जो ठंडी प्रकृति वाला मनुष्य शरद ऋतु में इस को खावे तो स्त्री प्रसंग की शक्ति, बल की रक्षा और पाचन शक्ति के लिये सब प्रकार गुण दायक है प्रति दिन एक कौड़ी भर पारा खाना आरम्भ करे और एक दांग तक पहुचावे और निगलकर ऊपर से शोरवा पिये ।

अथवा चिलगोज की मींगी और मुनक्का दोनों को १ रात दिन पानी में भिगोकर थोड़ा बूरा मिलाकर खावे ।

अथवा, ऊंट कटेरे की जड़ का छिलका एक तोले आठ माशे जौकुट करके पोटली बांध आधसेर दूध और आधपाव पानी में औटावे जब पानी जलकर दूध मात्र रहजावे बूरा मिलाकर पिये और जो इनमें दो तीन छुहारे डाले तो विशेष गुण कारक है ।

अथवा शहद औटाके उसके झाग निकालकर उस में मूली के बीज पीसकर मिलावें प्रात काल और रात को सोते समय खाया करे।

अथवा पाव सेर ढाक की जड़ दो तीन सेर पानी में औटावें जब आधा रहे और गाढ़ा होजाय तब उस में से थोड़ा पान के संग खाया करे।

अथवा शहद, भिलाया, घी, बराबर लेके चाशनी करे प्रकृति के अनुसार दें यह औषधि गरम प्रकृति वाले को देनी उचित नहीं है।

अथवा जगली सहजने का पेड़ जो नरम और छोटा हो उसकी जड़ टूक टूक कर छाया में सुखावें और अजवायन की भुसी छिले उरद तीनों को समान लेकर बराबर का गुड़ मिलावे और नित्य प्रातःकाल अखरोट की बराबर खाया करें। यदि ६ माशे खाय तो सब प्रकार गुण करे।

अथवा गुड़हल के फूल छाया में सुखावें और कूट छानकर क़दमें मिला-कर चालीस दिन तक तीन माशे नित्य खाया करें।

अथवा असगध छः तोले आठ माशे कूट छानकर एक सेर दूध में औटावें और तीन तोले मिश्री मिला के सझा सवेरे खाय शरीर को लाल और पुष्ट करे खैरुलजारात में लिखा है कि जो स्त्री गमन के पश्चात् चौदह माशे गुड़ खावे तो कभी शरीर निर्बल नहो।

अथवा गौ के दूध में सिंघाड़ा खाय।

अथवा बरड की कोंपल आधपाव, मांस आध सेर, दो प्याज़ पकाकर तीन दिवस पर्यन्त खाय।

अथवा पोस्त के दाने दो तोले, शहद चार तोले, सोंठ पौने दो माशे, कूट छानकर मिलाके चालीस दिन खाय।

अथवा गोखरू कूट छानकर बूरा और गौ घृत और शहत मिलाकर खाय, ऊपर से गाय का दूध पीवे।

अथवा गधक आंवलासार, बिसखपरे के रस में खरल करे कि गाढ़ा हो जाय और नित्य एक चावल प्रमाण पन्द्रह दिवस खाय।

अथवा दुग्ध चावल खाना वीर्य को उत्पन्न और चने का होला खाना पुष्ट करता है।

अथवा बरगद का दूध दो तीन बूंद बताशे में खाया करे।

अथवा दो तोले विनौले गौ के आध सेर दूध में पकाकर खाय।

अथवा बेर की गुठली की मींगी पीसकर पुराने गुड़ में मिलाकर खाय।

दवा कि सब प्रकार के प्रमेह को गुणदायक है। पुरानी कच्ची ईंट पीस छानकर एक भाग, बूरा दो भाग मिलाकर नित्य साढ़े तीन माशे खाय।

द्वितीय दवा कि वीर्य और उसके चेंप के बहने को रोके और शुक्र प्रमेह को गुण करे और जो स्त्री खावे भग सकोचन होय। मुर्गी के अंडे का छिलका पानी में डाल कर उसके भीतर के पतले परदे को दूर करके छिलकों को बासन में रखकर इतना नीबू निचोड़े कि छिलकों के ऊपर एक अंगुल हो जावे। फिर उस पर कुछ ढक दे यहां तक कि सब रस सूख जाय इसी प्रकार तीन बार करे पश्चात् छिलकों को मिट्टी के कुल्हड़े में रखकर ऊपर मिट्टी कर आरनों की गजपुट आंच में फूंक लेवे जब ठंडा हो जाय फिर उतनी ही आग में रख इसी प्रकार तीन बार के फूकने से छिलका सफ़ेद हो जावेंगे उस निकाल कर दो रत्ती शहद में मिलाकर खाय खटाई और बादी से बचत रहे।

अथवा दूब का जुड़ा नित्य प्रातःकाल बासी पानी में पीसकर छानकर पीवें एक सप्ताह में गुण करे।

चूर्ण कि पित्तप्रमाद को गुण करे खिरनी की छाल, गोंदी की छाल, लिसोढ़े की छाल, आंब की छाल सब बराबर कूट छानकर बराबर का बूरा मिलाकर नित्य सवेरे ही चौदह माशे तक खाय।

अथवा आक के फूल, धतूरे के फूल, स्याह मूसली, असपद प्रत्येक एक तोले आठ माशे कूट छानकर घी में मकरोकर पांच तोले शहद में मिलाकर स्त्री प्रसंग के पूर्व चार माशे खावे ऊपर से दूध पिये।

अथवा सोंठ, पीपल, अकरकरा के फूल बराबर लेकर मुर्गी के अंडे की जर्दी के संग खाय।

अथवा अजवायन, स्याह तिल, दोनों एक भाग पोस्त के दाने आधा भाग पीसकर गुड़ में मिलाकर खाय मात्रा तोले भर।

अथवा खिरनी के बीजों की मींगी छला कूट छानकर और उसका तीसरा भाग बूरा मिला कर गोखरू के संग खाय।

अथवा नित्य प्रातःकाल मीठा आम खाय और ऊपर से गौ का दूध जिस में दो तीन छुहारे थोड़ी सी सोंठ औटाकर पीवे तो कामदेव को

और शरीर को पुष्ट करता है और मस्तक को बल देता है और पका सीत फल वीर्य को उत्पन्न करता है और कठोर कामदेव को बलवान करता है।

आम का हलवा कि कामदेव को बल देने वाला और वीर्य को बढ़ाने वाला है। मीठे आम का रस तीन सेर, बूरा सफ़ेद सेर भर, और गौ का घृत आध सेर, गोदुग्ध एक सेर, शहद पाव सेर, सोंठ एक तोला, पीपल छः माशे, शतावर एक तोला, सालब मिश्री, बादाम की मींगी प्रत्येक चार तोले, खोलगान छ माशे, बहमन सफ़ेद तथा लाल दो तोले, सम्भर का मूसली एक तोले, सूखा सिंघाड़ा चार तोले, छुहारे कूटे चार तोले, प्रथम बूरा और आमरस दूध में डाल कर शर्बत बनावे फिर मींगियों को पीस कर घी में भून कर शर्बत में मिलावे पश्चात् दूसरी औषधियां डाल कर हलुआ बनावे।

लहसन का तेल कि लिंग की शिथिलता को शुद्ध करे। लहसन को अलसी के तेल में औटा कर छान ले और राई और अकरकरा नीबू के बीज प्रालकांगनी प्रत्येक थोड़ा कूट छान कर उसी तेल में मिला कर कई एक दिन लिंग पर मले।

शुबू के फूलों का तेल

लिंग को बलवान करता है शुबू के फूल लेकर तालाब में डाले जब कुम्हला जावें और बदल दें इसी प्रकार तीन बार बदले फिर छान कर थोड़ा अकरकरा पीसकर मिलावे और वांछित समय पर लिंग पर मल के पान बांधे।

अथवा भटकटाई की पत्तियां कड़वा तेल प्रत्येक छः तोले आठ माशे एक काला बिच्छू और बड़ा जो प्राप्त होवे तो बहुत उत्तम है नहीं तो जिस प्रकार का मिले और पहिले तेल को गरम कर पत्तियों की टिकियां बनाकर बिच्छू और टिकियों को उसमें डालकर जलावे जब भली भांति जल जावें छान कर रखे और एक रत्ती पान पर लगा कर लिंग पर बांधे।

अथवा खोभा कि टीडी की तरह एक जानवर होता है उस के पर नहीं होते हैं और दवान तथा रसभाड़ भी उसे कहते हैं और उससे बुलबुल को पकड़ते हैं पांच वा छः नग पकड़ कर छ तोले आठ माशे गौघृत और एक तोले आठ माशे केसर मिला बासन में रखकर जलावे फिर खूब पीस कर लिंग पर मले।

ऊंटकटेरे का तेल

कि लिंग की शिथिलता को दूर करता है ऊंटकटेरे का पेड़ जड़ टहनी

पत्तियों समेत बकरी के दूध में भिगो कर पाताल यन्त्र के द्वारा रोगन खींच कर लिंग पर मले ।

चींटी का तेल

बड़ी चींटी जो कबरों और आम के पेड़ों पर होती हैं सौ नग चमेली के तेल में डाल कर शीशे में भर कर चालीस दिवस धूप में रखें फिर तेल को लिंग पर मलें ।

चमेली की पत्तियों का तेल

कि कामदेव को पुष्ट और वीर्य को स्तम्भन करने वाला है सफेद चमेली की पत्तियां पीस कर उनका रस लेकर मीठे तेल में जलावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रह जाय शीशी में रखे स्त्री विलास के दो घंटे पहिले लिंग पर मलके पान बांधे ।

तेल इसलस करने वाले को गुण दायक है । कपड़े को आक के दूध में एक दिन रात भिगो कर छाया में सुखावे और उस में घी लगा कर दो बत्ती बना कर जलावे और उस के नीचे थाली रखे परन्तु थाली कांसे की होवे जो तेल बत्ती से थाली में टपके उसको लिंग का सिर छोड़ कर मले और ऊपर से अरंड का पत्ता बांधे ।

अथवा

पाव सेर चमेली की पत्तियां पाव सेर मीठे तेल में डाल कर कढ़ाही में औटावें जब पत्तिया जल कर तेल रह जावे कड़वा कूट, कथा सुहागा प्रत्येक चौदह माशे थोड़े तेल में डाले जब मिल कर रंग लाल होजावे तब कढ़ाही उतारकर जहर कौड़ियां मिलाकर तेल को फूल कांसीके बर्तन में डालकर नीम की लकड़ी से रगड़कर शीशे में भरके रखे और एक माशे लिंग का सिर छोड़ कर मले और ऊपर से पान बांधे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त दो दिन का बीच देकर लगावे और इस काल में स्त्री भोग न करे ।

चमेली का तेल कि काम को प्रदीप्त करता है चमेली की पत्तियों का रस तीन तोले चार माशे, सांखिया दस माशे, मीठा तेल, कड़वा कूट, प्रत्येक एक तोला आठ माशे, सुहागा एक तोले आठ माशे, तिलका तेल ग्यारह तोले दस माशे, पत्तियां पीस कर टिकिया बनावें और तेल में पानी मिलाकर इस को जलावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजावे पिसी औषधियां मिलाकर

रगड़े और एक सप्ताह पर्यन्त लिंग पर मले।

जौंक का तेल बड़ी जौंक सात नग आध पाव मीठे तेल में जलाकर छान कर लिंग पर मले।

अथवा मालकांगनी और कुचले का चूरा, पलास के बीज, जंगली कबूतर की बीट, प्रत्येक छ तोले आठ माशे कौड़ा मकद सात माशे, बकरी के दूध में भिगोकर सवेरे आतिशी शीशी में तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और, दूसरे नुसखे में यह भी लिखा है कि कौड़ी की बराबर अकरकरा मिलावे।

अथवा एक बालिश्त महीन कपड़ा लेकर आध सेर धतूरे के अर्क में इक्कीस दिन पर्यन्त रक्खे कि सब अर्क कपड़े में सूख जाय फिर, एक तोले साढ़े पांच माशे तिल के तेल में मद्दी आग से पकावे पश्चात् निकाल कर कपड़े को लोहे की सींख में लपेट कर नीचे थाली रक्खे और एक ओर से कपड़े में आग लगा दें जो तेल कपड़े से थाली में टपके उसको ले रक्खे और प्रति दिन चार दिवस पर्यन्त दो २ बूंद लिंग पर मले।

अथवा मीठा तेलिया तीन तोले चार माशे, मूली के बीज दस माशे, जमाल गोटे की मींगी सब औषधि महीन पीस कर आध पाव तिल के तेल में खरल करके थोड़ा उसमें से काम में लावे तो हथरस करने वाले को गुण करे।

अथवा एक तोले नौ माशे मीठा तेल मद्दी आंच पर औटावे और पौने दो माशे सुर्ख हड़ताल पीस कर उस में मिलावे फिर सुहागा उस के पश्चात कत्था कूट, प्रत्येक साढ़े तीन माशे उस में मिलावे, फिर चमेली की पत्तियों का रस डाल कर आग पर रखे जब पानी जल कर तेल रह जाय लिंग पर मल के पान बांधे।

अथवा लोध, फिटकरी, अरंड की जड़ का छिलका, नख, असगंध प्रत्येक साढ़े तीन माशे कूट छान कर पानी में टिकिया बनावे और आध पाव तिल के तेल में जला कर छानके रखे और एक बूंद लिंग पर मले तो शिथिलता दूर होवे।

अथवा तिल का तेल और मछली का तेल प्रत्येक दो तोले आठ माशे पीपल चार माशे सब को पीस कर तिली के उक्त तेल में रगड़ कर एक बूंद लिंग के छिद्र में टपकावे और छिद्र अधिक सिकुड़ा हो तो नीम का तेल टपकावे।

बाम मछली का तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली के टुकड़े२ करके पानी में औटाव जितनी चिकनाई पानी पर आवै उसको काम में लावे।

मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा है कि कई नग मिडों को मीठे तेल में जला कर लिंग पर मले तो उसकी रगों को बलवान करता है।

गुण बिन्दु कुशाद लिंग के छिद्र बंद जाने को कहते हैं और उसकी चिकित्सा में हिन्दी वैद्यों के मत से बड़ी कठिनता पड़ती है और जो वस्तु वीर्य को गाढ़ा करती है वही इसको भी गुणदायक है।

तेल कि कामदेव को प्रदीप्त करे घुघची लाल और सफेद की दाल, हरताल प्रत्येक एक तोले चार माशे बकरी के दूध में खरल करे और चने के प्रमाण गोलियां बनावे फिर आतिशी शीशी में भर कर तेल निकाल कर लिंग पर मले और ऊपर से पान बांधे।

रिफादह अर्थात पट्टी

कि कामदेव को बलवान कर महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बार भिगोकर सुखावे और तीन बार प्याज के रस में भिगोकर सुखावे पश्चात उस कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोकर फिर लिंग का सिर छोड़ कर माखन से चुपड़ कर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यन्त बांधे रखें जो आवश्यकता हो तो दूसरे दिन भी यही कर्म करे और कपड़े को प्रतिक्षण अलसी के तेल में भिगाये रखे।

अथवा कपड़ा आबाहल्दी में रगकर छाया में सुखावे पश्चात धतूरे के रस में तीन बार फिर आक के दूध में तीन बार भिगोकर छाया सुखाले फिर भैंस के घृत में भिगोकर मद्दी आंच पर भूनकर पट्टी पर शहद लगा क हीरांहींग एक रत्ती उस पर छिड़क कर तीन दिवस पर्यन्त बांधे।

अथवा आक का दूध आध पाव और शुद्ध शहद ढाई पाव कड़ाही में लोहे के दस्ते से इतना रगड़े कि चाशनी बन जावे और न्हस के सबब कड़ाही दस्ते के संग जमीन से उठ आवे फिर चार माशा अफीम डाल कर रगड़े कि खूब मिलजाय सब दवाई को चीनी के बरतन में रखे और लिंग का सिर छोड़ कर लेप मले और ऊपर से पान लपेट कर यह लेप मले और गाढ़े या जीन या गनी की पट्टी बांध कर एक दिन बैठे रहें फिर इस के पश्चात पट्टी खोलकर गौ घृत इक्कीसबार धोया हुआ लिंग पर मर्दन करे और तीन दिन इसी प्रकार करे।

तिला कि काम की निर्बलता और हथलस करने वाले को गुण करे आक का दूध और गाय का घी दोनों बराबर खरल बारह पहर करके एक रसा लिंग पर लगावे और कोई २ मनुष्य इस में शहद भी डालते हैं और वालोंने लिखा है कि तीन तोले चार माशे आकके दूध में एक तोले आठ माशे घी मिलाकर जलावे और लकड़ी से खूब रगड़े जब दूध जलकर रोगन बाकी रहजावे तो आतिशी मदिरा में खरल करे और लिंग का सिर छोड़ कर सब ऊपर से खिसौड़े के पत्ते बांधे और एक पहर पश्चात खोल डालें।

अथवा एक काले कुक्कुट का कि जिसने जुफ्ती न की हो रुधिर लेके उस के समान जवान गर्धव का रुधिर मिला लिंग पर मर्दन करे और वायु दे कि सूख जावे इसी प्रकार तीन वार लेप करे प्रथम वार जलन उत्पन्न होगी दूसरी वार कम तीसरी वार सब जलन जाती रहगी और काम देव बल करेगा उस दिन स्त्री प्रसंग न करे यह मर्दन नपुंसक और हथलसी को अति गुण दायक है॥

मर्दन अर्थात तिला

कि काम को प्रबल करता है। मूली के बीज, बिनौले प्रत्येक दो भाग अकरकरा, कड़वा कूट प्रत्येक एक भाग महीन पीसकर लगावे।

मर्दन कि इस को लोपराज कहते हैं लौंडबाज और हथलसी को गुण करे और लिंग के टेढ़ेपन को दूर करे और काम देव को प्रबल करे एक साक बैंगन जो पककर पेड पर पीला पड़गया हो लेकर साठ नग पीपल चुभाकर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में औटावे जब तेल उफान पर आजाय सात तोले मासे केंचुआ मिलावे जब केंचुए जलजावें लहसन छील कर उस में डाल फिर खरल कर एक शीशी में उस रखें और पदरह दिवस पर्यन्त प्रति दिन एक मासे लिंग पर मल के पर्गद वा खिसौड़ के पत्ते उस पर बांधे परमेश्वर की दया से आराम होगा।

अथवा सफेद घूघची, अकरकरा, वीर बोहटी प्रत्येक सवा तीन माशे संखिया एक माशे दो, आतशी मदरा में एक दिवस खरल करके रात्रि के समय लिंग पर मलें उस पर कच्चे धागे से पान बांधे और सो रहे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त बांधे इस काल में काम विलास की ओर प्रीति न करें।

[illegible] मनुष्य के कान के [illegible] में शूकर [illegible] चर्बी मिलाकर तीन दिन

अथवा सफेद कनेर की जड़ बराबर गधे के मूत्र में पीसकर लिंग पर मर्दन करे और बाजे इस में थोड़ा सिंगरफ भी मिलाते हैं उस के ऊपर अरंड के पत्ते बांधे कि सूख जावे या सोंखिया विष आंबा हलदी, मैदा लकड़ी प्रत्येक दस माशे पृथक २ कूट छान कर तीन मात्रा बना के एक मात्रा ताजा पानी में खूब रगड़ कर लिंग का सिर और सीवन छोड़ के लेप कर ऊपर से पान लपेट कर सब दिन बधा रक्खे दूसरे तथा तीसरे दिन भी इसी प्रकार करे चौथे दिन घी धोकर लिंग पर मले।

अथवा एक बड़ी जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव भर प्रथम घी को लोहे के बर्तन में तपा कर जीती जोंक उस में डालदे जब जोंक का पेट फटजाय और फटने का शब्द कान में आवे उतार कर सेमर का गोंद चार माशे महीन पीस कर उस में मिलावे और नीम के सोटे से चार पहर रगड़ और लिंग पर लगावे जो बड़ी जोंक न मिले तो सात नग छोटी जोंक ले।

अथवा कनेर की जड़, धतूरे की जड़ का छिलका, भांग की जड़ का छिलका, आक की जड़ का छिलका, बराबर लेके छाया में सुखा कूट छान कर धतूरे के पत्तों के रस में बेर की बराबर गोलियां बनावे और एक गोली अपने मूत्र में पीस कर लिंग पर लगा के सुखावे पीछे स्त्री भोग में प्रवृत्त हों

अथवा सफेद सरसों, कड़वा कूट, बड़ी कटरी, कायफल, असगन्ध की जड़ सब बराबर कूट छान कर पानी में मिला के लिंग पर मलें जब सूखन लगे छुड़ा डाले तीन वा चार दिवस इसी प्रकार करें लिंग, बढ़जावे अगर सफेद सरसों न मिले तो पीली लेवे।

अथवा केंचुआ एक तोले, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहर खरल करे थोड़ा शिश्न पर मले और उसके ऊपर कनेर या बट के पत्ते बांधे।

अथवा भरपद, रेंडी की पत्ती, पीली सरसों प्रत्येक पांच तोले कूट छान कर चमेली के तेल में खरल करके प्रातःकाल को उस घर में जहां वायु का प्रवेश नहो बैठकर लिंग पर मले जो शर्दऋतु हो तो अंगीठी में अग्नि गरम लिंग तरफ आगे रक्खे और चार २ हाथ सेक २ कर नाभि से लेकर जहां पर्यन्त सकें, सेक का काल न्यूनसे न्यून पांच घड़ी है यह विधि भावप्रकाश मे अपनी मुजर्रिबात में लिखा है।

लेप कि आनन्द दायक है ताजा बीरबहूटी उस के बराबर गौ का मूत्र

लाकर तिल के तेल में महीन पीस कर लेप करे।

मर्दन पारा पांच तोला, गौ के पित्ते बारह नग, आध सेर भांग के रस में लोह के दस्ते से एक पैसा उसपर लगा के छः दिन पर्यन्त रगड़े जब गाढ़ा हो जाय जंगली बेर के समान गोलियां बनावे एक गोली थूक में पीस कर लगावे।

लेप कि वीर्य को स्तम्भन करता है। खुश्की में रहने वाले मेंढक को छाया में सुखाकर उसके सिर और पैरों को काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियां बनावे और लिंग का सिर छोड़ कर लेप करे।

अथवा असगंध, गजपीपल, कड़वा कूठ, पीसकर गौ के माखन में मिला कर पंद्रह दिन तक प्रति दिवस दो बार मले और गरम जल से धो डाले दूसरे नुसखे में गजपीपल की जगह पीपल लिखा है और एक पुस्तक में वर्णन किया है कि एक बड़ा मेंढक जो कुए में रहता हो लेकर उस की गुदा सी देवे और साढ़े दस माशे चपल अर्थात् पारा उसके मुंह में भर कर रक्खे जब सूख जाय तब उसका पेट चीर कर पारे को कि गोली बंध जायगी निकाल ले स्त्री प्रसंग के समय मुख में रखे कभी वीर्य स्खलित न होवे।

अथवा गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम जल से धोवे इसी प्रकार पंद्रह दिवस पर्यन्त करे और यदि जंगली कपोत की बीट तथा चरबी और सेंधानोन शहद में मिलाकर लिंग पर मलें और स्त्री भोग करें तो अत्यंत आनंद प्राप्त होवे।

अथवा माख बैंगन मिट्टी में लपेट कर भूभल में रखें और फिर मिट्टी दूर कर बैंगन का जल निचोड़ कर छान लें फिर कई एक नग पीपल तीन दिवस पर्यन्त उसी पानी में भिगो कर रखे चौथे दिन निकाल के सुखा कर महीन पीस लिंग पर लेप करे।

अथवा कनेर की जड़ महीन पीसकर कटेरी के रस में खरल करके लिंग पर मले।

लेप कि लिंग के उद्वेग को जो हस्तमैथुन करने से हो गुण करता है। प्रथम लिंग को तिल के गुनगुने तेल से मलें पश्चात् थोड़े हारयों पीसकर गुनगुना लेप करें ऊपर से पान या अरंड के पत्ता लपेट कर उसके चारों ओर खपची रखकर पट्टी से दृढ़ बांधे एक पहर के पश्चात् गुनगुने जल से धोवे एक सप्ताह

में लिंग का टेढ़ापन जाता रहेगा ।

मर्दन कि लिंग को मोटा करे भविरात्रि लिंग को ताजा दूध से मले फिर सूखे कछुए पीसकर मले ।

अथवा कायफल भैंस के दूध में पीसकर लेप करे और रात भर बांधे रख प्रातःकाल गरम जलसे धोवे कई एक दिवस इसी प्रकार करे ।

अथवा रीठे का छिलका अकरकरा तीक्ष्ण मद्य में खरल करके लिंग का सिर छोड़ कर मले और उसके ऊपर पान लपटें इसी प्रकार कई एक दिन करने के पश्चात् गुण प्रगट होगा ।

अथवा कमलगट्टे का जीरा शुद्ध शहद बराबर परस्पर खूब पीसकर लिंग का सिर छोड़कर मलें और ऊपर से कपड़ा लपटें और दो पहर पश्चात् खोलकर गरम जल से धोवें और फिर इसी प्रकार करें ।

अथवा सात माशे इन्द्र जौ भैंस के ताजा दूध में भिगोकर चार पहर पीस कर गुनगुना २ लिंग पर लेप कर ऊपर से कपड़ा लपट कर सो रहे सवेरे उष्ण जल से धुलावे कई एक दिन निर्विघ्न यही काम करे तो लिंग बड़ा होवे ।

अथवा बड़गन के बीज कूट छानकर प्रतिदिन दो बार लिंग पर लेप करे और कई दिवस पर्यंत इसी प्रकार करे तो लिंग दृढ़ और कड़ा होवे ।

मर्दन कि लिंग की दृढ़ता और बधेज को गुण करे असगंध की जड़ को कूट करके काले धतूरे के रस में बीस बार भिगोकर सुखावें फिर पीसकर रख और थूक में रगड़कर लिंग पर मलें और एक पहर के पश्चात् स्त्री प्रसंग करे उसके पीछे गोघृत लिंग पर मले ।

अथवा चमली के तेल में राई पीसकर लिंग पर लगावें ।

अथवा अकरकरा दो भाग, जगली प्याज का रस दस भाग, पीस कर लिंग पर लगावें ।

अथवा गांजा रेंडी के तेल में खरल कर कपड़े पर जमाके लिंग पर बांधे थोड़ा उपाड़ करता है पर तु काम की प्रबलता और इमसाक को गुण करता है ।

अथवा हुलहुल के बीज दो भाग और उसकी छाल एक भाग महीन कूट छानकर मीठे तेल में चार पहर खरल करके लगावे ।

अथवा लौंग समुद्र फल की मींगी एक २ नग पीसकर लगावे ।

रेंडी का तेल कि इमसाक का बहुत गुण करे मीठा बेल रेंडी की मींगी

लकर तिल के तेल में महीन पीस कर लेप करे।

मर्दन पारा पांच तोला, गौ के पित्ते बारह नग, आध सेर भांग के रस में लोहे के दस्ते से एक पैसा उसपर लगा के छः दिन पर्यन्त रगड़े जब गाढ़ा होजावे जंगली बेर के समान गोलियां बनावे एक गोली थूक में पीस कर लगावे।

लेप कि वीर्य को स्तम्भन करता है। खुश्की में रहने वाले मेंढक को छाया में सुखाकर उनके सिर और पैरों को काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियां बनावे और लिंग का सिर छोड़ कर लेप करे।

अथवा असगंध, गजपीपल, कड़वा कूट, पीसकर गौ के माखन में मिला कर पंद्रह दिन तक प्रति दिवस दो बार मले और गरम जल से धो डाले दूसरे नुसखे में गजपीपल की जगह पीपल लिखा है और एक पुस्तक में वर्णन किया है कि एक बड़ा मेंढक जो कुए में रहता हो लेकर उस की गुदा सीं देवे और साढ़े दस माशे चपल अर्थात् पारा उसके मुंह में भर कर रक्खे जब सूख जाय तब उसका पेट चीर कर पारे को कि गोली बंध जायगी निकाल ले स्त्री प्रसंग के समय मुख में रखे कभी वीर्य स्खलित न होवे।

अथवा गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम जल से धोवे इसी प्रकार पंद्रह दिवस पर्यन्त करे और यदि जंगली कपोत की बीट तथा चरबी और सेंधानोन शहद में मिलाकर लिंग पर मलें और स्त्री भोग करें तो अत्यन्त आनन्द प्राप्त होवे।

अथवा मोटे बैंगन मिट्टी में लपेट कर भूभल में रखें और फिर मिट्टी दूर कर बैंगन का जल निचोड़ कर छान लें फिर कई एक नग पीपल तीन दिवस पर्यन्त उसी पानी में भिगो कर रखे चौथे दिन निकाल के सुखा कर महीन पीस लिंग पर लेप करे।

अथवा कनेर की जड़ महीन पीसकर कटेरी के रस में खरल करके लिंग पर मले।

लेप जो लिंग के टेढ़ेपन को जो हस्तक्रिया करने से हो गया हो दूर करता है। प्रथम लिंग को तिल के गुनगुने तेल से मलें पश्चात् थोड़े हल्दी पीसकर गुनगुना लेप करें ऊपर से पान या अरंड के पत्ते लपेट कर उसके चारों ओर खपड़ रखकर पट्टी से दृढ़ बांधे एक पहर के पश्चात् गुनगुने जल से धो दे एक सप्ताह

अथवा थूहर का दूध गौ का दूध दोनों बराबर लेकर धूप में रखें और रात को तलवों में मलें जब सूखजाय दो घड़ी पश्चात् स्त्री गमन करें अत्यन्त बधेज होवे।

अथवा स्याह धतूरे की पत्तियों का रस निकाल कर दोनों टखनों पर लगावें जब सूखजाय स्त्री गमन करें।

अथवा कपूर, कटेरी का जीरा, साथ पीसकर शहद के साथ छोटे जीरे के समान गोलियां बनावे और लिंग के छिद्र में रखे एक घड़ी पीछे विषय करे बधेज होवे और चिदकुशाद को गुण करे।

अथवा हींग शुद्ध शहद में मिलाकर जीरे के समान बत्तियां बनाकर इन्द्री के छिद्र में रखे ढाई घड़ी पश्चात् स्त्री संग करे मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा है कि कौंच की जड़ उंगली के पोरुए की बराबर स्त्री भोग के समय मुख में रखे जब तक मुख में रहेगी वीर्य स्खलित न होगा।

ऊंट के बालों की रस्सी जंघा में बांधकर सोवे अहतलाम को गुण करती है और फिटकरी कटि में बांधनी यह भी गुण करती है। अहतलाम स्वप्न में वीर्य स्खलित होने को कहते हैं। लिखा है कि रविवार को पाढे और खिच्चर की पूंछ का एक बाल लेना और पीली कौड़ी में छिद्र कर बांधना और दहने भुजा पर बांधकर भोग करना वीर्य स्खलित को रोकता है।

और कबूतर का अंडकोष चर्म में रख कर कमर में बांधे जब तक कमर में रहेगा वीर्य स्खलित न होगा जब उसको पेट की तरफ लावे वीर्य स्खलित हो जायगा।

अथवा कुसते को दो आखिशी मद्य में पीसकर नस पर लेप करे सूख जान के पीछे विषय भोग करें बधेज हो और कमा की पत्तियों का रस हथेली और तलवों में मलवावे चार घड़ी पश्चात् भोग विलास कर यही गुण करता है यह एक पोथी में लिखा है।

यंत्र कि बधज करता है जिस समय कुत्ता कुतिया से भोग करे और कुत्ता स्खलित हो जाय तब कुत्ता की पूंछ काटकर चालीस दिवस जमीन में गाड़ दे जब पूंछ गलकर शेष अस्थि रह जावें उनको सूत में पिरोकर अपने बांधे और स्त्री गमन करे।

गुण स्त्री प्रसंग में उचित है कि आनन्द की ओर मन को आसक्त न करे किन्तु दूसरी बातों का ध्यान और विचार करे जब जाने कि वीर्य निकलने को है ठहर जाय फिर थोड़ी देर पीछे आरंभ करे इसी प्रकार वीर्य स्खलित

होने के समय ठहरते हैं और उत्तम यह है कि एक नियत अंक जैसे पांच वा सात आरंभ करके एक टांक अंक बढ़ाता जाय दूसरी विधि यह है कि जब जाने कि वीर्य निकलता है अंगुलियां और मध्य से उस रग को जो अंडकोश के नीचे गुदा के बीच में है बल से पकड़ लें वीर्य आता हुआ फिर जायगा इसी प्रकार प्रति बार करे उत्तम तो यह है कि जब भोग करने बैठे पार्ष्णि अर्थात् एड़ी से यह नस दबाये रखे।

गोली कि बंधेज करे शिंगरफ, मोचरस, अफीम प्रत्येक चार माशे, सुहागा एक माशे पीसकर कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनावे एक गोली स्त्री प्रसंग से पहिले खाय।

यन्त्र कि ऊंट की अस्थि में छेद करके जिस के सिरहाने रखदे उस का वीर्य स्खलित नहो॥

फ़सल खुसिये अर्थात अंडकोश की बीमारियों की चिकित्सा में

प्रतक अर्थात् अंडकोश का बढ़जाना कि फारसी में बादखाया कहते हैं।

गुण जो दक्षिण अंडकोश में सूजन हो तो बैंयने हाथ की असलिम नस को डाह देवे और जो बैंयने अंडकोश की सूजन हो तो बायें की, पीड़ा जाती रहेगी।

असलिम एक नस है उस की पास की अंगुली के बीच में उस को रेशमी कपड़ा बांध जलाद और डाहना प्रायः ओपास लोग जानते हैं कि वे अपने हाथ पैर डाहते हैं।

दवा कि हिन्दी मनुष्य काम में लाते हैं अंडकोश के बढ़जाने को गुण करती है। ढाक की जड़ की छाल साया में सुखाकर महीन कूट छान कर सात माशे ताज पानी के संग फांके यह नाभि की पीड़ा को भी गुण करे।

चूर्ण कि अंडकोश की वृद्धि को गुण करे बायबिडंग, कुंदर, पुरानी ईंट कूट छान कर तीन तोले चार माशे घी के संग खाय यदि पहले दिन बगन हो ता अंडकोश अपनी पूर्व दशा पर आजायगा।

काढ़ा कि अंडवृद्धि का गुण करे अमलतास एक तोला साढ़े पांच माशे पांच वा छः तोले पानी में औटावे जब चौथाई रहे तीन तोला घी मिलाकर गुनगुना गुनगुना खड़ा होकर पीवे।

होने के समय ठहरते हैं और उत्तम यह है कि एक नियत अंक जैसे पांच वा सात आरंभ करके एक टांक अंक बढ़ाता जाय दूसरी विधि यह है कि जब जाने कि वीर्य निकलता है अंगुलियां और मध्य से उस रग को जो अंडकोश के नीचे गुदा के बीच में है बल से पकड़ लें वीर्य आता हुआ फिर जायगा इसी प्रकार प्रति बार करे उत्तम तो यह है कि जब भोग करने बैठे पार्ष्णि अर्थात् एड़ी से यह नस दबाये रखे।

गोली कि बंधेज करे शिंगरफ, मोचरस, अफीम प्रत्येक चार माशे, सुहागा एक माशे पीसकर कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनावे एक गोली स्त्री प्रसंग से पहिले खाय।

यंत्र कि ऊंट की अस्थि में छेद करके जिस के सिरहाने रखदे उस का वीर्य स्खलित न हो ॥

फ़सल खुसिये अर्थात अंडकोश की बीमारियों की चिकित्सा में

प्रतक अर्थात् अंडकोश का बढ़जाना कि फारसी में बादखाया कहते हैं।

गुण जो दक्षिण अंडकोश में सूजन हो तो बांये हाथ की असलिम नस को दाग देवे और जो बांये अंडकोश की सूजन हो तो बांय की, पीड़ा जाती रहेगा।

असलिम एक नस है उस की पास की अंगुली के बीच में उस को रेशमी कपड़ा बांध जलादे और दाहना प्रायः ओबास लोग जानते हैं कि व अपने हाथ पैर दाहते हैं।

दवा कि हिन्दी मनुष्य काम में लावे हैं अंडकोश के बढ़जाने को गुण करती है। ढाक की जड़ की छाल साया में सुखाकर महीन कूट छान कर सात माशे ताजे पानी के संग फांके यह नाभि की पीड़ा को भी गुण करे।

चूर्ण कि अंडकोश की वृद्धि को गुण करे बायबिडंग, छुवर, पुरानी ईंट कूट छान कर तीन तोले चार माशे घी के संग खाय यदि पहले दिन वमन हो तो अंडकोश अपनी पूर्व दशा पर आजायगा।

काढ़ा कि अंडवृद्धि का गुण करे अमलतास एक तोले साढ़े पांच माशे पांच वा छ तोले पानी में औटावे जब चौथाई रह तीन तोले घी मिलाकर गुनगुना गुनगुना खड़ा होकर पीवे।

अथवा भुना सुहागा छ रत्ती पीसकर पुराने गुड में मिला के तीन गोलियां बनावे एक गोली नित्य प्रात काल खाय और उस के ऊपर थोड़ा घी पीवे अलोना नर्म भोजन करे।

लेप कि अंडकोश की सूजन को गुण करे। ऊट की मेंगनी और थोड़ी हलदी औटावे जब गाढ़ी होजाय गुनगुनी २ लगावे।

अथवा छुहार की गुठली का चूर्ण, खतमी के बीज सिरके में मिलाकर लेप करे तो सर्दी की सूजन दूर होवे।

अथवा आधपाव भांग पानी में औटावे जब आधा रहे तब उस पानी में अंडकोश धोवे और उस का फोक लेप करे।

अथवा बकरी की मेंगनी, खुरासानी अजवायन दोनों बराबर पानी में घोटकर गुनगुना कर लेप करे।

अथवा अंड की जड सिरके में पीसकर गुनगुना कर लेप करे मैनफल के बीज नागबू के पत्तों क रस में पीसकर लेप करे।

अथवा कोयल के बीज कूट छान कर गुनगुना २ लेप करे।

अथवा भांगरा, चूहे की मेंगनी, नकछिनी प्रत्येक बराबर रोसन के बीज दूने अरंड के पत्तों के रस में घोट गुनगुना कर लेप करे तो अंडकोश की पीड़ा और सूजन दूर हो और बालकों की अंडवृद्धि को अरहर पानी में पीसकर लगाना गुण करता है।

दवा कि गरमी के अंडकोश के सोथ को गुण करे। भांग को पानी में भिगाकर जब तक उचित हो अंडकोश उस में रखे इसी प्रकार दो बार करे और उसका फोक अंडकोश पर बांध।

अथवा मसूर बिनी छुई अनार का छिलका दोनों बराबर पानी में औटाय जब गलजायं पीसकर लेप करें।

मर्दन कि अंडकोश की सर्द सूजन को गुण कर। रेंडी का गोंद पीस करके नित्य दो तीन बार लगावे।

अथवा माजू अमगट पानी में पीसकर गुनगुना २ लेप करे।

अथवा नकचूर पीसकर गुनगुना २ लेप करे ऊपर से पान बांध।

दवा कि अंडकोश की सर्दी के सोथ को गुण करे मरुवे के पत्ते और टहनी पीसकर रोटी बनाय अंडकोश पर बांधे सूजन और पीड़ा को गुण करे।

गुण अंडकोश के गर्म सोप की चिकित्सा साफन फस्द का खोलना है

अथवा अजवायन खुरासानी जौ का चून, कद्दू के टूक धनिये की पत्तियों का अर्क काई और लालचन्दन का लेप करना गुण करता है और जो सूजन सर्दी से हो तो मेथी हालयों के बीज शहद में मिलाकर लेप करे।

नतूल अर्थात् तरां कि अंडकोश की सूजन और पीड़ा को गुण करे टेसू के फूल पानी में औटाकर अंडकोश पर तरादे और उसका फोक गुनगुना गुनगुना बांधे।

मर्दन अंडकोष की चोट को गुणदायक है थोड़ी हलदी पीसकर कुक्कुट के अंडे की जर्दी में मिलाकर गुनगुना २ लगावे।

अथवा सफेदजीरा, कालीमिर्च पानी में पीसकर औटावें और मर्दन करें तो अंडकोष की सख्ती दूर हो।

अथवा पका जीरा शहद में मिलाकर लगावें।

लेप कि अंडकोष की खुजली को दूर करे। सिरस की छाल पीसकर लेप करें।

अथवा रैंहां पानी में पीसकर लेप करे तो अंडकोष की सूजन को गुण करे।

दवा कि अंडकोष और लिंग के घाव को गुण दायक है। रोंगटा जला हुआ अंगूर की लकड़ी की राख घाव को थूक से भिगोकर उस पर बुर्के।

गुसूल वह गीली दवा जिससे घाव को धोवे। गुसूल कि अंडकोष के घाव को गुण करे बबूर की छाल जौकुट करके पानी में औटावे और उससे घाव को धोया करे।

अथवा कवेला तिल के तेल में मिलाकर लगावे।

बुर्की कि घाव को गुण करे चाकसू महीन पीसकर घाव पर बुर्के।

लेप कि नाभि की उचाई को गुण करे अर्थात यदि नाभि ऊंची होजाय तो इस दवा से अपनी पूर्व दशा पर आजावे अजवायन कूट छानकर मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करे और उस पर शीशे का टुकड़ा बांधे।

फ़सल उन बीमारियों की चिकित्सा में जो केवल स्त्रियों के होती हैं

अकर अर्थात बांझ अथवा गर्भ का होना जिस स्त्री को यह रोग हावेउस

को अरबी में अक्कीमई कहते हैं और अक्कर भी उन कारणों से होता है जो गर्भ के रोकने वाले होते हैं इसको अक्कर मजाजी कहते हैं इसकी चिकित्सा होसक्ती है और कभी अक्कर बिना कारणों के भी होता है जैसे कि बाजे वृक्ष नहीं फलते सो यह अक्कर हक़ीक़ी है और इसकी चिकित्सा नहीं है और अक्कर के कारण कभी पुरुषों में होते हैं और कभी स्त्रियों में। इसकी परीक्षा इस प्रकार करनी उचित है कि सात दाने गेहूं वा जौ के पृथक २ माटी के नवीन भाजनों में रक्खें और एक बासन में पुरुष और एक में स्त्री सात दिवस पर्यन्त मूतें जिसके मूत से पूर्वोक्त दाने न उगें उसी में अक्कर का कोई कारण जानो।

अथवा स्त्री पुरुष पृथक २ कटोरों में पानी भरकर अपना २ वीर्य उन में डालें जिसका वीर्य पानी में न बैठे और ऊपर ही तैरता रहे उसी में कोई लक्षण अक्कर का जानो।

अथवा स्त्री पुरुष पृथक् २ काहू वा कद्दू की जड़ में मूता करें जिस के मूत से वह सूख जाय उसी में कोई कारण अक्कर का जानो। अब अक्कर की कई एक सहल औषधियां लिखी जाती हैं।

चूर्ण कि जिसके फांकने से स्त्री गर्भिणी होवे, हाथी दांत कूट छानकर बराबर की मिश्री मिलाकर रक्खे जिस दिन रजस्वला हो चुके नौ माशे सात दिन तक खाय और पश्चात पुरुष के संग भोग करे तीन दिन में गर्भ धारण करेगी।

अथवा कायफल कूट छानकर बराबर का बूरा मिलाकर रजस्वला होने के पश्चात एक २ हथेली भर कर तीन दिन पर्यन्त खाय और दूध चावल आहार करे इसके पश्चात् पुरुष से रति करावे।

अथवा असगन्ध कूट छानकर रति के आरम्भ से पहिले से साढ़े तीन माशे से सात माशे तक खावे और शुद्ध होने के पश्चात् पुरुष से विलास करे और दूध चावल भोजन करे।

गोली कि गर्भ धारण करावे बीजाबोल, नौसादर बराबर पीसकर चार तोल के प्रमाण गोलियां बनावे स्त्री रजस्वला होने के समय प्रति दिन १ गोली खाय और शुद्ध होने के पश्चात पुरुष संग करे।

दवा कि गर्भ पर नियत करे हाथी का मूत्र काम विलास से पहिले अथवा रूप संयोगम के समय योनि में पिलावे।

अथवा पियाबांसे की जड़ पौने दो माशे पानी में पीसकर थोड़ गौ दुग्धके संग पुरुष खाय और तीन दिवस पर्यन्त स्त्री को खिलावे उसके पीछे भोग करे।

अथवा काले धतूरे के फूल पीसकर शहद और घी में मिलाकर खाये।

अथवा एक नग समुद्रफल थोड़े दही के साथ निगले अवश्यमेव गुण करता है।

अथवा यह कि गर्भ पर सहायक होता है कमा की मींगी स्त्री दुग्ध में पीसकर और उस में कपड़ा भिगोकर भग में रखे।

अथवा अजवायन एक हथेली भर कई एक दिवस पर्यन्त खाया करें।

शियाफ़ रजस्वला होने के पश्चात् तीन दिवस सरसों पीसकर बत्ती करे गर्भवती होजाय।

अथवा बाज़ की बीट कपड़े पर लगाकर स्त्री रजस्वला होने के पीछे अपनी योनि में रख तो गर्भ पर सहाय करे और लिखा है कि थोड़ी बीट शहद में मिलाकर स्त्री खावे तो अवश्य गर्भ धारण करे।

अथवा कबूतर की बीट रजस्वला होने के पश्चात् योनि में रखे।

फ़स्द गर्भणी की विधि के व्याख्यान में।

विदित हो कि गर्भवती स्त्री को फस्द और मुसहिल अर्थात विरेचक से विशेष करके चौथे मास की आदि और सातवे मास के अन्त में बचना उचित है तथा छींकने और स्त्री गर्भ के खलन वाली वस्तुओं से और डर की बातों और भयङ्कर शब्द से बचना चाहिये और दो महीन पश्चात पुरुष समागम का त्याग करना उचित है और आहार अधिक खाना न चाहिये और अजीर्ण से डरती रहे और जो गर्भधा प्रसन्न चित्त और यथोचित क्षुधा रखती हो और उसको कोई रोग और सिर पीड़ा और मिचली आदि न हो और उसको दक्षिण ओर में गर्भ ज्ञात हो और दक्षिण कुच भी भारी हो और कुचों पर लाली प्रकट हो तो निस्सन्देह पुत्र जनेगी।

और जिस स्त्री को पुत्र का गर्भ न होगा उसके इसके विरुद्ध चिन्ह होंगे उसका सिर भारी और मुख पीला और निस्तेज होगा क्षुधा न्यून और शिथिलता विशेष होगी तथा कुचा भी कुछ विशेष बड़ी न होंगी और उनका दूध पतला होगा और निद्रा अधिक आवेगी और चलने में प्रथम दाहिना पांव उठावेगी और खड़े होने के समय ज़मीन पर दाहिना हाथ टेककर उठेगी और बैठा

न यह भी लिखा है कि गर्भिणी अपनी हथेली पर जूं रखकर उस पर अपना दूध दुहे जो यह जू उसमें हिले चले तो पुत्र होने का चिन्ह है और जो न हिले मर जाय तो पुत्री उत्पन्न होगी और यह भी लिखा है कि चुकंदर के पत्त सुखा करके गर्भवती की नाक में फूके जो छींक आवे तो लड़की नहीं तो लड़का जनेगी।

गर्भरक्षक अर्थात् वे औषधियां जो गर्भपात न होने दें पाजी स्त्रियों का गर्भ आदि में गिर पड़ता है व लाल वस्त्र में लाल सूत से कि कसूम से रंगा हो एक कशा बांधकर नौ मास पर्यन्त कटि पर बांध रखें।

अथवा यह सूत कि कुंवारी कन्या के हाथ का हो स्त्री के बालु से नख के नख तक नापे और इक्कीस तार का बन वे और काले धतूरे की जड़ के साथ टुकड़ कर के उस सूत में पृथकर बांध कर स्त्री की कटि में बांधे॥

अथवा पन्ना की मुद्रिका अर्थात अगूठी दाहिने हाथ में धारण करना गर्भिणी के रुधिर द्रव को रोकता है।

मर्दन कि स्त्री की योनि की खुजली और जलन को गुण करे खतमी के बीज, मुलतानी मिट्टी मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अथवा भीमसेनी कपूर गुलाब में पीस कर भग में मलें।

गुण कहरुवा कटि पर बांधे गर्भपात की रक्षा करता है और गर्दन में बांधना यर्कान को और छाती पर रखना दिल को गुण करता है और ताअ्‌न को जो एक प्रकार का विष है युक्त साथ है और प्रायः वर्षा के काल में प्रकट होता है इस का रंग लाल या पीला या नीला या काला या हरा होता है और जलन विशेष होती है गुण दायक है।

दवा कि गर्भिणी स्त्री की क्षुधा के उत्पात को गुण करे बड़ी इलायची दो तोला ग्यारह माशे सवा दो तोला कंद के साथ पीस कर तीन माशे नित्य खाय।

फ़सल असर वलादत अर्थात् शीघ्र प्रसूत वा प्रसूत कष्ट की चिकित्सा में।

जनने के समय सुगंधि युक्त वस्तु न जाने दें और चौदह माशे अमलतास के छिलके पानी में औटाकर थोड़ा पूरा मिलाकर पिलाना और पेट के नीचे की धूनी देना प्रसूत के कष्ट को दूर करता है।

वैद्यों ने लिखा है कि मादी घोड़े की लीद, कबूतर की बीट के साथ जलावें

अथवा पियाबांसे की जड़ पौने दो माशे पानी में पीसकर थोड़े गौ दुग्ध के संग पुरुष खाय और तीन दिवस पर्यन्त स्त्री को खिलावे उसके पीछे भोग करे।

अथवा काले धतूरे के फूल पीसकर शहद और घी में मिलाकर खाय।

अथवा एक नग समुद्रफल थोड़े दही के साथ निगले अवश्यमेव गुण करता है।

अथवा यह कि गर्भ पर सहायक होता है कमा की मींगी स्त्री दुग्ध में पीसकर और उस में कपड़ा भिगोकर भग में रखे।

अथवा अजवायन एक हथेली भर कई एक दिवस पर्यन्त खाया करें।

शियाफ रजस्वला होने के पश्चात् तीन दिवस सरसों पीसकर बत्ती करे गर्भवती होजाय।

अथवा बाज की बीट कपड़े पर लगाकर स्त्री रजस्वला होने के पीछे अपनी योनि में रखे तो गर्भ पर सहाय करे और लिखा है कि थोड़ी बीट शहद में मिलाकर स्त्री खावे तो अवश्य गर्भ धारण करे।

अथवा कबूतर की बीट रजस्वला होने के पश्चात् योनि में रखे।

फसल गर्भणी की विधि के व्याख्यान में।

विदित हो कि गर्भवती स्त्री को फस्द और मुसहिल अर्थात विरेचक से विशेष करके चौथे मास की आदि और सातवे मास के अन्त में बचना उचित है तथा पछन और रमी गर्भ के खलने वाली वस्तुओं से और डर की बातों और भयंकर शब्द से बचना चाहिये और दो महीने पश्चात पुरुष समागम का त्याग करना उचित है और आहार अधिक खाना न चाहिये और अजीर्ण से डरती रहे और जो गर्भधा प्रसन्न चित्त और यथोचित क्षुधा रखती हो और उसको कोई रोग और सिर पीड़ा और मिकली आदि न हो और उसको दक्षिण ओर में गर्भ ज्ञात हो और दक्षिण कुच भी भारी हो और कुचों पर लाली प्रकट हो तो निस्सन्देह पुत्र जनेगी।

और जिस स्त्री को पुत्र का गर्भ न होगा उसके इसके विरुद्ध चिन्ह होंगे उसका सिर भारी और मुख पीला और निस्तेज होगा क्षुधा न्यून और शिथिलता विशेष होगी तथा कुचा भी कुछ विशेष बड़ी न होंगी और उसका दूध पतला होगा और निद्रा अधिक आवेगी और चलने में प्रथम दाहिना पांव उठावेगी और खड़े होने के समय जमीन पर दाहिना हाथ टेककर उठेगी और बैठी

ने यह भी लिखा है कि गर्भिणी अपनी हथेली पर जूं रखकर उस पर अपना दूध दुहे जो वह जूं उसमें हिले चले तो पुत्र होने का चिन्ह है और जो न हिल मर जाय तो पुत्री उत्पन्न होगी और यह भी लिखा है कि कुन्दर के पत्र सुखा करके गर्भवती की नाक में फूके जो छींक आवे तो लड़की नहीं तो लड़का जनेगी।

गर्भरक्षक अर्थात् वे औषधियां जो गर्भपात न होने दें यानी स्त्रियों का गर्भ आदि में गिर पड़ता है व लाल वस्त्र में लाल सूत से कि कुसुम से रंगा हो एक कन्या बांधकर नौ मास पर्यन्त कटि पर बांध रखें।

अथवा यह सूत कि कुंवारी कन्या के हाथ का हो स्त्री के तलु से नख के नख तक नापे और इक्कीस तार का बनावे और काले धतूरे की जड़ के साथ टुकड़े करके उस सूत में गूंथकर बांध कर स्त्री की कटि में बांधे॥

अथवा पन्ना की मुद्रिका अर्थात अंगूठी दाहिने हाथ में धारण करना गर्भिणी के रुधिर द्रव को रोकता है।

मर्दन कि स्त्री की योनि की खुजली और जलन को गुण करे खतमी के बीज, मुलतानी मिट्टी मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अथवा भीमसेनी कपूर गुलाब में पीस कर गर्भ में मलें।

गुण कहरुवा कटि पर बांधे गर्भपात की रक्षा करता है और गर्दन में बांधना यकीन को और छाती पर रखना दिल को गुण करता है और ताऊन को जो एक प्रकार का विष है युक्त साथ है और प्रायः वर्षा के काल में प्रकट होता है इस का रंग लाल या पीला या नीला या काला या हरा होता है और जलन विशेष होती है गुण दायक है।

दवा कि गर्भिणी स्त्री की क्षुधा के उत्पात को गुण करे बड़ी इलायची दो तोले ग्यारह माशे सवा दो तोले क़न्द के साथ पीस कर तीन माशे नित्य खाय।

फ़सल असर वलादत अर्थात् शीघ्र प्रसूत वा प्रसूत कष्ट की चिकित्सा में।

जनने के समय सुगंधि युक्त वस्तु न जाने दे और चौदह माशे अमलतास के छिलके पानी में औटाकर थोड़ा बूरा मिलाकर पिलाना और पाद-के-सुम की धूनी देना प्रसूत के कष्ट को दूर करता है।

वैद्यों ने लिखा है कि मादी घोड़े की लीद, कबूतर की बीट के संग जलावें

घोलकर स्त्री को खिलाना शीघ्र प्रसून को सहायता देता है।
और सांपकी कांचली की धूनी मृतक बच्चे को तुरंत बाहर लाती है और गाजर के बीजों की धूनी गुण करती है।
अथवा खजूर के फूल को साथ थोड़े जल में औटा कर यथोचित शहद मिलाकर पिलाना अत्युत्तम है।
दवा कि गर्भाशय में रज का रुधिर बहने लगे तुरंत रोके -गूलर की जड़ जौकुट कर औटा के पिये।
अथवा नीलोफर, मुलहटी कड़ी हुई, चन्दन घिसा हुआ, मिश्री बराबर फक्की बनाकर भीगे हुए साठी चांवलों के पानी के साथ एक हथेली भर खावे।
गोटा कि प्रसूत के कष्ट को हरता है मकनातीस पत्थर बायें हाथ में रक्खे।
अथवा कमा चर्म में रख कर दोनों पिंडलियों में रखे।
गुण थोड़ी हींग खाना और मनुष्य के सिर के बालों की धूनी लेना।
अथवा मनुष्य के केश जलाकर उनकी राख गुलाब जल में मिलाकर स्त्री के सिर से मलना व जल में नोन मिलाकर स्त्री को जिमाना और लटकाना।
अथवा सांप की कांचली स्त्री के नितंब पर बांधना और उसकी धूनी देना।
अथवा चकमक पत्थर कपड़े में लपेट कर स्त्री की जंघा में बांधना शीघ्र प्रसूत के लिये गुण दायक है।
इसी प्रकार बारह सींगे का सींग बांधना और गिद्ध का पर पैर तले रखना और सिरफोका की जड़ कमर में बांधना और जीते सर्प के दांत स्त्री के गले में लटकाना प्रसूत के कष्ट को दूर करता है।
इन्द्रायन की जड़ पीसकर गाय के घी में मिलाकर भग में मलना बच्चे को तुरन्त बाहर लाता है।
दवा कि उस पीड़ा को शान्ति करे कि उत्पन्न होने के पश्चात् गर्भाशय में होती है खजूर का छिलका तीन तोले चार माशे सौंफ के अर्क में पीसकर पिये।
अथवा पुराना खापरा खाय।
अथवा पहाड़ी पोदीना औटाकर पिये।

अथवा पोस्त के डाड़ों का काढ़ा पिये।

फ़सल उन ओषधियों के व्याख्यान में जो स्त्री को बांझ करें

हाथी की ताजा लीद निचोड़ कर एक तोले शहद में मिलाकर रजस्वला होने के पश्चात तीन दिवस पर्यन्त पीवे और हाथी की लीद योनि में मलना भी बांझ करता है।

अथवा नौसादर फिटकरी जल में पीसकर भग में स्त्री धर्म के पश्चात् रखे।

अथवा जो स्त्री प्रति दिन प्रातः काल एक लौंग निगले कभी गर्भ न रहे।

अथवा स्पद नागौरी जलाकर रजस्वला होने के पश्चात् खाय।

अथवा जो लिंग के सिर को मीठे तेल और नोन से मलकर भोग करे तो कभी गर्भाशय वीर्य को स्वीकार न करे।

शियाफ़ कि स्त्री को बांझ करे बाबची मीठे तेल में पीसकर स्त्री धर्म के पश्चात बत्ती बनाकर भग में रखे।

दवा हल्दी पीसकर रजद्रव के समय खाय और शुद्ध होने के पश्चात भी तीन दिन खाय तो गर्भवती नहो।

अथवा चमेली की जड़ और चंपे के फूल का चीरा छाया में सुखावे और रजद्रव के प्रारंभ से तीन दिवस पर्यन्त खाय ऊपर से एक घूंट जल पिये।

काढ़ा कि गर्भ को न रहने दे कपास की छाल और गुड़ औटाकर पिये।

अथवा कालीमिर्च भोग के पश्चात योनि में रखे।

अथवा साढ़े चार माशे नीला पिये।

गोली कालीजीरी, कावली हड़ की गुठली, नागेश्वर, गर्भाचूर, कलौंजी, कायफल प्रत्येक एक तोले साढ़े पांच माशे कूट छान कर गोलियां बनाव और रजस्वला होने के समय एक गोली नित्य सात दिवस पर्यन्त खाय। लिखा है यदि स्त्री चमेली की एक कली निगले तो वर्ष दिन तक गर्भ स्थित नहो।

अथवा रेंडी की गूदी निगल जाय तो वर्ष दिन तक गर्भ न रहे।

अथवा खाने का नोन पीस कर भग में रखे।

अथवा चूहे की मेंगनी शहद में मिलाकर बत्ती बनाकर योनि में रखे।

विधि गर्भ न रहे स्त्री संभोग के समय अपनी जांघ न फैलावे और

पुरुष को उचित है कि जब वीर्य स्खलित होने लगे अपना लिंग बाहर निकाल ले और प्रबंध करे, कि अपने वीर्य स्खलित होने के संग ही स्त्री का वीर्य स्खलित न होवे और समोग के पश्चात शीघ्र खड़ी होकर छींके और लड़के का दांत जो पहले गिरे और भूमि पर न गिरने पावे उसे लेकर रविवार के दिन चांदी में मढ़ाकर स्त्री भुजा पर बांधे कभी गर्भ न रहेगा।

अथवा मेंढक की अस्थि स्त्री अपने पास रखे।

अथवा सर्प के दांत अपने पास रखे।

अथवा काकनज के सात दाने स्त्री धर्म से शुद्ध होकर निगले।

अथवा थूहर की लकड़ी छाया में सुखा कर जलाके एक माशे उसकी राख बराबर का बूरा मिलाकर इक्कीस दिवस पर्यन्त नित्य खाय।

अथवा मनुष्य के कान का मैल एक दाने बाकला की बराबर काले रंग के पश्मीने में बांध कर गले में लटकावे जब तक कि गले में रहेगा कभी गर्भ न ठैरने देगा।

शियाफ़ बैंगन के बीज खूब महीन पीसकर गो दूध और शहद मिलाकर स्त्री धर्म के पश्चात बत्ती करे।

गुण लिखा है कि जो स्त्री अपने पुत्र के मूत्र पर मूते तो गर्भिणी कभी नहो और मतिमास थोड़ा खच्चर का मूत्र पीना यह भी गुण रखता है।

अथवा यह गर्भ न रहने दे और गर्भाशय की पीड़ा को जो भोग के पश्चात होती है दूर करे माजू महीन पीस कर रुई उस पर लपेट कर गोला बनाकर काम विनोद से पहले भगद्वारा गर्भाशय के मुख तक पहुंचावे।

फसल गर्भपात में

दवा कि गर्भ को गिरावे इंद्रायन निचोड़ कर उस में रुई डबोकर भग में रखें।

शियाफ़ सुरई बीजों सहित पीसकर बत्ती करे।

अथवा साबुन बत्ती, जैसा बना कर गर्भाशय के मुख में रखे उस को कड़वे तेल में पीसकर उस में रुई भिगोकर गर्भाशय के मुख में रखे।

अथवा बीनाबोल गुड़ में मिलाकर खाय और कटूल पीसकर बत्ती करे।

काढ़ा कि पेट से बच्चा निकालने में अद्वितीय है मधुवे के बीज डेढ़ तोला आध सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे छान कर पिवे।

चूर्ण कि गर्भ को गिरावै अमुनान जो कि एक दवा है साढ़े तीन माशे कूट छान कर फांके।

शियाफ़ कि गर्भ को गिरावे और स्त्री धर्म के रुधिर को जारी करे एलुआ कड़वा, चिन्दाल बराबर तीक्ष्ण मद्य में खरल कर बत्ती बनाकर भग में रखे।

काढ़ा कि बच्चे का नाल और झिल्ली को गर्भाशय से बाहर निकालता है सहजने की छाल गुड़ के साथ औटाकर पिये।

धूनी कि गर्भ को गिराती है जंगली कपोत की बीट और गाजर के बीज बराबर लेकर धूनी देवे।

शियाफ़ सुनमुना कि गेंहू में होता है और एलुआ बराबर लेकर बत्ती करे।

लेप कि गर्भ गिरने में सहायता देता है ऊटकटारे की जड़ पानी में पीस कर गर्भवती के पेट पर लेप करे।

अथवा गुड़हल के फूल पानी में पीसकर नाभी और उस के आसपास लेप करे।

धूनी कि गर्भ को गिरावे गंधक, बोल, हींग, गूगल पीसकर धूनी ले और जो गायका पित्त मिलावे अधिक गुण करे।

अथवा यह कि जीते और मरे बच्चे को बाहर निकाले और गर्भ को गिरावे घोड़े की लीद स्त्री अपनी भग के नीचे जलाकर धूनी लेवे।

अथवा अनार का छिलका जलाकर धूनी लेवे।

दवा कि गर्भ को गिराती है खिपखपरे की जड़ छः अंगुल काटकर उस का एक सिरा बारीक बनावे और एलुआ गाय के पित्त में पीसकर इस के बारीक सिरे पर भली भांति लगाकर सुखा के गर्भाशय के मुख तक पहुँचावे और उसका दूसरा सिरा तागे से दृढ़ बांधे इसी प्रकार दो चार दिवस करने से गर्भ गिर जावेगा।

दवा सोया दस माशे गाय काल ही खाय।

शियाफ अरंडी की कोंपल कोपल टहनी रेंडी के तेल में भिगोकर वर्त्त करे।

धूनी गधे के सुम और लीद की धूनी ले।

दवा कि गर्भ को गिरावे मेंथी, हलदी, फिटकरी एक २ दाम अर्थात् प्रत्येक एक तोले आठ माशे भड़भूजे के छप्पर का धुआं दश माशे कूट छान कर पानी में मिला बत्ती बना कर सुखावे और नरम करने वाली वस्तु जैसे घी और पोदीना गर्भाशय के मुख में लगावे उस के पश्चात् दोनों समय बत्ती रखे और गर्भ गिरजाने के पश्चात एक कपड़ा घी में भिगो कर भग में रखना चाहिये कि पीड़ा दूर होजाय और भी गर्भ गिरजाने के पश्चात गोखरू छः माशे खर्बूजे के बीज सौंफ प्रत्येक एक तोला औटाकर छान के मिश्री मिलाकर पीवे और आहार कुछ न खाय और जल के बदले कपास की कलियां और बांस की तावा ग्रन्थी प्रत्येक छः तोले आठ माशे पानी में औटा कर पिये।

काढ़ा गाजर के बीज, सोया के बीज, मेथी प्रत्येक एक तोले नौ माशे दो सेर पानी में औटावे और जब आधा शेष रहे मल छान कर दो सप्ताह पर्यन्त इसी प्रकार पीवे॥

बत्ती परीक्षित है। एलुआ, विसखपरे की जड़, नौंकाशोया खिरनी की जड़ महुए के बीज बराबर कूट छान कर बत्ती बनाकर भग में रखे।

अथवा अरंड की बत्ती एक तोला आठ माशे, एलुआ चार माशे खिरनी के बीजों की गींगी चार माशे महीन पीस कर बत्ती बनाकर दोनों समय गर्भाशय के मुख में रक्खा करे।

अथवा पोवचूल कि एक प्रसिद्ध लकड़ी है एक भाग उसमें से लेकर पानी में घिसे और तीन भाग रसौत मिलाकर छुहारे की गुठली के समान बनावे और सुखाकर गर्भाशय के मुख में रखे। दो या तीन दिवस में गर्भ गिर जायगा और जो गर्भाशय के आस पास दाने पड़ जाय तो उन में घी लगावे।

फसल भग सकोचन की औषधियों में

दवा बैंगन सुखाकर पीस कर भग के अर्द्र मले।

चूर्ण कि भग को तंग करे ढाक की कलियां छाया में सुखाकर बरा बर का पूरा मिलाकर साढ़े दस माशे प्रति दिन सजा सवर खाया करे चौदह दिन में भग तग हो जायगी।

शियाफ आख की जड़ स्त्री अपने मूत्र में पीसकर बत्ती करे और चार घड़ी पश्चात पुरुष के पास जाय तो पुरुष उस पर आशक्त हो जायगा।

अथवा केंचुए सुखा कर स्त्री अपने गुप्त स्थान पर मले तो कोई मनुष्य उस पर सामर्थ्य नहो सकेगा।

-अथवा बबूर की छाल, झड़बेरी की छाल, मौजमिरी की छाल, कचनार की छाल, अनार का छिलका, सब बराबर थोड़े जल में औटाकर उस पानी से योनि को धोवे और औटाते समय एक स्वेतवस्त्र उसमें डाल दे जब रंगीन होजावे उस में से थोड़ा कपड़ा योनि में रख।

अथवा ढाक की कोंपल छाया में सुखाकर कूटछान कर बराबर की मिश्री मिलाकर पौने दो माशे से सात माशे तक खाय सात दिन में भग तग हो जायगी।

अथवा सींप पीस कर प्रति दिन दो चार योनि में मल।

अथवा बीरबहुटी घी में पीसकर मले।

अथवा गेंदे का छिलका जलाकर उसकी राख मले।

अथवा जाई जुही के फूल पीस छानकर मले।

अथवा बकायन की छाल छाया में सुखाकर कूट छानकर बत्ती बनाकर भग में रखे अति गुणदायक है।

अथवा खट्टे पालक के बीज कूट छानकर योनि म मल।

चूर्ण कि उस पानी को दूर करे जो गर्भाशय में बहता है मौलसिरी की छाल सुखाकर कूट छानकर बराबर का पूरा मिलाकर प्रति दिन प्रातः काल ताजा पानी के साथ एक इथली भर फांक।

अथवा इमली के बीजों की मींगी कूट छान कर भग में दोनों समय मले।

अथवा समुद्र झाग व की गुठली की मिंगी बराबर पीसकर योनिमें मलें।

अथवा चुनियां गोंद छ माशे खूब महीन पीसे और दो तोले फिटक भूने और भूनते समय वही चुनियां गोंद पानी में मिलाकर उस पर छिड़ सीतल होने के पश्चात फिर उसे पीसे और फिर थोड़े से धावा के फूल मिल कर फिर पीसे और भग में रखे अद्भुत गुण देखने के वास्ते इस से उत्त और कोई औषधि नहीं है।

अथवा कचनार की कली एक तोले आठ माशे अनार का छिलका मो चरस प्रत्येक पांच माशे बबूर की कच्ची फली सुखाई हुई चार नग, माजू ए नग महीन पीस कपड़े में छान कर काम में लावे।

सौभाग्यसोंठ अर्थात् सोंठ की माजून जिसको सुहाग सोंठ कहते हैं भारतवर्षीय वैद्यों की बनायी हुई स्त्रियों की कमर को बल देने के लि अत्युत्तम है सोंठ आध पाव, घी तीनपाव गौ दुग्ध में औटावे- जब गाढ़ा हो जाय खर्बुजे के बीजों की मींगी, निशास्ता, सिंघाड़ा प्रत्येक दो तोला असगंध सफ़ेद मूसली, मोचरस, नागौरी गोंद, इलायची के बीज, शतावर प्रत्येक दो तोले, तेजपात, चदन पीसकर तज, धावा के फूल प्रत्येक नौ माशे, गोखरू पीपल, कालीमिर्च, बालछड़, नागरमोथा, कौंच के बीजों की मिंगी, चुनियां गोंद प्रत्येक छः माशे कूट छान कर बूरे में माजुन बनावे।

फ़सल इलाज सैलानतमस अर्थात स्त्री धर्म के अधिक रुधिर बहने की चिकित्सा में

प्रगट हो कि जो नियत समय पर रजद्रव न हो उसको इस्तहाज़ह कहते हैं इस रोग में कुचों के नीचे सींगी लगाना अति गुण करता है।

दवा कि रज के रुधिर को बंद करे बकायन की कोंपल एक तोला भांग के सदृश घोट छानकर पीवे।

अथवा कपास के फूल जला कर उनकी राख एक हथेली भर जल के संग फांके।

अथवा करा की छाल सात माशे कूट छान कर थोड़ा बूरा मिलाकर पानी के संग फांके।

चूर्ण कि रुधिर के विशेष द्रव को रोके। मसूर, अरहर, उद प्रत्येक दो तोले, साठी चांवल एक तोले सब को जला महीन पीसकर फकी बनावें और एक हथेली भर खावे।

अथवा चने भुने हुए, तम, लोध्र बराबर पीस कर बूरा मिलाकर एक हथेली भर फाके।

अथवा मालती के पुष्प, कोरी खांड प्रत्येक छः माशे परस्पर मिलाकर खाय।

अथवा सेलखरी, गेरू बराबर मिलाकर फक्की बनावे मात्रा छः माशे प्रातःकाल शीतल जल के साथ।

अथवा छोटी दूधी छाया में सुखा कूट छान कर प्रातःकाल एक हथेली भर फाके।

अथवा ताल के दाने बराबर का बूरा मिलाकर पीसे और जल के संग एक हथेली भर खाय।

अथवा असगंध, बराबर का बूरा मिलाकर एक तोला ताजा पानी के संग खाय।

अथवा बबूर का गोंद भुना हुआ बराबर का गेरू पीसकर प्रात काल नौ माशे खाय।

दवा कि स्त्री धर्म के विशेष रुधिर को गुण करे हार सिंगार की कोंपल कालीमिर्च सात नग जल में पीस छान कर पिये।

अथवा मुलतानी मिट्टी पानी में भिगोकर प्रात काल उस का निथरा हुआ पानी पीवे।

काढ़ा कि रजस्वला के रक्तस्रव को खोवे सूखा धनियां एक हथेली भर कर औटावे और छानकर कई एक दिन पिये।

अथवा कचनार की कलियां और हरे गूलर और कुलफे का साग तथा मसूर की दाल और पटसन के फूल पका कर लाल चावल के भात के संग खाय।

नफ़ूफ़िल अर्थात् सुपारी पाक जो भग के पानी बहने को दूर करने के लिये अत्यन्त गुण दायक है गौ दुग्ध पांच सेर, चिकनी सुपारी पाव सेर, कूट छान कर दूध में डाल, कर मन्दी आंच से औटावे कि गाढ़ा होजाय पश्चात्, आध सेर बूरा डाल कर चाशनी करे फिर छोटी बड़ी माई प्रत्येक चार तोले दो माशे, सुपारी के फूल, धावा के फूल, प्रत्येक आठ तोले चार माशे, ढाक का गोंद आध पाव सबको महीन कूट छान कर जब चाशनी शीतल होने के

अथवा चुनियां गोंद छ माशे खूब महीन पीसे और दो तोले फिटकरी भूने और भूनते समय वही चुनियां गोंद पानी में मिलाकर उस पर छिड़के सीतल होने के पश्चात फिर उसे पीसे और फिर थोड़े से धावा के फूल मिला कर फिर पीसे और भग में रखे अद्भुत गुण देखने के वास्ते इस से उत्तम और कोई औषधि नहीं है।

अथवा कचनार की कली एक तोले आठ माशे अनार का छिलका मोचरस प्रत्येक पांच माशे बबूर की कच्ची फली सुखाई हुई चार नग, माजू एक नग महीन पीस कपड़े में छान कर काम में लावे।

सौभाग्यसोंठ अर्थात् सोंठ की माजून जिसको सुहाग सोंठ कहते हैं। भारतवर्षीय वैद्यों की बनायी हुई स्त्रियों की कमर को बल देने के लिये अत्युत्तम है सोंठ आध पाव, घी तीनपाव गौ दुग्ध में औटावे- जब गाढ़ा हो जाय खर्बुजे के बीजों की मींगी, निशास्ता, सिंघाड़ा प्रत्येक दो तोला असगंध, सफ़ेद मूसली, मोचरस, नागौरी गोंद, इलायची के बीज, शतावर प्रत्येक दो तोले, तेजपात, चदन पीसकर सब, धावा के फूल प्रत्येक नौ माशे, गोखरू, पीपल, कालीमिर्च, बालछड़, नागरमोथा, कौंच के बीजों की मिंगी, चुनियां गोंद प्रत्येक छः माशे कूट छान कर बूरे में माजुन बनावे।

फ़सल इलाज सैलानतमस अर्थात स्त्री धर्म के अधिक रुधिर बहने की चिकित्सा में

प्रगट हो कि जो नियत समय पर रजद्रव न हो उसको इस्तहाज़ह कहते हैं इस रोग में कुचों के नीचे सींगी लगाना अति गुण करता है।

दवा कि रज के रुधिर को बंद करे बकायन की कोंपल एक तोला भांग के सदृश घोट छानकर पीवे।

अथवा कपास के फूल जला कर उनकी राख एक हथेली भर जल के संग फांके।

अथवा करा की छाल सात माशे कूट छान कर थोड़ा बूरा मिलाकर पानी के संग फांके।

चूर्ण कि रुधिर के विशेष द्रव को रोके। मसूर, अरहर, उर्द प्रत्येक दो तोले, साठी चावल एक तोले सब को जला महीन पीसकर फंकी बनावे और एक हथेली भर खावे।

अथवा चने भले हुए, तज, सोंठ बराबर पीस कर बूरा मिलाकर एक हथेली भर फांके।

अथवा मालती के पुष्प, कोरी खांड प्रत्येक छः माशे परस्पर मिलाकर खाय।

अथवा सेलखरी, गेरू बराबर मिलाकर फंकी बनावे मात्रा छ माशे प्रातःकाल सीतल जल के साथ।

अथवा छोटी दूधी छाया में सुखा कूट छान कर प्रात काल एक हथेली भर फांके।

अथवा लाख के दाने बराबर का बूरा मिलाकर पीसे और जल के संग एक हथेली भर खाय।

अथवा असगंध, बराबर का बूरा मिलाकर एक तोला ताजा पानी के संग खाय।

अथवा बबूर का गोंद भुना हुआ बराबर का गेरू पीसकर प्रात काल नौ माशे खाय।

दवा किसी धर्म के विशेष रुधिर को गुण करे हार सिंगार की कोंपल कालीमिर्च सात नग जल में पीस छान कर पिये।

अथवा मुलतानी मिट्टी पानी में भिगोकर प्रात काल उस का नितरा हुआ पानी पीवे।

काढ़ा कि रक्तस्रवता के रक्तद्रव को खोवे सूखा धनियां एक हथेली भर कर औटावे और छानकर कई एक दिन पिये।

अथवा कचनार की कलियां और हरे गूलर और कुलफे का साग तथा मसूर की दाल और पटसन के फूल पका कर लाल चावल के भात के संग खाय।

नफूफिल अर्थात् सुपारी पाक जो भग के पानी बहने को दूर करने के लिये अत्यन्त गुण दायक है गौ दुग्ध पांच सेर, चिकनी सुपारी पाव सेर, कूट छान कर दूध में डाल कर मन्दी आंच से औटाय कि गाढ़ा होजाय पश्चात् आध सेर घृत डाल कर चाशनी करे फिर छोटी बड़ी माई प्रत्येक चार तोले दो माशे, सुपारी के फूल, धावा के फूल, प्रत्येक आठ तोला चार माशा, ढाक का गोंद आध पाव सबको महीन कूट छान कर जब चाशनी सीतल होने के

समीप हो उसमें मिलावे और शुद्ध भोजन में रखकर यथोचित एक तोले आठ माशे से लेकर दो तोले पांच माशे तक खाय।

टिकिया कि स्त्री धर्म के विशेष रुधिर को रोके। रसौत, बबूल का गोंद, राळ प्रत्येक एक माशे, सुपारी ढाई माशे कूट छान कर पानी में माश२ भर के प्रमाण टिकिया बनावे और नित्य दो तीन खाय।

हमूल अर्थात् भग में रखने की औषधि कि रुधिर को रोके गधे की लीद, सुखाकर पोटली बांधकर योनि में रखे।

अथवा बकरी की मेंगनी सूखी पीसकर पोटली बनाकर गर्भाशय के मुख पर रखे यदि थोड़ा कुंदरू मिलावे तो अति गुण करे।

अथवा अनार का छिलका औटाकर एक तोला पिये।

अथवा भुना और बिना भुना जीरा लाल तंदुल के मद्य में पीसकर भग के अंदर रखे।

फ़सल अरुतबास हैज अर्थात् स्त्रीधर्म के रुक जाने की चिकित्सा में

जो ऋतु धर्म का खून शारीरिक रुधिर की न्यूनता से रुक जाय तो कोई हर्ज नहीं और जो किसी दूसरे कारण से बंद होजाय तो अवश्य चिकित्सा करनी चाहिये। ऋतुकाल से पहले साफ़न नस की फ़स्द खुलवाना स्त्री धर्म को जारी करता है।

काढ़ा कि ऋतु धर्म जारी करता है। सूवा, लालमजीठ, मेथी, गाजर के बीज, मूली के बीज, सोये के बीज, अजवायन, सौंफ, तिलली की पत्तियां, तुर्की दुर्गना बराबर गुड़ मिलाकर औटाकर पिये।

अथवा नर्मा बाड़ी के फूल और पत्ते आधपाव सेर भर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे तब छ तोले आठ माशे गुड़ मिलाकर पिये।

अथवा अखरोट का छिलका, मूली के बीज, अमलतास का छिलका, हंसराज, बांग्रविडंग जौकुट करे प्रत्येक नौ माशे द्विगुण गुड़ मिलाकर औटा कर पिये तो रजोधर्म जारी होवे और यह गर्भ को भी नष्ट कर देता है और कोई इसमें कलौंजी और कपास का छिलका भी मिलाते हैं।

अथवा नीमकी छाल जौ कुट करके चार माशे, गुड़ दो तोले, डेढ़ पाव जल में औटावे जब आधपाव शेष रहे तब छानकर पिये।

काढ़ा कि कमर की पीड़ा को जो ऋतुकाल में होती है गुण करे सोंठ, वायविडंग, दस माशे, गुड़ तीन तोले चार माशे औटाकर पीयें।

चूर्ण कि स्त्रीधर्म को गुण करे मूली के बीज, गाजर के बीज, मेथी, कूट छानकर एक हथेली भर अर्द्धांश जल के संग फक्की बनावे।

अथवा कालेतिल, गोखरू प्रत्येक एक तोला रातको पानी में भिगादे और प्रात' काल शीरा निकाल कर थोड़ा बूरा मिलाकर पीवे।

अथवा मजीठ पीसकर एक हथेली भर फांके

जवारिश शोनीज अर्थात् कलौंजी पाक मूत्र और रजोधर्म के द्रव को जारी करता है और गर्भाशय की पीड़ा को दूर करता है।

फ़लीता अर्थात् बत्ती गुड़ थोड़ घी में मिलाकर आग पर रखे जब बत्ती बनाने के योग्य हो थोड़ा सूखा बैरोजा पीस मिलाकर बत्ती बनाय गर्भाशय के मुख तक पहुचावे।

अथवा स्त्री नख जलाकर उसकी धूनी कई बार ले और गदे बैरोज की धूनी भी अति गुण करती है।

लेप कि गर्भवती के नलों की पीड़ा को गुण करता है कालीजीरी तीन तोले चार माश, रेंडी का गूदा आधपाव, सोंठ एक तोला आठ माशे सब को औटाकर पीस के गुनगुना २ लेप करे।

हमूल कि गर्भाशय के गदे पानी को शुद्ध करता है पीजावोल, लौंग बराबर कूटछान कर वस्त्र में बांधकर दोनों समय गर्भाशय के मुख तक पहुचावे तीन दिवस में शुद्ध करे।

अथवा अजमोद, वायविडंग, गदा बैरोजा सूखा प्रत्येक एक भाग, सोये के बीज सेंधानोन प्रत्येक आधा भाग शहद में मिलाकर और रुई में लपेट कर गर्भाशय तक पहुचावे।

अथवा वायविडंग, समुद्रझाग, प्रत्येक एक भाग, गदा बैरोजा सूखा, सेंधानोन प्रत्येक दो भाग कूट छानकर कपड़े में बांधकर भग में रखे।

लेप कि उस पीड़ा को जो सर्दी से हो गुण करे तिल पीठ तेल में पीस कर अर्द्धोष्ण नाभि के नीचे लेप करे।

अथवा गदा बैरोजा, लौंग, वायविडंग, सेंधानोन, नकछिकनी प्रत्येक थोड़ा

अजवायनी बहुत सा घृत डालकर अथवा दही भात भोजन करे।

काढ़ा भारतवर्षीय वैद्यों का बनाया हुआ कि कटि की पीड़ा को खोवे, अजीर की जड़ की छाल, सोंठ, धनियां जौकुट करके सोलह तोले ८ माशे ढाई पाव जल में रात को भिगोकर प्रातः काल औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे तब छानकर पिये।

हलुवा कि कटि की पीड़ा को गुण करता है सोंठ, रेंडी की मिंगी प्रत्येक दस तोले, घी, बूरा प्रत्येक तेरह तोले चार माशे, गौ का दूध आधसेर, प्रथम रेंडी की मिंगी कूटकर घी में भूने फिर दूध में मिलाकर औटावे जब गाढ़ा हो, आप बूरा डालकर हलुवा बनावे और प्रकृति के अनुसार खाय।

चारदाना कि जोड़ों की बीमारी तथा सर्दी और बादी की बीमारियों का गुण करता है हालयो, अजवायन, कलौंजी, मेथी बराबर लेकर प्रातः काल एक चुटकी भर अर्थात् तीन अंगुलियों से जितनी उठे फांककर जल के घूंट के संग निगल जाय इस नुसखे को शरीर का राजा कहते हैं।

माजून शोरजान शोरजान दो तोले, ग्यारह माशे सनाय, एक तोला साढ़े पांच माशे सोंठ, नेत्रबाला, सफ़ेद जीरा, पीपल प्रत्येक सातमाशे, शहद सबकी बराबर लेकर माजून बनावे मात्रा नौ माशे गरम जल के संग।

दवा कि कटि और जोड़ की पीड़ा को जो गर्मी से हो गुण करती है। धनियां साढ़े तीन माशे, क़न्द दस माशे, मिलाकर खाय और साढ़े दस माशे पोस्त के दाने, साढ़े दस माशे क़न्द के साथ खाना भी गुण करता है।

चारदाना कि सर्द बीमारियों में काम में आते हैं माल कांगनी, पमार के बीज, बावची, हालयों बराबर मिलाकर रखे तीन माशे सायत प्रातः काल गरम पानी के संग निगल जाया करे यह औषधि श्वेत दागको भी गुण करती है कफ का नाश करती है और शरीर की रक्षक है माल कांगनी लेकर पहिले दिन एक दाना निगले और प्रति दिवस एक दाना बढ़ाते जाय जब सौ दाने तक पहुंच जाय फिर इसी प्रकार प्रति दिन कम करे इस न्यूनाधिक काल में पूर्वोक्त रोग दूर हो जायगा भूख अधिक बढ़ेगी और जो बढ़ाने के काल में गर्मी विशेष विदित हो तो अधिक न करे किन्तु उसी दिन से एक एक कम करने का आरम्भ करे।

अथवा करील की लकड़ी जलाकर दो माशे थोड़े घी के संग खावे।

अथवा यह कि हाथ पांव रहजाने को गुण करे और सदैव के अजीर्ण को गुण करे जिस मनुष्य को वायशूल उठने का अभ्यास हो उसको भी बहुत गुण करती है रेंडी छीलकर निगल जाय पहिले दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाने इसी प्रकार प्रति दिन एक २ बढ़ावे जब सात दिन व्यतीत हो जाय फिर एक २ प्रति दिन कम करे।

अथवा प्रति दिन एक माशे रासन के बीज खाय।

अथवा पोस्त के डोड़ यथोचित भिगोदे और इतना पिये कि नशा नहो

अथवा कलमीशोरा, कबीरा छ रत्ती, एक तोले आठ माशे शहद में मिलाकर तीन दिवस पर्यन्त खाय और दो माशे शोरा मीठे तेल में मिलाकर कमर पर मलवावें।

अथवा बूरा और खोपरा खाना कमर की पीड़ा को गुण करता है।

अथवा महुए के बीजों का तेल जो कोल्हू में निकलता है घी के सदृश पीला निकलता है जोड़ों पर मलना बाय की पीड़ा आदि को और सर्द रोगों को दूर करता है।

अथवा रेंडी, सेंधानोन, मैदालकड़ी, प्रत्येक एक तोला, हींग छः माशे, गेंहू का आटा आधपाव सब को परस्पर पीस मिलाकर रोटी पकावे जब एक ओर पकजाय पीड़ा के स्थान पर बांध।

फलुए का तेल कि कद के सदृश पीला होता है और पहाड़ से आते हैं चिरंजक के पश्चात मले वो जोड़ों तथा सर्दी और बादी तथा कफ की बीमारियों को गुण करता है।

सभालू का तेल इस तेल का मलना जोड़ों की पीड़ा का गुण करता है सभालू के पत्ते कूटकर अर्क निकाले और उसकी बराबर मीठा तल मिलाकर औटावे जब अर्क जल जाय और केवल तेल रहजाय छान कर गुनगुना गुनगुना पीड़ा पर मले और संभालू के पत्ते उस पर बांधे।

बेद अजीर का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को गुण करे अरंड की जड़ आठ सेर जल में औटावे फि दो सेर रेंड रेंडी का तेल डाल कर इतना औटावे कि पानी जल कर तेल शेष रह जावे पीड़ा की जगह मर्दन करें।

अथवा अलसी का तेल, सरसों का तेल, तिल का तेल प्रत्येक आध

पाव, धतूरे के पेड़ का अर्क पत्ते, फल, और जड़ सहित निकाला हो सब तेलों में डाल कर मन्दी आंच से औटावे जब अर्क जल कर तेल मात्र रह जाय छान कर पीड़ा पर मले और उस पर अरंड वा आख के पत्ते बांधे।

आख का तेल कि वाय को दूर करता है और उसका सेक जोड़ों की पीड़ा को गुण करता है। आख की जड़ जौकुट कर के कड़वे तेल में जलावे जब जल कर नीचे बैठ जाय तेल छान कर मले और केवल आख के पत्ते गरम कर घुटने की पीड़ा पर बांधे गुण करता है।

तेल कि जोड़ों की पीड़ा और अर्द्धांग को जिसे वायुने पकड़ा हो गुण करे मीठा तेल पाव सेर, लहसन आधपाव, लहसन छीलकर चार नग मिलाये समेत तेल में जलावे फिर छान कर काम में लावे और वायु से बचता रहे।

असगंद का तेल कि कटि और पिंडली और पसली की पीड़ा और रांघन को गुण करे असगंद, मीठे तेलमें जलावे और छानकर मले और किसी २ के मत में असगंद के तेल की यह विधि है कि असगंद तेरह तोला चार माशे, सोंठ तीन तोला चार माशे, रात को पानी में भिगोदे और प्रातःकाल आध सेर मीठे तेल में औटावे जब जल, असगंद, सोंठ जल कर तेल रहजाय छान कर मर्दन करे और कोई २ इस तेल में कड़वाकूट मिलाकर मलते हैं और बाबची के तेल का मर्दन कि अर्द्धांग वात में वर्णन किया गया है रांघन को गुण करता है।

गोली कि जोड़ों की पीड़ा जुकरस और रांघन को गुण करती है शीतरज अफीम प्रत्येक सात माशे काहू के बीज, अजवायन प्रत्येक दो तोले ग्यारह माशे कूट छानकर खिलशोजे की मिंगी के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली।

अजवायन का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को अति गुणदायक है अजवायन पीस कर मीठे तेल में मिलाकर मले।

तमाकू का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को अति गुणदायक है तमाकू आध सेर, मीठा तेल पाव सेर, को तोड़ कर आध सेर जल में रात को भिगोदे प्रात काल तमाकू का पानी निचोड़ कर तेल में मिलाकर मन्दी आंच से औटावे जब पानी जल कर तेल शेष रह जावे मले।

नाजबू का तेल कि घुटने की पीड़ा को गुणदायक है नाजबू की पत्तियां

का अर्क दो भाग, मीठा तेल एक भाग लेकर औटावे जब पानी जलकर तेल बाकी रह जाय एक तोले चने का पानी कि जीरा उसमें पकाया हो मिलाकर पिवे और पीड़ित अवयव पर भी मलें।

चोबचीनी का तेल कि जोड़ों की पीड़ा और पीठ की पीड़ा और उस पीड़ा को जो उपदंश से होती है गुण करे। चोबचीनी असगन्धी और मीठा तेल प्रत्येक पौने चार तोले पांच सेर जल में औटावे जब पानी जल जाय छानकर काम में लावे।

चमगीदड़ का तेल कि जोड़ों की पीड़ा और अर्द्धांग आदि को गुण करे एक बड़ा मोटा चमगीदड़ मीठे तेल में औटावे जब चमगीदड़ जल जाय छानकर काम में लावे और इस तेल को लिंग के छेद में टपकाना पेशाब को खोलता है।

मेंहदी का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को गुण करे मेहदी की पत्तियां आध सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे आध सेर तिल के तेल में जलावे जब पानी जलकर तेल शेष रह जावे काम में लावे।

अथवा मेहदी के पत्ते, सभालू के बीज, नागबू के पत्ते, धतूरे के पत्ते, आक के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, मकोय के पत्ते, सब बराबर लेकर अर्क निकाल कर और पत्तों के प्रमाण से मीठा तेल लेकर औटावे और असगन्ध और सोये के बीज एक२ तोले, अजवायन छः माशे मिलावे जब औषधि जल कर तेल मात्र रह जाय छान कर प्रथम दो माशे अफीम तेल में मिलावे फिर एक तोला कड़वा शोरजान मिलाकर काम में लावे।

सोंठ का तेल कि जोड़ों की पीड़ा और बाय का नाश करता है अदरक का अर्क चार भाग, मीठा तेल आधा भाग, परस्पर मिला कर औटावे जब पानी जल कर तेल शेप रह जावे छानकर गुनगुना लेप करे।

अथवा केवड़े के फूल मीठे तेल में डाल कर चालीस दिवस पर्यन्त धूप में रख फिर मलें।

बफ़ारा कि कर्णों की पीड़ा को गुण करे। कमा औटाकर बफारा ले और वायु से बचें और जिसको शीत पकड़ ले पर बफारा गुण करता है सिर्स के पत्ते, सभालू क पत्ते, सहजने के पत्ते औटाकर बफारा ले और पत्तों को अवयव पर बांध और वायु से बचता रहे।

अथवा सम्हालू की पत्तियां, सोये के बीज, अरण्ड औटाकर बफारा लें अवयवों में गांठ पड़ जाने को गुण करता है।

अथवा यह औषधि कि अवयवों की पीड़ा को गुण करता है धतुरे के पत्ते गरम कर बांधे।

लेप कि पीठ और घुटने की पीड़ा को गुण करे मैदालकड़ी पीसकर गुनगुनी कर लेप करे।

अथवा नीम की कोंपल और उसके भीतर का छिलका छीलकर गाढ़ा गाढ़ा अर्द्धोष्ण लेप करे।

लेप कि नुकरस आदि को गुण करे कपास की पत्तियां मीठे तेल में औटाकर लेप करे।

अथवा बिनौले कूट छानकर थोड़े जल में औटावें जब गल जायें पीसें और टिकिया बनाकर एक दिवस में दो बार अर्द्धोष्ण बांधे थोड़े ही काल में आराम होवे।

लेप कि जोड़ों की पीड़ा को गुण करे गोमय सिरके में पकाकर पीड़ा के स्थान और सोथ पर बांधे।

अथवा कनेर की पत्तियां औटाकर कूट के मीठे तेल में मिलाके लेप करे।

अथवा बकरी की मेंगनी दो भाग, जौका चून एक भाग सिरके और अरंडी के तेल में मिलाकर लेप करे।

लेप कि गरमी के नुकरस को दूर करे। काई लगावे और इसी प्रकार जौ का आटा और खतमी कूट छान कर लेप करना या शहद में मिलाकर लगाना शरद-नुकरस को गुण करता है।

मर्दन कि घुटने की पीड़ा को गुण करे। सहजने के बीज पीसकर गुनगुना २ मर्दन करे।

अथवा कांटे दार थूहर को फाड़कर पीड़ा स्थान पर एक दिन रात बांधे और कई एक दिवस इसी प्रकार करे।

लेप कि जोड़ों की पीड़ा को दूर करे। छिले हुए धुले तिल बाबूना प्रत्येक एक तोला, रेंडी की मिंगी छः माशे पानी में पीसकर लगावे॥

दवा कि सरकंडे की जड़, सोंठ पीसकर मीठे तेल में मिलाकर अर्द्धोष्ण

मल और जो सरकंडे की जड न हो तो नरसल की जड़ काफी है ॥

लेप कि नुकरस के लिये गुणदायक है अरंड के पत्ते औटा पीसकर लेप करे ।

मर्दन कि सर्दी की पीड़ा को गुण करे लोबान पीसकर मले और सेक करे ।

लेप कि रांघन और घुटने की पीड़ा को गुण करे साबुन मरदी में मिलाकर पानी में पीसकर लेप करे और किसी २ ने इन्द्रायन मिलाना भी लिखा है ।

अथवा मेंहदी की पत्तियां, अरंड के पत्ते पीसकर गुनगुना २ घुटनों पर लेप करे तो पीड़ा दूर है ।

दवा कि पीठ और कटि की पीड़ा को गुणदायक है बुलबुल की छाल की ऊपर की स्याही दूर कर के भीतर का छिलका साया में सुखा कूट छान कर पकावे और उसकी बराबर बूरा मिलाकर प्रात काल एक तोला साढ़े पांच माशे सोंफ के अर्क के संग खाय ।

मर्दन कि नुकरस को गुण करे बकरी की मेंगनियां शहद में मिला के लगावे ।

दवा कि रांघन को गुणदायक है सोंठ पावसेर, मेंहदी कूट छान कर एक तोला पारा उस में खूब मिलाकर थोड़ा उस में से लेकर मर्दन करे ।

लेप कि बाय की पीड़ा को गुण करता है सहजने की पत्तियां पानी में पीस कर अर्द्धोष्ण लेप करे ।

अथवा सोंठ, कायफल, असगंध बराबर पीसकर मर्दन करे ।

अथवा रेंडी, सेंधानोन, मैदालकड़ी प्रत्येक एक तोला, हींग छ माशे गेंहू का चून आधपाव परस्पर कूट छान कर रोटी बनवे रोटी को एक ओर तवे पर सेक कर अर्द्धोष्ण पीड़ा के स्थान पर बांधे तो बाय और कफ की पीड़ा दूर होय ।

लेप कि सोथ और पीड़ा को गुण करे अजवायन कूट छान कर शहद में मिलाकर लेप करे ।

दूसरा लेप कि पार्ष्णि अर्थात एड़ी और पादतल की पीड़ा को गुण करता है मसूर सिरके में औटा कर अर्द्धोष्ण लेप करे ।

निगले नीपु पानी के संग कि दांतों से न लगन पावे और खिचड़ी, दाल भात और गेहूं की रोटी भोजन करे और खटाई तथा बादी से पथ्य रखे पांच दिवस में रोग दूर होवे यह औषधि उपदंश और अवयव की पीड़ा को जो उपदंश के कारण से हो अति गुण दायक है और जो मुख आजाय तो कुल्ले करे और इस औषधि को सेवन विरेचक के पश्चात् अति उत्तम है।

अथवा रासे की जड़ की छाल हरी पीसकर जंगली बेर के समान गोलियां बनाकर घी के संग खाय।

अथवा अजवायन की भुर्सी, सरसों, कालीमिर्च प्रत्येक एक तोले आठ माशे कूट छान कर गोलियां बनाकर खाय इस औषधि के सेवन में खाने पीने का कुछ डर नहीं।

अथवा पारा देसी, अजवायन खुरासानी अजवायन, मिलाए प्रत्येक एक तोला आठ माशे, लेकर भांगरे के रस में रगड़ कर सुखावे और उस की बराबर गुड़ मिलाकर एक तोले आठ माशे के प्रमाण गोलियां बना के नित्य एक गोली दो सप्ताह पर्यन्त खाय और जो मुख आवे तो कचनार की छाल पानी में औटाकर कुल्ला करे।

गोली शिंगरफ़ कि उपदंश और अवयव की पीड़ा को जो उपदंश के कारण हो गुण करती है। शिंगरफ, अफीम, पारा प्रत्येक दो तोले अजवायन पांच तोले मिलाये टोपी दूर कर के सात तोले पुराना गुड़ पांच तोले पारा और शिंगरफ परस्पर मिलाके औषधियों को कूट छानकर मिलावे और अदरक के पानी में खरल कर सात गोलियां बनावे और प्रति दिन एक गोली खाय।

गोली पारे की कि उपदंश को गुण करती है पपड़िया कत्था चौदह माशे पारा चार माशे पुराना गुड़ साढ़े तीन तोले पीस कर सात गोलियां बनाकर काम में लावे।

अथवा पारा, गंधक, रसकपूर, सुहागा, प्रत्येक साढ़े तीन माशे, काली मिर्च सात माशे कूट छान कर नींबू के रसमें गोलियां बनाकर मांझ दोनों समय एक २ गोली खाया करे उपदंश जाता रहे और काम सफल होय।

अथवा पारा, अजवायन, स्याह मूसली, प्रत्येक सात माशे मिलाए साढ़े तीन माशे, गुड़ चार तोले आठ माशे ग्यारह गोलियां बनाकर प्रति दिन एक गोली दही के संग खांय।

काढ़ा कि उपदंश के वास्ते परीक्षित है और मुख नहीं आता और न इस के सेवन में कुछ खाने पीने का डर है और जो पथ्य करे तो मांस और भात खाय शीघ्रही उपदंश दूर होवे कचनार की छाल इन्द्रायन की जड़ बबूर की फली छोटी कटेरी की जड़ और पत्ते पुराना गुड़ प्रत्येक आधपाव तीन सेर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर शीशे में रख और सात मात्रा करे ईश्वर कृपासे शीघ्र रोग दूर हो।

अथवा सिरस की छाल बबूर की छाल नीम की छाल प्रत्येक सवासेर सबको सात लोटे पानी में औटावे और जब एक लोटा शेष रहे शुद्ध करके शीशा में रखे और प्रति दिन आधपाव पिये और एक सप्ताह पर्यन्त चने की रोटी खाय।

दवाई बरगद के पत्ते जलाकर उसकी भस्म दो कौड़ी के बराबर पान में रखकर नित्य खाय जो शेष उपदंश रहा हो दूर होवे।

अथवा हुलहुल की पत्तियां पीसकर भांग की तरह पिये और उसका फोक घाव पर बांधे।

अथवा बरगद की छाल एक तोले साढ़े पांच माशे काली मिर्च साढ़े दस माशे ढाई पाव पानी में पीसकर चौदह दिन तक खाय।

अथवा एक कि घास होती है जड़ पत्ता और टहनी सहित जलाकर उसकी छः माशे भस्म एक तोले शहद वा गुड़ में मिलाकर प्रतिदिन एक सप्ताह पर्यन्त खावे।

अथवा कसौंदी की पत्तियां एक तोले साढ़े पांच माशे कालीमिर्च साढ़े तीन माशे दोनों को पीसकर पिये और अलोना भोजन करे।

अथवा बड़ी २ कणी की पत्तियां आदि रोग में लेकर एक तोले आठ माशे पानी में भिगाकर उसका जल बीस दिवस पर्यन्त पीवे।

धूनी कि उपदंश को दूर करे खुरासानी अजवायन ढाई माशे, शिंगरफ, पांच माशे, नीलाथोथा दो रत्ती, अकरकरा, पांच माशे, मार्कण्डलात दस माशे, कूट छानकर बेर की लकड़ी की आंच पर उसका धुआं लेय।

अथवा खुरासानी अजवायन, झौआर की फली, अकरकरा, मुर्दासिंग प्रत्येक एक माशे पीसके बेरकी लकड़ी की आंच पर धूनी ले।

हुक्का कि उपदंश को गुण करे। शिंगरफ नीलाथोथा प्रत्येक चार

तोले दो माशे बायविडंग पांच माशे आक की जड़ की छाल दस माशे यदि प्रकृति बलवान हो तो बीस माशे कूट पीसकर छः टिकिया बनावे और बेजल के हुक्केमें बेर की लकड़ी की आंच से तवाकू की तरह पीवे और धुआं उसका घावपर ले और उसका गुल कि भस्म की तरह होजाय थूक में मिला के तीन दिवस दोनों समय घावपर मले और गेहूं की रोटी घी बूरे के संग भोजन करे उचित है कि दवा सेवन से पहिले विरेचक ले।

अथवा शिंगरफ अकरकरा नीम का गोंद माजू सुहागा प्रत्येक एक तोला आठ माशे सबको जौकुट करके सात पुड़ियां बनावे एक पुड़िया चिलम में रख के बेर की आंच से पिये जब उसका एक पासा जल जावे दूसरा पासा जलाकर पिये यदि इस काल में वमन होवे कुछ आश्चर्य नहीं इसी प्रकार दो तीन पुड़ियां प्रातःकाल मध्यान्ह सायंकाल के समय पियें और उसकी राख घाव पर छिड़कें और मोहनभोग भोजन करें तीन वा सात दिवस इसी प्रकार करना काफी है जो मुख आजाय चमेली की पत्तियां औटाकर कुल्ले करें।

दवा कि उपदंश को गुण करती है। कना की हरी पत्तियां नीम की हरी पत्तियां प्रत्येक पद्रह माशे कालीमिर्च साढ़े सात माशे पत्तियों का शीरा निकाल कर चोबचीनी चार माशे पीसकर छिड़के इसी प्रकार सात दिवस पिये भोजन अलोना करे।

अथवा फिटकरी, शिंगरफ, अस्पन्द, अजवायन प्रत्येक चार माशे सब को पीसकर दो २ माशे दोनों समय चिलम में रखकर बेर की आंच से तवाकू की तरह पिये और जिस घर में रोगी को हवा न लगे रहे, चिकनाई और लवण न खाय किंतु सूखी और बिना घृत के चुपड़ी रोटी भोजन करे।

अथवा रसकपूर, शिंगरफ, प्रत्येक छः माशे नीलाथोथा साढ़े तीन माशे सफेद मोम तीन तोले चार माशे, गौघृत छः तोले आठ माशे, कपड़ा चार गज नीम की पत्तियों की टिकियां पहिले बनाकर घी में पकाकर दूर करे फिर मोम डाले जब वह गलजाय बर्तन को नीचे उतार कर रसकपूर डालकर रगड़े फिर शिंगरफ़ मिलावे पश्चात नीलाथोथा डालकर मोम जमाकर छः पत्तियां बनाकर और अपने कलेवर को चादर से छिपाकर एक बत्ती की बेरकी आंच से धूनी लेवे और तीन दिवस पर्यन्त दूध चावल भोजन करे।

मरहम कि उपदंश को गुण करे रसकपूर, काशगरी सफेदा प्रत्येक सात माशे; छोटी इलायची के बीज साढ़े तीन माशे, घी में मिलाकर मरहम बनावे

अथवा कत्था दो माशे, सलखड़ी एक माशे, नीला थोथा एक चावल, भुनी सुपारी एक नग, घी यथोचित लेकर एकसौ एक बार धोवे फिर औषधियों में मिलाकर मरहम बनावे जो पीली कौड़ी जलाकर मिलावे तो अत्युत्तम है

अथवा आक के पत्ते २१ नग, सरसों का तेल आधपाव, साल २ पत्ते तीन बार जलाकर भस्म करे। फिर मोम मिलाकर मरहम बनाकर काम में लावे

बुर्की कि उपदंश को गुण करे। कीमुख्त चर्म जलाकर नीलाथोथा, पीली कौड़ी जलाकर सब बराबर कूट छान कर घाव पर बुर्के।

अथवा सफ़ेद कत्था, पुरानी सुपारी प्रत्येक चार तोले दो माशे, मगाक एक तोले आठ माशे, सब को एक तोले जल में पीस कर कागज पर लगा के जलावे और उसकी राख घाव पर छिड़के।

अथवा पुराने जूते का चमड़ा, मसूर या चन जलाकर पीसकर बुर्की बनावे

अथवा काबली हड़, सुहागा, आवला सब को जला पीस कर घाव पर छिड़के।

फसल जजाम अर्थात् कुष्ट की चिकित्सा में

यह रोग वात से होता है और जब पुराना होजाता है फिर इस से आरोग्यता प्राप्त नहीं होती आदि में फस्द खुलवाना और विरेचक लेना उचित है। चाहिये कि प्रति मास विरेचक लेवे और शोक क्रोध तथा जागने से बचें और कुष्ट वाले के लिये अत्युत्तम भोजन बकरी का दूध है।

माजून बीस अर्थात् वच्छ नाग का पाक, भारतवर्षीय वैद्यों का निर्माण किया हुआ कुष्टवाले को गुण दायक है काली हड़, चीता, प्रत्येक दो तोले ग्यारह माशे, कालीमिर्च एक तोले में दे पांच माशे, बछनाग पौने नौ माशे कूट छान कर घी में मकरो कर द्विगुण शहद में मिलाकर माजून बनावे मात्रा साढ़े पांच माशे से सात माशे तक वा साढ़े चार माशे दवाउलमिस्क के साथ खाय कि यह बछनाग का सयागी है।

गुण भारतवर्षियों की परीक्षित है।

कुश्ता हरताल चालीस दिवस खाना कुष्ठ दूर करता है।

विधि हरताल एक तोला आठ माशे, कच्ची फिटकरी तीन तोले चार माशे, आधे कजे की पिंगी औकूट करके सकोरे में रखे उस पर फिटकरी पीसकर बिछावे फिर उस पर हरताल डाले और शेष आधी कजे की पींगी और

फिटकरी पीसकर बिछावे फिर उस पर हरताल डाले और कपरोटी कर सात सेर आरनों की आंच में रख कर आगदे जब शीतल होजाए निकाल कर आधी रत्ती पान में खाया करे पचास दिवस पश्चात् रोग दूर होजाय।

दूसरी विधी एक तोले आठ माशे हरताल मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिलाकर गोला बनावे और एक सकोरे में रख कर दूसरा सकोरा उस पर ढक कर कपर मिट्टी करके छाया में उसे सुखावे और चार पहर आंच देवे।

नीम का चूर्ण कि कुष्ट को गुण करता है। पुराने नीम की जड़, छाल, फल, फूल, पत्तियां प्रत्येक आध सेर, कालीमिर्च, कायफल, हड़ का वक्कल, बहेड़े का वक्कल, आंवला, बावची प्रत्येक आधसेर कूट छान कर फक्की बनावे मात्रा आठ माशे से सोलह माशे तक मजीठ के क्वाथ के संग चार मास पर्यन्त सेवन करे और मांस लवण तथा बादी तथा तीक्षण वस्तुओं से परहेज करे॥

गोली पारे की की कुष्ट के लिये परीक्षित है, पारा सात माशे, संखिया साढ़े तीन माशे, कुटकी एक तोला नौ माशे, रेवतचीनी साढ़े दस माशे, बबूर का गोंद सात माशे, पारे का कुश्ता करके सब औषधियों को उस में डाल के खरल करके फिर कुश्ता डाल कर और सात नग थोहे के पत्ते उसमें मिलाकर कालीमिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे दोनों समय एक २ गोली नित्य खाय और खटाई से बचता रहे।

नक़्ल कि कुष्ट को गुण करे। पित्तपापड़ा, असगंध, मजीठ, कायफल, हड़ का वक्कल, सब बराबर दो २ तोले रात को पानी में भिगोकर प्रातःकाल मल छान कर पान करे।

चूर्ण कि कुष्ट और रुधिर विकार को गुण करे। हिंगोट की छाल कूट छान कर प्रति दिन प्रातःकाल एक तोला जल के संग फांके और खटाई, और बादी और लवण से बचता रहे दो सप्ताह में आराम हो जायगा।

नक़्ल चने की भुसी आध पाव सेर भर पानी में भिगो कर प्रातःकाल मल छानकर पिये इसी प्रकार एक मास उन्नीस दिवस पर्यन्त सेवन करे तन्दुल, दुग्ध, दधि और जो वस्तु श्वेत हों तथा खटाई से पथ्य करे मांस, गुड़, शकर जो उनमें से प्राप्त हो सके खाय यदि रोग कुछ शेष रहे और भी पियें।

दवा कि जजाम को गुण करे। जल, कि बरसात के समय नीम से टपके

लेकर बदन पर मले ।

अथवा सिरफोके का रस सेवन करना कुष्ट को गुण करता है या नीम के पत्तों का रस जज़ाम को गुण करता है ।

नकू कि कुष्ठ को अति उत्तम है बिजैसार की लकड़ी कूट कर जल में भिगोकर पियें इसी प्रकार चालीस दिवस काम में लावें ।

अथवा महदी की पत्तिया एक तोले दो माशे रात को पानी में भिगोदे और सवेरे ही मल छान कर थोड़ा पूरा मिलाकर पिये इसी प्रकार चालीस दिवस पर्यन्त पान करे ।

दवा कि कुष्ट के वास्ते सिरस की पत्तियां एक तोले आठ माशे, का लीमिर्च दो माशे जल में पीसकर चालीस दिवस पीवे ।

अथवा बबूर की छाल तीन तोले आठ माशे जौकुट करके जल में भिगोकर प्रात काल मल छानकर नित्य इसी प्रकार पीवे ।

शीशम का शर्बत कि रुधिर विकार और कुष्ट आदि को गुण करता है शीशम का पूरा पावभर तीनसेर दर्या के जल में अष्ट पहर भिगोकर प्रातःकाल औटावे जब आधा शेष रहे तीन पाव बूरे में चाशनी करे मात्रा छ तोले ।

अथवा प्रतिदिन दोनों समय इस प्रकार कि शीशम की लकड़ी का चूर्ण दस माशे लेकर आधपाव पानी में औटावे जब आधा शेष रहे छानकर पूर्वोक्त शर्बत मिलाकर चालीस दिवस सेवन करें खटाई, दूध, दही से बचता रहे ।

दवा समुद्रफल के वृक्ष की छाल कूट छान कर प्रति दिन पानी के संग तीन दिवस खाय, और तीन दिवस न खाय, इसी प्रकार इक्कीस दिवस सेवन करे और इस काल में मूंग की दाल और खिचड़ी सेवन करे आदि में वमन होगी और यदि रोग दृढ़ हो पहले दिन वमन न होगी और पश्चात् कई एक दिन के वमन बंद हो जायगी ।

दवा नीम की पत्तियों का लवण कोढ़, खाज, दाद आदि को गुण दायक है ।

जज़ाम वालों को देखा है कि उन्होंने रोग की आदि में अफीम और पोस्त खाने का अभ्यास किया रोग न्यून होगया ।

शर्बत दाऊदी की जड़ का और क्वाथ इस रोग के दूर करने में लाल गंधक के सदृश अमृत तुल्य है और तसकरे दाऊदी वालेने परीक्षित लिखा है ।

औषधि कि श्वेत दाग और कुष्ट को गुण करे नीम की पत्तियां और उन की बराबर काले तिल और थोड़ा सेंधा लवण लेकर और पुराना गुड़ सब औषधियों के बराबर मिला कर प्रति दिन एक तोला साढ़े माष माष खाय ।

फसल साफ़ह अर्थात् सिर के गंज की चिकित्सा में

यह सिर का घाव है पीब और खुरंड के संग हो तो उस की उत्पत्ति बाल से है बाल अवस्था में कि तरी विशेष होती है युवा अवस्था के आरम्भ तक बल करता है ।

चिकित्सा जोंक लगाना गुण दायक है ।

दवा परिक्षित—आंवला जलाकर पाव सेर पोस्त के डोडे जलाकर, आधपाव मंहदी, कबेला प्रत्येक छः तोले आठ माशे, नीलाथोथा, सुना सुहागा, भड़भूजे के छप्पर का धुआं, भट्टी की राख प्रत्येक एक तोला आठ माशे कूट छान कर सरसों के तेल में मिला कर मर्दन करे ।

अथवा विसखपरे के पत्तों का तेल कि गंज को दूर करें, विसखपरे के पत्ते, फ़रास के पत्ते, नीम के पत्ते, चमेली के पत्ते, अरंड के पत्ते, बकायन के पत्ते और फल प्रत्येक दो तोले पीस कर टिकिया बना कर पाव सेर मीठे तेल में जलावे फिर एक माशे नीलाथोथा, मंहदी की पत्तियां, मुर्दासंग, सुहागा सुना, हल्दी जला कर, बावची, कत्था, आंवला जला हुआ, कालीमिर्च जली हुई प्रत्येक छः माशे पीस कर रोग़न में मिलावे और नीम की लकड़ी से रगड़ कर काम में लावे ।

तेल गधे की लीद का कि सिर के गंज को दूर करता है गधे की लीद कि आधी सूखी गढ़े में रख कर थोड़े कोयले जला कर जलावे और उस के ऊपर कांसी की रकेबी थाली कि जिस के किनारे उठे हुए हों इस प्रकार उस गढ़े पर रखे कि उस के किनारे दो अंगुल पृथ्वी से उठे रहें कि लीद का धुआं उस थाली में समूह हो उस को लेकर मले ।

अथवा राई आधी कच्ची आधी पक्की पीस कर उसे कड़वे तेल में मिलाकर लगावे ।

अथवा मंहदी की पत्तियां चार तोले, बावचीमुर्दासंग दो दो तोले, नीलाथोथा तीन माशे, कूट छान कर कड़वे तेल में मिलाकर गंज पर मले ।

लेप कि सिर के गञ्ज को गुण करे। हलदी दस तोले, नीलाथोथा पांच तोले, आध पाव मीठे तेल में मिलाकर जला पीसकर लेप करे।

मर्दन काबली हड़ का वक्कल, कत्था, ज़ीरा, कायफल प्रत्येक साढ़े तीन माशे, नीलाथोथा पौने दो माशे कूट छान कर गंज पर मले।

दवा कि गञ्ज और उन फोड़ों तथा फुनसियों को आराम करे कबेला, कत्था, गेरू, शोरा, नीलाथोथा प्रत्येक एक भाग मुर्दासंग, काली मिर्च प्रत्येक दो भाग, मेंहदी की पत्तियां चार भाग, सरसों का तेल गरम करके उसे में मिलाकर काम में लावे।

लेप गञ्ज को दूरकरे। अरन्ड की कोंपल कूट कर थोड़ा नोंन मिला कर लेप करे।

दवा गञ्ज को गुण करे। पुराने जूते का तला जलाकर तेल में मिला कर मर्दन करे।

अथवा तम्बाकू का गुल पीस कर कड़वे तेल में मिलाकर लगावे।

अथवा आम के अचार का तेल जो वर्ष दिन का हो गञ्ज पर लगावे।

अथवा घोड़े का सुम जलाकर मीठे तेल में मिलाकर सिर पर लेप करे।

अथवा बकायन के फलों का तेल कि गञ्ज को दूर करे बकायन के फलों की मिंगी जोकुट करके कड़वे तेल में जलाकर छान कर मर्दन करे।

तेल फ़रास के पत्ते पीस कर टिकिया बना के कड़वे तेल में जला कर छान कर गञ्ज पर मले।

लेप धनिया सिरके में पीस कर लगाना गञ्ज को गुण करता है।

अथवा चुकन्दर के पत्ते पीस कर लेप करना गुण करता है।

दवा बकरी की मेंगनी लगाना गञ्ज के फलने वाले फोड़ों को गुण करता है।

फ़सल वर्स और बहक अबीज़ यानी सफ़ेद दाग़ों की चिकित्सा में

प्रकट हो कि वर्स उन सफ़ेद दाग़ों को कहते हैं जो बाह्य त्वचा में उत्पन्न होते हैं और मांस तथा त्वचा के भीतर भी प्रवेश कर जाते हैं इस में आरोग्यता प्राप्त नहीं होती।

और बहक अबीज़ थोड़ी सफ़ेदी लिए बाह्य त्वचा पर प्रकट होते हैं इस

ओषधि कि श्वत दाग और कुष्ट को गुण करे नीम की पत्तियां और उन की बराबर काले तिल और थोड़ा सेंधा लवण लेकर और पुराना गुड़ सब औषधियों के बराबर मिला कर प्रति दिन एक तोला साढ़े पांच माश खाय।

फसल साफ़िह अर्थात् सिर के गंज की चिकित्सा में

यह सिर का घाव है पीब और खुरंड के संग हो तो उस की उत्पत्ति बात से है बाल अवस्था में कि तरी विशेष होती है युवा अवस्था के आरम्भ तक बल करता है।

चिकित्सा जोंक लगाना गुण दायक है

दवा परिक्षित—आंवला जलाकर पाव सेर पोस्त के डोडे जलाकर, आधपाव मेहदी, कथेला प्रत्येक छः तोले आठ माशे, नीलाथोथा, भुना सुहागा, भड़भूजे के छप्पर का धुआं, भट्टी की राख प्रत्येक एक तोला आठ माशे कूट छान कर सरसों के तेल में मिला कर मर्दन करे

अथवा बिसखपरे के पत्तों का तेल कि गंज को दूर करे, बिसखपरे के पत्ते, फ़रास के पत्ते, नीम के पत्ते, चमेली के पत्ते, अरंड के पत्ते, बकायन के पत्ते और फल प्रत्येक दो तोले पीस कर टिकियां बना कर पाव सेर मीठे तेल में जलावे फिर एक माशे नीलाथोथा, मेहदी की पत्तियां, मुर्दासंग, सुहागा भुना, हलदी जला कर, बावची, कत्था, आंवला जला हुआ, कालीमिर्च जली हुई, प्रत्येक छः माशे पीस कर रोगन में मिलावे और नीम की लकड़ी से रगड़ कर काम में लावे।

तेल गधे की लीद का कि सिर के गंज को दूर करता है गधे की लीद कि आधी सूखी गढ़े में रख कर थोड़े कोयले जला कर जलावे और उस के ऊपर कांसी की ऐसी थाली कि जिस के किनारे उलटे हुए हों इस प्रकार उस गढ़े पर रखे कि उस के किनारे दो अंगुल पृथ्वी से उठे रहें कि लीद का धुआं उस थाली में समूह हो उस को लेकर मले।

अथवा राई आधी कच्ची आधी पक्की पीस कर उसे कड़वे तेल में मिलाकर लगावे।

अथवा मेहदी की पत्तियां चार तोले, बावचीमुर्दासंग दो दो तोले, नीलाथोथा तीन माशे, कूट छान कर कड़वे तेल में मिलाकर गंज पर मले।

लेप कि सिर के गज को गुण करे। हलदी दस तोले, नीलाथोथा पांच तोले, आध पाव मीठे तेल में मिलाकर जला पीसकर लेप करे।

मर्दन काबली हड़ का बक्कल, कत्था, जीरा, कायफल प्रत्येक साढ़े तीन माशे, नीलाथोथा पौने दो माशे कूट छान कर गंज पर मले।

दवा कि गञ्ज और उन फोड़ों तथा फुनसियों को आराम करे कमेला, कत्था, गेरू, शोरा, नीलाथोथा प्रत्येक एक भाग मुर्दासंग, काली मिर्च प्रत्येक दो भाग, महदी की पत्तियां चार भाग, सरसों का तेल गरम करके उसे में मिलाकर काम में लावे।

लेप गञ्ज को दूरकरे। अरन्ड की कोंपल कूट कर थोड़ा नोंन मिला कर लेप करे।

दवा गञ्ज को गुण करे। पुराने जूते का तला जलाकर तेल में मिला कर मर्दन करे।

अथवा तम्बाकू का गुल पीस कर कड़वे तेल में मिलाकर लगावे।

अथवा आम के अचार का तेल जो वर्ष दिन का हो गञ्ज पर लगावे।

अथवा घोड़े का सुम जलाकर मीठे तेल में मिलाकर सिर पर लेप करे।

अथवा बकायन के फलों का तेल कि गञ्ज को दूर करे बकायन के फलों की मिंगी जौकुट करके कड़वे तेल में जलाकर छान कर मर्दन करे।

तेल फ़रास के पत्ते पीस कर टिकिया बना के कड़वे तेल में जला कर छान कर गञ्ज पर मले।

लेप धनिया सिरके में पीस कर लगाना गञ्ज को गुण करता है।

अथवा चुकन्दर के पत्ते पीस कर लेप करना गुण करता है।

दवा बकरी की मेंगनी लगाना गज के फलने वाले फोड़ों को गुण करता है

फ़सल वर्स और बहक अबीज यानी सफ़ेद दाग़ों की चिकित्सा में

प्रकट हो कि वर्स उन सफेद दाग़ों को कहते हैं जो बाह्य त्वचा में उत्पन्न होते हैं और मास तथा त्वचा के भीतर भी प्रवेश कर जाते हैं इस में आरोग्यता प्राप्त नहीं होती।

और बहक अबीज थोड़ी सफेदी जिए बाह्य त्वचा पर प्रकट होवे हैं इस

का यदि आदि से प्रबन्ध किया जाव तो दूर होजाता है।

चिकित्सा कफ दोष को पचाने के पश्चात विरेचक लेवे और ठंडी वस्तु अर्थात दुग्ध आदि से बचता रहे।

गोली जंगली अंजीर की छाल नौ तोले साढे सात माशे, चीता चार तोले आठ माशे, गंधक चार तोले साढे चार माशे, काकोहरू, धनिया प्रत्येक दो तोले नौ माशे कूट छान कर गौ वत्स के मूत्र में मिलाकर औटावे जब गाढा हो जाय—पीसकर गोलियां जंगली बेर के प्रमाण बनावे फिर एक मास बीस दिवस पर्यन्त प्रतिदिन दोनों समय एक २ गोली खाय।

अथवा शुद्ध बावची, छिली हुई कदूमर की छाल नीम की जड़ की छाल नीम की टहनी की छाल, नीम की पत्ती सब बराबर कूट छानकर कत्थे की लकड़ी टूक २ कर एक भाग आठ भाग जल में औटावे जब आधा भाग रहे छानकर पूर्वोक्त औषध उसमें मिलावे और गोलिया बनाकर, साढ़े तीन माशे से सवा पांच माशे तक खाय।

बावची के शुद्ध करने की यह विधि है कि बावची को लाल गौ के मूत्र में जो प्रसूता न हुई हो इक्कीस दिन भिगोवे फिर निकाल कर उसका छिलका दूर करके छाया में सुखावे।

गोली कि सफ़ेद दाग को गुण करे शुद्ध बावची, काले तिल बराबर लेकर शहद में मिलावे और तीन २ माशे की गोलियां बनाकर एक २ गोली प्रतिदिन दोनों समय खाय।

गोली अजमोद, बावची, पंवार के बीज, कमलगट्टा बराबर लेकर शहद या गुड़ में मिलाकर गोलियां बनावे मात्रा सात माशे।

अथवा गरू, गंधक, बावची बराबर महीन पीसकर अदरक के रस में रीठे के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली ओकुट करके रात के समय पानी में भिगोवे उसे छानकर प्रातः काल पीवे और उसका फोक बदन पर मलकर धूप में बैठे और खट्टी तथा बादी वस्तुओं से बचता रहे इसी प्रकार सेवन करता रहे।

दवा काले धतूरे के बीज सात माशे आधे भुने आधे कच्चे चीता सात माशे, कालीमिर्च साढ़े तीन माशे कूट छानकर प्रतिदिन दो रत्ती खाय और एक समय दूध चावल भोजन करें।

तेल धूम का, कि एक वृक्ष ले उसका पेट चाक करके शुद्ध करे और दो सेर धतूरादिम छोले मीठे तेल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे तब उस तेल में

भिगोकर रात को दाग के ऊपर बांधे और प्रातःकाल धोड़ा दें इसी प्रकार पचास दिन तक करे।

अथवा स्याह कसीस एक तोला ग्राहु पाँच माशे, चार तोले साईं चार माशे तेल, बावची तीन सेर, नीम की सूखी पत्तियां आधसेर, स्याह चुकंदर डढ़ सेर, कूट छानकर गोलियाँ बनाकर प्रति दिन एक गोली खाय।

नीम का चूर्ण बर्स को गुण करे फल फूल और पत्तियां नीम की बराबर पीसकर दो माशे खाना आरम्भ करे छ माशे तक पहुंचा कर चालीस दिन तक सेवन करे।

अथवा मुंडी एक भाग, समुद्रसोख आधा भाग, कूट छानकर फक्की बनावे मात्रा एक माशे से नौ माशे तक।

अथवा बावची आधसेर, लवण तीनपाव कूट छानकर एक हथेली भर नित्य खाय सिवाय चने की रोटी के और कुछ भोजन न करे।

अथवा गूलर की छाल लाका के बीज दोनों बराबर कूट छानकर पानी से चालीस दिवस फांके।

दवा अजमोद पहिले दिन चार माशे फिर एक माशे प्रतिदिन अधिक करके मास काल शीतल जल के संग फांके यहां तक कि आठ माशे तक पहुंचावे यदि दो मास में गुण प्रगट नहो तो तीसरे मास में एक माशे बायबिडंग नित्य खाय और बादी से पथ्य करे और चने की रोटी खाना गुण दायक है बिना इसके दूसरी वस्तु न खाय।

अथवा अजमोद दो भाग, गेरु एक भाग कूट छानकर दो माशे नित्य खाय बिना घृत अलोनी रोटी खाय।

मर्दन कि वर्स को गुण करे बावची, पंवार, गेरु बराबर कूट छानकर अद्रक के रस में गोलियाँ बनाकर दो सप्ताह तक मलकर धूप में बैठा करे।

अथवा पलासपापड़ा पांच तोले, कच्चा नीलाथोथा तीन माशे, सफेद कत्था एक तोला कूट छानकर नीबू के रस में खरल करके गोलियाँ बनाकर लगाया करे यह गोली दाद को भी दूर करती है।

मर्दन कलौंजी सिरके में पीसकर लगाना बहक और वर्स को गुण करता है।

अथवा कुन्दर शहद में मिलाकर लगाना भी गुण करता है।

अथवा मालकांगनी गौमूत्र में इक्कीस दिवस भिगोकर उसका तेल निकाल

कर उस पर लगावे।

अथवा नौसादर शहद में मिलाकर लेप करे।

अथवा कलौंजी दो तोले साढ़े सात माशे, बावची साढ़े तीन माशे, धतूरे के बीज सवा पांच माशे, आक के पत्ते आठ नग पीस कर सफ़ेद दाग़ पर लगावे।

अथवा कुंदर मूली के बीज सिरके में पीस कर लगावे।

अथवा कुंदर मूली के बीज अथवा बकरी का गुरदा टूक टूक करके पाव सेर गंधक छिड़क कर उसका जला कि उस में से टपके उस को बटर के वर्स पर लगावे।

अथवा इमली के बीजों की मींगी बावची दोनों बराबर महीन पीसकर आठ दिवस लकड़ी से सफ़ेद दाग़ों पर लगावे।

लेप अजीर की जड़ बावची, सुहागा, इनको ताज़ा जल में पीस कर चालीस दिवस लेप करे।

मर्दन हरताल, सज्जी प्रत्येक दस माशे कूट छान कर मूत्र में मिलाकर दाग़ों पर लगावे।

अथवा हलदी, आंबाहलदी, आंवलासार गंधक, आंवला, लाख, पंवार के बीज सब बराबर कूट छान कर शुद्ध जल में मिलाकर लगावे।

लेप मूली के बीज दस भाग, कुंदर, कूट प्रत्येक दो भाग, पुराने सिरके में मिलाकर लेप करे।

मर्दन मूली के बीज, चीता, आंवला बराबर सिरके में मिलाके लगावे।

अथवा यह नुसखा पुस्तक गंज बादावर्द से लिखा है श्वेत दाग़ को गुण करता है। सज्जी, चूने की कलई, बराबर पीसकर दाग़ पर मले जब सूख जाय कठोर वस्त्र से छीलकर और दूसरी बार लगावे इसी प्रकार कई बार लगावे उस जगह की खाल अलग होकर एक दाग़ प्रगट होगा फिर उस पर मीठा तेल मले कि अपने पूर्व रूप पर आजाय।

मर्दन बावची तीन दिन दही में भिगो कर फिर सुखा कर आतिशी शीशी में तेल निकाले फिर थोड़ा नौसादर पीस कर उसमें मिलावे और दाग़ को खुजाकर उस पर मले।

अथवा केंचुए बरतन में बंद कर के एक मास तक रखे इस अवसर में राख होजायगी उसको लेकर बर्स पर लगावे ।

अथवा काला बिच्छू मार कर सुखाकर सिरके में मिलाकर लगावे ।

अथवा अघाहूली की जड़ पानी में मिलाकर लगावे ।

अथवा अघाहूली की जड़ पानी में पीस कर लेप करे ओष्ट की सफ़ेदी दूर होजायगी ।

अथवा तबाकू के बीजों का तेल कोल्हू में निकलवाकर लगावे थोड़े ही काल में दाग़ दूर होजायगा ।

अथवा केले के पीले पत्ते कड़वे तेल में जलाकर मुर्दासंग में मिलाकर लगावे ।

अथवा सिरस के बीजों का तेल लगावे ।

अथवा बेंगन को पानी में औटावे जब गल जावे उसका शुद्ध जल मीठे तेल में मिला कर फिर औटावे जब पानी जलजाय तब फिर उस तेल को लगावे ।

छुहारे का तेल कि बर्स को गुण करे । एक नग छुहारा सरसों के तेल में जलाकर रगड़ कर रखे रात को दाग़ पर मलकर कोयलों की आंच पर सेके कि गरम होजाय इसी प्रकार कई दिन तक करे ।

बाज़ी पुस्तकों में लिखा है कि छुहारे की गुठली शुद्ध कर तेल में जला-कर थोड़ा सिंगरफ़ मिलाकर लगावे यह रौग़न दामन और नासूर को भी गुण करता है ।

फ़सल इलाज मर्ज़ अर्क़मदनी अर्थात् नारवा रोग की चिकित्सा में

यह एक दाना है जब फूट जाता है तब उसके अंदर से एक धागा निकलता है ।

चिकित्सा- जुलाब से शरीर को शुद्ध करे और नारुवे के आसपास जोंक लगवावे और गरम पानी से जिसमें तेल डाल के औटाया हो धोया करे कि तागा सहज ही से निकल जावे और ध्यान रहे कि टूट न जाय ।

दवा कि नारवे को गुण करे प्रथम नारवे और सोप को अर्द्धोष्ण तेल व चुपड़ के आख के पत्तोंसे सेक करे और उन्हीं पत्तों को घाव पर बांधे ।

अथवा स्वत विसखपरे की जड़ उसके पत्तों के रसमें पीसकर नारू पर बांधे और कोई २ इस में सोंठ भी डालते हैं।

लेप कि नारुव को गुणदायक है जमालगोटा पीसकर लेप करे।

अथवा कलौंजी दही में पीसकर लेप करे।

अथवा सूखा केंचुआ नारुवे वाले को खिलाना नारुव को सुखाता है।

अथवा दस माशे सुहागा गुलाब के पुष्प के तेल में मिलाकर तीन दिन तक खाय और इस अवसर में चिकना भोजन करे।

लेप कि नारुवे को गुण करे प्याज एक नग, लहसन एक नग, थोड़ा साबुन, भिलावा एक नग, दस माशे सरसों कूट छानकर टिकिया बनाकर नारुवे पर एक अहर्निश बांधे तीन दिवस में सब तागा निकल जावेगा।

दवा कि नारुवे को गुण करे राल एक तोला आठमाशे, साबुन तीन तोला पांच माशे, अफीम दस माशे कूट पीसकर तेरह तोले चार माशे तिल के तेल में पकाकर मरहम के सदृश करे पान पर लगाके बांधे और दोनों समय मरहम बदल दिया करे तीन दिवस में आराम हो जायगा।

लेप कि नारुवे को गुण करे। मोंठ का आटा छः तोले आठ माशे थोड़ी हींग मिलाकर पीस कर नारुवे पर बांधे।

अथवा चौराई की जड़ पीसकर बांधे।

गोली जगली कपोत के पुरीष तीन तोले चार माशे, गुड़ बराबर का मिला कर कूट पीसकर जगली बेर के प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली नित्य खाय।

दवा कि नारुवे को गुण करे घोड़े का पर, दो चावल गुड़ में मिलाकर खाय।

अथवा सात दाने बकायन नित्य निगल जाया करे।

अथवा एलुआ दस माशे पहिले दिन, दूसरे दिन एक तोले आठ माशे, तीसरे दिन साढ़े चार माशे खाय और उसपर भी लगावे।

अथवा काबली हड़ का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आंवला, सोंठ, कसेला बराबर नित्य सात माशे, एक तोला नौ माशे शहद में मिलाकर खाय और दूध, घी अत्यन्त खाना गुण करता है।

फ़सल जमरह की चिकित्सा में

उसको सुर्ख बाद भी कहते हैं और यह विशेष कर बालकों के उत्पन्न होता है। निदान उसका रुधिर विकार यह एक सोथ है यदि जलता चमकता दौड़ता फैलता पीली रंगत का हो उसको जमरह खालिस कहते हैं और यह केवल पित्त से होता है और जो पित्त में रुधिर भी मिला हो तो उसमें जलन विशेष नहीं होती और खूनी लाल रंगत का होता है।

चिकित्सा दूध पिलाने वाली को रुधिर शोधक औषधियां पिलावे।

गोली कि बच्चों की सुर्ख बाद को गुण करे अम्बी, नीलकंठ, लाल चंदन प्रत्येक तीन माशे, बकायन की पत्तियां, नीमकी पत्तियां पांच नग, धनियां तीन माशे, काली मिर्च, मुलतानी मिट्टी प्रत्येक एक माशे महदी की पत्तियां पांच माशे और धनियां पहले जल में भिगोकर प्रात काल सब औषधियां पीसकर चने के प्रमाण गोलियां बनाकर खाय और मूगकी दाल भात अलौने भोजन करे और खटाई और बादी वस्तुओं से बचता रहे।

अथवा रसौत, कालीमिर्च, अफ़ीम, नीमकी पत्तियां, चाकसू की मिंगी, पेठे के बीज बराबर कूट छानकर बाजरे के प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली उसकी मां के दूध के संग देवे।

अथवा बकन कि एक बूटी होती है तीन तोले चार माशे लेकर जल में पीसकर पाव सेर आटे में मिलाकर रोटी पकाय घी से चुपड़कर दूध पिलाने वाली को खिलावे अद्भुत गुण करे।

अथवा सिरफ़ोका औटाकर बच्चे को पिलावे।

अथवा रसौत चने के प्रमाण बालक को खिलावे।

काढ़ा कि बच्चों के रुधिर विकार को और सुर्ख बाद को गुण करता है। लालचन्दन महदी धनियां प्रत्येक चौदह माशे, कसूम के फूल सात माशे जौकुट करके सात मात्रा करे और एक मात्रा आधपाव जल में भिगोकर प्रात काल औटाकर पिये और उसका फोक रात को औटाकर पिये और उसका फोक बदन पर मलकर गरम जल से नहा डाले इसी प्रकार सात दिवस पर्यन्त करे और गेहू की अलौनी रोटी घी के संग खाय।

फ़सल कोबा अर्थात् दाद की चिकित्सा में

यह रोग बात से होता है इसमें खुजली और जलन अधिक होती है और

बाह्य त्वचा पर फैलता जाता है और कभी रुधिर विकार से भी उत्पन्न होता है आदि में उसकी चिकित्सा जब तक मांस में प्रवेश नहीं करता, सहज है परन्तु जब मांस में प्रवेश करजाता है तो चिकित्सा कठिन है और जब तक जौंक वा पछने न लगाये जावें दूर नहीं हो सकता।

गोली कि दाद को गुण करे, राल, गंधक, सुहागा, अजवायन खुरासानी कूट छानकर पानी में गोलियां बनाकर दाद को खुजाकर लगावे।

लेप मुर्दासंग, गंधक, नौसादर, सुहागा, माजू, कालीमिर्च, सफ़ेद कत्था, अफ़ीम, चीनियां गोंद कूट छानकर गोलियां बनावें और एक गोली नीबू के रस में घिसकर लेप करे।

अथवा माजू एक भाग, चूना डेढ़ भाग, माजू महीन चूने में रगड़कर थोड़े जलमें मिलाव जब नीचे बैठजाय पानी लेकर दाद को खुजाकर मले।

मर्दन कि दाद को दूर करे दादको खुजाकर घी से चुपड़कर चूना लगावे।

दवा आक के फूल, पंवारे के बीज, कूट छानकर खट्टे दही में मिलाकर मर्दन करे और खट्टा दही न मिले तो बासी जल ही होवे।

मर्दन इमली के बीज नीबू के रस में घिसकर लगावे।

अथवा सूखा सिंघाड़ा नीबू के रसमें घिसकर लगावे।

अथवा हारसिंगार की पत्तियां पीसकर लगावे।

अथवा हल्दी जलाकर चूने और पान में मिलाकर पानी में रगड़कर दाद को खुजाकर लगावे।

अथवा नीबू का रस दिनमें दो बार दादको खुजाकर लगावे।

अथवा पालक, जुही की जड़ नीबू के रसमें रगड़कर मले और इन के पत्ते रगड़ना भी गुण करता है।

अथवा कलौंजी सिरके में रगड़कर मले।

अथवा कत्था, पलासपापड़ा लगावे।

अथवा कसौंदी की जड़ नीबू के रसमें पीसकर लगावे।

दवा कि दाद को गुण करे। गेहूं का चोवा अर्द्धोष्ण मले और चोवा निकालने की यह विधि है कि लोहे का टुकड़ा अग्नि में तपाकर गेहूं के ऊपर रखकर दबावे उसमें से काले रंगका पानी निकले उसे गरम २ लेकर दाद पर मर्दन करे।

अथवा यह कि दादके वास्ते परीक्षित है आंवला, लालचंदन, राल, चीनिया गोंद, सुहागा, कत्था बराबर पानीमें पीसकर दाद को खुजाकर लगावे

अथवा यह कि दाद और खुजली तर तथा सूखी को गुण करे। पवाड़ के बीज पानी में भिगोदे जब सड़ जाय तब पीसकर मल फिर गरम जल से स्नान करे।

लेप कि दाद को गुण करे। रेह कपड़े में छान जल में पीसकर लगावे

अथवा अमलतास की पत्तियां दाद पर मले।

अथवा उसकी कच्ची फली की मिंगी निकालकर जल में पीसकर लगावे

अथवा मूली के बीज नीबू के रस में खरल करके गोलियां बनाकर लगाया करे।

अथवा मूली के बीज, सीताफल की पत्तियों के रस में पीसकर गोलियां बनाकर लगावे।

लेप कुचला सिरके में पीसकर लेप करे।

मर्दन कि दाद और खुजली को गुण करे। सज्जी एक तोला आठ माशे कूट छान कर तीन तोला चार माशे गाय का घी सौ बार धोकर उस में मिलाकर मर्दन करे।

दवा अंजीर का दूध मले।

अथवा चन्दन, सुहागा, अफीम तीनों औषधि बराबर लेकर नीबू के रस में पीस कर दाद को किसी खरखरी वस्तु से खुजा कर मले।

अथवा मैनसिल पानी में पीस कर लगावे।

अथवा सरेस मले।

अथवा पारा सिरके में मिलाकर लेप करे लिखा है कि जब तक दाद अच्छा नहीं होता सरेस नहीं छूटता।

अथवा हल्दी सिरके में पीस कर लगावे।

अथवा चीनाचोल सिरके में पीसकर मर्दन करे।

लेप कि दाद को गुण करता है नीम की पत्तियां दही में पीस कर लेप करे।

मर्दन पवार के बीज एक भाग, सज्जी दो भाग, बराबर चार भाग

कभा के, पानी में पीस कर आरंभे कद से दाद को खुजा कर उस पर इतनी देर लगावें कि सूख कर दो तीन दिन में दूर होवे।

अथवा सिंदूर, गंधक, हल्दी, कालीमिर्च, सुहागा बराबर लेकर घी में मिला कर प्रतिदिन चार वा पांच बार मर्दन करे।

अथवा पवार के बीज, आंवला, कत्था, दही के पानी में पीसकर दाद को खुजला कर मले।

अथवा पारा, आंवलासार गंधक, नीलाथोथा, सुहागा, नीबू के रस में पीस कर दाद को खुजा कर लगावें।

फ़सल इलाज जर्ब अर्थात् तर खुजली और हकह अर्थात् सूखी खुजली की चिकित्सा में

जो कि यह रोग बाह्य त्वचा पर उत्पन्न होता है इसलिये त्वचा के रोगों में गिना जाता है और तर खुजली का मादा प्रायःखारी कफ़ है और सूखी में बात की विशेषता होती है।

चिकित्सा हफ्तअंदाम फ़स्द खोले और स्त्री भोग तथा बेंगन, मिर्च, तेल आदि गर्म और सलौनी वस्तुओं से पथ्य रखे और प्रतिदिन पित्तपापड़ा का अवलेह खाय।

दवा काबली हड़का वक्कल, बहेड़े का वक्कल, आंवला, कालीहड़, सिर-फोके की पत्तियां, अफ़ीम प्रत्येक सात माशे, पित्तपापड़े के पत्र दो तोले ग्यारह माशे, कूट छानकर गाय के घी में मकरों कर त्रिगुण बूरा मिलावे मात्रा दो तोले।

अथवा नीम की कोंपल दो तोले पानी में पीसकर पन्द्रह दिन तक पिये और इसी रीति से सिरफोका पीना भी गुण करता है।

अथवा चड़ैता चिरायता, पित्तपापड़ा, कालीहड़ प्रत्येक एक तोला रात को पानी में भिगोकर प्रातःकाल पीस, छानकर पिये।

अथवा गंधक, आंवलासार हल्दी, बावची प्रत्येक दस माशे पित्तपापड़ा एक तोले आठ माशे सबका तीन भाग करके उसमें से एक भाग रात को जल में भिगो दे प्रातःकाल छानकर पिये। और उसके फ़ोक को कड़वे तेल में मिला, फर शरीर पर मर्दन करे और गरम जलसे स्नान करे।

अथवा इमली को भिगोकर मलना और पान करना सूखी और तर खुजली को आराम करता है।

अथवा कासनीद मोकुट, फरक पांच ताले आठ माशे, अमरबेल एक तोला साढ़े पाच माशे आध सेर गरम पानी में भिगोदे प्रातःकाल छानकर दो तोला नौ माशे पूरा मिलाकर दो चार पीवे और मुजिज में लिखा है कि प्रति दिन आधसेर दूध और आधा शिकञ्जबीन मिलाकर पीना गुणदायक है।

और यह औषधि शेखुल रईस के मत से भी परीक्षित है परन्तु इतनी दवा गवारों के योग्य हैं और लोगों के लिये इतनी दवा अति भूख लगाने वाली और उदर को निर्बल करने वाली है।

गधक का तेल कि दाद तथा तर और सूखी खुजली को दूर करता है। गधक आक के दूध में दो दिवस पर्यन्त खरल करके टिकिया बना कर छाया में सुखावे फिर भाजन में डाल कर जल भर के चार पहर मंदी आंच से औटावे जितना तेल पानी पर आवे उसको काम में लावें और कोई २ गधक को पीली रंगत के आक के दूध में औटा कर दो दिन खरल करते हैं

दवा नीलाथोथा, सूखा तमाकू प्रत्येक साढ़े तीन माशे कपेला सात माशे सफेद चीनी चौदह माशे कडुवे तेल में मिलाकर तीन दिन लगावे।

बीजा बोल की टिकिया कि तर खुजली को गुण करती है तथा कफ और पित्त को निकालती है। काबली हड का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आंवला, काली पिडग छिली हुई प्रत्येक एक भाग, सूखी निसोत दो भाग, कूट छान कर पानी में मिला कर गोलियां बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे और जो अधिक दस्त चाहे तो दो तोले ग्यारह माशे खाय।

तेल कि तर खुजली को गुणदायक है तीन तोले मैनसिल महीन पीस कर एक सेर गौ के घी में मिलाकर औटावे जब धुआं न रहे एक सगार में पानी भर के औषधि को घृत सहित उस में डाल दे जब शीतल हो जाय जल के ऊपर से तेल लेकर उस पर मर्दन करे।

दवा कि खुजली को गुण करे। पाव सेर कडुवे तेल को खूब औटावे और आक की पत्तियां इक्कीस नग लेकर एक २ कर उस में डाले जब सब पत्ते जल कर राख होजावें उतार कर थोड़ा मैनसिल उस में डाल कर मिलावे और शीशी में रख कर खुजली पर मले दो तीन दिन में दूर हो जायगी।

अथवा कडल का मूसला जो पुराना और कीड़ों का खाया न हो कोयलों की आंच में जलाकर महीन पीसे और कडुवे तेल में मिला कर मले और तीन चार घड़ी पश्चात् ठंडे जल से धोवे और शरद ऋतु में गरम जल होवे।

कथा के, पानी में पीस कर आरते कढ से दाद का खुर्मा करे उस पर इतनी देर लगावे कि सूख कर दो तीन दिन में दूर होवे।

अथवा सिंदूर, गंधक, हल्दी, कालीमिर्च, सुहागा बराबर लेकर घी में मिला कर प्रतिदिन चार वा पांच बार मर्दन करे।

अथवा पंवार के बीज, आंवला, कत्था, दही के पानी में पीसकर दाद को खुजला कर मले।

अथवा पारा, आंवलासार गंधक, नीलाथोथा, सुहागा, नीबू के रस में पीस कर दाद का खुर्मा कर लगावे।

फ़सल इलाज जर्ब अर्थात् तर खुजली और हकह अर्थात् सूखी खुजली की चिकित्सा में

क्योंकि यह रोग बाह्य त्वचा पर उत्पन्न होता है इसलिये त्वचा के रोगों में गिना जाता है और तर खुजली का मादा प्रायःखारी कफ है और सूखी में वात की विशेषता होती है।

चिकित्सा हफ्तअंदाम फ़स्द खोले और स्त्री भोग तथा बैंगन, मिर्च, तेल आदि गर्म और सलोनी वस्तुओं से पथ्य रख और प्रतिदिन पित्तपापड़ा का अवलेह खाय।

दवा काबली हड़ का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आंवला, कालीहड़, सिरफोके की पत्तियां, अफ़ीम प्रत्येक सात माशे, पित्तपापड़े के पत्ते दो तोले ग्यारह माशे, कूट छानकर गाय के घी में मकरों कर त्रिगुण बूरा मिलावे मात्रा दो तोले।

अथवा नीम की कोंपल दो तोले पानी में पीसकर पंद्रह दिन तक पिये और इसी रीति से सिरफोका पीना भी गुण करता है।

अथवा फर्वा चिरायता, पित्तपापड़ा, कालीहड़ प्रत्येक एक तोला रात को पानी में भिगोकर प्रातःकाल पीस छानकर पिये।

अथवा गंधक, आंवलासार हल्दी, बावची प्रत्येक दस माशे पित्तपापड़ा एक तोले आठ माशे सबको तीन भाग करके उसमें से एक भाग रात को जल में भिगोदे प्रातःकाल छानकर पिये। और उसके फ़ोक को कड़वे तेलमें मिला कर शरीर पर मर्दन करे और गरम जलसे स्नान करे।

अथवा इमली को भिगोकर मलना और पान करना सूखी और तर खुजली को आराम करता है।

अथवा कालीहड़ कोकूट करके पांच तोले आठ माशे, अमरबेल एक तोला साढ़े पांच माशे आध सेर गरम पानी में भिगोदे प्रातःकाल छानकर दो तोला नौ माशे पूरा मिलाकर दो चार पांवे और मुजिज में लिखा है कि प्रति दिन आधसेर दूध और आधा शिकञ्जबीन मिलाकर पीना गुणदायक है।

और यह औषधि शेखुल रईस के मत से भी परीक्षित है परन्तु इतनी दवा गवारों के योग्य हैं, और लोगों के लिये इतनी दवा अति भूख लगाने वाली और उदर का निर्बल करने वाली है।

गंधक का तेल कि दाद तथा तर और सूखी खुजली को दूर करता है। गंधक आक के दूध में दो दिवस पर्यन्त खरल करके टिकिया बना कर छाया में सुखावे फिर भाजन में डाल कर तेल भर के चार पहर मंदी आंच से औटावे जितना तेल पानी पर आवे उसको काम में लावें और कोई २ गंधक को पीली रंगत के आक के दूध में औटा कर दो दिन खरल करते हैं।

दवा नीलाथोथा, सूखा तबाकू प्रत्येक साढ़े तीन माशे कबेला सात माशे सफेद चीनी चौदह माशे कड़वे तेल में मिलाकर तीन दिन लगावे।

चीजा चोल की टिकिया कि तर खुजली को गुण करती है तथा कफ और पित्त का निकालती है। काबली हड़ का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आंवला, काली चिरायता छिली हुई प्रत्येक एक भाग, सूखी निसोत दो भाग कूट छान कर पानी में मिला कर गोलियां बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे और जो अधिक दस्त चाहे तो दो तोले ग्यारह माशे खाय।

तेल कि तर खुजली को गुणदायक है तीन तोले मैनसिल महीन पीस कर एक सेर गौ के घी में मिलाकर औटावे जब धुआं न रहे एक तगार में पानी भर के औषधि को घृत सहित उस में डाल दे जब शीतल हो जाय जल के ऊपर से तेल लेकर उस पर मर्दन करे।

दवा कि खुजली को गुण करे। पाव सेर कड़वे तेल को खूब औटावे और आक की पत्तियां इक्कीस नग लेकर एक २ कर उस में डाल जब सब पत्ते जल कर राख होजावें उतार कर थोड़ा मैनसिल उस में डाल कर मिलावे और शीशी में रख कर खुजली पर मले दो तीन दिन में दूर हो जायगी।

अथवा फटकरी का मूसला जो पुराना और कीड़ों का खाया न हो कोयलों की आंच में जलाकर महीन पीसे और कड़वे तेल में मिला कर मले और तीन चार घड़ी पश्चात् ठंडे जल से धोवे और शरद ऋतु में गरम जल होवे।

अथवा अफ़रा, कालीमिर्च, नीलाथोथा प्रत्येक तीन माशे, बदूक की बारूद एक तोला आठ माशे, छः तोल आठ माशे घी में मिलाकर मले और एक प्रहर पश्चात गरम जल और बेसन से स्नान करे।

अथवा आक का दूध जमा कर छाया में सुखावे फिर जला कर कड़वे तेल में मिलाकर बदन पर मले और चार घड़ी पश्चात स्नान करे।

अथवा सहजने की जड़ कड़वे तेल में जलाकर छान कर बदन पर मले।

पीली हरताल का तेल कि खुजली और दाद को गुण करे। पीली हरताल एक भाग मीठा तेल दो भाग प्रथम तेल को औटावे जब लाल होजाय हरताल पीस कर थोड़ी २ उस में डाल कर लकड़ी के चमचे से उसे चलाता रहे और आंच मंदी करे जब तेल की रंगत मयूर के सदृश होजाय और तेल में अग्नि लग जाय उस समय देगची को बंद करदे और तेल की ज्वाला बुझ जाय इसी प्रकार देगची को पांच बार खोले और बंद करे फिर ठंडा कर शीशी में रखे और शरीर पर मल कर धूप में बैठ और गरम पानी से न्हाय।

अथवा पंवार के बीज सेर भर, गंधक एक तोला आठ माशे, एक सेर गाय का दूध, पाव सेर घी मिला कर औटावे जब दूध जल कर घी रह जावे छान कर मले।

स्याह दवा चिर्मिटी, आंवला, कालीमिर्च, काली हड़ प्रत्येक एक तोला नीलाथोथा एक भाग कड़वे तेल में प्रथम चिर्मिटी जलावे फिर हड़, आंवला नीलाथोथा पृथक २ जला कर कालीमिर्च, कूट छान कर उस में मिला कर बदन पर मले।

अथवा कनेर के पत्ते बीस नग पाव भर कड़वे तेल में जला कर तेल बदन पर मले।

पंवार का तेल कि खुजली को दूर करता है पंवार के बीज एक सेर गंधक एक तोले आठ माशे, गौ का दूध दो सेर, घी पाव सेर में औटावे जब दूध जलकर घी रहजाय उसे मले।

अथवा पालक के बीज पोस्त के दाने बराबर पानी में पीसकर बदन पर मले फिर गरम पानी से न्हाय दो तीन दिन में आराम होजायगा।

अथवा, बंदूक की बारूद कड़वे तेल में मिलाकर शरीर से मलकर धूप में बैठ फिर न्हाय।

अथवा बर्गद के पत्ते और सूखी गूदर की लकड़ी जो पृथ्वी पर पड़ी हो और पारत के डाले बराबर लेकर जलावे और उसकी भस्म कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरम जल से न्हाय।

अथवा कलमी शोरा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन करे।

अथवा मरसी गुलाब के फूलों का तेल सिरके में मिलाकर मर्दन करे।

अथवा साबुन जल में पीसकर लगावे पश्चात् न्हाय।

अथवा सुहागा, चमली का तेल, गुलाब और नीबू के रसमें मिलाकर मले और, कोई २ थोड़ा कपूर डालते हैं।

अथवा गंधक सात माशे, पारा, नीलाथोथा भुना प्रत्येक पौने दो माशे गौ के घी में जो इक्कीस बार धोया हो मिलाकर मले और दो घड़ी पश्चात शीतल जल से न्हाय।

अथवा अफीम तिलके तेल में मिलाकर मले।

अथवा सिंदूर, आंवलासार गंधक, मुर्दासंग, नीलाथोथा प्रत्येक एक तोला आठ माशे सबको महीन पीसकर चार तोले गौके घी में मिलाकर मर्दन करे और लिखा है कि नित्य अर्धोष्ण जल से स्नान करना सूखी और तर खुजली का नाश करता है।

मर्दन नीलाथोथा, आंवलासार, गंधक, कपूर प्रत्येक एक तोला आठ माशे गौ का घी धुला हुआ तीन तोले औषधि कूटछानकर घी में मिलाकर प्रतिदिन मर्दन कर धूप में बैठकर स्नान करे।

फ़सल जनाज अर्थात् कक्ष दुर्गंधि की चिकित्सा में

चिकित्सा इसकी यथाचित शरीर को मैल आदि से शुद्ध करना है।

दवा कि बगलगंध को दूर करे। चूना जल में पीसकर लगावे।

अथवा जामन की छाल और पत्ते जल में औटाकर बगल को धोवे।

अथवा आड़ू अर्थात् शफ़तालू के पत्ते पीसकर बगल से मले फिर गरम जल से धोवे।

अथवा मुर्दासंग पीसकर मले तो बगलगंध दूर हो।

अथवा अफरा, कालीमिर्च, नीलाथोथा प्रत्येक तीन माशे, बंदूक की बारूद एक तोला आठ माशे, छ तोले आठ माशे घी में मिलाकर मले और एक पहर पश्चात गरम जल और बेसन से स्नान करे।

अथवा आक का दूध जमा कर छाया में सुखावे फिर जला कर कड़वे तेल में मिलाकर बदन पर मले और चार घड़ी पश्चात स्नान करे।

अथवा सहजने की जड़ कड़वे तेल में जलाकर छान कर बदन पर मले।

पीली हरताल का तेल कि खुजली और दाद को गुण करे। पीली हरताल एक भाग मीठा तेल दो भाग प्रथम तेल को औटावे जब लाल होजाय हरताल पीस कर थोड़ी २ उस में डाल कर लकड़ी के चमचे से उसे चलाता रहे और आंच मंदी करे जब तेल की रंगत मयूर के सदृश होजाय और तेल में अग्नि लग जाय उस समय देगची को बंद करदे और तेल की ज्वाला बुझ जाय इसी प्रकार देगची को पांच बार खोले और बंद करे फिर ठंढा कर शीशी में रखे और शरीर पर मल कर धूप में बैठे और गरम पानी से न्हाय।

अथवा पंवार के बीज सेर भर, गंधक एक तोला आठ माशे, एक सेर गाय का दूध, पाव सेर घी मिला कर औटावे जब दूध जल कर घी रह जावे छान कर मले।

स्याह दवा चिर्मिटी, आंवला, कालीमिर्च, कालीहड़ प्रत्येक एक तोला नीलाथोथा एक भाग कड़वे तेल में प्रथम चिर्मिटी जलावे फिर हड़, आंवला नीलाथोथा पृथक् २ जला कर, कालीमिर्च, कूट छान कर उस में मिला कर बदन पर मले।

अथवा कनेर के पत्ते बीस नग पाव भर कड़वे तेल में जला कर तेल बदन पर मले।

पवार का तेल कि खुजली को दूर करता है पंवार के बीज एक सेर गंधक एक तोले आठ माशे, गौ का दूध दो सेर, घी पाव सेर में औटावे जब दूध जलकर घी रहजाय उसे मले।

अथवा पोलक के बीज पोस्त के दाने बराबर पानी में पीसकर बदन पर मले फिर गरम पानी से न्हाय दो तीन दिन में आराम होजायगा।

अथवा, पदूक की बारूद कड़वे तेल में मिलाकर शरीर से मलकर धूप में बैठे फिर न्हाय।

अथवा बर्गद के पत्ते और सूखी थूहर की लकड़ी जो पृथ्वी पर पड़ी हो और पास्त के डोडे बराबर लेकर, जलावे और उसकी भस्म कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरम जल से न्हाय।

अथवा कलमी शोरा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन करे।

अथवा मेंहदी गुलाब के फूलों का तेल सिरके में मिलाकर मर्दन करे।

अथवा साबन जल में पीसकर लगावे पश्चात् न्हाय।

अथवा सुहागा, चपली का तेल, गुलाब और नीबू के रसमें मिलाकर मले और, कोई २, थोड़ा कपूर डालते हैं।

अथवा गंधक सात माशे, पारा, नीलाथोथा चूना प्रत्येक पौने दो माशे गौ के घी में जो इक्कीस बार धोया हो मिलाकर मले और दो घड़ी परचात शीतल जल से न्हाय।

अथवा अफीम तिलके तेल में मिलाकर मले।

अथवा सिंदूर, आंवलासार गंधक, मुर्दासंग, नीलाथोथा प्रत्येक एक तोला आठ माशे सबको महीन पीसकर चार तोले गौके घी में मिलाकर मर्दन करे और लिखा है कि नित्य अर्द्धोष्ण जल से स्नान करना सूखी और तर खुजली को गुण करता है।

मर्दन नीलाथोथा, आंवलासार, गंधक, कपूर प्रत्येक एक तोला आठ माशे गौ का घी धुला हुआ तीन तोले औषधि कूटछानकर घी में मिलाकर प्रतिदिन मर्दन कर धूप में बैठकर स्नान करे।

फ़स्ल जनाज अर्थात कक्ष दुर्गंधि की चिकित्सा में

चिकित्सा इसकी यथोचित शरीर का मैल आदि से शुद्ध करना है।

दवा कि बग़लगंध को दूर करे। चूना जल में पीसकर लगावे।

अथवा जामन की छाल और पत्ते जल में औटाकर बगल को धोवे।

अथवा आडू अर्थात शफ़तालू के पत्ते पीसकर बगल से मले फिर गरम जल से धोवे।

अथवा मुर्दासंग पीसकर मले तो बगलगंध दूर हो।

अथवा अफ़रा, कालीमिर्च, नीलाथोथा, प्रत्येक तीन माशे, बंदूक की बारूद एक तोला आठ माशे, छः तोला आठ माशा घी में मिलाकर मले और एक पहर पश्चात गरम जल और बेसन से स्नान करे।

अथवा आक का दूध जमा कर छाया में सुखावे फिर जला कर कडुवे तेल में मिलाकर बदन पर मले और चार घड़ी पश्चात स्नान करे।

अथवा संहमने की जड़ कडुवे तेल में जलाकर छान कर बदन पर मले।

पीली हरताल का तेल कि खुजली और दाद को गुण करे। पीली हरताल एक भाग मीठा तेल दो भाग प्रथम तेल को औटाव जब लाल होजाय हरताल पीस कर थोड़ी २ उस में डाल कर लकड़ी के चमचे से उसे चलाता रहे और आंच मंदी करे जब तेल की रंगत मयूर के सदृश होजाय और तेल में अग्नि लग जाय उस समय देगची को बंद करदे और तेल की ज्वाला बुझ जाय इसी प्रकार देगची को पांच बार खोले और बंद करे फिर ठंडा कर शीशी में रखे और शरीर पर मल कर धूप में बैठे और गरम पानी से न्हाये।

अथवा पंवार के बीज सेर भर, गंधक एक तोला आठ माशे, एक सेर गाय का दूध, पाव सेर घी मिला कर औटावे जब दूध जल कर घी रह जाय छान कर मले।

स्याह दद्रु चिरमिटी, आवला, कालीमिर्च, कालीहड़ प्रत्येक एक तोला नीलाथोथा एक भाग कडुवे तेल में प्रथम चिरमिटी जलावे फिर हड़, आंवला नीलाथोथा पृथक २ जला कर, कालीमिर्च, कूट, छान कर उस में मिला कर बदन पर मले।

अथवा कनेर के पत्ते बीस नग पाव भर कडुवे तेल में जला कर तेल बदन पर मले।

पवार का तेल कि खुजली को दूर करता है पवार के बीज एक सेर गंधक एक तोले आठ माशे, गौ का दूध दो सेर, घी पाव सेर में औटावे जब दूध जलकर घी रहजाय उसे मले।

अथवा पालक के बीज पोस्त के दाने बराबर पानी में पीसकर बदन पर मले फिर गरम पानी से न्हाये दो तीन दिन में आराम होजायगा।

अथवा चद्रू की बारूद कड़वे तेल में मिलाकर शरीर से मलकर धूप में बैठ फिर न्हाय।

अथवा बर्गद के पत्ते और सूखी थूहर की लकड़ी जो पृथ्वी पर पड़ी हो और पास्त के डाढ़े बराबर लेकर, जलावे और उसकी भस्म कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरम जल से न्हाय।

अथवा कलमी शोरा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन करे।

अथवा मेंहदी गुलाब के फूलों का तेल सिरके में मिलाकर मर्दन करे।

अथवा साबन जल में पीसकर लगावे पश्चात न्हाय।

अथवा सुहागा, चमली का तेल, गुलाब और नींबू के रसमें मिलाकर मले और कोई २ थोड़ा कपूर डालते हैं।

अथवा गंधक सात माशे, पारा, नीलाथोथा चूना प्रत्येक पौने दो माशे गौ के घी में जो इक्कीस बार धोया हो मिलाकर मल और दो घड़ी पश्चात शीतल जल से न्हाय।

अथवा अफीम तिलके तेल में मिलाकर मले।

अथवा सिंदूर, आंवलासार गंधक, मुर्दासंग, नीलाथोथा प्रत्येक एक तोला आठ माशे सबको महीन पीसकर और तोले गौके घी में मिलाकर मर्दन करे और लिखा है कि नित्य अर्द्धोष्ण जल से स्नान करना सूखी और तर खुजली को गुण करता है।

मर्दन नीलाथोथा, आंवलासार, गंधक, कपूर प्रत्येक एक तोला आठ माशे गौ का घी धुला हुआ तीन तोले औषधि कूटछानकर घी में मिलाकर प्रतिदिन मर्दन कर धूप में बैठकर स्नान करे।

फसल जनाज अर्थात कक्ष दुर्गंधि की चिकित्सा में

चिकित्सा इसकी यथोचित शरीर को मैल आदि से शुद्ध करना है।

दवा कि दुर्गंधि को दूर करे, चूना जल में पीसकर लगावे।

अथवा जामन की छाल और पत्ते जल में औटाकर बगल को धोवे।

अथवा आड़ू अर्थात शफतालू के पत्ते पीसकर बगल से मले फिर गरम जल से धोवे।

अथवा मुर्दासंग पीसकर मले तो बगलगंध दूर हो।

फ़सल सीत अर्थात हाथ पांवों में अधिक पसीना आने की चिकित्सा में

दवा मूंग जला पीसकर मले।

अथवा बेंगन, पोस्त के डोड़े जौकुट कर जल में औटा कर हाथ पांव उस में भिगोया करे।

अथवा कएठी, पीली कौड़ी जलाकर पृथक २ महीन पीसकर मले।

अथवा काले धतूरे के बीज महीन पीसकर एक माशा प्रति दिन एक सप्ताह पर्यन्त खाय।

अथवा घर की पत्तियां पीसकर मले।

अथवा खजूर की सूखी पत्तियां पीसकर हाथ पांवों पर मले।

अथवा नील की छाल का बाफरा लेकर उसके अर्द्धोष्ण पानी से धोवे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त करे। और माजूफल लगाना।

अथवा फिटकरी पानी में पीसकर मलना या पुष्करमूल पीसकर हथेली और तलवों पर मलना शीघ्र को दूर करता है।

अथवा कट कटेरे की जड़ सूखी पिसी हुई एक तोला शहद में मिलाकर सात दिवस पर्यन्त खाय।

गोली कि सीत को दूर करती है शिंगरफ़, पेठे के बीजों की मिंगी प्रत्येक साढ़े तीन माशे पीली कौड़ी जली हुई साढ़े दस माशे काली मिर्च एक तोला साढ़े पांच माशे कूट छानकर सात माशे खट्टा चूक मिलाकर काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनाकर एक २ गोली दोनों समय खाया करे।

इति

फ़सल इलाज इतिफ़ाक अंगुश्तान अर्थात अंगुलियों के फूलने और खुजली की चिकित्सा में

यह रोग वायु की सर्दी से होता है।

चिकित्सा गेहूं की भूसी और लवण औटाकर धोवे।

अथवा शलजम वा चुकन्दर के काढ़े वा उसके जल से जिस में मसूर या मटर औटाया हो धोवे।

फ़सल इलाज ज़राहत अर्थात घावों की चिकित्सा में

जिस घाव में पीप निकले उस को क़रह कहते हैं और जिसे चालीस दिन पूरे हो जायं वह नासूर कहलाता है।

ज़रूर अर्थात बुर्की कि घाव को सुखावे पटेरा कि एक घास है जो नदी के किनारे होती है और उसकी चटाई बनाते हैं उसको जला कर उसकी राख घाव पर छिड़के यदि सिरके में मिलाकर नासूर पर लगावे तो गुण करे।

अथवा कनेर की सूखी पत्ती पीस कर घाव पर बुर्के।

अथवा संगजराहत या सेलखड़ी पीस कर मले।

अथवा स्त्री धर्म का वस्त्र जला कर घाव पर बुर्के।

अथवा गधे का मांस चर्म सहित जलाकर उसकी भस्म घाव पर छिड़के दो ही दिन में घाव भर आवेगा।

अथवा सिरस की सूखी छाल पीस कर बुर्के।

अथवा मुर्गी का पर जला कर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अथवा कछवे के सिर की भस्म प्रथम घाव को मीठे तेल से चुपड़ छिड़के तीन दिन में आराम हो।

दवा कि घाव को शुद्ध करे साबुन जल में पीसकर थोड़ा गेरू मिला कर मरहम के सदृश बना कर काम में लावें और कभी गेरू के — काम में लाते हैं।

बुर्की कि घाव के मृतक मांस को दूर करे और दुःख न दे सुनी फिटकरी महीन पीस कर बुर्के।

दवा कि घाव को भरदे असगंध नागौरी महीन पीसकर घाव पर बुर्के और पीपा तुरई के पत्ते घाव पर बांधे।

अथवा कुल्फी के पत्ते घाव पर बांधे परंतु साबित बांधना उचित है।

बुर्की सर्प की केंचुली जला कर उसकी भस्म घाव पर बुर्के।

अथवा हल्दी महीन पीस कर घाव पर बुर्के।

अथवा साम्भर सींग पीस कर बुर्के।

अथवा कुन्दर पीस कर छिड़के दुष्ट घाव को गुण करता है

बुर्की कि फलने वाले घाव को गुण करती है कमल, और बरगद के पत्ते बराबर जला कर उनकी राख रोगन में मिलाकर घाव पर छिड़के ।

बुर्की कि घाव और फफोलों को गुण करे कपूर चतुर्थ भाग, सुने नागवू के बीज अर्द्ध भाग, प्याज का छिलका जलाया हुआ एक भाग, जले घाव दो भाग सबको पीसकर छिड़के ।

गोली कि औरंगज़ेबी घाव को जिस में कि छिद्र होते हैं गुण करती है बेलगिरि की मींगी, कत्था, नीलाथोथा बराबर लेकर गोलियां बनावे और शुद्ध बांधना जरूद है। फोड़े के मल मवाद को दूर करता है ।

अथवा मसूर जला कर भैंस के दूध में मिला कर दोनों समय घाव पर लगावे तो अशुद्ध घाव को गुण करे ।

रोगन अर्थात् तेल के नुसखे

रोगन कि घाव के भर लाने को अद्भुत गुणदायक है । तमाखू के पत्ते, करास के पत्ते, चमेली के पत्ते, धतूरे के पत्ते प्रत्येक साढ़े तीन माशे, मीठा तेल आध सेर, पत्तों को पीसकर तेल में मिलाकर जलावे, चमचे से खूब रगड़ कर आंच पर से उतार ले द्वितीय वार चमचे से चलावे जब फोक नीचे बैठ जाय शुद्ध कर तेल काम में लावे ।

द्वितीय रोगन कि घाव को भर लावे कनेर के पत्ते, नीम के पत्ते प्रत्येक एक तोला आठ माशे तेल में भून जब स्याह होजावे तब नीलाथोथा एक माशे पीस कर मिलाकर काम में लावे ।

अथवा यह कि घाव को शीघ्र भर कर अच्छा करे गूगल एक तोला आठ माशे हलदी एक गांठ सिंदूर चार माशे प्रथम तेल में नीमकी टिकिया बना कर जलावे फिर हल्दी जलावे पश्चात् गूगल फिर सिंदूर मिलाकर काम में लावे ।

रोगन कि प्रत्येक प्रकार के घावों को गुणदायक है । मीठा तेल एक सेर कड़ाही में डाल कर औटावे पश्चात नीम के पत्तों की टिकिया और आध पाव कनेर के पत्तों की टिकिया पाव सेर मोम बकायन की पत्तियां तेरह तोले चार माशे, एक तोला साढ़े चार माशे तेल में टिकिया बना कर तेल में डाल कर जलावे जब जल कर स्याह होजावे छान कर काम में लावे ।

नीम का तेल कि घाव को गुणदायक है नीम की पत्तियां पीस कर

टिकिया बनाकर तेल में जलाय जब स्याह होजाय छानकर काम में लावे यह तेल सादा है कान की पीड़ा को भी गुण करता है और जो घाव पर टपकावे कपला और कत्था एक २ तोला और मिला लेवे कि घाव जल्द भर लावे और जब मवाद निकालना चाहे थोड़ा नीलाथोथा डाल दे ।

कबेले का तेल कि घाव को अद्वितीय गुण करता है और थोड़ही दिनों में अच्छा करता है । कबेला तीन चार महीन खरल करके दो तोले ग्यारह माश बराबर के कड़वे तेल में मिला कर कपड़े में छान के वांछित समय पर रुई भिगोकर घाव पर रखे और कई एक बूंदें टपकावे ।

भिलावे का तेल बहुधा घावों को गुणदायक है यहां तक कि पशुओं के घावों का भी गुण करता है भिलावे सात नग आध पाव मीठे तेल में जला कर सलखड़ी मिलाकर मुर्गी के पर से लगावे ।

कौंच के बीजों का तेल कि घाव और नासूरों को गुण करता है। कौंच के बीज छिले हुए तीन तोले चार माशे महीन पीस कर टिकिया बना कर आध पाव मीठे तेल में जला कर छान कर घाव पर टपकाय और किसी किसी ने मीठे तेल के बदले कड़वा तेल लिखा है ।

कुचले का तेल कि घाव को गुणदायक है और नासूर को भी अच्छा करता है । कालीमिर्च साढ़े तीन माशे, नीलाथोथा एक चने की बराबर, कुचले पांच नग, मीठा तेल एक तोला साढ़े पांच माशे, थोड़ी नीम की पत्तियां, अजवायन एक तोला आठ माशे, कबेला तीन तोले चार माशे, तेल को कड़ाही में औटावे और नीम की पत्तियों की टिकिया बनाकर उसमें जलावे जब स्याह होजावे तब निकाल कर छानकर चीनी या शीशे के बर्तन में रखे और रुई को उसमें भिगो कर घाव या नासूर पर रखे जब सूख जाय फिर भिगो दे ।

तेल घाव दूर करने के लिये । मुलहठी छिली हुई जल और तेल में औटावे जब पानी जल कर तेल मात्र रहजाय छानकर हुई रुई के साथ लगा कर काम में लावें ।

अथवा मीठातेल पाव सेर, नीम की कोंपल, अरंड की कोंपल प्रत्येक तीन तोले चार माशे कोंपल को तेल में जलाकर राल तीन तोले चार माशे, कबेला एक तोले आठ माशे महीन पीस कर तेल में मिलाकर घाव पर टप-कावे तो सब प्रकार के घावों को गुण करे यहां तक कि पशुओं के घावों को

भी गुणदायक है जो मृतक मांस अधिक हो तो एक माशे नीलाथोथा मिलावे

अथवा यह कि घाव भरने को अद्वितीय है और उपदंश के घाव को भी गुण करता है मिलाए, कौंच के बीज प्रत्येक एक तोला आठ माशे, खुरासानी अजवायन, मुर्दासंग प्रत्येक तीन माशे, नीलाथोथा दो माशे, तिल का तेल आधपाव पहिले तेल को अग्नि पर रखे जब उफान आवे मिलावा उसमें डालकर जलावे फिर कौंच के बीज; अजवायन अलग २ डाले पश्चात नीलाथोथा, मुर्दासंग पीसकर मिलावे और आंच पर से उतारकर खूब रगड़े जब दूध सदृश होजाय यदि घाव मलस्थान पर हो तो छानकर नहीं तो बिना छाने काम में लावे और यह तेल नासूर को भी गुण करता है।

कुचले का तेल कि अकौता अर्थात गज को भी गुण करता है आठ नग कुचले मीठे तेल में जलाकर काम में लावे।

फसल प्रत्येक प्रकार के घावों के मरहमों के व्याख्यान में

मरहम प्याज, साबन, सफ़ेद कत्था प्रत्येक छः तोले आठ माशे, नीम की पत्तियां ग्यारह नग, मीठा तेल छः तोले आठ माशे प्रथम प्याज को टूक२ करके तेल में जलावे फिर नीम की पत्तियां जलाकर कत्था पीसकर डाले और थोड़ा-सा वस्त्र जलाकर मिलावे फिर रगड़कर काम में लावें।

मरहम कौंच का भारतवर्षियों का बनाया हुआ कि घाव को अति शीघ्र भर लाता है पाव सेर मीठा तेल लोहे के बर्तन में गरम कर उतार ले फिर कौंच के बीज पीसकर मिलावे और नीम के पत्ते तथा नरगो की पत्तियों की टिकिया बनाकर छः तोले आठ माशे मोम गरम कर के तेल में मिलाकर काम में लावे।

मरहम कि जल से बनता है और चिकनाई उस में नहीं होती और वर्षा काल में पानी अवगुण नहीं करता और सब प्रकार के घावों को गुण करता है यहां तक कि नासूर को भी अच्छा करता है गूगल, पारा प्रत्येक साढ़े तीन माशे, रसौत सात माशे प्रथम गूगल और रसौत को जल में रगड़े फिर पारा मिलाकर काम में लावे।

मरहम कि घाव तथा नासूर को गुण दायक है राल और घी प्रत्येक आधपाव, कत्था, फिटकरी, नीलाथोथा, लोबान प्रत्येक सवा दो तोले घी को थोड़े पानी से दो घड़ी मलकर औषधियां कूट छानकर मिलावे संगमरमर की

धूर्त, कत्था, नीलाथोथा, सफेद कौड़ी, नीली कौड़ी बराबर कूट छानकर घी में मिलावे और लाली के वास्ते थोड़ा महावर मिलाके गोलियां बनावे।

संगमरमर की धूल का मरहम

संगमरमर की गोलियां, मुर्दासंग प्रत्येक एक तोला आठ माशे, कत्था, राल, मोम प्रत्येक सात माशे, घी आधपाव प्रथम घी को भले प्रकार तपाकर मुर्दासंग प्रथम पीसकर उस में डाले जब जलजाय उतार कर राल तथा मोम मिलावे पश्चात् उस के कत्था और संगमरमर की धूल की गोली पीसकर मिलाकर काम में लावे सब तरह के घाव और फोड़ों को गुण दायक है।

मरहम कि सब प्रकार के घाव और फोड़ों को गुण दायक है और घाव को शीघ्र भरलाता है राल साढ़े तीन माशे, शिंगरफ एक माशे, मुर्दासंग एक माशे, कौंच के बीज छिले हुए साढ़े तीन माशे, सरसों का तेल तीन तोले चार माशे, पहले कौंच के बीज तेल में जलावे और फिर नीम के पत्तों की टिकिया उस में जलावे फिर छानकर औषधियां उसमें डाले और रगड़े।

मरहम कि बिवाई को गुण करे राल, घी प्रत्येक एक तोला आठमाशे मोम पांच माशे घी तपाकर मोम उस में मिलावे फिर राल डालकर और पांव को भली भांति धोवे फिर मरहम घावों में भरे और नित्य दिन चार बार इसी प्रकार करे।

मरहम कि सब प्रकार के घावों को गुण दायक है चर्म की मुलायम जला कर सुपारी जलाई हुई हड़ की गुठली जलाई हुई और आम की कोंपल जलाई हुई, मुर्दासंग, कत्था प्रत्येक दश माशे, घी गरम करके औषधियां मिलाकर मरहम बनावे।

अथवा घी शरद ऋतु में तीन तोले चार माशे और ग्रीष्म ऋतु में एक तोला आठ माशे लेकर नीलाथोथा एक माशे, मोम सफेद एक तोला आठ माशे, सिंदूर पांच माशे मिलाकर प्रकारानुसार मरहम बनावे।

मरहम कि पनेल उपदंश, नासूर और घाव आदि को गुण करता है। सरसों का तेल, सेलखड़ी, मोम प्रत्येक एक तोला आठ माशे, जंगाल चार माशे लेकर मरहम बनावे।

अथवा राल, हिरमिच मिट्टी प्रत्येक छः माशे नीलाथोथा दो रत्ती और तेल में खरल कर के मरहम बनावे।

अथवा मोम, राल, कत्था प्रत्येक एक तोला मोम को घी में पिघलाकर

पहिले राल को पीसकर मिलावे और तीन उफानों के बाद कत्था डाले रगड़ कर चार माशे कपूर मिलावे फिर उफान देकर उतारले यदि पुराने घाव पर लगावे तो थोड़ी सुपारी जलाकर मिलावे ।

अथवा राल एक भाग, मोम आधाभाग, घी चार भाग प्रकारानुसार मरहम बनावे ।

मरहम कि टूटी हड्डी के वास्ते गुण दायक है पकी ईंट महीन पीसकर थोड़े दूध में मिलावे और चावल उसमें पकाकर तीन सप्ताह पर्यन्त खाय अस्थि पूर्वानुसार होजाय ।

मरहम कि घाव को गुण करे । काली हड़, कथेला प्रत्येक साढ़े चार माशे, नीलाथोथा सवा दो माशे कूट छानकर थोड़े घीमें मिलाकर काममें लावे

मरहम इंगलैंडीय लोगों का बनाया हुआ मोम एक तोला आठ माशे भुनी फिटकरी, सिंदूर प्रत्येक दो माशे, मुर्दासंग चार माशे, नीलाथोथा चार रत्ती, घी तीन तोले छः माशे घी और मोम को तपाकर अग्नि पर से उतार कर औषधियां क्रम से मिलावे ।

अथवा रेंडी का तेल पावभर, अरंड की कोंपल का रस पावसेर दोनों को औटाव जब पानी जलकर तेलमात्र रहजाय तब एक तोला आठमाशे पत्थर का चूना रगड़ कर उसमें मिलाकर पीसे और घाव पर लगावे छिपा न रहे कि चूना चार प्रकार का होता है एक पत्थर का, दूसरा घोंघे का, तीसरा सीप का चौथा कंकर का ।

मरहम कि घाव भरने को अद्भुत गुण दायक है पुरानी रुई जली हुई दस तोले, पांच तोले मोम और उसकी बराबर खुरासानी बच और गाय का घी चार तोले चार माशे, नीलाथोथा दो रत्ती पहिले घी और मोम को एक बासन में गरम करे और उस में रुई की राख डाले पश्चात बच मिलावे फिर नीलाथोथा भून पीसकर मिलावे और मरहम बनाकर काम में लावे ।

अथवा सफेद कत्था, मुर्दासंग, सेलखड़ी प्रत्येक एक तोला आठ माशे, राल दस तोले, कंबल का टुकड़ा जलाया हुआ चौथाई गज, घी ग्यारह तोले आठ माशे औषधियों को महीन पीसकर घी में मिलाकर मरहम बनावे ।

मरहम कि भगंदर को गुण करे अर्थात् उस फोड़े को जो अंड कोष और गुदा के बीच में होता है कोल्हू का चमड़ा जलाया हुआ, पपरिया कत्था, सेलखड़ी, मोम प्रत्येक एक तोला आठमाशे, गौ का घी सौ बार धुला हुआ,

मोम को घृत में मिलाकर ठंडा कर के सब औषधियां उस में मिलावे।

मरहम कि फोड़े के घाव को गुण दायक है नीलाथोथा एक माशे, मुर्दासंग दो माशे, सफ़ेद कत्था चार माशे, राळ आठ माशे, कबेला सोलह माशे, कपूरी मोम ग्यारह माशे, गौ का घी पचीस माशे, प्रथम घी धोकर हाथ से मले पश्चात औषधियां मिलाकर हाथ से मलकर मरहम बनावे।

मरहम सफ़ेद घाव भरने के लिये कपूर साढ़े तीन माशे सफ़ेद मोम एक तोला आठ माशे, सफ़ेदा तीन तोले चार माशे, मीठा तेल एक तोला आठ माशे प्रथम तेल गरम करके मोम डाले और शुद्ध कर आंच पर रखे फिर उतार ठंडा करके और औषधियां डालकर मरहम बनाकर काम में लावे।

फ़सल उन दानों की चिकित्सा में जो वर्षा ऋतु में उत्पन्न होते हैं।

मसूर के छिलके जलाकर, आंवला जलाकर उसकी बराबर महदीं, कबेला, थोड़ा नीलाथोथा भुना थोड़े तेल में मिला पीस कर दानों पर मले।

दवा कि आतशक अर्थात उपदंश के घावों को गुण करे फिटकरी, नीलाथोथा, मुर्दासंग, सुहागा प्रत्येक एक माशे, कबेला, बावची, पारा, गेरु पवार के बीज प्रत्येक चार रत्ती, काली मिर्च जली हुई तीन माशे, कुचले जले हुए तीन नग सब को महीन कूट छानकर आध पाव घी में मिलाकर काम में लावे।

अथवा जली हुई कोड़ी, नीलाथोथा भुना, हल्दी जली हुई बराबर नीबू के रस में खरल करके मालिश करे।

अथवा सुपारी, हल्दी, बावची प्रत्येक जली हुई एक तोला आठ माशे, महदीं, कत्था, सुहागा भुनी, फिटकरी भुनी प्रत्येक दस माशे, मसूर की दाल जलाकर, पोस्त के डोडे जलाकर प्रत्येक पांच तोले, काली मिर्च पांच माशे सब को महीन कूट छानकर कड़वे तेल में मिलावे और प्रथम तीन दिवस निरुपद्रव ढाक के पत्ते गरम करके अकौते पर बांधे और तीन दिवस पश्चात यह तेल काम में लावे अति गुणदायक और परीक्षित है।

अथवा बावची गरम कर के कूट छान कर प्रथम अकौते पर सरसों का तेल चुपड़कर यह दवा छिड़के।

अथवा दूध मास और चिरोंजी पीसकर अकौते पर लगावे।

अथवा कठहर के पत्ते घी से चुपड़ कर अर्द्धोष्ण कर अकौते पर बांधे और चार घड़ी पश्चात दूसरा पत्ता बांधे ।

अथवा गेरू, भुना सुहागा, बराबर चमेली के तेल में जला रगड़ कर चार पांच बार मले ।

अथवा करील का कोयला सरसों के तेल में मिलाकर लगावे ।

अथवा भिलावा मीठे तेल में जलाकर मले और थोड़ा नीलाथोथा, भुना पीसकर मालिश करे ।

अथवा नीलाथोथा, कालीमिर्च, चूनेकी बरी, सुहागा प्रत्येक एक तोला आठ माशे, मेहदी की पत्तियां तीन तोला चार माशे, कड़वा तेल छः तोला आठ माशे सब को महीन पीस कर कड़वे तेल में मिलाकर औटावे और कई एक बार मर्दन करे ।

अथवा सिंदूर, कालीमिर्च, सुपारी, नीलाथोथा, कौड़ी जली हुई, सफ़ेद कत्था, कुचला बराबर पीस कर दूने तेल में मिलाकर काम में लावे ।

अथवा साबन, चूना परस्पर पीस कर लगावे ।

अथवा सिंदूर महीन पीसकर नीबू के रस में भिगोदे प्रात काल अकौते को कंडे से छील कर उस पर लगावे ।

अथवा कुचला साढ़े बारह तोले, फिटकरी साढ़े पांच तोले, दस माशा घी में मिलाकर मले ।

अथवा यह कि उस अकौते के घाव को जो पैर में होता है शुद्ध करे अलसी की खल, तालाब की मिट्टी दोनों बराबर जल में मिलावे और उससे एक मोटा टुकड़ा बनाकर प्रात काल से सायंकाल पर्यंत बांधे तीन चार दिन में आराम होजयागा ।

फ़सल नासूर की चिकित्सा में ।

चिपोटन की जड़ पानी में घिस कर नासूर पर रखे ।

अथवा बत्ती उस में भिगोकर नासूर पर रखे थोड़े दिन में आराम होजायगा ।

अथवा पुराना कम्बल जलाकर थोड़ा नीलाथोथा कूट छान कर नासूर पर छिड़के ।

अथवा कनखजूरा जलाकर उस की राख नासूर पर छिड़के ।

अथवा सांप की कांचली जलाकर उसकी राख बर्गद के दूध में मिला कर वा रुई उस में भिगोकर रखे और दस दिन पश्चात रुई उस पर से उठाले।

अथवा गौ के खुरकी राख, जूते के तले की राख बराबर लेकर एक नग छिपकली सरसों के तेल में जलाकर राख उस में मिलाकर कई एक बूंद नासूर पर टपकावे।

अथवा इमली के बीज पानी में भिगोकर छीले फिर उनको जल में पीसकर बत्ती उसमें भिगो कर नासूर पर रखे। यद्यपि पीड़ा उसमें होती है परन्तु आराम शीघ्र होजाता है और कोई २ कौड़ी जला पीसकर मिलाते हैं।

अथवा थूहर के दूध में फाया भिगोकर घाव पर रखे और कुछ काल पर्यन्त इसी प्रकार करे तो नासूर और भगदर को गुण करे।

अथवा समुद्रमाख जलाकर उसकी राख नासूर में भरे।

अथवा रुई आक के दूध में भिगोकर छाया में सुखा के फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलावे और उससे काजल पाड़कर नासूर पर लगावे तो नासूर की पीड़ा को दूर करे।

अथवा अरंड की कोंपल जो कच्ची और कोमल होवें पानी में पीसकर मेंहदी के सदृश लगावे।

अथवा चिड़िया की बीट पानी में महीन पीसकर नासूर पर लगावे।

अथवा कंडे की राख महीन पीसकर छानकर हथेली पर रख कर नासूर पर रखे।

अथवा मकड़ी का जाला कपड़े से साफ करके नासूर पर बांधे।

अथवा गिलोय, हल्दी कूटकर तेल में औटावे जब जलजाय पीसकर लेप करे।

अथवा करील की कोंपल एक माशे, मुर्दासंग एक रत्ती, बर्गद का दूध एक बूंद पानी के संग पत्थर पर पीसकर लगाकर उस पर एक बूंद बर्गद के दूध की टपकावे।

अथवा छोटी कटेरी का फल कूट छानकर जल में मिलाकर फाया उस में भिगो कर नासूर पर बांधे।

अथवा घोड़े का सुम जलाकर अलसी का तेल मिलाकर नासूर पर बांधे और जो नासूर अवयव के भीतर होतो दाबे में मिलाकर नासूर में भदर (?)

अथवा जिस हुक्के में सुलफ़ा पीते हैं उस का जल तीन दिन न बदले जब पानी पर जाला पड़जावे उस जाले को नासूर पर लगावे।

अथवा बिसखपरे की जड़, मेहदी के पत्ते, फ़रास के पत्ते, सरमा के पत्ते नीम के पत्ते, जीत के पत्ते, बेर के पत्ते अरंड के पत्ते, राल प्रत्येक तीन तोले चार माशे, मीठा तेल सेर भर प्रथम बिसखपरे की जड़ टूक २ करके तेल में जलावे फिर पत्तों की टिकिया बनाकर तेल में जलावे और छान कर सब मिलाकर रखदे।

अथवा सफ़ेद मोम, खुरासानी बच प्रत्येक एक तोला आठ माशे मीठा तेल पाव सेर प्रथम तेल गरम करके बच उसमें जलाकर छान कर मोम उसमें मिलाकर मरहम बनावे।

अथवा चिरचिटे की पत्तियां जल में पीसकर कपड़ा उस में भिगो के बत्ती बना कर नासूर में रखे और उस में से थोड़ा अर्क नासूर पर टपकावे।

अथवा अखरोट की मींगी, मोम, मीठा तेल बराबर ले मरहम बनावे।

अथवा भैंसा गूगल, मोम, गोमूत्र में पीसकर बत्ती बना नासूर में रखे।

फ़सल रुधिर बन्द करने वाली औषधियों के वर्णन में

दवा कपड़ा बलगार और दाराई जलाकर सुहागा भुना और हल्दी महीन पीस कर कंडे की राख इन औषधियों को जिस जगह से रुधिर बहता हो उस स्थान पर बांधे तो रुधिर बंद हो।

अथवा घोड़े की लीद बांधे और अंडे का छिलका लेकर भीतर का पर्दा उस को निकाल कर छाया में सुखा पीसकर बुर्के।

अथवा संगमरमर जला पीस कर उस की राख घाव पर बुर्के।

अथवा किसी जंतु का फेफड़ा सुखाकर जला कर उस की राख घाव पर बांधे।

अथवा नीलाथोथा महीन पीसकर घाव में भर दे।

अथवा माजू जलाकर घाव पर बुर्के।

अथवा मूगा महीन पीसकर बुर्के।

अथवा खाभा काई पीसकर लगावे।

अथवा चुकंदर पीसकर या रुई जलाकर बुर्के।

फ़सल इलाज हर्कुनार अर्थात् अग्नि से जल जाने की चिकित्सा में

दवा इमली की छाल पीसकर गाय के घी में मिलाकर लेप करे।

अथवा बरगद की कोंपल गौ के दही में पीसकर लेप करे।

अथवा अरंड के पत्तों का रस वा बाबा के फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लगावे और अंडे की सफ़ेदी मीठे तेल में मिलाकर लगावे।

अथवा दवात की स्याही और अनार की पत्तियां पीसकर लगाना गुण करता है और जो शरीर जलकर श्वेत होगया हो तो हड़, बहेड़ा, आंवला पीसकर लगाना पूर्व रंगत पर लाता है।

अथवा पुराने छप्पर की घास पीसकर लगाना परन्तु उस में कड़वा तेल जरूर मिलाना चाहिये।

अथवा गेहूं का, जौ का आटा महीन पीसकर लगाना और जलजाने के पश्चात् दाग रहजाय तो जामन की पत्तियां पीसकर मले।

अथवा बेर की कोंपल दही में मिलाकर कई बार मर्दन करे।

अथवा हींग जल में पीसकर लगावे।

अथवा झड़बेरी की पत्तियां मीठे तेल में पीसकर मले।

अथवा यह उस जलने को जो चर्म जलकर गिरपड़ा हो और पीड़ा होती हो उसी समय शान्ति करे। राल महीन पीसकर गरम मीठे तेल में डाले जब पिघल जाय मिलाकर मर्दन करे।

अथवा मेहदी की पत्तियां जल में पीसकर लेप करे और मासन के साथ लगाना दूसरा गुण करता है।

फ़सल इलाज जर्बह व सकत अर्थात् चोट की चिकित्सा में।

प्रकट हो कि जर्बह उसको कहते हैं कि अवयव पर कोई वस्तु गिरपड़े और सकत वह है कि स्वयं अवयव किसी वस्तु पर गिरे जो उस के कारण सोथ वा ज्वर हो तो प्रथम सोथ और ज्वर की चिकित्सा फ़स्द, धुन्ने और मुलैयन वस्तुओं से करे।

गोली कि चोट को गुण करती है पीपल की पत्तियां २१ नग पीसकर गुड़ मिलाकर गोलियां बनाकर सात दिन खाय।

दवा कि चोट को गुण दायक है बारह सींगे का सींग जल में घिसकर पिये।

अथवा कच्चा बैंगन बूरे के साथ खाय और थोड़ी सौंफ पीसकर पिये।

अथवा खरिया मिट्टी एक तोला जल में पीसे जब मिट्टी नीचे बैठ जाय जल निथारकर पीवे।

चूर्ण कि चोट को गुण दायक है और पीड़ा को गुण दायक है लवण छः माशे बूरा सफेद छः माशे, फक्की बनाकर खाय।

दवा हजरुलयहूद आधे माशे से एक माशे तक खाना मोमयाई के सदृश गुण करती है

गोली कि चोट के लिये अति गुण दायक है यहां तक कि पशुओं की चोट को भी गुण करती है गेहूं जलाकर उस की बराबर गुड़ मिलाकर खूब पीसकर थोड़ा घी मिलाकर मात्रा डेढ़ तोले, तीन दिन में चोट और पीड़ा को आराम करे इस औषधि को हिन्दी मोमयाई कहते हैं।

दवा कि चोट और खून जमजाने को गुण करे एक माशे फिटकरी पीसकर चार तोले घी में भूने जब फिटकरी घी में जमजाय ऊपर से घृत में चूरा और मैदा मिलाकर हलवा बनावे और खाय और उसी हलवे की गोली बनाकर उसमें उस फिटकरी को रखकर खाय तीन दिन तक इसी प्रकार करे यह दवा मोमयाई से उत्तम है।

मर्दन कि चोट को गुण दायक है बिजैसार की लकड़ी पानी में घिसकर लगावे।

अथवा सहजने की पत्तियां बराबर के मीठे तेल में मिलाकर चोट पर मलकर धूप में बैठे।

दवा मांदगी को गुण करे कोई तेल गुनगुना कर नाखूनों पर मले।

अथवा रेंडी की मींगी, काले तिल पृथक २ कूट कर मीठे तेल में मिला कर लेप करे तो चोट दूर हो और सूखा हुआ अवयव अपने पूर्व रूप पर आजाय

दवा कि चोट और मोच को गुण करे। तिल की खल कूट कर गरम जल में डाले जब भले प्रकार घुलजाय महीन वस्त्र पर लगाकर अवयव पै रखे

अथवा मीठा तेल अर्द्धोष्ण तलवों पर मले और जगती कंडा की आंच से सेक करे और पांव फैलाये रखे।

अथवा साबन पीस कर जल में गरम कर के मले और जिस अवयव को वायु ने मारा हो उसको भी गुण करता है और जो साबन में हलदी मिला कर लेप कर तो भी अत्युत्तम है।

दवा कि चोट और ग्रन्थी को जो चोट के कारण पड़गयी हो गुणदायक है। पुराने नारियल की मिंगी जो कड़वी नहो कूट कर चार भाग हलदी महीन पीस कर मिलावे और थोड़ी पोटली में गरम करके बांध कर दो तीन घड़ी सेक करे फिर चोट और सोथ पर बांधे दो तीन दिवस में आराम हो जायगा।

दवा हलदी, मैदालकड़ी, गेंहू की मैदा प्रत्येक आध पाव लोटन सज्जी एक तोला आठ माशे, मीठा तेल पाव सेर प्रथम तेल गरम कर मैदा उस में भूने फिर औषधियां महीन पीस कर पृथक २ उस में डाले प्रथम सज्जी पश्चात मैदालकड़ी फिर हल्दी मिला कर थोड़ा पानी डाल कर पकावे जब पानी जल जाय गरमागरम लेकर सेके। इसको लुपड़ी कहते हैं।

दवा कि चोट तथा सोथ को नवीन हो वा पुरानी अद्वितीय को गुणदायक है। मैदालकड़ी तीन तोला चार माशे, सोंठ और कुचला टूक २ कर के हांड़ी में एक सेर जल गरम करके डालकर मुखबंद करके औटाय जब तीसरा भाग पानी रहजाय पहिले भफारा लेवे फिर अवयव को उस पानी में धोकर दवा को फोक पीसकर गुनगुना २ बांधे तीन दिवस में आराम होवे।

अथवा पहले अवयव को गरम जल से धोवे फिर आटे की, अर्दी में थोड़ा गेरू मिलाकर अर्द्धोष्ण लेप करे और अवयव को सेके कि दवा सूख जावे।

फ़सल इलाज समन मुफरित अर्थात् अधिक मोटा हो जाने की चिकित्सा में

इस रोगकी उत्पत्ति कई प्रकार से होती है और प्राय स्त्रियोंकी प्रकृति में अधिक है।

चिकित्सा यदि शरीर में रुधिर की अधिकता होवे तो फस्द ले नहीं तो कफ का विरचक दे। और वे औषधियां जो शरीर को दुबला करती हैं और सुखाती हैं काम में लावे।

चूर्ण कि शरीर को दुबला करे सुखी राम्न सात माशे, स्याह जीरा,

असगंधायन प्रत्येक चौदह माशे मात्रा तीन माशे तक एक दो तोले सादा सिकञ्जबीन के संग खाय ।

अथवा सिंदरूस एक माशा, दो तोले सिकंजबीन और जल के संग पीवे।

अथवा सिरका, मसूर और जौं की रोटी खाना और बबूल की साया में बैठना ।

अथवा रांग की अगूठी पहरना और कड़वी वा खट्टी वस्तु खाना और गरम वा तीक्ष्ण वस्तु खाना और भूखा रहना और मोटे वस्त्र पहरना ।

अथवा पृथ्वी पर सोना शरद काल में नंगा रहना शरीर को दुर्बल करता है

फ़सल इलाज हज़ाल मुफ़रित अर्थात शरीर के अधिक क्षीण होजाने की चिकित्सा में

जो कि क्षीणता भी एक रोग है इसलिये कई एक औषधियां मोटा करने के वास्ते लिखी जाती हैं ।

औषधि कि विशेष कर स्त्री को मोटा करे । असगंध, मूसली स्याह, श्वेत, बराबर गौ के दूध में औटावे जब दूध सूखजाय सुखा, पीस कर बराबर का बूरा मिलाकर दो तोले प्रति दिन गौ के दुग्ध के संग खाय और रोटी दूध के संग खाना गुण करता है ।

अथवा मीठे बादाम की गिरी, निशास्ता, कतीरा बराबर का बूरा मिलाकर दूध के संग एक तोला खाय ।

पाक कि शरीर को मोटा करे यह सहल नुसखा हाथी सवार से लिखा गया है । कालीमिर्च, सोंठ प्रत्येक दो तोले ग्यारह माशे, धुलेतिल, अखरोट की गिरी प्रत्येक साढ़े, चौदह तोले, पीपल पौने नौ तोले, बूरा दो सेर, शहद यथोचित प्रकारानुसार पाक बनावे मात्रा साढ़े चार माशे तक खाय ।

फसल इलाज सबनह अर्थात मुहांसे अर्थात उन दानों की चिकित्सा में जो युवा अवस्था में रुधिर की अधिकता और प्रबलता से निकलते हैं

जो बहुत निकलें और दुख दें तो फ़स्द सरेरू खोलें पश्चात शीतल औषधियां मर्दन वा लेप द्वारा काम में लावें ।

चिकित्सा अमलतास के वृक्ष की छाल, व दाना अनार, मायाहलदी, [illegible] बराबर पीस कर उबटने के सदृश मले और सूखने पर धोडालें ।

अथवा मजीठ, लाल-चन्दन, मसूर, लोध, लहसन की कोंपल कूट छानकर महीन करके रातको मुहासों पर लगा के सवेरे धोडाले।

अथवा, यह कि मुखको चमकावे चांवल, जौ, चने, मसूर और मटर का आटा, प्रत्येक इनमें से मुखको उज्वल करता है उबटना बनाकर काम में लावे।

औषधि कि स्त्री का मुख शुद्ध करने में अद्भुत गुण रखती है। और विशेष करके अत्युत्तम् है खोपरे की गट्टी में छिद्र करके एक तोले आठ माशे केसर और एक तोले आठ माशे जावित्री को पानी में पीस कर उस में डाल कर उसी टुकड़े से छिद्र बद करके आठ सेर गौ के दूध में मदी आंच से औटावे जब कि सब दूध शोषण होजाय दवा को खोपरे से निकाल कर पीस कर चने के प्रमाण गोलियां बनावे प्रातःकाल एक गोली तांबूल में रख के खावे इस को एक परम मित्र ने परीक्षित कहा है और जो बबूर का गोंद कतीरा और निशास्ता, ईसबगोल, एलुआ या कुलफा के अर्क में मिलाकर देशाटन में मुख पर मले तो धूप से रंग काला न पड़े।

फ़सल इलाज कलफ़ अर्थात झाईं की चिकित्सा में

जो कि चहरे पर स्याह दाग पड़जाते हैं।

दवा कि झाईं को दूर करे। तरबूज में छिद्र कर के उस में चांवल भर कर सात दिवस रखे फिर चांवल निकाल सुखा कर उबटना बनावे।

अथवा आंब की बिजली, जामन की गुठली पानी में पीसकर लगावे।

अथवा माजूफ़ के पत्ते, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुख पर मले।

अथवा कलौंजन पीसकर लगाना थोड़े ही दिनमें त्वचा के भीतर की स्याही को आकर्षण करके दूर करता है उचित है कि कई एक दिन लगा कर फिर चांवल पीसकर मर्दन करे कि बाहर की त्वचा की रंगत बराबर होजाय।

अथवा चौराई की जड़ और टहनी जलाकर जल में पीसकर झाईं पर मले और एक घड़ी धूप में बैठे सूखजाने के पश्चात् गरम जल से धो डाले। और सेंधा नोन पीसकर मुख पर मले।

अथवा तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर मुख पर मले।

अथवा कलमी शोरा, हरताल प्रत्येक साढ़े तीन माशे तीन भाग करके एक भाग जल में मिलाकर मले एक घड़ी धूप में बैठकर पीछे गरम जल से धोवे तीन दिन में झाईं दूर होवे।

अथवा कागजी नीबू काटकर हल्दी को कूट कर उसमें भरकर फिर नीबू के दोनों टुकड़े मिलाकर एक सप्ताह पर्यन्त रखे फिर निकालकर नरसल की पुरानी जड़ के संग पीस कर रातको लगाकर प्रात काल गरम जल से धोडाले।

अथवा कमा की मिंगी दूध में भिगो पीस कर मुख पर मले तो मुख कांति तेजोमय होवे।

अथवा शहद सिरके और नमक में मिलाकर मला करे।

अथवा नीम की गुठली सिरके में पीस कर मले।

अथवा माजू दो भाग, कत्था दो भाग कूट छान कर गौ के ताजा दूध में मिलाकर प्रति दिन कई बार मुख पर मले अति शीघ्र गुण करे।

अथवा कपोत की बीट जल में पीसकर प्रति दिन कई बार मुखपर मले।

अथवा मसूर नीबू के रस में पीस कर लगावे।

अथवा भुनी फिटकरी एक तोला आठ माशे, चूना दस माशे, नीबू के रस में खूब पीसकर मरहम के सदृश बनाकर झांई पर मले तो एक दो सप्ताह में दूर होवे और जब नीबू का रस सूखजाय तब और डालदे।

फ़सल छीप की चिकित्सा में

दवा छीपको गुण करे हल्दी, काले तिल, भैंसके दूध में पीसकर मले।

अथवा चपा के फूल तथा छाल व पत्तियां पानीमें पीसकर लगावे।

अथवा नीबू के रस में पीसकर लगावे तो छीप और झांईको गुण करे।

अथवा यह छीपको गुण दायक है चौलाई की जड़ और दहनियां जला कर उन की भस्मपानी में मिलाकर छीपपर लगावे और घड़ी भर धूप में बैठ कर पश्चात गरम जल से धो डाले।

अथवा पमार के बीज औकुट कर दही के पानी में मिलाकर दो तीन दिवस रख फिर शरीर पर मलकर न्हा डाले।

अथवा सुहागा, चदन जल में पीसकर लगावे।

फसल मस्से और तिलकी चिकित्सा में

दवा मोर की बीट सिरके में पीसकर लगावे।

अथवा चूना और सज्जी पानी में घोलकर मस्सों को जगही पर

अथवा मजीठ, लाल चन्दन, मसूर, लोध, लहसन का कपूर छानकर महीन करके रातको मुहासों पर लगा के सवेरे धोडाले।

अथवा यह कि मुखको चमकाव चावल, जौ, चने, मसूर और मटर का आटा प्रत्येक इनमें से मुखको उज्जल करता है उबटना बनाकर काम में लावे।

औषधि कि स्त्री का मुख शुद्ध करने में अद्भुत गुण रखती है। और विशेष करके अत्युत्तम है खोपरे की चट्टी में छिद्र करके एक तोले आठ माशे केसर और एक तोले आठ माशे जावित्री को पानी में पीस कर उसमें डाल कर उसी टुकड़े से छिद्र बंद करके आठ सेर गौ के दूध में मंदी आंच से औटावे जब कि सब दूध शोषण होजाय दवा को खोपरे से निकाल कर पीस कर चने के प्रमाण गोलियां बनावे प्रात काल एक गोली तांबूल में रख के खावे इस को एक परम मित्र ने परीक्षित कहा है और जो बबूर का गोंद कतीरा और निशास्ता, ईसबगोल, एलुआ वा कुलफा के जल में मिलाकर देशाटन में मुख पर मले तो धूप से रंग काला न पड़े।

कमल इलाज कलफ अर्थात झाईं की चिकित्सा में

जो कि चहरे पर स्याह दाग पड़जाते हैं।

दवा कि झाईं को दूर करे। तरबूज में छिद्र कर के उस में चावल भर कर सात दिवस रखे फिर चावल निकाल सुखा कर उबटना बनावे।

अथवा आंब की बिजली, जामन की गुठली पानी में पीसकर लगावे।

अथवा माजू के पत्ते, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुख पर मले।

अथवा कुलींजन पीसकर लगाना थोड़े ही दिनमें त्वचा के भीतर की स्याही को आकर्षण करके दूर करता है उचित है कि कई एक दिन लगा कर फिर चावल पीसकर मर्दन करे कि बाहर की त्वचा की रंगत बराबर होजाय

अथवा चौराई की जड़ और टहनी जलाकर जल में पीसकर झाईं पर मले और एक घड़ी धूप में बैठे सूखजाने के पश्चात् गरम जल से धोडाले और सेंधा नोन पीसकर मुख पर मले।

अथवा तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर मुख पर मले।

अथवा कलमी शोरा, हरताल प्रत्येक साढ़े तीन माशे तीन भाग कर एक भाग जल में मिलाकर मले एक घड़ी धूप में बैठकर पीछे गरम जल से धोवे तीन दिन में झाईं दूर होवे।

अथवा कागजी नीबू काटकर हल्दी औ कुट कर उसमें भरकर फिर नीबू के दोनों टुकड़ मिलाकर एक सप्ताह पर्यन्त रखे फिर निकालकर नरसल की पुरानी जड के संग पीस कर रातको लगाकर प्रात काल गरम जल से धोडाले।

अथवा कमा की मिंगी दूध में भिगो पीस कर मुख पर मले तो मुख अति तेजोमय होवे।

अथवा शहद सिरके और नमक में मिलाकर मला करे।

अथवा नीम की गुठली सिरके में पीस कर मले।

अथवा माजू दो भाग, कत्था दो भाग कूट छान कर गौ के ताजा दूध मिलाकर प्रति दिन कई बार मुख पर मले अति शीघ्र गुण करे।

अथवा कपोत की बीट जल में पीसकर प्रति दिन कई बार मुखपर मले।

अथवा मसूर नीबू के रस में पीस कर लगावे।

अथवा भुनी फिटकरी एक तोला आठ माशे, चूना दस माशे, नीबू के स में खूब पीसकर मरहम के सदृश बनाकर झांई पर मले तो एक दो प्ताह में दूर होवे और जब नींबू का रस सूखजाय तब और डालदे।

झमल छीप की चिकित्सा में

दवा छीपको गुण करे हल्दी, काले तिल, भैंसके दूध में पीसकर मले।

अथवा बबा के फूल तथा छाल व पत्तियां पानीमें पीसकर लगावे।

अथवा नींबू के रस में पीसकर लगावे तो छीप और झांईको गुण करे।

अथवा यह छीपको गुण दायक है चौलाई की जड़ और टइ निर्यांजला उन को भरपानी में मिलाकर छीपपर लगावे और घड़ी भर धूप में बैठ पश्चात गरम जल से धो डाले।

अथवा पवार के बीज औकुट कर दही के पानी में मिलाकर दो तीन स रख फिर शरीर पर मलकर न्हा डाले।

अथवा सुहागा, चदन जल में पीसकर लगावे।

फसल मस्से और तिलकी चिकित्सा में

दवा मोर की बीट सिरके में पीसकर लगावे।

अथवा चूना और सज्जी पानी में घोलकर मस्सों को नगों पेट से

रगड़ कर मले दो तीन दिवस में आराम हो जायगा ।

अथवा धनिया पीसकर लगाना मस्से और तिलको आराम करता है।

अथवा कुदर के पत्ते शहद में मिलाकर लेप करे ।

अथवा कुलफे के पत्ते मस्सों पर लगाना गुणदायक है ।

अथवा सीप जलाकर सिरके में मिलाकर मस्सों पर मलना मस्सों को दूर करता है ।

अथवा पीली हरताल, चूने की कली, मास कूटने के बट्टे से कूटकर मले ।

अथवा यह कि तोफ़तुलमनीन वाले ने लिखा है कि सूखे चने चांद की पहिली मिती अर्थात् शुक्ल पक्ष की तीजको मस्सों की गणनानुसार एक एक चना एक २ मस्से से छुआकर सब को एक कपड़े में बांधकर उस कपड़े को हाथ में लेकर दोनों पावों के बीचमें हाथ निकाल कर उस पोटली को इस प्रकार फेंके कि वह कंधे के ऊपर से पीठ की ओर जा गिरे एक मास में सब मस्से दूर हो जायग एक मित्र कहता था कि मेरी परीक्षा में आया है ।

फ़सल इलाज ख़ारक अर्थात बदकी चिकित्सा में

उचित है कि आदिमें उसके बैठाने की चिकित्सा करे क्योंकि जब पक कर फूट जाती है तो अति दुख देती है और कभी उसके चीरने की आवश्यकता होती है और उस समय पकाने वाली औषधिया काम में लाने की जरूरत पड़ती है ।

दवा कि बद को गुण करे केलकी जड़ मनुष्य के मूत्र में पीसकर अर्द्धोष्ण कर कपड़े पर लगाके उस पर रख ।

अथवा पीपल के पत्ते सीधी ओर से गरम करके बांधे ।

अथवा लिसौड़े के पत्ते गरम करके बांधे ।

अथवा मरुआ के पत्ते बांधे ।

अथवा सभालू के पत्ते अर्द्धोष्ण बांधे ।

अथवा मेथी, हालों, पीसकर बांधे ।

अथवा आमला, लिहसौड़े की छाल, इमली की छाल, पानी में पीसकर लेप करे ।

अथवा ग्वारपाठा दो टूक करके थोड़ी रसौत और हल्दी गरम करके बांधे

अथवा बद की आदि में चूना शहद में मिलाकर मरहम की तरह कपड़े

पर रखकर बांधे ।

अथवा बिनौले की टिकिया गरम करके बांधे और किसी २ ने चूने में अढ की सफ़ेदी मिलाकर बांधना लिखा है ।

अथवा इसका बक्कल रेंडी के तेल में भूनकर सिरके में खमीर कर लेप करना लिखा है ।

लेप कि बद के तोड़ने को अति गुणदायी है नीलाथोथा अ घा भाग, हाल्यों, हलदी, राल प्रत्येक एक भाग गुगल दो भाग गुड़ ढाई भाग परस्पर पीसकर लेप करे ।

अथवा चने का आटा, गूगल में मिला कर टिकिया बना कर बांधे और ऊपर से नीम की पत्तियां गरम कर बांधे और कभी नीम के पत्ते ही बांधना काफ़ी है ।

अथवा कुचला चदन की तरह घिसकर कालीमिर्च मिलाकर गुनगुना के लेप करे ।

अथवा राई जल में पीस कर लगावे ।

अथवा लेप कि बद के वास्ते अति परीक्षित है यदि बद बड़ी हो तो चार दिन में घुलादे प्याज़ को खूब कूट कर कन्या के मूत्र में लगावे जब खूब औटकर गलजावे टिकिया बनाकर बांधे ।

दवा कि कर्ण सोथ और बखराइ को अत्यन्त गुणदायक है राई गरम जल में पीस कर लेप करे ।

लेप कि बखराइ और उस सोथ को जो कानों के पीछे होता है शीघ्र घुलादेता है तुलसी की पत्तियां उन की बराबर आढ की कोंपल पीसकर लवण मिलाकर अर्द्धोष्ण लेप करे ।

क्रमल इलाज औराम अर्थात सोथ की चिकित्सा में

विदित हो कि सोथ अवयव अर्थात जोड़ों के फूलने और गाढ़ होन को कहते हैं कि जोड़ पर दोष पड़ने से और चतुर्दोष वा रीह अथवा जल विकार उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा औषधियां दोष के गलाने वाली और रोकने और पचाने वाली और बहाने वाली समयानुसार अर्थात आदि में अधिकता, न्यूनता और समाप्ति को भले प्रकार विचार कर काम में लावे और कुजान के पश्चात

घुलान वाले मरहम को बर्ते ।

गोली अदवार कि सोथों के गलाने में तनजवी खवाई की प्रतिनिधि है अदवार, गेरू, रसौत, खतमी के बीज, लाल चदन, रेवतचीनी, मकोय, सफेद कत्था, कावीजीरी बराबर कूट छानकर गोलियां बनावे ताजा मकोह के पत्ते या धनिये के अर्क में ।

अथवा सिरके या गुलाब जल में पीसकर मर्दन करे अदवार अर्थात निर्विसी एक दवा का नाम है जो खता दश में उत्पन्न होती है ।

मर्दन कि मुख के सोथ को दूर करे हलदी, गेरू, सोंठ, विषमार बराबर कूट छान कर गोलियों बनावे और मकोह के पत्तों के रस में पीस कर मले ।

औषधि कि पीड़ा को शान्ति करे और सोथ को घुलावे अजवायन महीन कूट छान कर नीबू के रस में औटाकर अद्धोष्ण सोथ पर बांधे यदि नीबू का रस प्राप्त न होसके तो सिरका काम में लावे ।

मर्दन कि सोथ को गुण करे आंब की बिमली जल में पीसकर गुनगुनी कर लगावे खैरूलमाख में लिखा है कि यह सोथ को घुलाने में जर्दव के तुल्य है ।

अथवा अरड की छाल, विसखपरे की छाल, सोंठ पीस कर अद्धोष्ण मर्दन करे और गुनगुने करके धतूरे के पत्ते बांधना सोथ को घुलाता है ।

अथवा बकरी की मेंगनी मलना पुराने सोथ को बद करता है ।

दवा कि कखराइ और पुरानी सूजन को जो कानके नीचे होतीहै दूर करे। मिसी एक प्रसिद्ध वृक्ष है जिसको याकसूनी भी कहते हैं उसके पत्ते लेकर और उन की बराबर अरड के पत्ते पीस कर थोड़ा लवण मिलाकर अद्धोष्ण कर बांधे ।

अथवा यह कि कखराई को गुण करे और इस औषधि को लाल दारू कहते हैं मुर्दासिंग, सम, लाल चदन, कपासा, नीलाथोथा कूट छान कर जल में मिलाकर लेप करे ।

लेप कि पीड़ा के शान्ति करने और मल के पचाने को अति श्रेष्ठ है मूंग, लोबिया और मसूर का आटा सब बराबर, जल और सिरके में घोलकर लपसी के समान पकाकर लेप करे ।

दवा कि पीड़ा और सोथ को बद करती है सिरस के पत्ते प्रतिदिन

फोई बार गरम करके बांधे ।

अथवा गौमय या गऊ का गोबर सोथ पर बांधे ।

अथवा धनियां मनुष्य के मूत्र में पीसकर लेप करे ।

अथवा कायफल एक तोला आठ माशे, सोंठ तीन तोला, चार माशे, कर्पा तीन तोला चार माशे, सिरके में पीसकर गरम करके लगावे ।

अथवा इन्द्रायन की जड़ सिरके में पीस कर अर्द्धोष्ण लगावे ।

अथवा ईसबगोल जौकुट करके लेप करे ।

अथवा पीपल की छाल पीसकर लगावे ।

अथवा अम्बासी के पत्ते गरम कर बांधे ।

मर्दन कि सोथ को पका तोड़ कर मल को निकाले रवासन के बीज पीसकर अर्द्धोष्ण मर्दन करे ।

अथवा कगनी के पत्त, इमली, चांवल बराबर लेकर औटावे और पीस कर फोड़ पर लगावे एक ही दिन में पकादे ।

अथवा इमली के बीज औटाकर बांध यह फोड़ों के पकाने और फोड़ने में अत्युत्कृष्ट हैं ।

अथवा सख के पत्ते, मूगकी दाल, कपोत की बीठ पीसकर अर्द्धोष्ण फाड़ पर बांधे ।

लेप कि फोड़े को अति गुणदायक है और दोष को पचाकर निकालता है थोड़ी तमाकू स्वइ के जल में औटाकर लेप करे ।

मर्दन कि फोड़े को गुण करे जिस दिन पीड़ा निकले चूना तेलमें मिला कर लगावे बढ़ने न देगा ।

दवा उस फोड़ के वास्ते जिस में पीड़ा अधिक हो और नरम नहो इस से अधिक फोड़ दवा नरम करने वाली नहीं है सिरस के बीज, मैनफल, अगास्त प्रत्येक नौ माशे, रेवतचीनी एक तोला, प्याज और नीम के पत्ते प्रत्येक एक तोला, एलुआ छ माशे, गूगल, अलसी के बीज प्रत्येक सात माशे, मेथी छः माशे पीसकर तीक्ष्ण मदिरा में मिलाकर अर्द्धोष्ण लप करे ।

अथवा कबूतर के पर जलाकर उनकी राख तेलमें मिलाकर मर्दन करे फोड़े को पकाकर तोड़ता ।

रिफ़ादह अर्थात् पट्टी, मैदा लकड़ी सात साशे कूट छानकर कन्या के मूत्र में आटा पीसकर कपड़े पर रख कर पट्टी की तरह बांधे।

दवा कि घाव को खोले हल्दी जलाकर उस की भस्म कड़वे तेल में मिलाकर घाव पर रखे।

लेप कि फाड़ को तोड़े साबन, रेवतचीनी, गूगल, मैनफल पीसकर वस्त्र पर रख कर अर्द्धोष्ण बांधे।

दवा कि घाव को गुण करे लिसौड़े के पत्ते, गोंदी के पत्ते, जलाकर उनकी राख घी में मिलाकर घाव पर बांधे।

लेप कि पत्ता के फोड़ों को गुण करे सोंठ, रेंडी दोनों जल में महीन पीस कर अर्द्धोष्ण लेप करे और उस पर अरंड के पत्ते बांधे।

दवा कि पांव के छालों को जो रास्ता चलने से पड़जाते हैं गुण करे चावल पकाके दधि में मिलाकर लेप करे तुरन्त आराम होवे।

दवा कि भगंदर के सोथ को गुण करे अडूसा के पत्ते पीसकर थोड़ा लवण मिला कर बांधे।

अथवा कराल के पत्ते और अरंड गरमकर बांधे सोथ दूर होवे।

अथवा यह कि रीढ़ की पीड़ा को शान्ति करे अकरकरा कायफल, खुरासानी अजवायन, सोंठ, नरकाचूर बराबर लेकर रेंडी तथा तिल के तेल में मिलाकर मर्दन करे।

अथवा महुए के पत्तों पर इस तेल को लगाकर अर्द्धोष्ण बांधे।

मर्दन कि उस सूजन को गुण करे जो भिलावे के धूम्र से होती है आंबा हल्दी, साठीचावल, दूब, घास जल में पीसकर सोथ पर मले और ऐसे ही चिरौंजी खाना भिलाए के सोथ को गुणदायक है। और गूलर की छाल पानी में पीस कर लेप करे वा भिलावे के धूम्र से उत्पन्न हुआ सोथ दूर होवे।

अथवा मुर्दासंग पीसकर लगावे।

अथवा मीठातेल मले उसी समय सोथ दूर होजाय।

लेप कि उस सोथ को दूर करे जो भिलाए से उत्पन्न हो तेंदू की लकड़ी पीस कर लेप करे।

अथवा यह कि रसौली को गुण करे करोंदे के पत्ते घी से चुपड़ कर एक सप्ताह पर्यन्त रसौली पर बांधे ।

फ़स्ल इलाज सबूर अर्थात् फुनसियों की चिकित्सा में

दवा कि फुनसियों को गुण करे सिरस की छाल जल में पीस के लगावे।

गोली कि फुनसियों के रुधिर विकार को और शरीर फूट निकलने को गुण दायक है । गेरु, रसौत, काली एड़, मुर्दासंग, कत्था, लाल चन्दन बराबर कूट छान कर गोलियां बनावे और एक गोली मकोय के अर्क में पीस कर लेप करे ।

गोली कि सब प्रकार की फुनसियों को दूर करे । कायली हड़ का बक्कल, भंग, चूने की कलई, सफ़ेद कत्था एक २ भाग नीलाथोथा आधा भाग पानी में पीसकर गोलियां बनावे एक गोली घी में मिलाकर लगावे ।

अथवा कत्था, मुर्दासंग, भुना नीलाथोथा, मेलागिरी की मिंगी, बराबर पीस कर गोलियां बनावे और वांछित समय पर पानी में पीस कर लगावे यह गोलियां उस फोड़े को भी गुण दायक हैं जिसे औरंगजेबी कहते हैं अर्थात् वह फोड़ा जिसमें छिद्र होते हैं ।

लेप कि उन फुनसियों को गुण करे जिन में जलन हो गेरु, माजू, कत्था सिरके में पीसकर लेप करे ।

गोली सफ़ेद कत्था, भुना नीलाथोथा, जली सुपारी, मुर्दासंग, कायली हड़ का बक्कल, रेवत खताई बराबर जल में पीसकर गोलियां बनावे ।

लेप कि कंठमाला जो गर्दन के नीचे होती है गुणदायक है । सन के बीज, मूली के बीज, सहजने के बीज, जौ, सरसों, अलसी बराबर कूट छान कर गो दुग्ध में पीसकर लेप करे ।

मर्दन कि बटों और दाद को गुण करे अमचूर पानी में पीसकर थोड़ा लवण मिला कर मले ।

मर्दन उन फुनसियों के वास्ते जो मकड़ी मलने से होती हैं अथवा जल में पीस कर मले ।

अथवा अमचूर जल में पीस कर लगावे ।

अथवा सफ़ेद जीरा, सोंठ जल में पीस कर लगावे ।

अथवा केंचुआ जल में पीस कर लगावे । जहर और दाने दूर होवें यदि केंचुआ प्राप्त नहो तो उस की मिट्टी का लेप करे ।

अथवा चूना नीबू के रस में पीसकर मले और यदि नीबू न मिले तो तेल और चिरोंजी में पीसकर मर्दन करे ।

अथवा रक्तचदन, श्वेतचदन, मुर्दासग पीस कर लगावे ।

अथवा खल, हलदी जल में पीस कर मर्दन करे तो मकड़ी का विष दूर होवे ।

फसल इलाज शकाक अतराफ यानी हाथ पावों के फटजाने की चिकित्सा में

कारण इसका खुश्की है ।

दवा कि हाथ पाव फटजाने को गुण करे । महदी जल में पीसकर लगावे और चार घड़ी पश्चात दूर कर रेंडी का तेल मले ।

दवा एड़ी फटजाय तो बर्गद का दूध भरदे ।

अथवा बबूर का गोंद पीस कर भरे ।

अथवा लाहौरी साबन पानी में पीस कर रात को सोते समय घावों में भरदे प्रातःकाल धोडाले ।

गुण जानना चाहिये कि जो दाने, खुश्की से हथेली पर हों उनको छाजन कहते हैं और पांव के घावों को अकौता कहते हैं । और औषधियां अकौते की चिकित्सा में वर्णन हो चुकी हैं ।

बफ़ारा कि छाजन को गुण करे । बबूर की छाल, आमकी छाल पानी में औटावे और हाडी का मुख दृढ़ बद करे कि धुआं बाहर न जाने पावे फिर हांडी को उतारकर हथेली और तलवों को बफारा दे और पश्चात माखन व घी मले

अथवा छोटी कटेरी जड़ पत्ते और टहनी सहित टूक २ कर पानी के साथ हांडी में डालकर ढक दे फिर रोगी के हाथ पांव घी से चुपड़कर उसका धुआ देवे और जब शीतल होने लगे जल से हाथ पांव धो डाले ।

दवा कि छाजन को गुण करती है थोड़ा नौसादर मीठे तेल में पीसकर मले ।

चिकित्सा हाथ पांव निष्काम होजाने के वास्ते कि सर्दी से स्याह हों

जाते हैं प्रथम हाथ पांवों को गरम जल में रख पीछे अर्द्धोष्ण तेल मले।

फ़सल इलाज कसरत कमल

अर्थात अधिक जू उत्पन्न होजाने की चिकित्सा में, इसका कारण शरीर में मैल की अधिकता है।

चिकित्सा शरीर को पहले विरेचक द्वारा शुद्ध करे, किताबुलखवास में लिखा है कि चांदनीमें बैठकर बालों को साफ करना विशेष कर जू उत्पन्न करता है।

औषधि कि जू को दूर करे। गाय का पित्ता सिर में डाले।

अथवा पारा, मूली के पत्ते या पानों के रसमें मिलाकर उसमें धागा भिगोकर सिरमें रखे तो दो तीन दिवस में सब जूं मरजाय।

फ़सल इलाज सबूसा

अर्थात बफाकी चिकित्सा में यह रोग यह है कि सिर पर से भूसीके सदृश झड़ा करे जिसे क्यास भी कहते हैं इसकी चिकित्सा सिरमें तेल डालना है।

दवा जवासा कस्तूरी के मूत्र में पीसकर सिरमें डाले।

अथवा चूने के चून को एक घड़ी सिरके में डाल दे पश्चात सिरके को शहद में मिलाकर सिर पर मले।

अथवा नीबू के रसमें चूरा मिलाकर सिरमें डाले और दो पहर पश्चात सिरको धोडाले।

अथवा साबन से सिर धोना जू और बफा को गुण करता है।

अथवा चुकन्दर के पत्ते और उसके रसमें लवण मिलाकर सिर से मले तो बफा और जू दूर होवे।

फ़सल इलाज अमराज़ अज़ाफ़ीर यानी नखों के रोगों की चिकित्सा में

औषधि नख के दूरजाने को अनार की पत्तियां पीसकर बांधे।

अथवा नीला वस्त्र बांधकर उस पर विश्राम किया करे।

चिकित्सा नख फटजाने की, एक भाग सिरका, दो भाग तिलके तेल में औटाकर थोड़ा सरेस उसमें डालकर लगावे जब मरहम के सदृश हो जाय वर्तन करे।

अथवा केंचुआ जल में पीस कर लगावे । जहर और दाने दूर होवें यदि केंचुआ प्राप्त नहो तो उस की मिट्टी का लेप करे ।

अथवा चूना नीबू के रस में पीसकर मले और यदि नीबू न मिले तो तेल और चिरोंजी में पीसकर मर्दन करे ।

अथवा रक्तचंदन, श्वेतचंदन, मुर्दासंग पीस कर लगावे ।

अथवा खल, हलदी जल में पीस कर मर्दन करे तो मकड़ी का विष दूर होवे ।

फ़सल इलाज शकाक अतराफ़ यानी हाथ पावों के फटजाने की चिकित्सा में

कारण इसका खुश्की है ।

दवा कि हाथ पांव फटजाने को गुण करे । मह्दी जल में पीसकर लगावे और चार घड़ी पश्चात दूर कर रेंडी का तेल मले ।

दवा एड़ी फटजाय तो बर्गद का दूध भरदे ।

अथवा बबूर का गोंद पीस कर भरे ।

अथवा लाहौरी साबन पानी में पीस कर रात को सोते समय घावों में भरदे प्रातःकाल धोडाले ।

गुण जानना चाहिये कि जो दाने, खुश्की से हथेली पर हों उनको छाजन कहते हैं और पांव के घावों को अकौता कहते हैं । और औषधियां अकौते की चिकित्सा में वर्णन हो चुकी हैं ।

बफ़ारा कि छाजन को गुण करे । बबूर की छाल, आमकी छाल पानी में औटावे और हांडी का मुख बंद करे कि धुआं बाहर न जाने पावे फिर हांडी को उतारकर हथली और तलवों को बफारा दे और पश्चात माखन व घी मले

अथवा ओदी कनेरी जड़ पत्ते और टहनी सहित टूक २ कर पानी के साथ हांडी में डालकर ढक दे फिर रोगी के हाथ पांव घी से चुपड़कर उसका धुआं देवे और जब शीतल होने लगे जल से हाथ पांव धो डाले ।

दवा कि छाजन को गुण करती है थोड़ा नौसादर मीठे तेल में पीसकर मले ।

चिकित्सा हाथ पांव निष्काम होजाने के वास्ते कि सर्दी से स्याह हों

जाते हैं प्रथम हाथपावों को गरम जल में रख पीछे मन्दोष्ण तक मले।

फ़सल इलाज कसरत कमल

अर्थात अधिक जूं उत्पन्न होजाने की चिकित्सा में, इसका कारण शरीर में मैल की अधिकता है।

चिकित्सा शरीर को पहले विरेचक द्वारा शुद्ध करे, किताबुलअसास में लिखाहै कि चांदनीमें बैठकर बालों को साफ़ करना विशेष कर जू उत्पन्न करताहै।

औषधि कि जू को दूर करे। गाय का पित्ता सिर में डाले।

अथवा पारा, मूली के पत्ते या पानों के रसमें मिलाकर उसमें धागा भिगोकर सिरमें रखे तो दो तीन दिवस में सब जू मरजाय।

फ़सल इलाज सबूसा

अर्थात बफाकी चिकित्सा में यह रोग यह है कि सिर पर से भूसीके सदृश झड़ा करे जिसे क्यास भी कहते हैं इसकी चिकित्सा सिरमें तेल डालना है।

दवा बताशा कलौरी के मूत्र में पीसकर सिरमें डाले।

अथवा चूने के चून को एक घड़ी सिरके में डाल दे पश्चात सिरके को शहद में मिलाकर सिर पर मले।

अथवा नींबू के रसमें बूरा मिलाकर सिरमें डाले और दो पहर पश्चात सिरको धोडाले।

अथवा साबन से सिर धोना जू और बफा को गुण करता है।

अथवा चुकन्दर के पत्ते और जड़के रसमें साबुन मिलाकर सिर से मले तो बफा और जू दूर होवें।

फ़सल इलाज अमराज़ अज़ाफ़ीर यानी नखों के रोगों की चिकित्सा में

औषधि नख के दूटजाने को अनार की पत्तियां पीसकर बांधे।

अथवा नीला वस्त्र बांधकर उस पर विश्राम किया करे।

चिकित्सा नख फटजाने की, एक भाग सिरका, दो भाग तिलके तेल में औटाकर थोड़ा सरेस उसमें डालकर लगावे जब मरहम के सदृश हो जाय मर्दन करे।

फ़सल इलाज हस्बह व जदरी की चिकित्सा में

मक़्सद हो कि हस्बह यह छोटी शीतला है जिसे हिन्दी में ख़सरा बोलते हैं। और जदरी यह है कि बड़ी फुनसियां हों उसके इस भेद का मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध वा दूसरी तरह के मलों का जमा होना है फिर उनके उफन-ने से होता है उचित है कि जब शीतला का समय आवे तो भारतवर्ष में प्राय: चैत का महीना है दूध पीने वाले बालक और उसके दूध पिलाने वाली को रुधिर साफ़ करने वाली औषधियां जैसे पित्तपापड़ा और सिरफोके का आसव खूपकला, शर्बत उन्नाब, सादा काहू के बीजों का शीरा और ईसबगोल का लुआब इत्यादि कभी २ पिलाया करे और जिस बालक की अवस्था दो वर्ष से कम हो शीतला काल में शीतला निकलने से पूर्व टीका लगवाना उचित है और उस ऋतु में चिकनाई मास तथा मिष्टान्नादि से बचते रहें और जब शीतला निकल आवे फिर उष्ण और शीतल वस्तु न दे और भारतवर्ष में जब शीतला निकलती है तब गरम वस्तुओं का सेवन करते हैं और आहार में चने गुड़ दते हैं ज्वर काल में शीतला निकलने के समय केवल खिचड़ी वा मूंग की दाल सेवन करे और मसूर की दाल भी गुणदायक है और शीतला के कई भेद बुरे हैं उन में आराम कम होता है उन भेदों में से काली और ऊदी है और श्वेत तथा न्यून अत्युत्तम है। अब कई एक सहज औषधियां लिखता हूं जो शीतला निकलने के पहले देवे तो आशा है कि कभी न निकले और जो निकले तो ईश्वर कृपा से कम निकले।

दवा शफ़ायक़ का शर्बत पिलाना बच्चे को शीतला नहीं निकलने देता कि उसका नुसखा मिरगी रोग में लिखा गया है।

दवा शीतला को दूर करने और कम निकलने के वास्ते जब शीतला निकलने का समय हो जो बालक दूध पीता हो चार तोले खोपरा उस के दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्यन्त खिलावे और जो बालक दो वर्ष का हो तो दो तोला खोपरा और जो तीन वर्ष का हो तो तीन तोला खोपरा एक सप्ताह पर्यन्त बालक के दूध पिलाने वाली को खिलावे अवश्य शीतला कम निकलेगी यह नुसखा इंगलैंड वासी डाक्टर का बतलाया है।

दवा कि यदि शीतला ऋतु में खाय शीतला न निकले और जो निकले तो कम। रुदराक्ष कि हिन्दू लोग उसकी माला बनाते हैं पीसकर को पिलावे।

अथवा धाई का दूध पिलावे ।

अथवा तीन चार सेमल के बीज निगले तो शीतला बहुत कम निकले ।

अथवा नेमवाला शीतला निकलने के पहले नींबू के रस के संग खाय शीतला कम निकलेगी हिन्दी औषधि कि बच्चोंकी शीतला को गुण करे छिली मुकरटी जौ कूट करके अनारदाना बराबर प्रकृति के अनुसार जलमें औटाकर पित्तपापड़े के अर्क के संग पिलाना चाहिये ।

मर्दन कि शीतला की फुंसियों को दूर करताहै पीपल की छाल, सिरस की छाल, विहसौड़े की छाल, गूलर की छाल कूट छानकर गौके घृत में मिला कर फुंसियों पर मल और जो जलन के संग हो अत्यन्त गुण करे ।

उबटना कि शीतला के दागों को दूर करे आंबाहलदी, सरकंडेकी जड़ सफेद कौड़ी बराबर कूटछानकर भैंस के दूध में मिलाकर रातको मुख पर लगावे प्रात काल भूसी भिगोये हुए जल से धो डाले ।

उबटना कि रंग को साफ करे और चमकावे छिली मसूर, खर्बूजे के बीजों की मिंगी बराबर पीसकर उबटना बनावे ।

अथवा नागरमोथा औटाकर उससे मुख धोया करे ।

फसल बालों की औषधि के व्याख्यान में

तुख्मअफर और दाशबोंदूय्मार अर्थात् बालों को बढ़ाना और स्याह करना

दवा कि बालों को बढ़ावे नीम के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर न्हाते समय सिरमें डाले और चार घड़ी पश्चात धोडाले ।

दवा कि बालों को लम्बा करे सीताफल के बीज बेर के पत्ते बराबर पीस कर तीन तोले चार माशे बालों की जड़में मले और चार घड़ी पश्चात अर्डोष्ण जल से धो डाले ।

अथवा कलौंजी पानी में पीसकर उससे बाल धोवे और इसी प्रकार सात दिवस तक धोवे ।

अथवा आंवले नींबू के रस में पीसकर बालों की जड़ में मले ।

अथवा करील की जड़ पीस कर बालों में मले तो बाल लंबे होजायगे और बफा दूर होजायगी ।

तेल कि बालों को स्याह करे । एक सेर मीठे तेल में गेंदे की पत्तियां

फ़सल इलाज इस्वह व जदरी की चिकित्सा में

प्रकट हो कि इस्वह वह छोटी शीतला है जिसे हिन्दी में खसरा बोलते हैं। और जद्री यह है कि बड़ी फ़ुनसियां हों उसके शुभ भेद को मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध या दूसरी तरह के मलों का जमा होना है फिर उनके उफन-ने से होता है उचित है कि जब शीतला का समय आवे तो भारतवर्ष में प्राय. चैत का महीना है दूध पीने वाले बालक और उसके दूध पिलाने वाली को रुधिर साफ करने वाली औषधियां जैसे पित्तपापड़ा और सिरफोके का आसव खूबकला, शर्बत उन्नाव, सादा काहू के बीजों का शीरा और, ईसबगोल का लुआब इत्यादि कभी २ पिलाया करे और जिस बालक की अवस्था दो वर्ष से कम हो शीतला काल में शीतला निकलने से पूर्व जोंक लगवाना उचित है और उस ऋतु में चिकनाई मांस तथा मिष्ठान्नादि से बचते रहें और जब शीतला निकल आवे फिर उष्ण और शीतल वस्तु न दें और भारतवर्ष में जब शीतला निकलती है तब गरम वस्तुओं का सेवन करते हैं और आहार में चने गुड़ देते हैं ज्वर काल में शीतला निकलने के समय केवल खिचड़ी या मूंग की दाल सेवन करे और मसूर की दाल भी गुणदायक है और शीतला के कई भेद बुरे हैं उन में आराम कम होता है उन भेदों में से काली और जर्दी है और श्वेत तथा न्यून अत्युत्तम है। अब कई एक सहज औषधियां लिखता हूं जो शीतला निकलने के पहले दें तो आशा है कि कभी न निकले और जो निकले तो ईश्वर कृपा से कम निकले।

दवा शकायक का शर्बत पिलाना बच्चे को शीतला नहीं निकलने देता कि उसका नुसखा मिरगी रोग में लिखा गया है।

दवा शीतला को दूर करने और कम निकलने के वास्ते जब शीतला निकलने का समय हो जो बालक दूध पीता हो चार तोले खोपरा उस के दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्यन्त खिलावे और जो बालक दो वर्ष का हो तो दो तोला खोपरा और जो तीन वर्ष का हो तो तीन तोला खोपरा एक सप्ताह पर्यन्त बालक के दूध पिलाने वाली को खिलावे अवश्य शीतला कम निकलेगी यह नुसखा इंगलैंड वासी डाक्टर का बतलाया है।

दवा कि यदि शीतला ऋतु में खाय शीतला न निकले और जो निकले भी तो कम। कदराम कि हिन्दू लोग उसकी माला बनाते हैं पीसकर बालक को पिलावे।

अथवा पार्वी का दूध पिलावे ।

अथवा तीन चार सेमल के बीज निगले तो शीतला बहुत कम निकले।

अथवा नेत्रवाली शीतला निकलने के पहले नींबू के रस के संग खाय शीतला कम निकलेगी हिन्दी औषधि कि बच्चोंकी शीतला को गुण करे छिली मुलहटी जौ कुट करके अनारदाना बराबर प्रकृति के अनुसार जलमें औटाकर पित्तपापड़े के अर्क के संग पिलाना चाहिये ।

मर्दन कि शीतला की फुंसियों को दूर करताहै पीपल की छाल, सिरस की छाल, दिरसौड़े की छाल, गूलर की छाल कूट छानकर गौके घृत में मिला कर फुंसियों पर मल और जो जलन के संग हों अत्यन्त गुण करे ।

उबटना कि शीतला के दागों को दूर करे आंबाहलदी, सरकंडेकी जड़ जली कौड़ी बराबर कूटछानकर भैंस के दूध में मिलाकर रातको मुख पर लगावे प्रात काल भूसी भिगोये हुए जल से धो डाले ।

उबटना कि रंग को लाल करे और चमकावे छिली मसूर, खर्बूजे के बीजों की मिंगी बराबर पीसकर उबटना बनावे ।

अथवा नागरमोथा औटाकर उससे मुख धोया करे ।

फ़सल बालों की औषधि के व्याख्यान में

तुख्मअम्र और तशर्वीतुशअर अर्थात् बालों को बढ़ाना और स्याह करना

दवा कि बालों को बढ़ावे नीम के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर न्हाते समय सिरमें डाले और चार घड़ी पश्चात धोडाले ।

दवा कि बालों को लंबा करे सीताफल के बीज बेर के पत्ते बराबर पीस कर तीन तोले चार माशे बालों की जड़में मले और चार घड़ी पश्चात अर्द्धोष्ण जल से धो डाले ।

अथवा कलौंजी पानी में पीसकर उससे बाल धोवे और इसी प्रकार सात दिवस तक धोवे ।

अथवा आंवले नींबू के रस में पीसकर बालों की जड़ में मले ।

अथवा करील की जड़ पीस कर बालों में मले तो बाल लंबे होजायगे और सफा दूर होजायगी ।

तेल कि बालों को स्याह करे । एक सेर मीठे तेल में गेंदे की पंखड़ियां

फ़सल इलाज इस्बह व जदरी की चिकित्सा में

मालूम हो कि इस्बह यह छोटी शीतला है जिसे हिन्दी में खसरा बोलते हैं। और जदरी यह है कि बड़ी फुनसियाँ हों उसके शुभ भेद का मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध या दूसरी तरह के मलों का जमा होना है फिर उनके उफनने से होता है उचित है कि जब शीतला का समय आवे तो भारतवर्षमें प्रायः चैत का महीना है दूध पीने वाले बालक और उसके दूध पिलाने वाली को रुधिर साफ़ करने वाली औषधियाँ जैसे पित्तपापड़ा और सिरफोके का आसव खूबकला, शर्बत उन्नाव, सादा काहू के बीजों का शीरा और ईसबगोल का लुआब इत्यादि कभी २ पिलाया करे और जिस बालक की अवस्था दो वर्ष से कम हो शीतला काल में शीतला निकलने से पूर्व टीका लगवाना उचित है और उस ऋतु में चिकनाई मास तथा मिष्टान्नादि से बचते रहें और जब शीतला निकल आवे फिर उष्ण और शीतल वस्तु न दे और भारतवर्ष में जब शीतला निकलती है तब गरम वस्तुओं का सेवन करते हैं और आहार में चने गुड़ देते हैं ज्वर काल में शीतला निकलने के समय केवल खिचड़ी या मूंग की दाल सेवन करे और मसूर की दाल भी गुणदायक है और शीतला के कई भेद बुरे हैं उन में आराम कम होता है उन भेदों में से काली और हरी है और श्वेत तथा न्यून अत्युत्तम है। अब कई एक सहज औषधियाँ लिखता हूं जो शीतला निकलने के पहले देवे तो आशा है कि कभी न निकले और जो निकले तो ईश्वर कृपा से कम निकले।

दवा शकायक का शर्बत पिलाना बच्चे को शीतला नहीं निकलने देता कि उसका नुसखा मिरगी रोग में लिखा गया है।

दवा शीतला को दूर करने और कम निकलने के वास्ते जब शीतला निकलने का समय हो जो बालक दूध पीता हो चार तोले खोपरा उस के दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्यन्त खिलावे और जो बालक दो वर्ष का हो तो दो तोला खोपरा और जो तीन वर्ष का हो तो तीन तोला खोपरा एक सप्ताह पर्यन्त बालक के दूध पिलाने वाली को खिलावे अवश्य शीतला कम निकलेगी यह नुसखा इंगलैंड वासी डाक्टर का बतलाया है।

दवा कि यदि शीतला ऋतु में खाय शीतला न निकले और जो निकले भी तो कम। रुद्राक्ष कि हिन्दू लोग उसकी माला बनाते हैं पीसकर बालक को पिलावे।

अथवा घाड़ी का दूध पिलावे ।

अथवा तीन चार सेमल के बीज निगले तो शीतला बहुत कम निकले ।

अथवा मेअवाला शीतला निकलने के पहले नीबू के रस के संग खाय शीतला कम निकलेगी हिन्दी औषधि कि बच्चोंकी शीतला को गुण करे छिली मुकहटी जौ कुट करके अनारदाना बराबर प्रकृति के अनुसार जलमें औटाकर पित्तपापड़े के अर्क के संग पिलाना चाहिये ।

मर्दन कि शीतला की फुसियों को दूर करताहै पीपल की छाल, सिरस की छाल, लिहसौड़े की छाल, गूलर की छाल कूट छानकर गौके घृत में मिला कर फुसियों पर मल और जो लगन के संग हों अत्यन्त गुण करे ।

उबटना कि शीतला के दागों को दूर करे आंबाहलदी, सरकंडेकी जड़ जली कौड़ी बराबर कूटछानकर भैंस के दूध में मिलाकर रातको मुख पर लगावे प्रात काल भूसी भिगोये हुए जल से धो डाले ।

उबटना कि रंग को लाल करे और चमकावे छिली मसूर, खर्बूजे के बीजों की मिंगी बराबर पीसकर उबटना बनावे ।

अथवा नागरमोथा औटाकर उससे मुख धोया करे ।

फ़सल बालों की औषधि के व्याख्यान में

तुलूअअर और बशर्रीद्बुशअर अर्थात् बालों को बढ़ाना और स्याह करना

दवा कि बालों को बढ़ावे नीम के पत्ते और बेर के पत्त पीसकर न्हाते समय सिरमें डाला और चार घड़ी पश्चात धोडाले ।

दवा कि बालों को लंबा करे सीताफल के बीज बेर के पत्ते बराबर पीस कर तीन तोले चार माशे बालों की जड़में मले और चार घड़ी पश्चात अर्द्धोष्ण जल से धो डाले ।

अथवा फर्कोंबी पानी में पीसकर उससे बाल धोवे और इसी प्रकार सात दिवस तक धोवे ।

अथवा आंवला नीबू के रस में पीसकर बालों की जड़ में मले ।

अथवा करील की जड़ पीस कर बालों में मले तो बाल लंबे होजायगे और बफ़ा दूर होजायगी ।

तेल कि बालों को स्याह करे । एक सेर मीठे तेल में गेंदे की ...ड़ियां

काट कर देगची में औटावे फिर उसे जमीन में दबा दे एक मास पश्चात निकाल कर उस तेल को बालों में मला करे।

तेल कि बालों की स्याही की रक्षा करे और श्वेत न होने दे हरां भाऊ की जड़ खूब कूट कर उतने ही तिल के तेल में दोनों की बराबर जल डाल कर औटावे जब सब पानी और आधा तेल जलजाय लेकर गाढ़ा २ बालों की जड़ में लगावे थोड़े ही दिनों में सफ़ेद बाल स्याह हो जायंगे और कभी सफ़ेद नहोंगे।

मक्खी का तेल कि बालों को स्याह रखे सौ नग मक्खियां तिल के तेल में डाल कर चालीस दिवस धूप में रखे पश्चात शुद्ध कर के बालों में लगाया करे।

रोग़न कि बालों की स्याही और बढ़ने के वास्ते सर्व के पत्ते एक भाग आंवले दो भाग जल में औटावे जब गलजाय तिल का तेल मिलाकर औटावे कि पानी जल कर तेल मात्र रहजाये फोक सहित रगड़ कर बालों की जड़ में मले।

अथवा भांगरे का रस मीठे तेल में औटावे जब रस जल कर तेल मात्र रह जाय प्रति दिन बालों में मले।

अथवा स्नान के समय स्याह तिल की पत्तियों से बालोंको धोवे तो बाल लंबे और कोमल होवें।

अथवा कुसुम के बीज और कुसुम के पेड़ का बक्कल दोनों बराबर जला कर भस्म करे और चमेली के तेल में मिला कर मरहम के सदृश कर के बालों की जड़ में मले तो लंबे और कोमल हो जावेंगे।

अथवा हंसराज जला कर सिर पर लगावे, बालों को नगिरने दे।

ओषधि कि बालों को नगिरने दे हाथी दांत की भस्म रसौत मिला कर लगावे।

अथवा करील की कोंपल बिना जल पीस कर मले दो तीन दिन में बाल निकल आवें।

अथवा भांगरा पीस कर मले।

अथवा चुकन्दर के पत्तों का रस छ तोले आठ माशे कड़वे तेल में मिला कर जला के काम लावे।

अथवा घोड़े व गधे का सुम जला कर उस की भस्म कड़वे तेल में मिला

कर मल और सींग जलाकर मलना भी गुण दायक है।

अथवा गधक पानी में पीस कर और शहद मिलाकर मले।

अथवा आंवला कुकरौंदा के रस में पीसकर मले।

अथवा थोड़ा दही तांबे के बिना कलई के पात्र में डालकर पैसे से इतना रगड़े कि रंग हरा होजाय फिर बालों से मले।

अथवा यह कि गिरे बालों को उगालावे पहले आंवले के जल से जहां से बाल झड़गये हों धोडाले कई एक घाव हलके २ करदे कि रुधिर निकल आवे पश्चात नौसादर महीन पीसकर माखन में मिला कर मर्दन करे एक सप्ताह में बाल निकल आवें और वैद्यों का विश्वास है कि कुंदर और हाथी दांतका चूरा कुक्कुट की चर्बी में मिलाकर जिस स्थान पर लगावे बाल निकल आवें।

फ़सल उन औषधियों के बयान में जो बालों को निकलने से रोकें।

दवा बैल का पित्ता मुर्ग़ के अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर बाल उखाड़ कर मले तो फिर कभी उस जगह बाल न जमें।

अथवा जोंक को लवण में लपेट कर सुखा कर बकरी के मूत्र में पीस कर बाल उखाड़ कर मले वहां फिर कभी बाल न जमें।

अथवा ईसबगोल का लुआब सिरके में मिलाकर बाल उखाड़ कर मले और जो थोड़ा समुद्रफेन मिलावे तो अत्यंत गुण करता है।

अथवा बकरी की मेंगनी, राई महीन पीसकर बाल उखाड़ कर मले।

अथवा केले का गूदा पीस कर बाल उखाड़ कर मले।

अथवा कुचला पानी में पीसकर बाल उखाड़ कर मले।

अथवा जोंक सिरके में गलाकर बाल उखाड़ कर मले।

अथवा चींटी के अंडे बाल उखाड़ कर मले।

अथवा सांप की कांचली बाल उखाड़ कर लगावे।

अथवा चमगादड़ का रक्त और कुक्कुट का पित्ता तथा खरगोश का रुधिर और कछुए का पित्ता तथा तीतर की चर्बी प्रत्येक बालों को उखाड़ कर मले बाल नहीं निकलने देता।

बराबर सफ़ेद बूरा मिलाकर चाशनी करे मात्रा प्रकृति के अनुसार देवे।

टिकिया वंसलोचन कि पित्तज्वर में विरेचक के पश्चात देनी उचित है वंशलोचन, गुलाब के फूल प्रत्येक पांच भाग, काहू के बीज, कासनी के बीज सर्बूज के बीजों की मिंगी, खीरे ककड़ी के बीज प्रत्येक तीन भाग, नीलोफ़र के फूल दो भाग कूट छानकर टिकिया बनावे मात्रा सात माशे।

दवा पित्तज्वर को गुणदायक है काहू के बीज, कुलफे के बीज सात २ माशे शीरा निकालकर, इमली का नितरा हुआ जल दो तोले मिलाकर एक तोले ईसबगोल छिड़ककर पिये।

अथवा पित्तपापड़े के पत्तों का शीरा, कासनी के बीज प्रत्येक सात माशे पानी में पीसकर दो तोले शिकंजबीन सादा मिलाकर पिये।

शर्बत नीबू कि पित्तज्वर का नाश करे विदग्ध दोषों तथा रुधिरकी जलन को बंद करता है चौदह तोले सवा दो माशे बूरे की चाशनी करके दस तोले नीबू का रस छानकर मिलाकर चाशनी होजाने पर काम में लावे।

क्वाथ अर्थात काढ़ा कि पित्तज्वर को नाश करे और जो तीसरे दिन आता हो अत्यन्त गुणदायक है भारतवर्षीय वैद्योंकी रीति से गिलोय, धनियां, रक्तचन्दन, कमलगट्टे की मिंगी, नीम की इकरछाल प्रत्येक पांच माशे कूट छान कर तीन पाव जल में औटावे जब आध पाव रहे छानकर पीवे यदि प्रकृति के अंगीकार करने के लिये दो तोले शर्बत नीलोफ़र मिलालेवे तो कुछ हानि नहीं।

शर्बत नीलोफ़र कि गरमी के ज्वर और मस्तक पीड़ा को गुण करे नीलोफ़र के ताजा फूल चौदह तोले सवा दो माशे गोखरू चार तोले सवा दो सेर जल में चढ़ादे, औटा छानकर सेरभर क़ंद में चाशनी करे मात्रा छ तोले तक

माउलक़रा अर्थात् मीठे कद्दू का पानी कि रुधिर और पित्तज्वर तथा तपेदिक़ को गुण दायक है। बड़ा मीठा कद्दू लेकर कपरमिट्टी करके मध्यम तनूर में एक ईंट पर रखदे जब पकजावे निकाल कर मिट्टी दूर करके कद्दू में छिद्र करदे उस का जल लेकर क़ंद और तुरञ्जबीन शीरखिस्त नीलोफ़र के शर्बत शिकंजबीन व बनफ़शा के शर्बत के साथ जो उचित हो पीवे।

काढ़ा कि गरमी के पुराने ज्वर को गुण करे। गिलोय, पित्तपापड़ा, मुलहटी, धनियां जौकुट करके काकड़ा सींगी, कड़वा खस, लाल चदन, नीम के पत्ते, खर्बूज़े के बीज जौकुट करके बराबर, इस में से तीन तोले चार माशे

लेकर पानी में औटावे जब चौथा भाग रहे छान कर पिये।

अथवा नीलोफर नौमाशे, खूबकला साढ़े चार माशे दोनों को डेढ़पाव जल में औटावे जब आध पाव शेष रहे झीने वस्त्र में छानकर कि नीलोफर रङ्ग आय और खूबकला छन आवे तब थोड़ी मिश्री डाल कर पिये।

अथवा गिलोय, नीम की छाल, धनियां, पद्माख, रक्त चन्दन, प्रत्येक तीन तोले चार माशे सेर भर जलमें औटावे जब आध पाव रहे छान कर पियें

अथवा छिली मुलहटी, काकड़ासींगी, गिलोय, पित्तपापड़ा, चिरायता, रक्तचन्दन, नेत्रबाला, अरलू का बकला, धनियाँ, जवासा, प्रत्येक दो दिरम अर्थात साढ़े माशे प्रति दिन तीनपाव पानी में भिगोकर प्रात काल औटावे जब आधपाव रहजाय छानकर पिये।

कंजा की गोली कि तप जाड़े और कफ तथा पित्तज्वर को गुणदायक है। कञ्जा की मिंगी, पीपल प्रत्येक साढ़े तीन माशे, श्वेत जीरा, बबूलकी पत्ती प्रत्येक पौने दो माशे कूट छानकर पान से कालसे की बराबर गोलियां बनावे और तीन दिवस पर्यन्त प्रात मध्या ह्न और सायकाल को एकर गोली खाय।

गोली कि हिमज्वर को गुणदायक है सफेद कत्था चार भाग, कपूर एक भाग कूट छानकर जगली बेरके प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली।

गोली कि जाड़े के ज्वर को गुणकारी भारतवर्षीय वैद्यों के मत से सफेद कत्था एक माशे, संखिया एक रत्ती पीसकर मोंठ प्रमाण गोलियां बनावे और जाड़ा चढ़ने के पेश्तर एक गोली खाय।

अथवा धतूरे का पर चने बराबर, अफीम एक रत्ती, नीम के पत्ते ढाई नग परस्पर पीसकर गुड़ में मिलाकर गोलियां बनावे और जाड़ा चढ़ने के तीन घड़ी पेश्तर एक गोली निगल जावे जब ज्वर आवे दूसरी गोली देवे विश्वास है कि तीसरी गोली देने की जरूरत न होगी।

कर्म कि तप जाड़े को गुणदायक है। हुलहुल के पत्ते दहने हाथ में कलाई के ऊपर बाहर की ओर रख कर उस पर एक छोटी ठिकरी रख बांधे यहां एक छाला उत्पन्न होगा बारी के दिन जाड़ा न आयेगा और ज्वर दूर हो जावेगा।

भुनी फिटकरी, मिश्री दो तोले पीसकर रोगी की प्रकृति के अनुसार आध माशे से दो माशे तक देवे यदि खांसी हो तो इस दवा का सेवन उचित

अथवा अफीम एक माशे, काली मिर्च दो माशे, कीकर की लकड़ी का कोयला छ: माशे पीस छान कर एक माशे प्रकृत्यानुसार ज्वर की बारी के दिन न्यूनाधिक चार घड़ी पहले देव और प्रातःकाल ही निराहार न दे कि वमन होजायगी किन्तु थोड़ा खिला देवे और दवा देने पर दो पहर अथवा अधिक काल व्यतीत होजावे तब भोजन दे इसके बीच में न दे अनुमान है कि एक मात्रा ही काफी होगी।

अथवा तुलसीपत्र छ: माशे, काली मिर्च चार नग, पीपल एक नग, मिश्री एक तोला पीस कर पीवे।

अथवा धतूर के बीज एक कुल्हड़ में भर कर उसका मुख बंद कर कपरमिट्टी कर तनूर में रखे जब बीज जल जांय उनकी भस्म तरुण को चार माशे और बालक को चार रत्ती खिलावे।

हिन्दी औषधि कि एक दिन में कफ ज्वर और पित्तज्वर को बंद करे हरताल, फिटकरी प्रत्येक एक तोला साढ़े पांच माशे, ग्वारपाठे के रसमें उसे नीम के सोटे से जिसमें पैसा जड़ा हो सोलह दिन रगड़े और टिकिया बना सुखाकर मिट्टी के पात्र में नीचे ऊपर पीपल वा अरंड की लकड़ी की खाक देकर कपरोटी कर बारह पहर जंगली कंडों की आंच देकर मात्रा चांवल प्रमाण देवे और भोजन दूध चांवल दे।

धूनी वैद्यक की पुस्तकों में लिखा है कि खां धर्म के वस्त्र की धूनी तप जाड़े को दूर करती है।

खस का अवलेह कि पित्तज्वर और तृषा को दूर करता और हृदय और कलजे को बल देता है। आध सेर खस के अर्क में छः तोले आठ माशे खस रात को भिगोदे और प्रात काल औटावे जब आधा शेष रहे पाव सेर बूरा डालकर चाशनी करे और एक माशा खश का इत्र मिलाकर अवलेह बनावे और थोड़ा गुलाब चढ़ावे और शर्बत की विशेषता के लिये एक तोला मीठा कद्दू पीसकर डालदे और दिक के तप के लिये इसी शर्बत में दो चार रत्ती कपूर मिलाते हैं और दस्त तथा तलैयन तबियत के समय सात माशे वंशलोचन मिलाते हैं इस अवलेह में अत्यन्त गुण है।

गुण ज्वर की बारी के दिन रोगी को भोजन न दे किन्तु जब तप की गरमी होने लगे आहार देवे गरमी के भोजन में सबसे उत्तम भोजन खिचड़ी और दाल भात है इनके सिवा कद्दू तोरई का साग और जौका झुंगा है।

कफ के ज्वर का मादा जो नसों के बाहर सड़गया हो वो प्रति दिन ज्वर जारी करता है और उस को नाविया कहते हैं।

और जो उस का मादा नसों के भीतर सड़ा हो उसको मवाजवह कहते हैं और वह भी प्रति दिन आता है।

कफ ज्वर का चिन्ह तृषा का कम होना, निद्रा की विशेषता, मूत्र में सफेदी और स्वाद का फीका होना है।

चिकित्सा दोष पचाने के पश्चात कफ को निकाले।

काढा कि कफ के तप को गुण करता है। सोंफ साढ़े तीन माशे, सोंफ की जड़, छिली मुलहटी नोकुर करके गावजवां, करफ्स के बीज प्रत्येक सात माशे, हसराज साढ़े दस माशे औटाकर दो तोले गुलकन्द और दो तोले शर्बत वजूरी मिलाकर पिये।

अद्भुत कर्म एक मक्खी, आधी काली मिर्च, बहुत थोड़ी हींग जल में पीसकर आंख में लगावे।

अथवा उल्लू का पर, गूगल, काले वस्त्र में लपेटकर घृत से चुपड़कर बत्ती बनावे और जलाकर काजल पाड़े और आंख में लगावे, चौथैये ज्वरको अति गुण करता है।

अथवा श्वेत धतूरा रविवार को उखाड़कर दाहिने हाथ पर बांधे एकही दिन में ज्वर दूर हो।

गोली कि कफ ज्वर को गुणदायक है। बड़ी पीपल कंजा की मिंगी एक एक तोला, श्वतजीरा, बबूल की पत्ती छ माशे कूट छानकर चने के प्रमाण गोलिया बनावे एकर गोली तीनों समय तीन दिन पर्यन्त खाय ज्वर दूर होवे।

काढ़ा कि चतुर्दोष के ज्वर को गुण करता है। चमाया सात माशे बराबर के शहद के साथ जल में औटाकर पिये।

शर्बत वजूरी मोतादिल कि तपों को जड़मूल से खोवे सोंफ, कासनी की जड़ प्रत्येक छ तोले आठ माशे, कन्द पावभर प्रकारानुसार शर्बत बनावे।

औषधि कि कफज्वर को गुण करे। मकड़ी का एक मकड़ जाला साफ करके गुड़ में लपटकर ज्वर आने के पहले दब जाड़ा नहीं आता और ज्वर दूर हो जाता है परन्तु तीन दिवस सेवन करना चाहिये।

अथवा आक की कली जो खिली नहो गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर

निगल जावे इसी प्रकार तीन दिवस करने से ज्वर साफ जावे।

गोली शफा कि तप जाड़े को खोवे। धतूरा साढ़े छ: तोले रेवतचीनी ढाई तोले, सोंठ, बबूल का गोंद प्रत्येक चौदह माशे कूट छानकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे दो गोली जाड़ा आने के पहले खावे।

दवा कि कफज्वर को गुण करे। कजा की कोंपल तीन नग काली मिर्च दो नग पानी में पीसकर पिलावे।

अथवा कजा की मिंगी पानी में पीसकर नाभि में टपकावे।

गोली आक की जड़ दो भाग काली मिर्च एक भाग दोनों को बकरी के दूध में पीसकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली बारी से पहिले देवे।

आनन्द भैरव गोली कि कफ की सब बीमारियों जुकाम, अजीर्ण कफज्वर और हाथ पांव आदि सब अवयवों के सर्द पसीने के लिये भारतवर्षीय वैद्यों की बनाई हुई। बछनाग, शुद्ध काली मिर्च, सुहागा पीपल सिंगरफ बराबर नीबू के रस में पांच घड़ी खरल कर उड़द के प्रमाण गोलियां बनावे। मात्रा एक गोली प्रातःकाल और एक गोली सायंकाल बूरे के साथ लेवे और जिसकी प्रकृति अति ठंडी हो दो गोली दे।

और दूसरे नुसखे में मैनफल के बीज, अकरकरा, सोंठ अधिक किये हैं सात दिन तक पान के रस में खरल कर गोलियां बनावे और उसके अर्क से खाना लिखा है।

गोली कि तप जाड़ को गुण करे। पारा, आंवलासार गंधक, बछनाग शुद्ध कर प्रत्येक एक दांग सोंठ, कालीमिर्च पीपल प्रत्येक पांच दांग, धतूरे के बीज, तीस दांग, हरताल आठ दांग, पारा और गंधक खूब पीसकर औषधियां खूब कूट छानकर चार प्रहर अदरक के रस में खरलकर दो २ रत्ती की गोलियां बनावे। मात्रा एक गोली बूरे अथवा जल के साथ देवे।

दवा कि तप जाड़े को गुण करे। पारा, गंधक, सोंठ, कालीमिर्च पीपल सुहागा, जमालगोटा शुद्ध सब बराबर नीबू के रस में दो पहर खरल करके कालीमिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली।

अथवा हुल्हुल के पत्ते कालीमिर्च प्रत्येक एक नग पीसकर कालीमिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे और एक २ गोली तीन दिन खाय।

अथवा आक की पीली पत्ती कोयलों की आंच में भस्म करके प्रातःकाल

चार रत्ती शहद के संग खाय।

गोली रामबाण कि क्षुधाको अधिक करे और अजीर्ण तथा कफ ज्वर को दूर करे। पारा, गंधक और शुद्ध बछनाग, लौंग प्रत्येक चार तोले दो माशे, जायफल सवादांग शुद्ध जमालगोटा ढाई तोले कूट छान कर तीन दिवस नीबू के रस में खरल करके काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा दो गोली तक गरम जल के संग।

भंगका चूर्ण भारतवर्षीय वैद्यों का बनाया हुआ ज्वर आने से घड़ी भर पहिले खावे। पीपल, काली मिर्च, कलौंजी, चिरायता, गेरू प्रत्येक एक माशे, भंग की पत्तियां दो माशे महीन कूट छानकर फंकी बनावे मात्रा एक माशे, यदि बालक हो तो कम देवे।

अथवा एक तोला आठ माशे संखिया बैंगन में रखकर कपरोटी कर जंगली कंडों में फूंकदे फिर इसी प्रकार बैंगन में आंच देकर पश्चात पीसकर लोहे की कढ़ाही में आधसेर जल के संग घोलकर मंदाग्नि से औटावे जब सूखजाय तब कढ़ाही से निकालकर एक तोला आठ माशे गेरू के साथ खरल करे हुत वांछित समय पर एक चांवल से एक रत्ती तक रोगी की सामर्थ्यानुसार खिलावे भोजन मूंगकी दाल, मास और लवण अति न्यून देवे।

गुण जानना चाहिये कि चौथैया ज्वर वात से उत्पन्न होता है कि दो दिन बीच देकर आता है। उसका मादा नसों के भीतर सड़ता है उससे वात ज्वर की उत्पत्ति कम होती है और जिसका मादा बाहर सड़ता है उसे अधिक यह ज्वर बरसों रहता है और बड़ी कठिनता से जाता है ठीक चिकित्सा इस की पचजाने के पीछे वस्त के द्वारा का निकलना है।

अब कई एक सहल औषधियां जो चौथैये को गुणदायक हैं वर्णन की जाती हैं।

दवा हींग, लवण दो माशे सेर भर जल में औटावे जब छः तोले आठ माशे रहजाय तब पीवे थोड़े ही दिन में चौथैया दूर होजायगा।

अथवा नौसादर तीन रत्ती, काली मिर्च दो नग, बारी के दिन कूटकर खिलावे।

अथवा कलौंजी छः तोले आठ माशे महीन पीस शहद में मिलाकर निरुपद्रव चार दिन तक खाय परन्तु जिस दिन कि ज्वर की बारी हो उसी दिन से आरंभ करे।

गोली स्याह धतूरे के पत्त, साबूत काली मिर्च प्रत्येक ढाई नग महीन पीसकर काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे और एक २ गोली दोनों समय देवे परीक्षित है।

चूर्ण कि चौथैये और कफ ज्वर को दूर करे। समुद्रफल की मिंगी काली मिर्च, तुलसी के पत्ते बराबर कूट छानकर फकी बनावे और एक माशे अथवा न्यून प्रकृत्यानुसार पानी के संग बारी से चार घड़ी पहले देवे।

अथवा टेसू के फूल धनियां प्रत्येक एक तोला आठ माशे चने की भूसी तीन तोला चार माशे कूट छानकर बराबर तीन भाग करे एक भाग जल के संग लेवे।

अथवा तीन चार माशे चूना पानी में घोलकर एक नीबू उसमें निचोड़े जब चूना गाढ़ा होजावे और नीचे बैठ जावे तब उस का नितरा पानी ज्वरके चिन्हों के समय अर्थात जब जंभाई अंगड़ाई आने लगें तब पिलावे जो एक बार का पिलाना गुण न करे तो दूसरी बार दे।

दवा कि चौथैये को गुण करती है साढ़े दस माशे अजवायन कूट छान कर शहद में मिलाकर चटावे।

अथवा ग्वारपाठे का ऊपर का छिलका दूर करके अग्नि पर रखे और थोड़ी अफ़ीम और हलदी महीन पीसकर उस पर डाले फिर आंच पर से उतारकर वस्त्र में रखके निचोड़े और क़हवा के दो प्यालों में भर कर पिये तो तीन दिन में चौथैया ज्वर दूर होव।

गोली पलासपापड़े का छिलका दूर करके सफेद मिंगी उसकी बराबर और उसकी बराबर करंजा की मिंगी मिलाकर अति महीन पीसकर काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली बासी जल के साथ निगल जाया करे।

दवा नीम की इतर छाल आठ तोले चार माशे आधसेर जलमें औटावे जब आधपाव रहजाय तीन चार टुकड़े चुम्बक पत्थर के गरम कर के उस में बुझावे जब छः सात तोले रहजाय तब रोगी को पिलावे और इसी प्रकार तीन दिवस पर्यन्त करे।

गोली पुराने तप के वास्ते भुना, असगंद, कलौंजी, पीपलामूल, पीपल प्रत्येक एक तोले कूट छानकर साढ़े तीन तोले गुड़ में मिलाकर दस माशे

के अनुमान गोलियां बनावे और प्रातःकाल निराहार एक गोली गरम जल के संग खाय ।

शर्बत कि सब प्रकार के ज्वरों और खांसी को दूर करता है गिलोय, पित्तपापड़ा, नीलोफर, खीरे ककड़ी के बीज खतमी के बीज, कासनी के बीज, चंदन चूरा प्रत्येक एक तोला मुलहटी पांचतोला, लिसोड़े तीस नग बीहदाना एक तोले साढ़े तीन माशे टट्टपान कद में चाशनी कर ।

काढ़ा कि चौथैये को गुण करे । पोस्त के डोड दस नग, काली मिर्च के संग कूट कर औटाकर पिये ।

दवा कि चौथैय ज्वर को निश्चय गुण दायक है । एक तूंबां कड़ा में छिद्र कर के उसका मुख बंद करके निगलजाय ।

पाक कचौंगी, कि चौथैये और वातज्वर को बंद करता है ज्वर का तीसरा भेद तपेदिक कि हरारत गरीबा को गैर असली जोड़ और असल जोड़ों में विशेष कर हृदय में स्थिति करता है और प्रायः नित्यज्वर वा और गरम ज्वर रहते २ तपेदिक होजाता है और दिक का ज्वर अतएव बहुत कम उत्पन्न होता है और इस ज्वर की गरमी की विशेषता भोजन करने के पश्चात होती है इसकी चिकित्सा दवाई आदि हैं ।

टिकिया कपूर कि तपेदिक को गुण करे । कपूर केसर प्रत्येक साढ़े तीन माशे छिली मुलहटी, बीहदाना सफेद, पोस्त के दाने, प्रत्येक सात माशे कुलफे के बीज, खीरा, ककड़ी के बीजों की मिंगी, काहू के बीजों की मिंगी, चन्दन, गुलाब में घिसा हुआ तर्बूज के बीजों की मिंगी प्रत्येक १०॥ माशे बबूर का गोंद कत्था प्रत्येक दो माशे सब औषधियों को कूट छान कर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माशे ॥

आबजन कि गरमी को दूर करता है ताजाकद्दू, ताजा तर्बूज जौकूट कर के खीरा, ककड़ी के टुकड़े, नीलोफर, काहू के पत्ते, कुलफे के पत्ते इन औषधियों में से जितनी प्राप्त होसकें जल में औटाय जब आधा रहजाय तब आबजन कर के शरीर से पानी पोंछ कर ठंढे रोग़न जैसे कि रोग़न कद्दू आदि से सेक करे ।

गोली काफूर कि गरम ज्वर और तपेदिक को गुणदायक है चन्दन गुलाब में घिसकर साढ़े तीन माशे, कहरबोइरा गढ़ा हुआ, सफेद कत्था कतीरा कुलफे के बीज, बनफशा, पोस्त के दाने प्रत्येक साढ़े तीन माशे, केशर पौन

दो माशे, मीठे कदू के बीजों की मिंगी, बीहदान की मिंगी प्रत्येक ढाई तोले कूट छान कर ईसबगोल या बीहदाने के लुआब में गोलियां बनावे ।

नकू कि सपेदिक को गुण करे । गिलोय जौकुट कर एक तोले, मुलहटी छिली हुई छः माशे, खतमी के बीज, खब्बासी पित्तपापड़ा प्रत्येक तीन तोले चार माशे पावसेर गरम जल में रात को भिगोदे प्रात काल उस का निथरा जल लेकर काहू के बीज, कुलफे के बीज उसी पानी में पीस कर थोड़ा बूरा मिलाकर पिये और इसी प्रकार कई दिवस पर्यन्त सेवन करे ।

काढ़ा नीम के पत्ते इकीस नग साबित काली मिर्च इक्कीस नग दोनों को महीन वस्त्र में पोटली बांधकर आधसेर जल में औटावे जब छः तोले आठ माशे रहजाय तब उसको छान कर नित्य दोनों समय पीवे आराम होजायगा परन्तु सात दिन इसी प्रकार करे ।

फ़सल बोरान के व्याख्यान में

बोरान रोग के सग प्रकृति के सरसाम को कहते हैं यदि प्रकृति प्रबल आवे बोरान शुभ है और एक सग्राम में कोई भी प्रबल न आवे किन्तु दूसरे सरसाम की आवश्यकता रहे यह बोरान मध्यम है और प्रकृति पर रोग प्रबल आवे तो यह बोरान अशुभ है जो प्रकृति बोरान के समय चतुरावयव के उत्तम भाग से निकृष्ट अवयव की ओर फेंके उसको बोरान इतक़ाली कहते हैं और शुभ बोरान के बारह दिन हैं चौथा, सातवां, ग्यारहवां, चौदहवां, बीसवां, इकीसवां, चौबीसवां, सत्ताईसवां, इकत्तीसवां, चौंतीसवां, सैंतीसवां, चालीसवां और अशुभ वा भययुक्त बोरान के आठ दिन हैं छठा, आठवां, दसवां, बारहवां, पंद्रहवां, सोलहवां, अठारहवां, उन्नीसवां और जिन में बोरान अर्थात् सरसाम नहीं होता तेरह दिन हैं बाईसवां, तेईसवां, पच्चीसवां, अट्ठाईसवां, उन्तीसवां, तीसवां, बत्तीसवां, तेतीसवां, पैंतीसवां, छत्तीसवां, अड़तीसवां, उन्तालीसवां और पांच दिन बाक़अफ़िलबस्त हैं अर्थात् उनमें भी बोरान होता है कभी नहीं भी होता तीसरा, पांचवां नवां, तेरहवां, सत्रहवां बुक़रात हकीम के मतसे चालीस दिवस पश्चात बोरान अर्थात सरसाम नहीं होता है और बोरान कई प्रकार से होता है । कभी नकसीर फूटती है और कभी दस्त आते हैं कभी वमन होती है कभी मूत्र द्रव होता है और कभी पसीना निकलता है ।

गुण जिस दिन ज्वर आवे यदि सूर्य अस्त से पहिले आवे उस दिन

को रोगकी आदि का गिनना चाहिये और जो सूर्यास्त के पीछे आवे तो दूसरा दिन रोगोत्पत्ति का प्रथम दिन गिनना चाहिये और बौरान तथा बारी के दिन विरेचक देना उचित नहीं किन्तु अत्यन्त बुरा है और वैद्यों को चाहिये कि बौरान के दिन कंठस्थ याद रक्खें कि किसी जगह भूल चूक न रहे।

फ़सल इलाज समूम अर्थात् विष की चिकित्सा में

जिस मनुष्य ने ज़हर खाया होवे उस की चिकित्सा सब के मतानुसार गरम जल पिलाकर वमन कराना है और कई बार दुग्ध तथा घी पिलाना और कुक्कुट की पुरीश जल में रगड़ कर जिस समय पिलावे उसी समय विष वमन द्वारा बाहर निकल आवे और जानना चाहिये कि जंगल और नदी के काटने वाले जन्तु बहुत होते हैं उनके काटने से प्रकृति में व्यत्यय प्रगट होती है इसका सामान्य नियम यह है कि विष को शोषण कर दे और जब तक रोग से छुटकारा न हो कभी घाव को न भरने दे और फ़ाद् ज़हर और निर्विषी इत्यादि वे औषधियां विष को दूर करें खाने पीने द्वारा सेवन करे।

दवा कि सब प्रकार के गरम विषको दूर करे। चौलाई की ताज़ा जड़ एक तोला सूखी हो तो छ माशे जल में पीसकर गौ के घी के संग खाय।

अथवा गोघृत दो तोला ग्यारह माशे सेंधा नोन सात माशे मिलाकर खाय सर्प के काट को गुणदायक है।

अथवा छोटी कटेरी पीसकर खाय भारतवासियों के मत से विषघ्न है।

अथवा कुचला काली मिर्च पीसकर थोड़ासा खाय सर्प के विषको दूरकरे।

अथवा एक माशे दर्याई नारियल पीसकर पिलावे सब प्रकार के विषको दूर करे।

अथवा बिनौले की मिंगी कूट छानकर दूध में औटाकर पिलावे।

अथवा कसेरू खाना विषको दूर करता है।

दवा कि संखिया की हानि को दूर करे तीन तोले कत्था जल में घोल कर पिलाव।

अथवा एक माशे कपूर कई तोले गुलाब में रगड़ कर पिलावे।

अथवा बकरी का दूध औटाके गोघृत से मिलाकर पिलावे।

दवा कि विषको वमन द्वारा निकाले। कमलगट्टा एक माशे नीलाथोथा दो रत्ती परस्पर पीसकर गरम जल के साथ पिये।

दो माशे, मीठे कद्दू के बीजों की मिंगी, चौंहदाने की मिंगी प्रत्येक ढाई तोले कूट छान कर ईसबगोल वा चौंहदाने के लुआब में गोलियां बनावे ।

नकू कि तपेदिक को गुण करे । गिलोय जौकुट कर एक तोले, मुलहटी छिली हुई छः माशे, खतमी के बीज, खब्बासी पित्तपापड़ा प्रत्येक तीन तोले चार माशे पावसेर गरम जल में रात को भिगोदे प्रात काल उस का निथरा जल लेकर काहू के बीज, कुलफे के बीज उसी पानी में पीस कर थोड़ा बूरा मिलाकर पिये और इसी प्रकार कई दिवस पर्यन्त सेवन करे ।

काढ़ा नीम के पत्ते इक्कीस नग साबित काली मिर्च इक्कीस नग दोनों को महीन वस्त्र में पोटली बांधकर आधसेर जल में औटावे जब छः तोले आठ माशे रहजाय तब उसको छान कर नित्य दोनों समय पीवे आराम होजायगा परन्तु सात दिन इसी प्रकार करे ।

फ़सल बोरान के व्याख्यान में

बोरान रोग के संग प्रकृति के सरसाम को कहते हैं यदि प्रकृति प्रबल आवे बोरान शुभ है और एक सग्राम में कोई भी प्रबल न आवे किन्तु दूसरे सरसाम की आवश्यकता रहे वह बोरान मध्यम है और प्रकृति पर रोग प्रबल आवे तो वह बोरान अशुभ है जो प्रकृति बोरान के समय चतुरावयव के उत्तम माद्दे से निकृष्ट अवयव की ओर फेंके उसको बोरान इंतकाली कहते हैं और शुभ बोरान के बारह दिन हैं चौथा, सातवां, ग्यारहवां, चौदहवां, बीसवां, इक्कीसवां, चौबीसवां, सत्ताईसवां, इकत्तीसवां, चौंतीसवां, सैंतीसवां, चालीसवां और अशुभ वा भययुक्त बोरान के आठ दिन हैं छठा, आठवां, दसवां, बारहवां, पन्द्रहवां, सोलहवां, अठारहवां, उन्नीसवां और जिन में बोरान अर्थात् सरसाम नहीं होता तेरह दिन हैं बाईसवां, तेईसवां, पच्चीसवां, अट्ठाईसवां, उन्तीसवां, तीसवां, बत्तीसवां, तेतीसवां, पैंतीसवां, छत्तीसवां, अड़तीसवां, उन्तालीसवां और पांच दिन माकमफ़िलबस्त हैं अर्थात् उनमें भी बोरान होता है कभी नहीं भी होता तीसरा, पांचवां नवां, तेरहवां, सत्रहवां युक्रात हकीम के मतसे चालीस दिवस पश्चात बोरान अर्थात सरसाम नहीं होता है और बोरान कई प्रकार से होता है । कभी नकसीर फूटती है और कभी दस्त आते हैं कभी वमन होती है कभी मूत्र द्रव होता है और कभी पसीना निकलता है ।

गुण जिस दिन ज्वर आवे यदि सूर्य अस्त से पहिले आवे उस दिन

को रोगकी आदि का गिनना चाहिये और जो सूर्यास्त क पीछे आय तो दूसरा दिन रोगोत्पत्ति का प्रथम दिन गिनना चाहिये और पौरान तथा पारी के दिन विरेचक देना उचित नहीं किन्तु अत्यन्त बुरा है और वैद्यों का चाहिये कि पौरान के दिन कठस्थ याद रखें कि किसी जगह भूल चूक न रहे।

फ़सल इलाज समूम अर्थात् विष की चिकित्सा में

जिस मनुष्य ने जहर खाया होवे उस की चिकित्सा सब के मतानुसार गरम जल पिलाकर वमन कराना है और कई बार दुग्ध तथा घी पिलाना और कुक्कुट की पुरीज जल में रगड़ कर जिस समय पिलावे उसी समय विष वमन द्वारा बाहर निकल आवे और जानना चाहिये कि जगत और नदी के काटने वाले जतु बहुत होते हैं उनके काटने से प्रकृति में व्यत्यय प्रगट होती है इसका सामान्य नियम यह है कि विष को शोषण कर दे और जब तक रोग स छुट कारा न हो कभी घाव को न भरने दे और फाद् जहर और निर्विषी इत्यादि ये औषधियां विष को दूर करें खाने पीने द्वारा सेवन करे।

दवा कि सब प्रकार के गरम विषको दूर करे। चौलाई की ताजा जड़ एक तोला सूखी हो तो छ माशे जल में पीसकर गौ के घी के सग खाय।

अथवा गौघृत दो तोला ग्यारह माशे सेंधा नोन सात माशे मिलाकर खाय सर्प के काट को गुणदायक है।

अथवा छोटी कटरी पीसकर खाय भारतवासियों के मत से विषघ्न है।

अथवा कुचला काली मिर्च पीसकर थोड़ासा खाय सर्प के विषको दूरकरे।

अथवा एक माशे दर्यायी नारियल पीसकर पिलावे सब प्रकार के विषको दूर करे।

अथवा बिनौले की मिंगी कूट छानकर दूध में औटाकर पिलावे।

अथवा कसेरू खाना विषको दूर करता है।

दवा कि संखिया की हानि को दूर करे तीन तोले कत्था जल में घोल कर पिलाव।

अथवा एक माशे कपूर कई तोले गुलाब में रगड़ कर पिलावे।

अथवा बकरी का दूध औटाके गौघृत से भंगार कर पिलावे।

दवा कि विषको वमन द्वारा निकाले। कमलगट्टा एक माशे नीलाथोथा दो रत्ती परस्पर पीसकर गरम जल के साथ पिये।

दो माशे, मीठे कद्दू के बीजों की मिंगी, बीहदाने की मिंगी प्रत्येक ढाई तोले कूट छान कर ईसबगोल या बीहदाने के लुआब में गोलियां बनावे ।

नक्ू कि तपेदिक को गुण करे । गिलोय जौकुट कर एक तोले, मुलहटी छिली हुई छः माशे, खतमी के बीज, खब्बासी पित्तपापड़ा प्रत्येक तीन तोले चार माशे पावसेर गरम जल में रात को भिगोदे प्रात काल उस का निथरा जल लेकर काहू के बीज, कुलफे के बीज उसी पानी में पीस कर थोड़ा बूरा मिलाकर पिये और इसी प्रकार कई दिवस पर्यन्त सेवन करे ।

क्वाढ़ा नीम के पत्ते इक्कीस नग साबित काली मिर्च इक्कीस नग दोनों को महीन वस्त्र में पोटली बांधकर आधसेर जल में औटावे जब छः तोले आठ माशे रहजाय तब उसको छान कर नित्य दोनों समय पीवे आराम होजायगा परन्तु सात दिनें इसी प्रकार करे ।

फ़सल बोरान के व्याख्यान में

बोरान रोग के सग प्रकृति के सरसाम को कहते हैं यदि प्रकृति प्रबल आवे बोरान शुभ है और एक सप्ताह में कोई भी प्रबल न आवे किन्तु दूसरे सरसाम की आवश्यकता रह वह बोरान मध्यम है और प्रकृति पर रोग प्रबल आवे तो वह बोरान अशुभ है जो प्रकृति बोरान के समय चतुरावयव के उत्तम माद्दे से निकृष्ट अवयव की ओर फेंके उसको बोरान इतकाली कहते हैं और शुभ बोरान के बारह दिन हैं चौथा, सातवां, ग्यारहवां, चौदहवां, बीसवां, इक्कीसवां, चौबीसवां, सत्ताईसवां, इकत्तीसवां, चौंतीसवां, सैंतीसवां, चालीसवां और अशुभ वा अपयुक्त बोरान के आठ दिन हैं छठा, आठवां, दसवां, बारहवां, पंद्रहवां, सोलहवां, अठारहवां, उन्नीसवां और जिन में बोरान अर्थात् सरसाम नहीं होता तेरह दिन हैं बाईसवां, तेईसवां, पच्चीसवां, अट्ठाईसवां, उन्तीसवां, तीसवां, बत्तीसवां, तेतीसवां, पैंतीसवां, छत्तीसवां, अड़तीसवां, उन्तालीसवां और पांच दिन याकअफिलबस्त हैं अर्थात् उनमें भी बोरान होता है कभी नहीं भी होता तीसरा, पांचवां नवां, तेरहवां, सत्रहवां बुक़रात हकीम के मतसे चालीस दिवस पश्चात बोरान अर्थात सरसाम नहीं होता है और बोरान कई प्रकार से होता है । कभी नकसीर फूटती है और कभी दस्त आते हैं कभी वमन होती है कभी मूत्र द्रव होता है और कभी पसीना निकलता है ।

गुण जिस दिन ज्वर आवे यादि सूर्य अस्त से पहिले आवे उस दिन

को रोगकी आदि का गिनना चाहिये और जो सूर्यास्त के पीछे आवे तो दूसरा दिन रोगोत्पत्ति का प्रथम दिन गिनना चाहिये और पौरान तथा पारी के दिन विरेचक देना उचित नहीं किन्तु अत्यन्त बुरा है और वैद्यों को चाहिये कि पौरान के दिन अवश्य याद रखें कि किसी जगह भूल चूक न रहे।

फ़सल इलाज समूम अर्थात् विष की चिकित्सा में

जिस मनुष्य ने ज़हर खाया होवे उस की चिकित्सा सब के मतानुसार गरम जल पिलाकर वमन कराना है और कई बार दुग्ध तथा घी पिलाना और कुक्कुट की पुरीज जल में रगड़ कर जिस समय पिलावे उसी समय विष वमन द्वारा बाहर निकल आवे और जानना चाहिये कि जंगल और नदी के काटने वाले जंतु बहुत होते हैं उनके काटने से प्रकृति में व्यत्यय प्रगट होती है इनका सामान्य नियम यह है कि विष को शोषण कर दे और जब तक रोग से छुट-कारा न हो कभी घाव को न भरने दे और फ़ाद ज़हर और निर्विषी इत्यादि औषधियां विष को दूर करें खाने पीने द्वारा सेवन करे।

दवा कि सब प्रकार के गरम विषको दूर करे। चौलाई की ताजा जड़ के तोला सूखी हो तो छ: माशे जल में पीसकर गौ के घी के संग खाय।

अथवा गौघृत दो तोला ग्यारह माशे सेंधा नोन आठ माशे मिलाकर य सर्प के काटे को गुणदायक है।

अथवा छोटी कटरी पीसकर खाय भारतवासियों के मत से विषघ्न है।

अथवा कुचला काली मिर्च पीसकर थोड़ासा खाय सर्प के विषको दूरकरे।

अथवा एक माशे दर्याई नारियल पीसकर पिलावे सब प्रकार के को दूर करे।

अथवा बिनौले की मिंगी कूट छानकर दूध में औटाकर पिलावे।

अथवा कसेरू खाना विषको दूर करता है।

दवा कि संखिया की हानि को दूर करे तीन तोले कत्था जल में पीस पिलाव।

अथवा एक माशे कपूर कई तोले गुलाब में रगड़ कर पिलावे।

अथवा बकरी का दूध औटाके गौघृत से भगार कर पिलावे।

दवा कि विषको वमन द्वारा निकाले। मलकूगदा एक माशे नीलाथोथा दो रत्ती परस्पर पीसकर गरम जल के साथ पिये।

अथवा यह अफीम के विष को दूर करे अरंड की जड़ पीसकर एक कहवा का प्याला भर कर पिये।

अथवा अरहर की पत्तियां पीसकर पिये।

अथवा अरंड की कोंपल पीसकर पिये।

अथवा सेंधवत जल में, पीसकर कहवा का द

अथवा दो माशे अफीम दो तीन बार में खाय।

गुण अखरोट की मिंगी विपाक पानी अमृत तुल्य है गौ का घी अफीम का संयोगी है।

दूध धतूरे का विष दूर करने के लिये बैंगन के टुकड़े कर दूध में पका कर पिलावे।

अथवा तीन तोले चार माशे बिनौले की मिंगी जल में पीसकर पिये।

अथवा लवण पानी में पीसकर पिये।

दवा कि सिंदूर की हानि को दूर करे सात दिवस पर्यंत अदरक नीबू के रस में नोन के साथ मलकर रोटी के संग खाय और मुखमें डालकर रखे ताकि उसका अर्क गले में पहुंचता रहे।

अथवा बिल्ली की पत्तियां और लवण एक, २ तोला साढ़े दस दस माशे चावल पौने छ तोले अखरोट की मिंगी सवा ग्यारह तोले सबको अजीर के साथ कूटकर खिलावे।

दवा पारे और शिंगरफ की हानि को दूर करे। जवासा थोड़े जल में पीसकर शीरा निकालकर पिये।

अथवा रेंडी का तेल पांच माशे आधपाव गौ दुग्ध में मिलाकर पिये

औषध कि भिलावे के अवगुण को गुण करती है जो भिलावे खाने से शरीर में खुजली और सोथ उत्पन्न हो तो इमली की पत्तियों का शीरा पिये या बीज निकालकर पिये या बीजों को खाय।

अथवा चिरोंजी और तिल भैंस के दूध में पीसकर खाय।

अथवा अखरोट खाय कि भिलावे का भी काट जहर है यदि भिलावे के धूम्र से अवयव पर सोथ हुआ हो तो आंबाहलदी साठीचावल दूब घासी जल में पीसके मले।

अथवा काले तिल और माखन।

दवा कि बछनाग के विष को गुणदायक है सोंठ चाहे जिस रीति से खाय कि बछनाग का फ़ाद जहर है।

औषधि कि मकड़ी का विष दूर करे चौलाई का साग जल में पीसकर लगावे।

दवा उस मनुष्य को जिसने सिंह की मूछ का बाल खाया हो कसौंदी के पत्तों का रस तीन दिवस पिये।

अथवा तीन चार झींग निगलजाय सिंह की मूछ का बाल खाने का लक्षण यह है कि बैठते समय उदर में पीड़ा होय और अरंड के पत्ते पर मूत तो पत्ता टुकड़े २ होजाय।

दवा कि सब प्रकार के विषों को दूर करे। सैरुलजाल में लिखा है कि हुलहुल के बीज एक तोला साढ़े पांच माशा पीसकर खाय।

औषधि सांप के काटे के वास्ते। सर्प कई प्रकार का होता है परन्तु काला सब से जियादा विषैला है और छुटकारा नहीं देता चाहिये कि जब सर्प काटे अवयव यदि काटने योग्य हो तो जैसे उंगली आदि तुरन्त काट डाले और जो काटने योग्य न हो तो फ़ौरन जलाय सर्प के काटे मनुष्य को सोने न दे और चपकी का शब्द कान में न पहुंचने दे।

दवा कि सांप के काटे को गुण करे। जो काले ने काटा हो तो सात नग जमालगोटा और जो किसी और प्रकार के ने काटा हो तो तीन नग जमाल गोटा छीलकर खिलावे और मूंग की बराबर पीस कर आंखों में लगा और जमालगोटा स्थान के पीछे जहां काटा हो सींगी लगाकर चूस कि विष शरीर में न फैले और लहसन-प्याज और राई खूब खाय सर्प के विष को गुण करे मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि जो सर्प का काटा मूर्छागत होगया हो तो उस के पेट पर नाभि के ऊपर जल मारे कि ऊपर का चर्म छिल जाय और रुधिर न निकले फिर जमालगोटा जल में पीसकर लगावे वमन होकर सचेत हो जायगा पश्चात् दूसरी विधि काम में लावे। एक और पुस्तक में लिखा है कि सांप का डसा मनुष्य सचेत हो जाता है और हलने चलने की शक्ति बिल कुल न रहे परन्तु मरा न हो तो कुचला जल में पीसकर उसके गले में डाल और थोड़ा सा पीसकर शरीर और गले से मले मूर्छा दूर हो जायगी।

दवा कि साप के विष को गुणदायक है। तीन नग आख की कोंपल गुड़ में लपेट कर खिलावे और उनके ऊपर घी पिलावे और तीन कली आख की खिलावे और सात कालीमिर्च और एक माशे इन्द्रायन पीसकर देना लिखा है या आक का दूध जिस मुकाम पर सांप ने काटा हो टपकावे जब तक शोषण रहे बंद न करे तब विष का असर न रहे दूध शोषण न होगा।

अथवा आख की जड़ पीसकर पिलावे और कोई २ इस में आख की रुई मिलाते हैं।

गोली कालीमिर्च, जमालगोटा प्रत्येक सात माशे तीन नग नीबू के रस में पीसकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे और जल में पीसके आंख में लगावे और दो तीन नग खिलावे।

अथवा कसोंदी के बीज महीन पीसकर आंख में लगावे।

अथवा खटमल निगल जाय।

अथवा तेलिया सुहागा एक तोले आठ माशे भून कर घी में मिलाकर पिलावे।

अथवा चूहे का पेट फाड़कर जिस जगह सांपने काटा हो बांधे जहर शोषण करता है।

अथवा सिरस की छाल उसकी जड़ की छाल तथा उस के फूल और बीज चारों एक तोले आठ माशे एक चमचे गोमूत्र के संग एक दिन में तीन बार पिये सिरस का पुराना पेड़ कि जिसकी छाल स्याह होगयी हो गुण में विशेष होता है और किसीने लिखा है कि जब सूर्य मिथुन राशि में आवे अर्थात् ज्येष्ठ मास में जो कि सिरस की छाल तीन दिवस पर्यन्त प्रति दिन सात माशे साठी चांवलों के धोवन में पीस कर पिये एक वर्ष के लिये विष वाले जन्तुओं के विष से कुशल रहेगा और जो उसे काटेगा तुरत मर जायगा।

अथवा जामन का ढाई पत्ता जल में पीस कर पिलावे।

अथवा ताजा कुसुम दो माशे जल में पीस कर पिलावे।

अथवा कागज का एक सफेद ताव जल में घोल छान कर पिलावे।

अथवा जहां सर्प ने काटा हो अथवा किसी विषधर जानवर का डंक लगा हो यहा तक कि पागल कुत्ते ने भी काटा हो उस पर मूतना अत्यन्त गुण करता है।

अथवा करील कूट छानकर जल में मिलाकर पिलावें वमन आकर विष दूर होगा।

अथवा समुद्रफल महीन पीसकर दोनों आंखों में लगावे।

अथवा गगन धूल नाक में फूके।

अथवा कसौंदी की जड़ साढ़े तीन माशे, काली मिर्च पौने दो माशे खावे

अथवा सात माशे फिटकरी जल में पीसकर पिलावे।

अथवा महुआ और कुचला पीसके लेप करे।

गुण पुस्तकों में लिखा है कि बारहसींगे का सींग लटकाना सर्पादि के काटने से रोकता है और बारहसींगे का सींग और बकरी का खुर और अकरकरे की धूनी सर्पादि को भगाती है। और राइ सांप की दुश्मन है जो राइ को नौसादर के संग पीस कर घर में डाले तो सर्प भाग जावे और फिर न आवे।

औषधि कि बिच्छू की विषा पीवे और लगावे तो बिच्छू का विष दूर होवे। मुजिब्बात में लिखा है कि एक मनुष्य के शरीर को बिच्छून चालीस जगह काटा था उसने शीघ्रही सात माशे इन्द्रायन का ताजा फल खालिया उसी समय आराम होगया और जिस जगह बिच्छू को जलाया जावे वहां से और बिच्छू भाग जाय।

अथवा हींग हरताल नीबू के रस में पीस कर गोलियां बनावे और बिच्छू के काटे पर लगावे।

अथवा प्याज का जीरा मले और गुड़ खिलावे और मोम जलाकर उसकी धूनी घाव को दे।

अथवा खिसखपरे और चिरचिटे की टहनी पीस कर मले।

अथवा कौंच के बीज पीस के मले।

अथवा गुबरीला कीड़ा जो गोबर में उत्पन्न होता है पीस के मले।

औषधि कि भिड़ के विष का दूर करे ईसबगोल सिरके में डालके लुआब निकाल के पीवे

अथवा तीन हथेली धनियां खाय या काइ पीस कर सिर में मले।

अथवा खतमी और खब्बाजी का लुआब मले।

अथवा मक्खी भिड़ के काटे पर मले।

अथवा शहद खाय और मले

अथवा मकोह की पत्ती सिरके में पीस कर लगावे और अवयवों को गरम जल से धोवे और धनिये का अर्क सिरके में मिलाकर लगावे।

अथवा कपूर सिरके में मिलाकर लगावे।

अथवा कपूर सिरके में मिलाकर मर्दन करे और भिड़ के छत्ते की मिट्टी का लेप करे।

अथवा तिल सिरके में पीसकर मले।

अथवा गंधक पीस कर मलना अति गुणदायक है।

अथवा जिसको भिड़ ने काटा हो वह अपनी जिह्वा पकड़ले पीड़ा दूर होवे।

अथवा जहां लहसन और गंधक जलावे वहां की भिड़ उड़जायें।

औषधि कि विष को दूर करे तीन तोले लहसन का रस तीन तोले शहद में टपकावे उसी समय खिलावे और जिस जगह काटा हो वहां भी मले

अथवा तिलसी के पत्ते पानी में पीसकर वा उनका रस निचोड़ कर मुख में टपकावे कई बार के सेवन से सांप और बिच्छू का विष दूर होजाता है और बिच्छू का मलना उसके काटे को गुणदायक है।

अथवा आक का दूध बिच्छू के काटे पर मलना गुणदायक है और बिच्छू के काटे पर मक्खी मलना वा सूखा लहसन और अमचूर पीस के मलना।

अथवा समुद्रफल पीस कर लेप करना और मुश्की अश्व का नख पीस कर लगाना वा नौसादर सुहागा चूने की कलई बराबर हथेली पर मल कर सूंघना और कसौंदी का फल खाना तथा कसौंदी के बीज पीस के लेप करना और चूहे की मैंगनी पीस कर मलना।

अथवा सखी महीन पीस के शहद में मिला के मलना और मोर का पर तमाकू के बदले चिलम में पीना।

अथवा पलास पापड़ा जल में पीस कर लगाना गुण करता है।

कर्म कि बिच्छू के विष को दूर करे लिखा है कि बीस अङ्क उलटे गिन अर्थात बीस से आरम्भ कर एक पर समाप्त करे।

अथवा अजवायन औटा के घाव को धोवे।

अथवा मूली नोन में मिलाकर घाव पर रखे और जो मूली बिच्छू पर रखे तो मर जाय।

अथवा हरताल हींग साठी चांवल पानी में पीस कर मले।

दवा कि बिच्छू के डंक की पीड़ा को दूर कर भंग के बीज कूट के माप में मिला के खिलावे।

अथवा घास की पत्ती घी में पीस कर घाव पर मले।

अथवा नीबू का रस घाव पर टपकावे।

अथवा गरम जल में निमक मिलाकर घाव पर मले।

अथवा नागरमोथा छिपकली के काटे के वास्ते घृत वा तेल वा राख मले और भुसी औटाकर गरम २ नतूल कर अर्थात जहां काटा हो तहां दवें।

बावले कुत्ते के काटने का चिकित्सा

जिस मनुष्य को उन्मत्त कूकरने काटा हो उसको थोड़ी देर पश्चात् उन-मत्तावस्था उत्पन्न होती है जब इस अवस्था की प्रबलता होती है जीनेकी आशा नहीं रहती उस की चिकित्सा में ढील न करे और चालीस दिवस तक घाव को न भरने दें और सींगियों से खूब चूसे और घाव के आसपास पछने लगावे और लहसन सिरके में पीसकर उसपर लेप करें और शीतल वायु से बचता रहे जब तक कूकर का काटा जल से डरे जीने की आशा न करे।

दवा कि उन्मत्त कूकर के काटने को गुण करे सफ़दजीरा, पदरह नग कालीमिर्च के साथ पीस छान कर पिलावे कुत्ते के काटे हुए को अति गुण करे।

अथवा प्याज कूटकर शहद में मिलाकर लेप करे कि घाव भरने न पावे।

अथवा कुचला मनुष्य के मूत्र में औटा कर लेप करे और मदिरा में औटाकर छान कर एक रत्ती नित्य खाया करे।

अथवा जल में औटाकर थोड़ा कंद मिलाकर खाय।

अथवा पांच तोले कहवा कूट औकुट करके एक प्याला जल में औटावे जब जल कर साढ़े तीन माशे रहे छान कर पिये।

अथवा उसी कुत्ते की जीभ काट के उसकी भस्म घाव पर छिड़के घाव भर जायगा और उसका विस असर न करेगा।

दवा कि जो कुत्ते के काटे हुए की उन्मत्तावस्था में दे अत्यन्त गुण करती है। तकिनताई वातलीना कि एक जानवर है जो वर्षा ऋतु में होता है एक डिबिया में बंद करके सुखा कर एक चने के प्रमाण गुड़ में लपेट कर खिलावे।

अथवा मजूर की लकड़ी की खाक सिरके में मिलाकर लगावे।

द्वितीय औषधि इंगलैंडीय वैद्यों की बताई जो कुत्ते के काटे हुए को अवश्य गुण करे। महीन बनात लाल रंग की लेकर चने के प्रमाण सात टुकड़े करके गुड़ में मिलाकर सात गोलियां बना कर खाय।

अथवा पछने और बहुत रुधिर निकालने के बाद राई कूट कर लेप करे।

अथवा आख का दूध घाव पर लगावे।

अथवा उसी कुत्ते के बाल कि जिसने काटा हो जलाकर उनकी भस्म घाव पर लगावे।

अथवा सर्वारिश कलौंजी खाना गुण करता है।

अथवा मूली के पत्ते गरम करके बांधे।

अथवा चूहे की मेंगनी पीस कर लगावे।

अथवा सम्भालू के पत्ते पीसकर लेप करे।

अथवा बाजरे का फूल जो बालों पर होता है एक माशे गुड़ में लपेट कर गोलियां बना कर प्रति दिन खाय।

अथवा तीन तोले चार माशे कलौंजी अर्द्धोष्ण जल के साथ तीन दिवस फांके।

गोली कि चूहे के विष को दूर करे। सिरस के बीज, नीम के पत्ते, धतूरा के बीजों की गिरी बराबर गोमूत्र में पीस कर गोलियां बना कर बाछत काल पर रगड़ कर लगावे और गौ की चर्बी घर में लगावे सब मूसे भाग जाय।

औषधि कि मनुष्य के काटने के विष को दूर करे गोभी के पत्ते शहद में पीस कर लेप करे।

दवा कि बिल्ली के काटे को गुणदायक है काले तिल जल में पीसकर मले। अथवा पोदीना खाय और लप भी करे।

दवा कि कनखजूरे के विष को दूर करे मीठा तेल दीपक में जलावे जलने के पश्चात जो शेष रहे लेकर कनखजूरे के काटे पर मर्दन करे।

औषधि जोंक के घाव को जो पकजाय गुण करे पोस्त के दाने पीस कर लेप करे।

अथवा प्याज, लहसन पीस के लगावे।

दवा कि बदर के विष को दूर करे मुर्दासंग लवण जल में पीस कर लेप करे और कलौंजी तथा शहद लगावे कि घाव सुलारहे और प्याज का लेप भी गुण करता है। औषधि मच्छर दूर करने को घोड़े की पूछ व बाल दर्वाजे पर लटकावे तो मच्छर कम आवें और भुसी तथा गूगल और गंधक और बारहसींगे के सींग की धूनी से मच्छर भागजाते हैं॥ इति॥



हमारे यहां ज्योतिष, वैद्यक, वेद, वेदान्त इत्यादि बम्बई, कलकत्ता, लखनऊ, काशी, मथुरा, आगरा अनेक जगह की छपी हुई सर्व प्रकार की पुस्तकें विक्रियार्थ प्रस्तुत रहती हैं और (काम छपाई का भी) सस्ता व वाञ्छित समय पर किया जाता है जिन महाशयों को पुस्तकें लेने तथा किसी कामके छपवाने की आवश्यकता हो वो इस प्रेस को सूचित करें। इसी प्रकार किसी रोग की वैद्यक दवा लेने की आवश्यक्ता हो तो पत्र द्वारा रोग का हाल लिखकर हमसे बात चीत करें आशा है कि शीघ्र गुण दिखानेवाली औषधि उनको भेजी जायगी इसके उपरांत हर प्रकार का मथुराजी का सामान भी हमारे यहां से चौथाई रुपया पेशगी आनेपर वी पी॰ द्वारा भेजा जाता है जो माल मगाना हो अवश्य हमसे मंगाईये।

निवेदक—

राधारमण भार्गव

मालिक

रामनारायण प्रेस

मथुरा।

सूचना ।

रामनारायण प्रेस मथुरा

में

हर प्रकार की छपाई का काम सादा व रंगीन उर्दू, हिन्दी, अंगरेजी, संस्कृत, गुजराती, बंगला, मरहटी आदि सब ही भाषाओं में किताबी व जोबवर्क मसलन बड़े २ चित्र, नकशे, पचाग, वाल नोटिस, शादी व दावत वगैरह के कार्ड (निमन्त्रणपत्र) लेथू व टाइप में निहायत खूबसूरती व सफ़ाई और शुद्धताके साथ नियत समय पर किया जाता है विशेष तारीफ़ करने की आवश्यक्ता नहीं ।

हमको पूर्ण आशा है कि जो महाशय इस प्रेस से एक मरतबा काम करा लेते हैं उनको फिर किसी दूसरे प्रेस में जाने की जरूरत नहीं रहती ।

एक दफ़े बतौर नमूने के कुछ काम भेजकर परीक्षा अवश्य करियेगा ।

रामनारायण प्रेस सम्बन्धी पुस्तकालय जो भार्गव-बुकडिपो के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें सर्व प्रकार की बम्बई, लखनऊ, काशी, इलाहाबाद वगैरह की धार्मिक व स्कूली पुस्तकें हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं की व स्टेशनरी का हर प्रकार का सामान होल्डर, पैन-सिल, दवात रबड़, स्याही, ड्राइंगबक्स, लिफाफे, लेटरपेपर और हर एक तरह का कागज व मथुराजी की प्रसिद्ध देसी दस्तकारी की वस्तुएँ सस्ते मूल्य पर मिलती हैं ।

निवेदक-राधारमण भार्गव मैनेजर

रामनारायण प्रेस मथुरा ।